आओ, ख़ुद देख लो

यूहान्ना की इंजील का चौंका देने वाला पैग़ाम

आओ, ख़ुद देख लो

āo, khud dekh lo

Come, See for Yourself

by Bakhtullah

(Urdu—Hindi script)

© 2025 www.chashmamedia.org
published and printed by
Good Word, New Delhi

The title cover is a collage including
OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/images/id-2026191/.

Bible quotations are from UGV.

for enquiries or to request more copies:
askandanswer786@gmail.com

फ़हरिस्त

फ़ज़ल पर फ़ज़ल	1
रूहानी शफ़ा	10
आओ, ख़ुद देख लो	18
इलाही शरबत	25
सच्चा मक़्किस	32
जो नए सिरे से पैदा हुआ हो	39
दूल्हे का दोस्त	46
ज़िंदगी का पानी	52
फलता-फूलता ईमान	61
क्या तू तंदुरुस्त होना चाहता है?	67
ईसा मसीह पर क्यों भरोसा. चार ठोस गवाह	75
बादशाही के चार उसूल	83
ज़िंदगी की रोटी	91
ईसा मसीह को पाना	104
जो प्यासा हो	115
पकड़ा गया	123
सच्चा शागिर्द	130
नूर या अंधेरा?	142
चरवाहे की आवाज़	156
सच्ची क़ुरबानगाह	166
अबदी ज़िंदगी कैसे पाऊँ	176

ख़ुशबू या बदबू? सफल ज़िंदगी का राज़	**190**
ज़मीन में दाना. मसीह के पीछे हो लेने का मतलब	**199**
अल-मसीह पर ईमान. यह क्या है?	**211**
शैतानी ताकतों से कैसे बचूँ?	**220**
अल-मसीह की नई बिरादरी	**232**
मत घबराओ	**238**
फ़तहमंद ज़िंदगी. रूहुल-क़ुद्स का काम	**245**
मैं अंगूर की बेल हूँ. फल लाने का राज़	**255**
दुश्मन के रूबरू मज़बूती. रूहुल क़ुद्स की हिमायत	**266**
फ़तह! जन्म लेने वाली बिरादरी की ख़ुशी	**276**
सच्चे शागिर्द के अनमिट निशान	**286**
सच्चाई का बादशाह. अल-मसीह की पेशी	**297**
काम मुकम्मल हो गया. अल-मसीह की मौत	**313**
मैंने ख़ुदावंद को देखा है. अल-मसीह जी उठता है	**326**
क्या तू मुझे प्यार करता है? बरकत पाने का राज़	**339**
तस्वीरी हुक़ूक़	351

फ़ज़ल पर फ़ज़ल

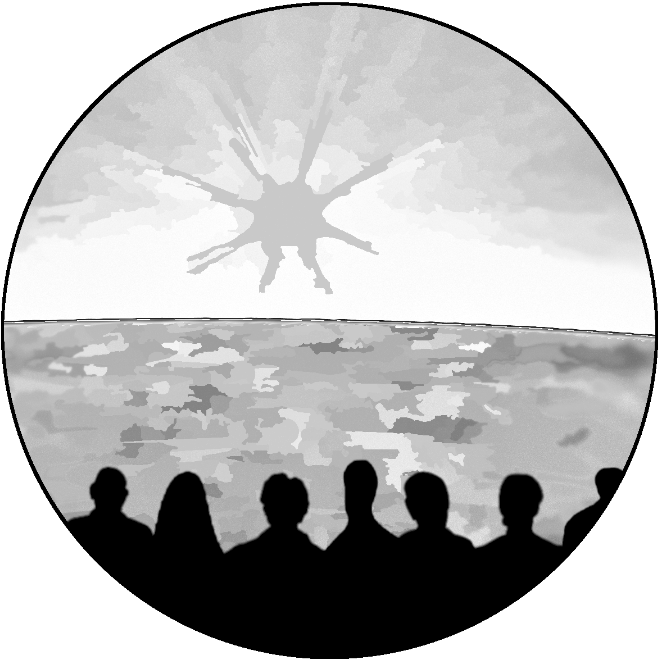

कलाम ने सब कुछ पैदा किया

यूहन्ना की इंजील की पहली बात हमें चौंका देती है। लिखा है,

> इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ था और कलाम अल्लाह था। (यूहन्ना 1:1)

► **जब हम ख़ुदा का कलाम कहते हैं तो हम क्या कहना चाहते हैं?**

हर वह बात जो ख़ुदा फ़रमाता है।

लेकिन यहाँ यह बुनियादी बात एक और ख़याल से जुड़ गई है। एक ख़याल जो इनक़लाबी है। कलाम एक हस्ती है। एक हस्ती जिसका ख़ुदा से ताल्लुक़ क़रीबतरीन है। हस्ती का नाम ईसा मसीह है।

► **यह कलाम जो ईसा मसीह है कब से है?**

वह इब्तिदा ही से है। अज़ल से।

► **यह कलाम कहाँ था?**

ख़ुदा के साथ।

► **कलाम क्या था?**

ख़ुदा था।

► **इसका क्या मतलब है?**

ख़ुदा जब कुछ फ़रमाता है तो अपने कलाम के वसीले से। तब ही वह पैदा हो जाता है।

ग़ौर करें : यह नहीं लिखा है कि अल्लाह कलाम है बल्कि यह कि कलाम, अल्लाह है। कलाम ख़ुदा की ज़ात में शरीक है मगर ख़ुदा की पूरी ज़ात कलाम की ज़ात पर महदूद नहीं है। ख़ुदा बाप है और ख़ुदा फ़रज़ंद है, मगर बाप फ़रज़ंद नहीं है।

► **लेकिन यूहन्ना यह बात क्यों करता है? क्या यह सिर्फ़ किसी फ़िलॉसफ़र का ख़याली पुलाव है? जिसका हमारे साथ कोई ख़ास ताल्लुक़ नहीं है?**

नहीं। इसका ताल्लुक़ हम सबके साथ है। मुझसे और आपसे भी। पहली बात, यूहन्ना फ़रमाता है कि

> सब कुछ कलाम के वसीले से पैदा हुआ। मख़लूक़ात की एक भी चीज़ उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई। (यूहन्ना 1:3)

ख़ुदा ने फ़रमाया तो सब कुछ पैदा हुआ। उसके कलाम से सब कुछ पैदा हुआ। यही ईसा मसीह का पहला काम है।

कलाम ज़िंदा करता है

लेकिन कलाम का काम उस वक़्त न रुका। उस वक़्त से उसका काम जारी रहता है। लिखा है,

> उसमें ज़िंदगी थी, और यह ज़िंदगी इनसानों का नूर थी। (यूहन्ना 1:4)

हम लाइट बल्ब बना सकते हैं। लेकिन वह उस वक़्त जलेगा जब बिजली मिले। बिजली बंद करें तो लाइट भी बंद। दुनिया भी अपनी ताक़त से ज़िंदा नहीं रह सकती। ख़ुदा का कलाम वह बिजली है जो हर लमहे उसे ज़िंदा रखती है। अगर यह ज़िंदगी न होती तो दुनिया एकदम ख़त्म हो जाती।

हम सभों का दम एक दिन निकल जाएगा। मगर ईसा मसीह हमें एक और क़िस्म की ज़िंदगी दे सकता है : अबदी ज़िंदगी। वह ज़िंदगी जो हमें जन्नत में रहने के क़ाबिल बना देती है।

► **क्या आपको यह अबदी ज़िंदगी हासिल है?**

कलाम रौशन करता है

ईसा मसीह न सिर्फ़ अबदी ज़िंदगी देता है। वह हमें नूर भी पहुँचाता है।

► **इसका क्या मतलब है?**

उसकी ज़िंदगी बिजली जैसी है जबकि नूर बल्ब की रौशनी जैसा है। बिजली मिलते ही बल्ब रौशन हो जाता है। लेकिन नूर रौशनी से फ़रक़ होता है। यह वह रूहानी रौशनी है जो इनसान के दिल को रौशन कर देता है। इसलिए अगली आयत में लिखा है :

> यह नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उस पर क़ाबू न पाया। (यूहन्ना 1:5)

अंधेरे में बत्ती जलाई तो कमरा एकदम रौशन हो जाता है। तब इनसान कोने कोने तक सब कुछ देख सकता है। वह क़रीने से सजी हुई मेज़ को भी देख सकता है और दीवार से चिपके हुए तिलचट्टे को भी। मगर तिलचट्टा तेज़ रौशनी पसंद नहीं करता। उसे देखते ही वह भागकर किसी अंधेरी जगह में छिप जाता है। नूर का यही असर है। इनसान का दिल रौशन हो जाए तो बहुत कुछ ज़ाहिर हो जाता है।

► **क्या आपकी आँखें इस नूर से रौशन हो गई हैं?**

नूर के सामने नापाक चीज़ें भाग जाती हैं। नूर ज़ाहिर करता है कि इनसान नापाक है। कि वह अपनी ताक़त से पाक-साफ़ नहीं हो सकता। उसे समझ आती है कि इस मनज़िल तक पहुँचने के लिए ज़रूरी है कि मैं पाक हो जाऊँ। कि मेरी ज़िंदगी में गुनाह के तिलचट्टे दूर हो जाएँ। मैं यों गुनाहों में उलझा हुआ जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकता। मुझे मसीह के तेज़ नूर की ज़रूरत है जो मुझे इस गंदी हालत से आज़ाद करे।

कलाम के ठोस गवाह

► **लेकिन यह नूर किस तरह ज़ाहिर हुआ?**

यूहन्ना फ़रमाता है,

> एक दिन अल्लाह ने अपना पैग़ंबर भेज दिया, एक आदमी जिसका नाम यहया था। वह नूर की गवाही देने के लिए आया। मक़सद यह था कि लोग उसकी गवाही की बिना पर ईमान लाएँ। (यूहन्ना 1:6)

► **ख़ुदा ने अपने पैग़ंबर यहया को भेज दिया। क्यों भेज दिया?**

उसे नूर की गवाही देनी थी।

इससे मालूम होता है कि इंजील का फ़रमान ठोस है।

► **क्यों?**

इंजील इसलिए ठोस है कि उसके लातादाद गवाह हैं। यहया नबी इस का एक ठोस गवाह था। उसे भेज दिया गया ताकि वह नूर के आने से पहले पहले गवाही

दे कि जिस नूर की पेशगोई बार बार की गई है वह जल्द ही आने को है। अब ईसा मसीह आने को है। नूर की आमद के बाद भी सैंकड़ों लोग उसकी बातों और कामों के गवाह हुए, और पहले गवाहों ने यह गवाहियाँ इंजील की सूरत में क़लमबंद कीं।

कलाम हमें ख़ुदा के फ़रज़ंद बना देता है

ईसा मसीह कलाम है जिसके वसीले से दुनिया पैदा हुई। वह हमें ज़िंदगी और नूर पहुँचा देता है।

► **क्या यह ख़ुशी की बात नहीं है?**

ज़रूर। लेकिन अफ़सोस, सबने उसे क़बूल न किया। लेकिन कुछ इस नूर से रौशन हुए। लिखा है,

> कुछ उसे क़बूल करके उसके नाम पर ईमान लाए। उन्हें उसने अल्लाह के फ़रज़ंद बनने का हक़ बख़्श दिया। (यूहन्ना 1:12)

यह एक राज़ है कि बहुत-सारे लोग उस पर ईमान नहीं लाते। लेकिन जिन्हें वह ईमान लाने की तौफ़ीक़ बख़्श देता है वह नूर से रौशन हो जाते हैं। उन्हें अबदी ज़िंदगी मिलती है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह ख़ुदा के फ़रज़ंद भी बन जाते हैं। उसके ख़ानदान के भाई-बहनें।

► **किस तरह?**

लिखा है कि वह ऐसे फ़रज़ंद हैं

> जो न फ़ितरी तौर पर, न किसी इनसान या मर्द के मनसूबे से पैदा हुए बल्कि अल्लाह से। (यूहन्ना 1:13)

मतलब है इसमें न इनसान का हाथ है, न उसकी मरज़ी। यह ख़ुदा की तरफ़ से एक रूहानी काम है। ज़ाहिर है कि ख़ुदा के साथ रिश्ता कभी फ़ितरी या इनसान के हाथ से क़ायम नहीं हो सकता। ग़रज़ ख़ुदा ही हमें अपने फ़रज़ंद बना देता है, और यह एक रूहानी रिश्ता है।

कलाम हमारे वास्ते इनसान बन गया

► **लेकिन यह रिश्ता किस तरह क़ायम हो जाता है?**

यूहन्ना फ़रमाता है,

> कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइशपज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का मुशाहदा किया। वह फ़ज़्ल और सच्चाई से मामूर था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़ंद का-सा था। (यूहन्ना 1:14)

ईसा मसीह अज़ल से ख़ुदा बाप का इकलौता फ़रज़ंद है। उस से सब कुछ पैदा हुआ, और वह दुनिया की ज़िंदगी और नूर है। उस ने दुनिया की ख़राब हालत देखी तो रंजीदा हुआ। हर तरफ़ धोका ही धोका। हर तरफ़ लूट-खसोट। इनसान ख़ुदा से दूर, बहुत दूर हो गया था।

► **अब वह क्या करे?**

वह हम सब को ख़त्म कर सकता था। लेकिन उस ने ऐसा न किया। उसे हम पर रहम आया, और उस ने कुछ और किया।

► **क्या किया?**

वह इनसान बनकर हमारे दरमियान आ बसा। वह पूरी तरह इनसान बन गया। उसका गोश्त और ख़ून था। वह दर्द और दुख महसूस कर सकता था। गो वह कलाम था तो भी उसने इनसान की फ़ितरत अपना ली। जो बेगुनाह था वह इनसान बन गया। उसने हमारे वास्ते अपनी जान दी ताकि हम ख़ुदा के फ़रज़ंद बन जाएँ।

जिसका तरजुमा रिहाइशपज़ीर से हुआ है उसका लफ़्ज़ी तरजुमा तम्बू लगाना है : कलाम ने हमारे दरमियान तम्बू लगाया।

► **यूहन्ना यह क्यों फ़रमाता है?**

सदियों पहले ख़ुदा ने सीना पहाड़ पर मूसा पर शरीअत नाज़िल की थी। जब मूसा पहाड़ से उतरा तो उसकी जिल्द शरीअत के जलाल से चमक रही थी। यह देखकर लोग डर गए। मूसा को अपने चेहरे पर निक़ाब डालना पड़ा। उस ने पहाड़ के दामन में एक तंबू लगाया जिसका नाम उसने मुलाक़ात का ख़ैमा रखा। जब कभी वह उसमें जाकर ख़ुदा के फ़रमान सुनता तो निक़ाब उतारता। लेकिन निकलते वक़्त वह दुबारा मुँह पर निक़ाब ढाँप देता ताकि इसराईली उस का चमकता मुँह देखकर डर न जाएँ (ख़ुरूज 33:7-11; 34:29-35)।

► **यह जलाल मूसा के चेहरे से क्यों चमकने लगा?**

यह शरीअत के जलाल का असर था।

इसराईली शरीअत का यह जलाल बरदाश्त नहीं कर सकते थे जो मूसा के चेहरे से चमक रहा था। ईसा मसीह जब इनसान बन गया तो उसने भी मुलाक़ात का ख़ैमा लगाया। उसके ज़रीए हमारी ख़ुदा से मुलाक़ात मुमकिन हो गई है। जो नामुमकिन था वह मसीह में मुमकिन हो गया। क़ुद्दूस ख़ुदा से मुलाक़ात। क़ुद्दूस ख़ुदा से रिश्ता।

शरीअत या मसीह का फ़ज़ल?

यही वजह है कि यूहन्ना फ़रमाता है कि

> उसकी कसरत से हम सबने फ़ज़ल पर फ़ज़ल पाया। क्योंकि शरीअत मूसा की मारिफ़त दी गई, लेकिन अल्लाह का फ़ज़ल और सच्चाई ईसा मसीह के वसीले से क़ायम हुई।
> (यूहन्ना 1:16-17)

सीना पहाड़ पर शरीअत मूसा पर नाज़िल हुई, मगर जो कुछ ईसा मसीह से मिला है वह शरीअत से कहीं बेहतर है।

► **क्यों?**

शरीअत हमें बताती है कि हमें क्या करना है। लेकिन हम सबके सब फ़ेल हैं। हममें से कोई भी शरीअत को पूरा नहीं कर पाता। उसके जलाल के सामने हम इसराईलियों की तरह डरकर भाग जाते हैं। बार बार हम शरीअत के तक़ाज़े पूरे करने से महरूम रहते हैं। जो सच्चाई और वफ़ादारी ख़ुदा हममें देखना चाहता है वह बहुत माँद पड़ी रहती है। यही वजह है कि ईसा मसीह की ज़रूरत है।

वही ख़ुदा का कलाम है।

वही हमें ज़िंदगी देता है।

वही हमें अपने नूर से रौशन करता है।

वही अपने फ़ज़ल से हममें वह सच्चाई क़ायम करता है जो हमें जन्नत में दाख़िल होने लायक़ बना देती है।

► **क्या आपको यह फ़ज़ल हासिल हुआ है?**

इंजील, यूहन्ना 1:1-18

इब्तिदा में कलाम था। कलाम अल्लाह के साथ था और कलाम अल्लाह था। यही इब्तिदा में अल्लाह के साथ था। सब कुछ कलाम के वसीले से पैदा हुआ। मख़लूक़ात की एक भी चीज़ उसके बग़ैर पैदा नहीं हुई। उसमें ज़िंदगी थी, और यह ज़िंदगी इनसानों का नूर थी। यह नूर तारीकी में चमकता है, और तारीकी ने उस पर क़ाबू न पाया।

एक दिन अल्लाह ने अपना पैग़ंबर भेज दिया, एक आदमी जिसका नाम यहया था। वह नूर की गवाही देने के लिए आया। मक़सद यह था कि लोग उसकी गवाही की बिना पर ईमान लाएँ। वह ख़ुद तो नूर न था बल्कि उसे सिर्फ़ नूर की गवाही देनी थी। हक़ीक़ी नूर जो हर शख़्स को रौशन करता है दुनिया में आने को था।

गो कलाम दुनिया में था और दुनिया उसके वसीले से पैदा हुई तो भी दुनिया ने उसे न पहचाना। वह उसमें आया जो उसका अपना था, लेकिन उसके अपनों ने उसे क़बूल न किया। तो भी कुछ उसे क़बूल करके उसके नाम पर ईमान लाए। उन्हें उसने अल्लाह के फ़रज़ंद बनने का हक़ बख़्श दिया, ऐसे फ़रज़ंद जो न फ़ितरी तौर पर, न किसी इनसान या मर्द के मनसूबे से पैदा हुए बल्कि अल्लाह से।

कलाम इनसान बनकर हमारे दरमियान रिहाइशपज़ीर हुआ और हमने उसके जलाल का मुशाहदा किया। वह फ़ज़ल और सच्चाई से मामूर था और उसका जलाल बाप के इकलौते फ़रज़ंद का-सा था।

यहया उसके बारे में गवाही देकर पुकार उठा, “यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, ‘एक मेरे बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।’”

उसकी कसरत से हम सबने फ़ज़ल पर फ़ज़ल पाया। क्योंकि शरीअत मूसा की मारिफ़त दी गई, लेकिन अल्लाह का फ़ज़ल और सच्चाई ईसा मसीह के वसीले से क़ायम हुई। किसी ने कभी भी अल्लाह को नहीं देखा। लेकिन

इकलौता फ़रज़ंद जो अल्लाह की गोद में है उसी ने अल्लाह को हम पर ज़ाहिर किया है।

रूहानी शफ़ा

► **यहया कौन था?**

वह पैग़ंबर था। ख़ुदा से भेजा गया नबी।

► **उसमें क्या जादू था कि वह बड़ी भीड़ों से घेरा रहता था?**

वह तो रफ़-सा आदमी था। उसका कपड़ा ऊँटों के बालों से बना हुआ था। खाने के लिए वह बयाबान की टिड्डियों और जंगली शहद पर गुज़ारा करता था। वह शहरों से दूर दरियाए-यरदन के किनारे रहता था। एक-दो मील इस तरफ़ या उस तरफ़ जाओ तो रेगिस्तान शुरू होता था।

यह मर्द अजीब था। उसका पैग़ाम भी अजीब था।

► **पैग़ाम क्या था?**

उसका सादा-सा पैग़ाम था : तसलीम करो कि तुम गुनाहगार हो। फिर यह दिखाने के लिए पानी का बपतिस्मा लो। यानी पानी में ग़ोता लो।

► **गुनाहों का इक़रार इतना अहम क्यों था? इसका मक़सद क्या था?**

मक़सद यह था कि

हमें रूहानी शफ़ा मिल जाए

यहया का पूरा ध्यान हमारी रूहानी शफ़ा थी। और रूहानी शफ़ा का पहला क़दम यह है कि हम मान लें कि हमसे गुनाह हुए हैं।

अजीब बात यह है कि सैंकड़ों लोग शहरों से निकलकर उसके पास आए ताकि बपतिस्मा लें।

► **क्यों? इस पैग़ाम में क्या ख़ास बात थी?**

लोग तो जानते थे कि अल-मसीह आनेवाला है। और अल-मसीह उन्हीं को मंज़ूर करेगा जिन्होंने अपने गुनाहों का इक़रार किया हो। गुनाहगारों को वह मिटा डालेगा।

जब हुजूम यहया नबी को घेरने लगे तो यरूशलम के मज़हबी लीडरों के कान खड़े हो गए। क्या यह आदमी लोगों को वरग़लाकर गड़बड़ करेगा? यह मालूम करने

के लिए उन्होंने अपने नुमाइंदे यहया के पास भेज दिए। दरिया पर पहुँचकर उन्होंने सीधे पूछा, “आप कौन हैं?”

► **क्या वह नहीं जानते थे कि वह यहया है?**

बेशक। वह तो उसका नाम नहीं जानना चाहते थे बल्कि यह कि तुम्हारा यह करने का क्या इख़्तियार है? किसने तुम्हें भेज दिया है? यह तो वह काम है जो अल-मसीह की आमद पर किया जाएगा। क्या तुम समझते हो कि तुम ही मसीह हो?

यह सुनकर यहया नबी ने साफ़ जवाब दिया, “मैं मसीह नहीं हूँ।”

उन्होंने पूछा, “तो फिर आप कौन हैं? क्या आप इलयास हैं?”

► **उन्होंने यह क्यों पूछा?**

मलाकी नबी ने फ़रमाया था कि अल-मसीह के आने से पहले पहले इलयास वापस आएगा ताकि लोगों को मसीह के लिए तैयार कर रखे,

> रब के उस अज़ीम और हौलनाक दिन से पहले मैं तुम्हारे पास इलयास नबी को भेजूँगा।” (मलाकी 4:5)

बाद में ईसा मसीह ने फ़रमाया कि यहया ही इलयास था। लेकिन इस वक़्त यहया ख़ुद ने इनकार किया, “नहीं, मैं इलयास नहीं हूँ।” वह तो जानता था कि लोग इलयास के बारे में ग़लत सोच रखते हैं। जिस नाते से वह इलयास है यह बात लोग कभी नहीं समझेंगे। वह कभी नहीं समझेंगे कि उसकी बस एक ही ख़िदमत है, यह कि उनकी रूहानी शफ़ा हो जाए।

तब पूछ-गछ करनेवालों ने सवाल किया, “क्या आप आनेवाला नबी हैं?”

► **कौन-सा नबी?**

मूसा ने फ़रमाया था कि

> रब तेरा ख़ुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। उसकी सुनना। (तौरेत, इस्तिसना 18:15)

लेकिन यहया नबी ने कहा, “नहीं।”

“तो फिर आप कौन हैं?”

यहया ने फ़रमाया, "मैं रेगिस्तान में वह आवाज़ हूँ जो पुकार रही है, रब का रास्ता सीधा बनाओ।"

► **इससे वह क्या कहना चाहता था?**

सदियों पहले यसायाह नबी ने पेशगोई की थी कि अल-मसीह की आमद पर एक आवाज़ पुकारेगी कि

> रेगिस्तान में रब की राह तैयार करो! बयाबान में हमारे ख़ुदा का रास्ता सीधा बनाओ। (यसायाह 40:3)

► **यहया पैग़ंबर ने यह क्यों कहा कि मैं वह आवाज़ हूँ?**

अल-मसीह आनेवाला था, इसलिए उसका रास्ता तैयार करना था।

► **मसीह का रास्ता किस तरह तैयार करना था? पक्का रोड बनाने से? या जलसा-जुलूस निकालने से?**

यहया को ऐसी बातों की परवाह नहीं थी। उसका वाहिद मक़सद रूहानी शफ़ा था। और इस रूहानी शफ़ा का पहला क़दम यह था कि लोग अपने गुनाहों को तसलीम करें, कि वह दिल से ख़ुदा के लिए तैयार हो जाएँ।

► **क्या आप ख़ुदा के लिए तैयार हैं?**

कुछ और नुमाइंदों ने पूछा, "अगर आप न मसीह हैं, न इलयास या आनेवाला नबी तो फिर आप बपतिस्मा क्यों दे रहे हैं?"

मतलब है, आख़िर यह सारा तमाशा क्यों हो रहा है? कौन तुमसे यह करवा रहा है?

यहया ने जवाब दिया, "मैं तो पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन तुम्हारे दरमियान ही एक खड़ा है जिसको तुम नहीं जानते। वही मेरे बाद आनेवाला है और मैं उसके जूतों के तसमे भी खोलने के लायक़ नहीं।"

मतलब है मेरा बस एक ही काम है। यह कि तुम्हारे दिल अल-मसीह के लिए तैयार हो जाएँ। उसके लिए तैयार हो जाएँ जो तुम्हारे दरमियान आ चुका है।

पूछ-गछ करनेवाले ख़ाली हाथ यरूशलम वापस लौटे।

हमारे गुनाहों को मिटाया जाए

अगले दिन ईसा मसीह ख़ुद यहया के पास आया। उसकी ख़िदमत अब शुरू होनेवाला था। उसे देखते ही यहया फूला न समाया। वह पुकार उठा, "देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है।"

► **इसका क्या मतलब था?**

उस ज़माने में कुछ गुरोह समझते थे कि मसीह आकर ताक़तवर लेले जैसा होगा जो गुनाहगारों की अदालत करके रास्तबाज़ों को नजात देगा।

लेकिन लेला एक और बात की तरफ़ भी इशारा है। सदियों पहले जब इसराईली अब मिसर में ग़ुलाम थे तो ख़ुदा ने फ़रमाया था कि इसराईली एक लेले का ख़ून दरवाज़े के चौखटों पर लगाएँ। जिसने ऐसा किया उसके सब घरवाले ज़िंदा रहे। जिसने ऐसा न किया उसका पहलौठा मर गया। रात के वक़्त मिसरियों में बड़ा शोर मच गया, क्योंकि जेल के क़ैदी से लेकर फ़िरौन तक उनके तमाम पहलौठे मर गए थे। तब मिसर का बादशाह इसराईलियों को छोड़ने पर मजबूर हुआ।

एक लेले के ख़ून ने उन्हें ख़ुदा के ग़ज़ब से बचाया।

एक लेला नजात का बाइस बन गया।

ईसा मसीह ही यह लेला है जो इनसान के गुनाहों को अपने ऊपर उठाकर दूर करेगा।

वह न सिर्फ़ गुनाहों को माफ़ करेगा बल्कि उन्हें दूर भी करेगा।

► **माफ़ी और दूर करने में क्या फ़रक़ है?**

जब मैं किसी के गुनाहों को माफ़ करूँ तो वह दूर नहीं होते, उन्हें मिटाया नहीं जाता। वह क़ायम रहते हैं। लेकिन मसीह ने न सिर्फ़ हमारे गुनाहों को माफ़ कर दिया बल्कि उन्हें उठा ले गया। उन्हें मिटा दिया। यह एक बहुत बड़ा फ़रक़ है।

रूहुल-क़ुद्स हमारे दिल में आ बसे

तब यहया ने एक चौंका देनेवाली बात कही। "मैंने देखा कि रूहुल-क़ुद्स कबूतर की तरह आसमान पर से उतरकर उस पर ठहर गया। मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए भेजा तो उसने मुझे बताया, 'तू देखेगा कि रूहुल-क़ुद्स उतरकर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही होगा जो रूहुल-क़ुद्स से

बपतिस्मा देगा।’ अब मैंने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़रज़ंद है।”

- ► **रूहुल-क़ुद्स के उतरने का क्या मतलब था?**

  यसायाह नबी ने सदियों पहले फ़रमाया था कि रूहुल-क़ुद्स मसीह पर ठहरेगा :

> रब का रूह उस पर ठहरेगा यानी हिकमत और समझ का रूह, मशवरत और क़ुव्वत का रूह, इरफ़ान और रब के ख़ौफ़ का रूह। (यसायाह 11:2)

लेकिन रूहुल-क़ुद्स न सिर्फ़ ईसा मसीह पर ठहरेगा। ईसा मसीह के वसीले से हमें भी रूहुल-क़ुद्स हासिल होगा।

- ► **क्या मतलब?**

  यहया का बपतिस्मा तैयारी का बपतिस्मा था। रूहानी शफ़ा का पहला क़दम। लेकिन इनसान अपनी ताक़त से अपने गुनाहों पर ग़ालिब नहीं आ सकता। इसलिए ज़रूरी है कि रूहुल-क़ुद्स उसके दिल में बसकर उसे तबदील करे, उसे महफ़ूज़ रखे, उसमें रूहानी ज़िंदगी डालता रहे।

बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स की झलक

आख़िर में यहया फ़रमाता है कि अब मैंने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़रज़ंद है।

यों इस वाक़िये में तसलीस की झलक नज़र आती है। ईसा मसीह ख़ुदा का फ़रज़ंद है जो अपनी ख़िदमत के आग़ाज़ पर यहया का बपतिस्मा लेता है। इसलिए नहीं कि अपने गुनाहों का इक़रार करे। उससे तो कभी भी गुनाह नहीं हुआ है। लेकिन जिस तरह वह अपने आपको पस्त करके इनसान बन गया उसी तरह उसे यहया का बपतिस्मा भी लेना था। यह इनसान के गुनाहों को उठा ले जाने का पहला क़दम था।

तब ही रूहुल-क़ुद्स उस पर ठहर गया।

ख़ुदा बाप, ख़ुदा फ़रज़ंद और ख़ुदा रूह। बाप ख़ुदा है, फ़रज़ंद ख़ुदा है और रूह ख़ुदा है, लेकिन बाप फ़रज़ंद नहीं है, फ़रज़ंद रूह नहीं है।

ख़ुदा बाप ने फ़रज़ंद को इस दुनिया में भेज दिया ताकि वह हमारे गुनाहों को उठा ले जाए। उसने रूहुल-क़ुद्स को भेज दिया ताकि उसकी रूहानी ज़िंदगी हमारे अंदर आ बसे और हमें तबदील करती रहे।

यों ही हमारी रूहानी शफ़ा हो जाती है। कोई और रास्ता है नहीं। सिर्फ़ यह रास्ता है कि हम अपने गुनाहों का इक़रार करके अपने हाथ ईसा मसीह की तरफ़ फैलाएँ। तब ही वह हमारे गुनाहों को उठा ले जाएगा और रूहुल-क़ुद्स हमारे दिल में आकर बसेगा। तब ही उसकी रूहानी ज़िंदगी हमारे अंदर फैलेगी और हमें आसमानी मनज़िल तक ले जाएगी।

इंजील, यूहन्ना 1:19-34

यह यहया की गवाही है जब यरूशलम के यहूदियों ने इमामों और लावियों को उसके पास भेजकर पूछा, “आप कौन हैं?”

उसने इनकार न किया बल्कि साफ़ तसलीम किया, “मैं मसीह नहीं हूँ।”

उन्होंने पूछा, “तो फिर आप कौन हैं? क्या आप इलयास हैं?”

उसने जवाब दिया, “नहीं, मैं वह नहीं हूँ।”

उन्होंने सवाल किया, “क्या आप आनेवाला नबी हैं?”

उसने कहा, “नहीं।”

“तो फिर हमें बताएँ कि आप कौन हैं? जिन्होंने हमें भेजा है उन्हें हमें कोई न कोई जवाब देना है। आप ख़ुद अपने बारे में क्या कहते हैं?”

यहया ने यसायाह नबी का हवाला देकर जवाब दिया, “मैं रेगिस्तान में वह आवाज़ हूँ जो पुकार रही है, रब का रास्ता सीधा बनाओ।”

भेजे गए लोग फ़रीसी फ़िरक़े से ताल्लुक़ रखते थे। उन्होंने पूछा, “अगर आप न मसीह हैं, न इलयास या आनेवाला नबी तो फिर आप बपतिस्मा क्यों दे रहे हैं?”

यहया ने जवाब दिया, “मैं तो पानी से बपतिस्मा देता हूँ, लेकिन तुम्हारे दरमियान ही एक खड़ा है जिसको तुम नहीं जानते। वही मेरे बाद आनेवाला है और मैं उसके जूतों के तसमे भी खोलने के लायक़ नहीं।”

यह यरदन के पार बैत-अनियाह में हुआ जहाँ यहया बपतिस्मा दे रहा था।
अगले दिन यहया ने ईसा को अपने पास आते देखा। उसने कहा, "देखो, यह अल्लाह का लेला है जो दुनिया का गुनाह उठा ले जाता है। यह वही है जिसके बारे में मैंने कहा, 'एक मेरे बाद आनेवाला है जो मुझसे बड़ा है, क्योंकि वह मुझसे पहले था।' मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन मैं इसलिए आकर पानी से बपतिस्मा देने लगा ताकि वह इसराईल पर ज़ाहिर हो जाए।"
और यहया ने यह गवाही दी, "मैंने देखा कि रूहुल-क़ुद्स कबूतर की तरह आसमान पर से उतरकर उस पर ठहर गया। मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए भेजा तो उसने मुझे बताया, 'तू देखेगा कि रूहुल-क़ुद्स उतरकर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही होगा जो रूहुल-क़ुद्स से बपतिस्मा देगा।' अब मैंने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़रज़ंद है।"

आओ, ख़ुद देख लो

एक दिन का ज़िक्र है कि एक नासमझ लड़का नहर में नहाते हुए फिसल गया और डूबने लगा। उसके साथियों के देखते देखते वह शोर मचाते हुए पानी की गहराइयों में ओझल हो गया। लेकिन एक दोस्त से रहा न गया। उसने पानी में छलाँग लगाया। और सचमुच थोड़ी देर बाद वह दोस्त को पकड़कर निकाल लाया।

बेचारा लड़का! वह बेहिसो-हरकत किनारे पर पड़ा रहा। क्या उसका दम निकल चुका था? उसके यार-दोस्त परेशान हालत में उसके गिर्द इकट्ठे हुए। तब एक ने कहा, "ठहरो, पहले हम फेफड़ों से पानी निकालते हैं फिर नब्ज़ देखते हैं।" वह झुककर काफ़ी देर तिब्बी इमदाद देने में लगा रहा। फिर उठ खड़ा हुआ और कहा, "बहुत ही कमज़ोर है। लेकिन ज़िंदा है। हलकी हलकी साँस ले रहा है।" हालाँकि बिलकुल बेजान लग रहा था। न ठीक तौर से मरा हुआ था, न ज़िंदा।

कितने लोगों की यही हालत होती है। ध्यान से देखो तब ही पता चलता है कि ज़िंदा हैं। लग रहा है कि वह नहर के किनारे अधमुए पड़े हैं। बेहिसो-हरकत। वह बस गुज़ारा कर रहे हैं। उनकी ज़िंदगी का कोई मक़सद, कोई मज़ा नहीं रहा। देखने में ज़िंदा होते हैं मगर हैं ही मुरदे।

► **आपकी ज़िंदगी कैसी है? क्या वह भरपूर और बा-मक़सद है? अगर नहीं तो हम क्या कर सकते हैं कि हमारी जान में दुबारा जान आए?**

भरपूर ज़िंदगी पाने के लिए हमें कुछ सवाल पूछने चाहिएँ। पहला सवाल :

क्या मैंने ख़ुद आकर देख लिया है?

एक वाहिद हस्ती है जिससे हमारी जान में जान आ सकती है—वह जो ईसा मसीह कहलाता है।

एक दिन ईसा मसीह यहया नबी के पास आया। यहया नबी ने उसे देखते ही अपने शागिर्दों को बताया कि यह मसीह है। यह वही है जो दुनिया के गुनाहों को उठा ले जाएगा।

► **क्या यह सुनकर शागिर्दों को समझ आई कि ईसा मसीह कौन है?**

नहीं। लेकिन इतना वह समझ गए कि यह एक ख़ास और अज़ीम आदमी है। अंधेरे में परवाना आग से खींचा जाता है। वह मजबूर हो जाता है चाहे वह उसमें जल भी जाए। शागिर्द परवानों की तरह ईसा मसीह के पीछे पीछे खिचते गए।

उसने मुड़कर उनसे पूछा, “तुम क्या चाहते हो?”

- ► **आज ईसा मसीह यह कुछ मुझसे और आपसे भी पूछता है : तुम क्या चाहते हो?**
- ► **आप क्या जवाब देंगे?**

  आप बड़े हों या छोटे, मर्द हों या औरत, वह हर एक से यह सवाल पूछता है। क्या आप कहेंगे कि “मुझे छोड़ दो। पैग़ंबर हो न हो मगर मेरा आपसे क्या वास्ता। मेरी तो अलग पार्टी है।”
- ► **अपने आपको धोका मत देना। रोज़े-महशर पर आप क्या कहेंगे जब आपको तख़्ते-अदालत के सामने लाया जाएगा?**

शागिर्दों ने ऐसी कोई बात न की। उन्होंने साफ़ पूछा, “उस्ताद, आप कहाँ ठहरे हुए हैं?”

“उस्ताद।” उनको इतना ही पता था : मसीह हमारा उस्ताद है। वह उस्ताद जिससे हमारी जान में जान आएगी और आसमान का रास्ता खुल जाएगा। इसी लिए हम वहाँ जाना चाहते हैं जहाँ वह ठहरा हुआ है।

ईसा मसीह ने जवाब दिया, “आओ, ख़ुद देख लो।”

कितनी ख़ूबसूरत दावत! वह मजबूर नहीं करता। खुली दावत है कि आओ और ख़ुद पता कर लो। तब तुम जान लोगे कि मैं कौन हूँ।

दोनों शागिर्द मसीह के हाँ पहुँचे। शाम के चार बज गए थे। उन्होंने क्या क्या देख लिया होगा? क्या वह पूरी रात बातें करते रहे? हो सकता है कि उस्ताद का मुहब्बत-भरा चेहरा ही काफ़ी था। जो भी हुआ, यह शागिर्द एकदम ईसा मसीह से लिपट गए। अब से वह उसके हाँ ठहरे रहे।

ईसा मसीह के पीछे हो लेने का मतलब यही है : आओ, ख़ुद देख लो। और इससे ज़्यादा : मेरे साथ ठहरो। मतलब यह नहीं कि हम उसकी पार्टी के मेंबर बनें। उसे सियासी बातों से सख़्त नफ़रत है। नहीं, वह चाहता है कि हम उसके घरवाले बन जाएँ। कि जहाँ वह है वहाँ हम भी हों। कि वह हमारा आक़ा हो। हम उसकी आवाज़ सुनें और उसका हाथ थामे हुए चल पड़ें। यों ही हमें भरपूर ज़िंदगी मिलती रहेगी।

इसलिए मेरी और आपकी ज़िंदगी का सबसे अहम सवाल यह है :

क्या मैं उसके पीछे हो लिया हूँ?

जब ज़बरदस्त चट्टान समुंदर में गिर जाए तो बड़ी बड़ी लहरें उछलकर चारों तरफ़ फैल जाती हैं। जो भी रास्ते में है उसे वह अपने साथ ले जाती हैं। ईसा मसीह के पास ठहरने से यही कुछ हुआ। वह मसीह की मुहब्बत-भरी लहर में आकर इतने जोश में आए कि उनसे रहा न गया। उनको दूसरों को यह ख़ुशख़बरी बताना ही था। दोनों में से एक का नाम अंदरियास था। उसका दिल उस्ताद की बातों से छलक उठा तो वह सीधे अपने भाई पतरस के पास जा पहुँचा। कहा, "हमें मसीह मिल गया है।" वह जो हमें बचाएगा। यह कहते ही अंदरियास अपने भाई को घसीटकर ईसा मसीह के पास ले गया। भाई भी एकदम मसीह के जादू में आ गया।

लहरें अभी तक ज़ोरों पर थीं। अब ईसा मसीह एक आदमी बनाम फ़िलिप्पुस से मिला। उसने कहा, "मेरे पीछे हो ले।"

► **क्या मैं उसके पीछे हो लिया हूँ?**

तीसरा सवाल :

क्या मैं उसका घरवाला बन गया हूँ?

फ़िलिप्पुस न सिर्फ़ राज़ी हुआ। वह इतने जोश में आ गया कि सीधे अपने जाननेवाले नतनेल के पास पहुँचा। कहने लगा, "हमें वह मिल गया जिसका ज़िक्र मूसा और नबियों ने किया है। वह नासरत का रहनेवाला है।"

नतनेल की हँसी छूट गई, "नासरत!? क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है?" नासरत में कम आबादी थी, और उसे हक़ीर जाना जाता था। अल-मसीह ऐसी जगह से किस तरह आ सकता था?

फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, "आ और ख़ुद देख ले।"

फ़िलिप्पुस यह बात समझ गया था कि आने और ख़ुद देख लेने से ही सब कुछ मालूम हो जाता है। कोई और रास्ता नहीं। घर का रिश्ता बाँधना है। यह तो कोई फ़लसफ़ा नहीं है जो वह किताब पढ़कर मान सकता है। न किसी पार्टी के आफ़िस में जाकर अपना नाम रजिस्टर करवाना है। घर का रिश्ता घर के अंदर ही बाँधा जाता है। घरवालों के आमने-सामने।

► **क्या मैं उसका घरवाला हूँ?**

चौथा सवाल :

क्या मसीह मेरा बादशाह है?

ईसा मसीह नतनेल को आते देखकर पुकार उठा, "लो, यह सच्चा इसराईली है जिसमें मकर नहीं।"

नतनेल हक्का-बक्का रह गया। "आप मुझे कहाँ से जानते हैं?"

ईसा मसीह ने जवाब दिया, "इससे पहले कि फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया मैंने तुझे देखा। तू अंजीर के दरख़्त के साय में था।"

क्या बात है! इससे पहले कि हम उसे देखें ईसा मसीह हमें पुकारकर फ़रमाता है कि "आओ और ख़ुद देख लो।"

नतनेल भी मसीह की मुहब्बत-भरी लहर में आ गया। उसमें डूबे हुए वह पुकार उठा, "उस्ताद, आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, आप इसराईल के बादशाह हैं।"

ईसा मसीह ने फ़रमाया, "अच्छा, मेरी यह बात सुनकर कि मैंने तुझे अंजीर के दरख़्त के साय में देखा तू ईमान लाया है? तू इससे कहीं बड़ी बातें देखेगा। मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम आसमान को खुला और अल्लाह के फ़रिश्तों को ऊपर चढ़ते और इब्ने-आदम पर उतरते देखोगे।"

► **हम यह मुश्किल बात किस तरह समझ सकते हैं?**

क़दीम ज़माने में इसराईल के बुज़ुर्ग याक़ूब ने ख़ाब में एक सीढ़ी देखी थी जो ज़मीन से आसमान तक पहुँचती थी। फ़रिश्ते उस पर चढ़ते और उतरते नज़र आते थे। रब उसके ऊपर खड़ा था। लिखा है,

> तब याक़ूब जाग उठा। उसने कहा, "यक़ीनन रब यहाँ हाज़िर है, और मुझे मालूम नहीं था।" वह डर गया और कहा, "यह कितना ख़ौफ़नाक मक़ाम है। यह तो अल्लाह ही का घर और आसमान का दरवाज़ा है।" (तौरात, पैदाइश 28:16-17)

ईसा मसीह अपने शागिर्दों को बताना चाहता है कि अब तुम भी मेरे वसीले से देखोगे कि आसमान का दरवाज़ा इनसान के लिए खुल जाएगा।

एक और बात। ईसा मसीह ने अपने आप को इब्ने-आदम कहा।

► **क्यों?**

दानियाल नबी ने सदियों पहले अल-मसीह के बारे में एक रोया देखी थी। उसमें उसने देखा था कि

> आसमान के बादलों के साथ साथ कोई आ रहा है जो इब्ने-आदम-सा लग रहा है। जब क़दीमुल-ऐयाम के क़रीब पहुँचा तो उसके हुज़ूर लाया गया। उसे सलतनत, इज़्ज़त और बादशाही दी गई, और हर क़ौम, उम्मत और ज़बान के अफ़राद ने उसकी परस्तिश की। उसकी हुकूमत अबदी है और कभी ख़त्म नहीं होगी। उसकी बादशाही कभी तबाह नहीं होगी। (दानियाल 9:13-14)

ईसा मसीह यही इब्ने-आदम है जो एक दिन दुनिया की अदालत करने आएगा। उसकी बादशाही कभी तबाह नहीं होगी। वही हर इनसान का ख़ुदावंद है चाहे वह यह बात माने या न माने।

यों ईसा मसीह की ख़िदमत शुरू हुई। और यह ख़िदमत आज तक जारी रही है। आज तक वह बार बार पुकारता रहता है : आओ, ख़ुद देख लो! आओ, ख़ुद देख लो!

► **रहा यह सवाल: क्या मैं ने उस के हुज़ूर आकर ख़ुद देख लिया है?**

इंजील, यूहन्ना 1:35-51

अगले दिन यहया दुबारा वहीं खड़ा था। उसके दो शागिर्द साथ थे। उसने ईसा को वहाँ से गुज़रते हुए देखा तो कहा, “देखो, यह अल्लाह का लेला है!”

उसकी यह बात सुनकर उसके दो शागिर्द ईसा के पीछे हो लिए। ईसा ने मुड़कर देखा कि यह मेरे पीछे चल रहे हैं तो उसने पूछा, “तुम क्या चाहते हो?”

उन्होंने कहा, “उस्ताद, आप कहाँ ठहरे हुए हैं?”

उसने जवाब दिया, “आओ, ख़ुद देख लो।” चुनाँचे वह उसके साथ गए। उन्होंने वह जगह देखी जहाँ वह ठहरा हुआ था और दिन के बाक़ी वक़्त उसके पास रहे। शाम के तक़रीबन चार बज गए थे।

शमाऊन पतरस का भाई अंदरियास उन दो शागिर्दों में से एक था जो यहया की बात सुनकर ईसा के पीछे हो लिए थे। अब उसकी पहली मुलाक़ात उसके अपने भाई शमाऊन से हुई। उसने उसे बताया, "हमें मसीह मिल गया है।" (मसीह का मतलब 'मसह किया हुआ शख़्स' है।) फिर वह उसे ईसा के पास ले गया।

उसे देखकर ईसा ने कहा, "तू यूहन्ना का बेटा शमाऊन है। तू कैफ़ा कहलाएगा।" (इसका यूनानी तरजुमा पतरस यानी पत्थर है।)

अगले दिन ईसा ने गलील जाने का इरादा किया। फ़िलिप्पुस से मिला तो उससे कहा, "मेरे पीछे हो ले।" अंदरियास और पतरस की तरह फ़िलिप्पुस का वतनी शहर बैत-सैदा था।

फ़िलिप्पुस नतनेल से मिला, और उसने उससे कहा, "हमें वही शख़्स मिल गया जिसका ज़िक्र मूसा ने तौरेत और नबियों ने अपने सहीफ़ों में किया है। उसका नाम ईसा बिन यूसुफ़ है और वह नासरत का रहनेवाला है।"

नतनेल ने कहा, "नासरत? क्या नासरत से कोई अच्छी चीज़ निकल सकती है?"

फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, "आ और ख़ुद देख ले।"

जब ईसा ने नतनेल को आते देखा तो उसने कहा, "लो, यह सच्चा इसराईली है जिसमें मकर नहीं।"

नतनेल ने पूछा, "आप मुझे कहाँ से जानते हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, "इससे पहले कि फ़िलिप्पुस ने तुझे बुलाया मैंने तुझे देखा। तू अंजीर के दरख़्त के साय में था।"

नतनेल ने कहा, "उस्ताद, आप अल्लाह के फ़रज़ंद हैं, आप इसराईल के बादशाह हैं।"

ईसा ने उससे पूछा, "अच्छा, मेरी यह बात सुनकर कि मैंने तुझे अंजीर के दरख़्त के साय में देखा तू ईमान लाया है? तू इससे कहीं बड़ी बातें देखेगा।" उसने बात जारी रखी, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम आसमान को खुला और अल्लाह के फ़रिश्तों को ऊपर चढ़ते और इब्ने-आदम पर उतरते देखोगे।"

इलाही शरबत

एक दिन एक शादी हुई। गाँव का नाम क़ाना था। ईसा मसीह की माँ वहाँ गई, और उस्ताद को भी शागिर्दों समेत दावत दी गई। उस ज़माने में शादी आम तौर पर 7 दिन मनाई जाती थी। ज़ाहिर है कि इसके लिए खाने-पीने का बहुत माल दरकार था।

अचानक मरियम बीबी ईसा मसीह के पास आई। वह घबराई हुई थी। उसने कहा, “उनके पास मै नहीं रही।”

क्या? मै ख़त्म है? हाय, हाय! खाने-पीने की चीज़ों की कमी हो तो शादी करानेवालों का मुँह काला हो जाएगा। ऐसे मामलों के बाइस तलाक़ तक दी गई है।

मै : अल-मसीह का निशान

► **लेकिन मै है क्या?**

मै को हिंदी में हाला और इंग्लिश में वाइन कहा जाता है। अंगूर का रस गलते गलते मै में बदल जाता है। इस तरीक़े से अंगूर का रस देरपा हो जाता है। तब वह ख़राब नहीं हो जाता। ईसा मसीह के ज़माने में मै रोज़ाना खाने के साथ ही पी जाती थी, हालाँकि उसे पानी से मिलाया जाता था। जो मै कही जाती थी उसमें हक़ीक़त में सिर्फ़ एक चौथाई या ज़्यादा से ज़्यादा एक तिहाई मै हुआ करती थी। मतलब है कि नशे में आने के लिए बहुत ज़्यादा पीना पड़ता था।

दीने-इस्लाम में शराब मना है जबकि तौरेत और इंजील इनसान की अपनी ज़िम्मेदारी पर ज़ोर देती है, कि वह अक़्ल से काम ले। हाँ, कलाम में बार बार फ़रमाया गया है कि इनसान न नशे में पड़ जाए न नशाबाज़ बन जाए। यों अक़्ल हमें बताती है कि हम हर क़िस्म की शराब से कतराएँ। जो शराब के आदी बन जाए वह न सिर्फ़ अपने लिए बल्कि दूसरों के लिए भी ख़तरे का बाइस बन जाता है। कितने लातादाद घर शराब की वजह से बरबाद हो गए हैं। कितने अनगिनत लोग शराब के बाइस ट्रैफ़िक के हादसों में उलझकर मर गए हैं।

► **तो यह किस तरह मुमकिन है कि कलाम हमें इस जगह पर मै पीने पर उभारना चाहता है?**

यह नामुमकिन है!

► **तो फिर मै का यह वाक़िया क्यों पेश किया गया है? कलाम हमें क्या सिखाना चाहता है?**

यह समझने के लिए हमें कलाम की गहराइयों में जाना पड़ेगा। बहुत सदियों पहले ख़ुदा के पैग़ंबरों ने पेशगोई की थी कि एक वक़्त आएगा जब ख़ुदा न सिर्फ़ इसराईल बल्कि पूरी दुनिया को नजात देगा। यह ज़माना अल-मसीह की आमद से शुरू हो जाएगा। तब वह एक ज़ियाफ़त करेगा जिसमें बेहतरीन मै और लज़ीज़तरीन खाने की कसरत होगी। यों यसायाह नबी फ़रमाता है,

> यहीं कोहे-सिय्यून पर रब्बुल-अफ़वाज तमाम अक़वाम की ज़बरदस्त ज़ियाफ़त करेगा। बेहतरीन क़िस्म की क़दीम और साफ़-शफ़्फ़ाफ़ मै पी जाएगी, उम्दा और लज़ीज़तरीन खाना खाया जाएगा।
> इसी पहाड़ पर वह तमाम उम्मतों पर का निक़ाब उतारेगा और तमाम अक़वाम पर का परदा हटा देगा।
> मौत इलाही फ़तह का लुक़्मा होकर अबद तक नेस्तो-नाबूद रहेगी।
> तब रब क़ादिरे-मुतलक़ हर चेहरे के आँसू पोंछकर तमाम दुनिया में से अपनी क़ौम की रुसवाई दूर करेगा। रब ही ने यह सब कुछ फ़रमाया है।
> उस दिन लोग कहेंगे, "यही हमारा ख़ुदा है जिसकी नजात के इंतज़ार में हम रहे। यही है रब जिससे हम उम्मीद रखते रहे। आओ, हम शादियाना बजाकर उसकी नजात की ख़ुशी मनाएँ।" (यसायाह 25:6-9)

मै : बहाली और रिश्ते का निशान

तमाम क़ौमें यह पीकर ख़ुशी मनाएँगी। क्योंकि वह ख़ुदा के फ़रज़ंद बनकर नजात पाएँगी। जो परदा इनसान और ख़ुदा के दरमियान पड़ा है वह हटा दिया जाएगा। और यह रिश्ता सबको ज़ाहिर हो जाएगा।

► **किस तरह?**

इसमें कि ख़ुदा उनकी ज़बरदस्त ज़ियाफ़त करेगा। वहाँ सब मै का मज़ा लूटेंगे, मगर नशा नहीं चढ़ेगा। किसी को नुक़सान नहीं पहुँचेगा।

► **क्यों?**

उस वक़्त दुनिया की टूटी-फूटी हालत बहाल हो जाएगी। इनसानो-हैवान में जो नुक़्स है वह उस वक़्त कहीं नहीं पाया जाएगा। मै भी इनसान को नुक़सान नहीं पहुँचाएगी।

मरियम बीबी का मक़सद

मरियम बीबी जब कहती है कि मै नहीं है तो वह इस तरफ़ इशारा कर रही है। वह समझती है कि अब अच्छा मौक़ा है कि लोग मोजिज़ा देखकर मान जाएँ कि आप अल-मसीह हैं। वही जिससे नजात का यह ज़माना शुरू हो जाएगा।

लेकिन ईसा मसीह कुछ सख़्ती से फ़रमाता है, "ऐ ख़ातून, मेरा आपसे क्या वास्ता? मेरा वक़्त अभी नहीं आया।"

► **इसका क्या मतलब है कि मेरा वक़्त अभी नहीं आया?**

ईसा मसीह ज़रूर ज़ाहिर करेगा कि वह अल-मसीह है। लेकिन अब नहीं। पहले उसे बहुत कुछ करना है। आख़िर में वह हमारी सज़ा अपने ऊपर उठाकर मर जाएगा और तीसरे दिन जी उठेगा।

जो कुछ वह तुमको बताए

► **क्या मरियम बीबी नाराज़ हो जाती है? क्या वह मायूस हो जाती है?**

नहीं। वह नौकरों को बताती है, "जो कुछ वह तुमको बताए वह करो।" वह उन्हें नहीं बताती कि क्या करना है। वह कहती है कि जो कुछ वही तुमको बताए। वह मान जाती है कि मेरा ईसा मसीह पर कोई इख़्तियार, कोई क़ब्ज़ा नहीं है। उसी की मरज़ी पूरी हो जाए। जो भी वह चाहे हो जाए। साथ साथ वह जानती है कि ईसा मसीह हमेशा हमारी सुनता है। शायद वह वह कुछ नहीं करेगा जो हम चाहते हैं। लेकिन वह कुछ करेगा ज़रूर। इसलिए मरियम बीबी नौकरों से बात करती है।

वहाँ पानी के 6 बड़े बड़े मटके पड़े थे। यह पानी वुज़ू के लिए इस्तेमाल होता था। पत्थर के यह मटके काफ़ी बड़े थे। हर एक में तक़रीबन 100 लिटर की गुंजाइश

थी। अब ईसा मसीह ने फ़रमाया, "मटकों को पानी से भर दो।" नौकरों ने ऐसा ही करके उन्हें लबालब भर दिया।

फिर मसीह ने फ़रमाया, "अब कुछ निकालकर ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाओ।"

► **क्या? पानी निकालकर इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाना? क्यों? क्या वह उन्हें पागल नहीं ठहराएगा?**

ज़रूर। लेकिन ईसा मसीह से एक ऐसा इख़्तियार टपक रहा था कि वह मान गए। वह पानी निकालकर ज़ियाफ़त चलानेवाले के पास ले गए।

► **अब क्या हुआ?**

पानी को चखते ही वह खीज गया। बोला, "हर मेज़बान पहले अच्छी क़िस्म की मै पीने के लिए पेश करता है। फिर जब लोगों को नशा चढ़ने लगे तो वह दो नंबर की मै पिलाने लगता है। लेकिन आपने अच्छी मै अब तक रख छोड़ी है।"

पानी बेहतरीन मै में बदल गया था।

हम कह चुके थे कि मै पानी से मिलाई जाती थी। इसलिए शादी मनानेवाले इतनी जल्दी से नशे में नहीं आ सकते थे। इंतज़ाम चलानेवाले का मतलब यह नहीं था कि सब लोग नशे में धुत हैं। वह कहना चाहता है कि लोग जी भरकर खा-पी चुके हैं, और इस वक़्त बेहतरीन मै पेश करना बेकार है।

शरीअत का पानी या मसीह की इलाही शरबत?

► **पानी के यह बड़े मटके किस काम के लिए इस्तेमाल होते थे?**

यह दीनी ग़ुस्ल यानी वुज़ू के लिए इस्तेमाल होते थे।

► **इससे कलाम हमें क्या बताना चाहता है?**

वुज़ू तौरेत का एक निशान है। इस पानी से इनसान अपने आपको ख़ुदा की नज़र में मंज़ूर करने की कोशिश करता है। मगर अब यह पानी बदल गया था। वह एक ख़ुशी और ताक़त दिलानेवाली शरबत में बदल गया था। यह उस आबे-हयात की तरफ़ इशारा है जो सिर्फ़ अल-मसीह से मिलता है। जिसे पीकर इनसान अबदी ज़िंदगी पाता है।

यही है शरीअत और इंजील में फ़रक़।

इनसान पानी यानी अपनी कोशिशों से मंज़ूर नहीं हो सकता। जितनी भी जिद्दो-जहद वह करे वह अपने गुनाहों को छोड़ नहीं सकता। सिर्फ़ एक उसे मंज़ूर करा सकता है यानी अल-मसीह। इसका निशान यह इलाही शरबत है। जो इसका मज़ा ले वह आख़िरी ज़ियाफ़त में शामिल होगा, वह ख़ुदा का फ़रज़ंद कहलाएगा।

शरीअत ख़राब नहीं है। वह इनसान को बताती है कि उसे क्या करना और क्या छोड़ना है। कि किस तरह राहे-मुस्तक़ीम पर चलना है। वह गुनाह करने की सज़ाएँ भी फ़रमाती है। शरीअत से हमको पता चलता है कि ख़ुदा की क्या मरज़ी है। और उस पर अमल करने से ख़ुदा हमें बरकत देता है।

शरीअत तो अच्छी है। मसला शरीअत नहीं है बल्कि इनसान। इनसान अपने गुनाहों में जकड़ा रहता है और अपनी कोशिशों से आज़ाद हो ही नहीं सकता। यही वजह है कि अल-मसीह आया। ताकि हमें गुनाहों से आज़ादी दिलाए। यों ख़ुदा हिज़क़ियेल नबी के वसीले से फ़रमाता है,

> तब मैं तुम्हें नया दिल बख़्शकर तुममें नई रूह डाल दूँगा। मैं तुम्हारा संगीन दिल निकालकर तुम्हें गोश्त-पोस्त का नरम दिल अता करूँगा। क्योंकि मैं अपना ही रूह तुममें डालकर तुम्हें इस क़ाबिल बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायात की पैरवी और मेरे अहकाम पर ध्यान से अमल कर सको। (हिज़क़ियेल 36:26-27)

जब मसीह इनसान के दिल में बसता है तो उसका पथरीला दिल नरम हो जाता है और वह तबदील होने लगता है। तब वह इस दुनिया में रहते हुए भी इलाही शरबत का मज़ा ले लेकर ख़ुशियाँ मनाने लगता है।

► **क्या आप ख़ुशी और ताक़त दिलानेवाली इस शरबत का मज़ा ले चुके हैं?**

इंजील, यूहन्ना 2:1-12

तीसरे दिन गलील के गाँव क़ाना में एक शादी हुई। ईसा की माँ वहाँ थी और ईसा और उसके शागिर्दों को भी दावत दी गई थी। मै ख़त्म हो गई तो ईसा की माँ ने उससे कहा, “उनके पास मै नहीं रही।”

ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, मेरा आपसे क्या वास्ता? मेरा वक़्त अभी नहीं आया।”

लेकिन उसकी माँ ने नौकरों को बताया, “जो कुछ वह तुमको बताए वह करो।” वहाँ पत्थर के छः मटके पड़े थे जिन्हें यहूदी दीनी ग़ुस्ल के लिए इस्तेमाल करते थे। हर एक में तक़रीबन 100 लिटर की गुंजाइश थी। ईसा ने नौकरों से कहा, “मटकों को पानी से भर दो।” चुनाँचे उन्होंने उन्हें लबालब भर दिया। फिर उसने कहा, “अब कुछ निकालकर ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले के पास ले जाओ।” उन्होंने ऐसा ही किया। ज्योंही ज़ियाफ़त का इंतज़ाम चलानेवाले ने वह पानी चखा जो मै में बदल गया था तो उसने दूल्हे को बुलाया। (उसे मालूम न था कि यह कहाँ से आई है, अगरचे उन नौकरों को पता था जो उसे निकालकर लाए थे।) उसने कहा, “हर मेज़बान पहले अच्छी क़िस्म की मै पीने के लिए पेश करता है। फिर जब लोगों को नशा चढ़ने लगे तो वह निसबतन घटिया क़िस्म की मै पिलाने लगता है। लेकिन आपने अच्छी मै अब तक रख छोड़ी है।”

यों ईसा ने गलील के क़ाना में यह पहला इलाही निशान दिखाकर अपने जलाल का इज़हार किया। यह देखकर उसके शागिर्द उस पर ईमान लाए।

इसके बाद वह अपनी माँ, अपने भाइयों और अपने शागिर्दों के साथ कफ़र्नहूम को चला गया। वहाँ वह थोड़े दिन रहे।

सच्चा मक़दिस

फ़सह की ईद क़रीब आ गई। यह एक बहुत अहम ईद थी।

► **इस ईद पर यहूदी क्या मनाते थे?**

यह कि ख़ुदा ने इसराईलियों को मिसर की ग़ुलामी से छुड़ाया।
उस वक़्त ख़ुदा ने फ़रमाया था कि इसराईली एक लेले का ख़ून दरवाज़े के चौखटों पर लगाएँ। जिसने ऐसा किया उसके सब घरवाले ज़िंदा रहे। जिसने ऐसा न किया उसका पहलौठा मर गया। रात के वक़्त मिसरियों में बड़ा हल्ला मच गया, क्योंकि जेल के क़ैदी से लेकर फ़िरौन तक उनके तमाम पहलौठे मर गए थे। तब मिसर का बादशाह इसराईलियों को छोड़ने पर मजबूर हुआ।

लेले के ख़ून से नजात

एक लेले के ख़ून ने उन्हें ख़ुदा के ग़ज़ब से बचाया।
एक लेला नजात का बाइस बन गया।
यह लेला सिर्फ़ यरूशलम के मक़दिस में ज़बह किया जा सकता था। इस मौक़े पर ईसा मसीह अपने शागिर्दों के साथ यरूशलम पहुँच गया।

► **जाने का क्या मक़सद था? वह वहाँ क्या सिखाना चाहता था?**

मक़दिस में मंडी

जब वह बैतुल-मुक़द्दस पहुँचे तो क्या देखते हैं, बैरूनी सहन में बड़ी मंडी लगी हुई है। उसमें लातादाद गाय-बैल, भेड़ें और कबूतर बिक रहे हैं। एक तरफ़ मेज़ों की क़तार लगी हुई है। वहाँ सर्राफ़ बैठे आम सिक्के ख़ास सिक्कों में बदल रहे हैं। मामूल के सिक्के मना थे, इसलिए जो आता था उसे अपने सिक्के इन ख़ास सिक्कों में बदलना था।
हर तरफ़ डकारते गाय-बैल, मिमियाती भेड़-बकरियाँ, ग़ूँ ग़ूँ करते कबूतर, मोल तोल में लगे सौदागरों की चीख़-पुकार।

यह कुछ देखते ही ईसा मसीह आपे से बाहर हुआ। वह रस्सियों का कोड़ा बनाकर सब पर टूट पड़ा। उसने भेड़ों और गाय-बैलों को बाहर हाँक दिया, पैसे बदलनेवालों के सिक्के बिखेर दिए और उनकी मेज़ें उलट दीं। कबूतर बेचनेवालों को उसने कहा, "इसे ले जाओ। मेरे बाप के घर को मंडी में मत बदलो।"

मक़दिस : पाक मक़ाम

► **वह क्यों इतने ग़ुस्से हुआ?**

बैतुल-मुक़द्दस वह मुक़द्दस जगह था जहाँ इनसान ख़ुदा के हुज़ूर आकर उसकी परस्तिश कर सकता था। उस ख़ुदा की जो न सिर्फ़ अज़ीम है बल्कि जो पाक भी है। जिसके सामने गुनाहगार इनसान क़ायम नहीं रह सकता। उसे मंडी में बदलना सख़्त गुनाह था।

इस दुनिया में हर तरफ़ दीनी मंडियाँ लगी रहती हैं। जहाँ लोग पूजा और परस्तिश करते हैं वहाँ पैसे कमाना आसान है। जो आम बाज़ार में पैसा गिन गिनकर सौदा मोल लेता है वह दीन के मामलों में अंधा-धुंद देता है।

► **क्यों?**

ज़ाहिर है, कौन अपने देवता या ख़ुदा को नाराज़ करना चाहता है? इस बिना पर मज़हब को पेशा बना दिया गया है।

मक़दिस : ख़ुदा के हुज़ूर आने का मक़ाम

यहाँ ईसा मसीह ने न बैतुल-मुक़द्दस कहा न मक़दिस।

► **उसने क्या कहा?**

मेरे बाप का घर।

► **क्या ख़ुदा वहाँ बसता था?**

नहीं। जिसने सब कुछ ख़लक़ किया वह न बैतुल-मुक़द्दस न किसी और जगह रहता है। मगर यह घर उसका निशान था, वह मक़ाम जिससे ज़ाहिर होता था कि वह अपनी क़ौम के साथ है। जहाँ उसके इमाम उसे क़ुरबानियाँ पेश करते थे। इसलिए ईमानदार बड़ी ईदों पर जहाँ मुमकिन था वहाँ आया करते थे।

मक़दिस : बाप का मक़ाम

► **मेरे बाप का घर। मेरे बाप कहकर वह क्या कहना चाहता है?**

मेरा ख़ुदा बाप से ख़ास रिश्ता है, फ़रज़ंद का पाक रिश्ता। यही वजह है कि वह इतने ग़ुस्से हुआ।

बाप का घर मेरा घर भी है। और इसी को तुमने मंडी में बदल डाला है। परस्तिश और दुआ की जगह मोल तोल की मंडी बन गई है। ख़ुदा इसका मरकज़ नहीं रहा। उसकी तौहीन हो रही है।

मसीह सच्ची परस्तिश क़ायम करेगा

नबियों ने बार बार इस तौहीन का ज़िक्र किया था। यों यरमियाह नबी ने फ़रमाया था,

> क्या तुम्हारे नज़दीक यह मकान जिस पर मेरे ही नाम का ठप्पा लगा है डाकुओं का अड्डा बन गया है? ख़बर-दार! यह सब कुछ मुझे भी नज़र आता है। (यरमियाह 7:11)

नबियों ने इससे बढ़कर साफ़ बताया था कि इनसान अपनी कोशिशों से सच्ची परस्तिश कर ही नहीं सकता। इसलिए एक वक़्त आएगा जब ख़ुदा ख़ुद, अल-मसीह के ज़रीए यह सच्ची परस्तिश क़ायम करेगा। यों ज़करियाह नबी सदियों पहले पेशगोई करता है कि उस वक़्त सौदाबाज़ी ख़त्म हो जाएगी।

> उस दिन से रब्बुल-अफ़वाज के घर में कोई भी सौदागर पाया नहीं जाएगा। (ज़करियाह 14:21)

यसायाह नबी ने भी इस मसीहाना ज़माने की पेशगोई की थी,

> मेरा घर तमाम क़ौमों के लिए दुआ का घर कहलाएगा। (यसायाह 56:7)

ग़रज़, ईसा मसीह अपने अमल और कलाम से ज़ाहिर कर रहा है कि वह अल-मसीह है जो सच्ची परस्तिश का यह ज़माना शुरू करने आया है।

अपनी ग़लती के लिए अंधे

► **दूसरे लोग यह देखकर क्या करते हैं?**

वह पूछते हैं कि "आप हमें क्या इलाही निशान दिखा सकते हैं ताकि हमें यक़ीन आए कि आपको यह करने का इख़्तियार है?"

► **क्या आपने कुछ महसूस किया?**

उन्होंने सोचा तक नहीं कि यह काम ग़लत है। वह समझते हैं कि जो ज़्यादा ताक़त दिखाए वही हक़ में है।

► **क्या वह कलाम से वाक़िफ़ नहीं थे? क्या उनको नहीं पता था कि मंडी का यह इंतज़ाम ग़लत है?**

ज़रूर। वह पाक नविश्तों से वाक़िफ़ थे। लेकिन इस दुनिया में कौन पूछता है कि क्या ग़लत और क्या सही है? हर एक अपने नफ़ा और फ़ायदे के पीछे लगा रहता है। ऐसे लोग किसी की बात सिर्फ़ इस सूरत में मानते हैं कि वह उनसे ज़्यादा ज़बरदस्त हो।

इसी लिए वह इख़्तियार का सवाल छेड़ते हैं। कहते हैं कि कोई इलाही निशान दिखाओ जिससे पता चले कि तुम ज़्यादा ताक़तवर और ज़बरदस्त हो।

इनसान मक़दिस को पाक नहीं रख सकता

► **ईसा मसीह क्या जवाब देता है? क्या वह कोई शानदार मोजिज़ा दिखाता है?**

नहीं। वह एक पहेली पेश करता है : "इस मक़दिस को ढा दो तो मैं इसे तीन दिन के अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा।"

पूछनेवाले चौंक उठे। वह बोले, "बैतुल-मुक़द्दस को तामीर करने में 46 साल लग गए थे और आप इसे तीन दिन में तामीर करना चाहते हैं?"

बैतुल-मुक़द्दस इतनी मेहनत से तैयार हो गया है, और अब भी तामीर का काम जारी है। यह किस तरह हो सकता है कि आप उसे तीन दिन में तामीर कर सकें?

लेकिन ईसा मसीह कुछ और कहना चाहता है। पहले, इनसान मक़दिस का यह इंतज़ाम पाक रखने में फ़ेल है। यह इस मंडी से ज़ाहिर हो रहा है। इसलिए जल्द ही एक वक़्त आएगा जब उसे ढा दिया जाएगा। और कुछ सालों बाद ऐसा ही हुआ। रोमियों ने इस शानदार मक़ाम का सत्यानास किया।

इससे ख़ुदा ज़ाहिर करेगा कि इनसान उसे पाक नहीं रख सकता। इनसान अपनी कोशिशों से ख़ुदा तक नहीं पहुँच सकता। इसके लिए यह दुनियावी मक़दिस काफ़ी नहीं है।

लेकिन यहूदी एक और मक़दिस भी ढा देंगे : अल-मसीह को जो ख़ुदा तक का सच्चा रास्ता है। वह उसे रद करके सलीब पर चढ़ाएँगे।

मसीह ही सच्चा मक़दिस और लेला है

लेकिन यह दूसरा मक़दिस क़ब्र में नहीं रहेगा बल्कि जी उठेगा। और यह इलाही मक़दिस इनसान का अपने साथ रिश्ता क़ायम करेगा। जिस काम में इनसान ख़ुद फ़ेल था उसे वह ख़ुद सरंजाम देगा। वही जो सच्चा मक़दिस है। जो क़ुरबानी का सच्चा लेला है। जो हमारी ख़ातिर मुआ और जी उठा। जिससे हमें अपने गुनाहों से नजात मिली है।

बैतुल-मुक़द्दस को ढा दिया गया और आज तक नए सिरे से तामीर नहीं हुआ। लेकिन मसीह जी उठा। वह एक पाक और अबदी मक़दिस है जिसके वसीले से हम ख़ुदा के हुज़ूर आ सकते हैं। जिससे हम उसके फ़रज़ंद बन सकते हैं। और यह मक़दिस किसी मक़ाम पर महदूद नहीं रहता। हम हर जगह इस मक़दिस के ज़रीए ख़ुदा से राबता कर सकते हैं। हर जगह हम ख़ुदा की पाक परस्तिश कर सकते हैं।

► **आपका क्या मक़दिस है? ख़ुदा तक पहुँचने का आपका क्या पाक रास्ता है? क्या आप दुनिया की किसी दीनी मंडी में उलझे हुए हैं? या मसीह आपका सच्चा मक़दिस है?**

इंजील, यूहन्ना 2:13-22

जब यहूदी ईदे-फ़सह क़रीब आ गई तो ईसा यरूशलम चला गया। बैतुल-मुक़द्दस में जाकर उसने देखा कि कई लोग उसमें गाय-बैल, भेड़ें और कबूतर बेच रहे हैं। दूसरे मेज़ पर बैठे ग़ैरमुल्की सिक्के बैतुल-मुक़द्दस के सिक्कों में बदल रहे हैं।

फिर ईसा ने रस्सियों का कोड़ा बनाकर सबको बैतुल-मुक़द्दस से निकाल दिया। उसने भेड़ों और गाय-बैलों को बाहर हाँक दिया, पैसे बदलनेवालों के सिक्के बिखेर दिए और उनकी मेज़ें उलट दीं। कबूतर बेचनेवालों को उसने कहा, “इसे ले जाओ। मेरे बाप के घर को मंडी में मत बदलो।”

यह देखकर ईसा के शागिर्दों को कलामे-मुक़द्दस का यह हवाला याद आया कि “तेरे घर की ग़ैरत मुझे खा जाएगी।”

यहूदियों ने जवाब में पूछा, “आप हमें क्या इलाही निशान दिखा सकते हैं ताकि हमें यक़ीन आए कि आपको यह करने का इख़्तियार है?”

ईसा ने जवाब दिया, “इस मक़दिस को ढा दो तो मैं इसे तीन दिन के अंदर दुबारा तामीर कर दूँगा।”

यहूदियों ने कहा, “बैतुल-मुक़द्दस को तामीर करने में 46 साल लग गए थे और आप इसे तीन दिन में तामीर करना चाहते हैं?”

लेकिन जब ईसा ने “इस मक़दिस” के अलफ़ाज़ इस्तेमाल किए तो इसका मतलब उसका अपना बदन था। उसके मुरदों में से जी उठने के बाद उसके शागिर्दों को उसकी यह बात याद आई। फिर वह कलामे-मुक़द्दस और उन बातों पर ईमान लाए जो ईसा ने की थीं।

जो नए सिरे से पैदा हुआ हो

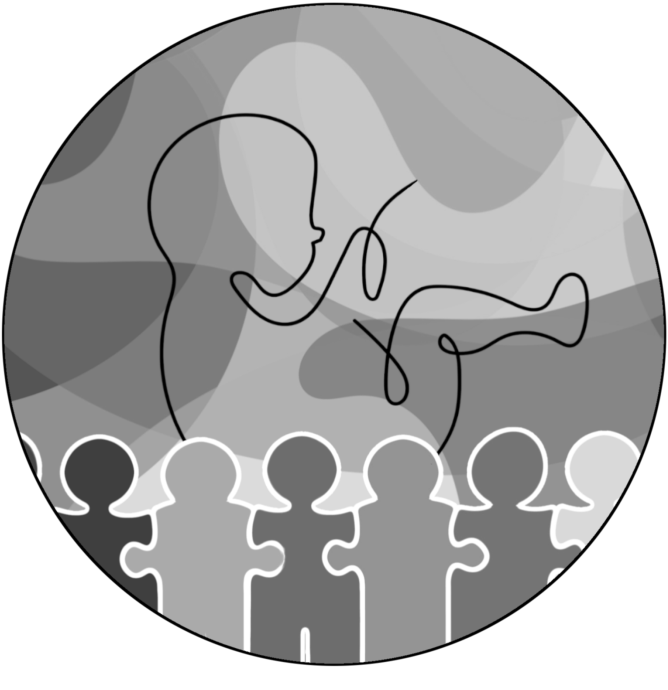

फ़लस्तीन में एक इज़्ज़तदार आदमी बनाम नीकुदेमुस रहता था। एक रात वह ईसा मसीह के पास आया। उसने कहा, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप ऐसे उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं।"

सच्चाई जानने की प्यास

नीकुदेमुस एक दिलचस्प आदमी है। वह एक बड़ा आलिम है। वह जानता है कि अल-मसीह आनेवाला है। और वह उसे देखने के लिए तड़प रहा है। अब ईसा अल-मसीह सामने आया है। उसकी बातें और काम ज़ाहिर करते हैं कि वह ख़ुदा की तरफ़ से है।

परवाना बत्ती से खिंच जाता है। इसी तरह जिसके अंदर सच्चाई जानने की प्यास है वह ईसा मसीह से खिंच जाता है। यही नीकुदेमुस का हाल है। कोई चीज़ मसीह में है जो उसे खींच रही है। इसलिए नीकुदेमुस उसके पास पहुँचता है।

► **क्या आपके अंदर सच्चाई जानने की प्यास है?**

जो नए सिरे से पैदा हुआ हो

► **ईसा मसीह जवाब में क्या कहता है?**

वह एक चौंका देनेवाली बात फ़रमाता है। "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही को देख सकता है जो नए सिरे से पैदा हुआ हो।"

► **क्या आपने कुछ नोट किया?**

नीकुदेमुस, ईसा मसीह की बड़ी तारीफ़ करता है। जवाब में मसीह एक बिलकुल अलग बात छेड़ता है।

► **क्यों?**

उसे नीकुदेमुस का प्यासा दिल साफ़ नज़र आता है। वह जानता है कि क्या चीज़ इस प्यास को बुझा सकती है। और यह चीज़ नए सिरे से पैदा होने का अमल है।

तैरूँगा या डूब जाऊँगा?

नीकुदेमुस पाक नविश्तों की गहरी गहरी बातें जानता है। अब वह सोच रहा है कि यह आदमी कौन है जो ईसा कहलाता है। वह न सिर्फ़ एक बड़ा आलिम है। उससे बड़े मोजिज़े भी हो रहे हैं। क्या यह वह नजात देनेवाला है जिसके इंतज़ार में हम हैं? नीकुदेमुस उलझन में पड़ा है। अब वह रात के वक़्त आ गया है ताकि सुकून से ईसा मसीह की बातें सुन ले। वह महसूस कर रहा है कि मैं नहर के किनारे पर खड़ा हूँ। अब सवाल है कि क्या मैं ग़ोता लगाऊँ या नहीं? अगर लगाया तो क्या होगा? तैरूँगा या डूब जाऊँगा?

► **जो भी ईसा मसीह के हुज़ूर आता है उसे इस सवाल का सामना करना पड़ता है : तैरूँगा या डूब जाऊँगा?**

हमारी मनज़िल : आसमान की बादशाही

मसीह उसकी परेशानी दूर नहीं करता बल्कि उसे मज़ीद उलझन में डाल देता है : तुझे नए सिरे से पैदा होना है अगर तू आसमान की बादशाही देखना चाहता है।

► **यह आसमान की बादशाही क्या चीज़ है?**

पाक नविश्ते बता चुके थे कि आसमान की बादशाही आनेवाली है। मतलब है ख़ुदा की बादशाही आनेवाली है। उस वक़्त उसका दुनिया पर पूरा राज होगा। तब न सिर्फ़ गुनाहगारों बल्कि गुनाह को ख़त्म किया जाएगा। यह एक नई दुनिया होगी जिसमें न गुनाह होगा, न जंग और न मौत।

यहूदी इस बादशाही के इंतज़ार में थे। नीकुदेमुस भी यह बादशाही देखने का प्यासा है। मगर मसीह फ़रमा रहा है कि तुम इस बादशाही को सिर्फ़ इस सूरत में देख सकते हो कि तुम नए सिरे से पैदा हुए हो।

► **यह कितनी अजीब बात है। नए सिरे से पैदा होने का क्या मतलब है?**

बड़े आलिम नीकुदेमुस को समझ नहीं आती बात। वह मसीह को उकसाने के लिए पूछता है, “क्या मतलब? बूढ़ा आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता है? क्या वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जाकर पैदा हो सकता है?”

हमारा वसीला : पानी और रूह

ईसा मसीह जवाब देता है, “मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकता है जो पानी और रूह से पैदा हुआ हो।”

पानी और रूह? नीकुदेमुस को समझ नहीं आती कि मसीह क्या कहना चाहता है।

► **क्या आपको पता है?**

ख़ुदा ने हिज़क़ियेल नबी से सदियों पहले फ़रमाया था कि

> मैं तुम पर साफ़ पानी छिड़कूँगा तो तुम पाक-साफ़ हो जाओगे। हाँ, मैं तुम्हें तमाम नापाकियों और बुतों से पाक-साफ़ कर दूँगा।
> तब मैं तुम्हें नया दिल बख़्शकर तुममें नई रूह डाल दूँगा। मैं तुम्हारा संगीन दिल निकालकर तुम्हें गोश्त-पोस्त का नरम दिल अता करूँगा। क्योंकि मैं अपना ही रूह तुममें डालकर तुम्हें इस क़ाबिल बना दूँगा कि तुम मेरी हिदायात की पैरवी और मेरे अहकाम पर ध्यान से अमल कर सको।
> (हिज़क़ियेल 36:25-27)

मतलब साफ़ है : पहले, ख़ुदा अल-मसीह के वसीले से अपने लोगों को पानी से पाक-साफ़ करेगा। दूसरे, वह उनके सख़्त दिलों में नई रूह डाल देगा। पानी पाक हो जाने का निशान है जबकि रूह इलाही ज़िंदगी का निशान है जिससे इनसान ख़ुदा की राहों पर चल सकता है।

एक ही काम के दो पहलू हैं : जब हम ईसा मसीह पर ईमान लाते हैं तब वह हमें पाक भी करता है और हमारे अंदर अपना रूह डाल देता है जो हमें तबदील कर देता है।

► **तो फिर नई पैदाइश का क्या मतलब है?**

पानी और रूह ऐसा इलाही काम है जिससे इनसान पूरे तौर पर बदल जाता है।

► **इसकी क्या ज़रूरत है?**

इनसान अपनी गुनाहगार हालत की वजह से ख़ुदा के हुज़ूर नहीं आ सकता न जन्नत में दाख़िल हो सकता है। सिर्फ़ वह दाख़िल हो सकता है जो पूरे तौर पर पाक-साफ़ हो जाता है, जिसका दिल एकदम बदल गया है।

रूह का अनदेखा काम

► **लेकिन यह नई पैदाइश किस तरह ज़ाहिर होती है?**

ईसा मसीह हवा की मिसाल देता है : हम हवा को न देख सकते न उसे कंट्रोल कर सकते हैं। वह अपनी मरज़ी से चलती है। तब हम उसे महसूस करते हैं।

पेड़ों के पत्ते हिलते हैं। पौधे हवा में लहलहाते हैं। ख़ुदा का रूह भी इसी तरह है। वह अपनी मरज़ी से किसी के दिल में आकर उसे तबदील करता है। उसे देखा नहीं जाता लेकिन उसके काम से इनसान ख़ुदा की क़ुरबत में चलने लगता है।

हमारी राह : मसलूब मसीह

► **हम यह नई ज़िंदगी किस तरह पा सकते हैं?**

ईसा मसीह खंबे पर लटके साँप की मिसाल पेश करता है : जब इसराईली अभी रेगिस्तान में फिर रहे थे तो एक जगह पर वह बुड़बुड़ाने लगे। नतीजतन बहुतों को ज़हरीले साँपों से डसा गया। जब मूसा ने उनकी सिफ़ारिश की तो ख़ुदा ने फ़रमाया कि "एक साँप बनाकर उसे खंबे से लटका दे। जो भी डसा गया हो वह उसे देखकर बच जाएगा।"

जिसने खंबे पर लटके साँप पर नज़र की वह बच गया।

मसीह को भी खंबे से लटका दिया गया। जो उस पर नज़र करे वह अबदी मौत से बच जाएगा।

तब ईसा मसीह एक बात सुनाता है जो एक जुमले में इंजील की पूरी ख़ुशख़बरी पेश करती है :

> क्योंकि अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। क्योंकि अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को इसलिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया को मुजरिम ठहराए बल्कि इसलिए कि वह उसे नजात दे।
> (यूहन्ना 3:16)

नूर के पास आओ

► **तो जो ख़ुशी का यह पैग़ाम क़बूल नहीं करता उसका क्या बनेगा?**

ईसा मसीह फ़रमाता है : अल्लाह का नूर इस दुनिया में आया। [...] जो सच्चा काम करता है वह नूर के पास आता है।

ईसा मसीह अल्लाह का नूर है। जो उसके पास आता है उस में यह नूर चमकने लगता है। और यह नूर उस के अच्छे कामों से ज़ाहिर हो जाता है। लेकिन जो अंधेरे में रहना पसंद करता है वह बुरा काम करता है। उसके अपने काम उसे

मुजरिम ठहराते हैं। इस हालत में वह आसमान की बादशाही में दाख़िल नहीं हो सकता।

जो नए सिरे से पैदा हुआ हो उसमें पाक रूह बसता है और वह मसीह को तकता रहता है। उसका दिल उसके नूर से भरा रहता है। वह इस दुनिया में रहते हुए अबदी ज़िंदगी पाता है।

► **क्या मुझे नई पैदाइश मिल चुकी है? क्या उसका रूह मुझमें बसता है और मैं मसीह को तकता रहता हूँ? क्या उसका नूर मेरी ज़िंदगी में चमक-दमक रहा है?**

इंजील, यूहन्ना 3:1-21

फ़रीसी फ़िरक़े का एक आदमी बनाम नीकुदेमुस था जो यहूदी अदालते-आलिया का रुकन था। वह रात के वक़्त ईसा के पास आया और कहा, "उस्ताद, हम जानते हैं कि आप ऐसे उस्ताद हैं जो अल्लाह की तरफ़ से आए हैं, क्योंकि जो इलाही निशान आप दिखाते हैं वह सिर्फ़ ऐसा शख़्स ही दिखा सकता है जिसके साथ अल्लाह हो।"

ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही को देख सकता है जो नए सिरे से पैदा हुआ हो।"

नीकुदेमुस ने एतराज़ किया, "क्या मतलब? बूढ़ा आदमी किस तरह नए सिरे से पैदा हो सकता है? क्या वह दुबारा अपनी माँ के पेट में जाकर पैदा हो सकता है?"

ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुझे सच बताता हूँ, सिर्फ़ वह शख़्स अल्लाह की बादशाही में दाख़िल हो सकता है जो पानी और रूह से पैदा हुआ हो। जो कुछ जिस्म से पैदा होता है वह जिस्मानी है, लेकिन जो रूह से पैदा होता है वह रूहानी है। इसलिए तू ताज्जुब न कर कि मैं कहता हूँ, 'तुम्हें नए सिरे से पैदा होना ज़रूर है।' हवा जहाँ चाहे चलती है। तू उसकी आवाज़ तो सुनता है, लेकिन यह नहीं जानता कि कहाँ से आती और कहाँ को जाती है। यही हालत हर उस शख़्स की है जो रूह से पैदा हुआ है।"

नीकुदेमुस ने पूछा, “यह किस तरह हो सकता है?”

ईसा ने जवाब दिया, “तू तो इसराईल का उस्ताद है। क्या इसके बावुजूद भी यह बातें नहीं समझता? मैं तुझको सच बताता हूँ, हम वह कुछ बयान करते हैं जो हम जानते हैं और उसकी गवाही देते हैं जो हमने ख़ुद देखा है। तो भी तुम लोग हमारी गवाही क़बूल नहीं करते। मैंने तुमको दुनियावी बातें सुनाई हैं और तुम उन पर ईमान नहीं रखते। तो फिर तुम क्योंकर ईमान लाओगे अगर तुम्हें आसमानी बातों के बारे में बताऊँ? आसमान पर कोई नहीं चढ़ा सिवाए इब्ने-आदम के, जो आसमान से उतरा है।

और जिस तरह मूसा ने रेगिस्तान में साँप को लकड़ी पर लटकाकर ऊँचा कर दिया उसी तरह ज़रूर है कि इब्ने-आदम को भी ऊँचे पर चढ़ाया जाए, ताकि हर एक को जो उस पर ईमान लाएगा अबदी ज़िंदगी मिल जाए। क्योंकि अल्लाह ने दुनिया से इतनी मुहब्बत रखी कि उसने अपने इकलौते फ़रज़ंद को बख़्श दिया, ताकि जो भी उस पर ईमान लाए हलाक न हो बल्कि अबदी ज़िंदगी पाए। क्योंकि अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को इसलिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया को मुजरिम ठहराए बल्कि इसलिए कि वह उसे नजात दे।

जो भी उस पर ईमान लाया है उसे मुजरिम नहीं क़रार दिया जाएगा, लेकिन जो ईमान नहीं रखता उसे मुजरिम ठहराया जा चुका है। वजह यह है कि वह अल्लाह के इकलौते फ़रज़ंद के नाम पर ईमान नहीं लाया। और लोगों को मुजरिम ठहराने का सबब यह है कि गो अल्लाह का नूर इस दुनिया में आया, लेकिन लोगों ने नूर की निसबत अंधेरे को ज़्यादा प्यार किया, क्योंकि उनके काम बुरे थे। जो भी ग़लत काम करता है वह नूर से दुश्मनी रखता है और उसके क़रीब नहीं आता ताकि उसके बुरे कामों का पोल न खुल जाए। लेकिन जो सच्चा काम करता है वह नूर के पास आता है ताकि ज़ाहिर हो जाए कि उसके काम अल्लाह के वसीले से हुए हैं।”

दूल्हे का दोस्त

एक दिन यहया नबी के शागिर्द बेचैनी से अपने उस्ताद के पास आए। कहने लगे, "उस्ताद, जिसके बारे में आपने गवाही दी कि वह मसीह है, वह भी लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। अब सब लोग उसी के पास जा रहे हैं।"

► **जब यहया बपतिस्मा देता था तो वह क्या करता था?**

वह उन्हें पानी में डुबो देता था।

► **बपतिस्मे का क्या मक़सद था?**

बपतिस्मा लेनेवाला इससे तसलीम करता था कि मैं गुनाहगार हूँ। अब से मैं बुरे ख़यालों और कामों से दूर रहकर आनेवाले मसीह के लिए तैयार रहना चाहता हूँ।

► **यहया नबी के शागिर्द क्यों इतने परेशान हैं?**

ज़्यादा लोग ईसा मसीह के पास जा रहे हैं। यह कैसी बात है? इसका क्या मतलब है? क्या वह हमारा मुक़ाबला करना चाहता है? क्या वह हमारी ख़िदमत ख़त्म करना चाहता है? और फिर हमारे उस्ताद का क्या बनेगा?

ख़ुदा से ही सब कुछ मिलता है

► **क्या यहया नबी नाराज़ हुआ? क्या वह मायूस हुआ?**

नहीं। उसने बड़ी हलीमी से जवाब दिया : "हर एक को सिर्फ़ वह कुछ मिलता है जो उसे आसमान से दिया जाता है।"

कितना दिलचस्प जवाब।

► **यहया नबी क्या कहना चाहता है?**

सब कुछ अल्लाह तआला के हाथ से मिलता है। वही सब कुछ देता है। फिर मुझे बेचैन होने की क्या ज़रूरत है।

► **क्या यहया यह कहते हुए ख़ुश या दुखी है?**

वह ख़ुश है।

हम भी बहुत मौक़ों पर कहते हैं कि ऊपरवाले की मरज़ी।

► **अकसर औक़ात जब हम यह कहते हैं तो क्या हम ख़ुश या दुखी होते हैं?** अकसर जब हम यह कहते हैं तो ख़ुश नहीं होते। हम मायूस होते हैं कि ख़ुदा ने वह होने नहीं दिया जो हम चाहते हैं। कहने का मतलब है, चलो, मैं मजबूर हूँ। ख़ुश नहीं हूँ मगर क्या करूँ?

लेकिन यहया मायूस नहीं है। वह कंधे उचकाकर नहीं कहता कि चलो ख़ुदा की मरज़ी। बिलकुल नहीं। वह ख़ुश है।

मेरी ख़िदमत बस तैयारी है

ख़ुशी की लहर यहया की हर बात से छलकती है : मैंने तो कहा था कि मैं मसीह नहीं हूँ। मुझे तो सिर्फ़ उसके आगे आगे भेजा गया है। मैं सिर्फ़ उसकी राह को तैयार करने आया हूँ। जिस तरह यसायाह नबी ने पेशगोई की थी,

> रेगिस्तान में रब की राह तैयार करो! बयाबान में हमारे ख़ुदा का रास्ता सीधा बनाओ। [...] तब अल्लाह का जलाल ज़ाहिर हो जाएगा, और तमाम इनसान मिलकर उसे देखेंगे।
> (यसायाह 43:3)

मेरा बस एक ही काम है : इस राह को तैयार करना। जब ख़ुदा का जलाल मसीह में ज़ाहिर हो गया है तो मुझे मायूस होने की क्या ज़रूरत है? जो ख़िदमत मुझे दी गई है वह मुकम्मल हो गया है। मैंने रास्ता तैयार कर रखा है और बस। मेरी तरफ़ से कोई कमी नहीं रही।

मसीह का पैरोकार हमेशा ऐसा ही सोचेगा। असल उस्ताद और बादशाह वही है। मेरा काम बस उसकी राह की तैयारी करनी है। असल काम वही करता है। वही दिलों के क़िलों को तोड़कर अपना राज क़ायम करता है। हम इनसानों का इसमें कोई हाथ नहीं है।

दूल्हे का दोस्त

तब यहया नबी एक चौंका देनेवाली मिसाल पेश करता है : दूल्हा ही दुलहन से शादी करता है, और दुलहन उसी की है। दोस्त तो दोस्त ही है चाहे कितना अच्छा दोस्त क्यों न हो। हाँ, दोस्त ज़रूर दूल्हे की ख़ुशी में शरीक होता है। दूल्हे की आवाज़ सुन सुनकर उसकी ख़ुशी की इंतहा नहीं होती। मैं भी ऐसा ही दोस्त हूँ।

► **दूल्हे की मिसाल से वह क्या कहना चाहता है?**

वह यह कहना चाहता है कि मसीह दूल्हा है जबकि मैं दूल्हे का दोस्त हूँ।

► **दोस्त से क्या मुराद है?**

उस ज़माने में शादी का पूरा इंतज़ाम दूल्हे के क़रीबी दोस्तों के हाथ में था। अकसर दो ऐसे दोस्त थे। उनकी ज़िम्मेदारी यह भी थी कि दूल्हे और दुलहन को सलामती से दूल्हे के घर पहुँचाएँ। उनकी बहुत अहमियत थी। तो भी वह शादी का मरकज़ और मक़सद नहीं थे बल्कि दूल्हा और दुलहन। शादी ख़त्म हुई तो दूल्हे के यह दोस्त ख़ामोशी से चले जाते थे।

► **यहया के नज़दीक दूल्हा कौन है?**

दूल्हा ईसा मसीह है।

► **इससे वह क्या कहना चाहता है?**

मरकज़ी बात दूल्हा है। मैं सिर्फ़ उसका दोस्त हूँ जो शादी की तैयारियों में लगा रहता हूँ। मुझे तो दुलहन से शादी नहीं करनी है। मेरा बस यह फ़र्ज़ है कि शादी के इंतज़ाम पर ध्यान दूँ। दूल्हे की आवाज़ सुनकर ही मेरी ख़ुशी की इंतहा नहीं होती। और शादी की तकमील पर मेरा काम भी ख़त्म हो जाएगा।

► **तो फिर दुलहन कौन है?**

इसके लिए हमें थोड़ी गहराई में जाने की ज़रूरत है।

नबियों ने सदियों पहले फ़रमाया था कि एक मसीहाना वक़्त आएगा जब ख़ुदा अपनी क़ौम को यों क़बूल करेगा जिस तरह दूल्हा अपनी दुलहन को। यसायाह उस वक़्त के बारे में फ़रमाता है,

> जिस तरह दूल्हा दुलहन के बाइस ख़ुशी मनाता है उसी तरह तेरा ख़ुदा तेरे सबब से ख़ुशी मनाएगा। (यसायाह 62:5)

यहया नबी यह कह रहा है कि अब यह वक़्त आ गया है। अल-मसीह आ गया है। वही दूल्हा है। और उसकी दुलहन उसकी क़ौम है, वह जो उस पर ईमान रखते हैं। मसीह अपनी क़ौम को बुलाने आया है, और यह बड़ी ख़ुशी की बात है। अब तक मैं दूल्हे की तैयारियों में लगा हूँ क्योंकि मैं उसका दोस्त हूँ। लेकिन इंतज़ाम करवाने का मेरा काम ख़त्म होनेवाला है और मैं बड़ा ख़ुश हूँ। मैं किस तरह ग़म खा सकता हूँ?

वह बढ़ता जाए

तब यहया नबी एक गहरी रूहानी हक़ीक़त बयान करता है : लाज़िम है कि वह बढ़ता जाए जबकि मैं घटता जाऊँ।

► **इससे वह क्या कहना चाहता है?**

अहम बात मसीह है। मेरी ख़िदमत उसकी निसबत सिफ़र है। जब वह आ मौजूद हुआ है तो मेरा काम ख़त्म होनेवाला है। उसकी तारीफ़ हो। बस यह बात अहम है कि उसे जलाल मिले, वही बढ़ता जाए। दूल्हे को देख देखकर मेरी ख़ुशी पूरी हो गई है।

एक बार मसीह ने फ़रमाया, "जो अव्वल होना चाहता है वह सबसे आख़िर में आए और सबका ख़ादिम हो" (मरक़ुस 9:35)। यहया में यही ख़ादिमाना रूह थी। वह सबकी ख़िदमत करने को तैयार था। बस, दूल्हे को ख़ुश रखना है।

कुछ दिनों बाद यहया नबी शहीद हुआ।

► **क्या उसकी ख़िदमत बेफ़ायदा थी?**

बिलकुल नहीं। जो काम उसे दिया गया था वह मुकम्मल हुआ था। मसीह की राह तैयार हुई थी। दूल्हा आ गया था।

इंजील, यूहन्ना 3:22-30

इसके बाद ईसा अपने शागिर्दों के साथ यहूदिया के इलाक़े में गया। वहाँ वह कुछ देर के लिए उनके साथ ठहरा और लोगों को बपतिस्मा देने लगा। उस वक़्त यहया भी शालेम के क़रीब वाक़े मक़ाम ऐनोन में बपतिस्मा दे रहा था, क्योंकि वहाँ पानी बहुत था। उस जगह पर लोग बपतिस्मा लेने के लिए आते रहे। (यहया को अब तक जेल में नहीं डाला गया था।)

एक दिन यहया के शागिर्दों का किसी यहूदी के साथ मुबाहसा छिड़ गया। ज़ेरे-ग़ौर मज़मून दीनी ग़ुस्ल था। वह यहया के पास आए और कहने लगे, "उस्ताद, जिस आदमी से आपकी दरियाए-यरदन के पार मुलाक़ात हुई और जिसके बारे में आपने गवाही दी कि वह मसीह है, वह भी लोगों को बपतिस्मा दे रहा है। अब सब लोग उसी के पास जा रहे हैं।"

यहया ने जवाब दिया, “हर एक को सिर्फ़ वह कुछ मिलता है जो उसे आसमान से दिया जाता है। तुम ख़ुद इसके गवाह हो कि मैंने कहा, ‘मैं मसीह नहीं हूँ बल्कि मुझे उसके आगे आगे भेजा गया है।’ दूल्हा ही दुलहन से शादी करता है, और दुलहन उसी की है। उसका दोस्त सिर्फ़ साथ खड़ा होता है। और दूल्हे की आवाज़ सुन सुनकर दोस्त की ख़ुशी की इंतहा नहीं होती। मैं भी ऐसा ही दोस्त हूँ जिसकी ख़ुशी पूरी हो गई है। लाज़िम है कि वह बढ़ता जाए जबकि मैं घटता जाऊँ।

ज़िंदगी का पानी

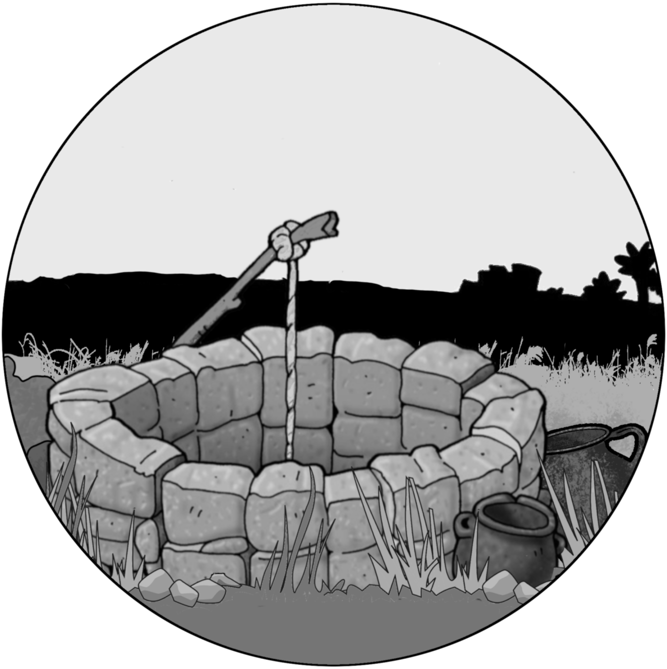

एक दिन ईसा मसीह अपने शागिर्दों के साथ सामरी इलाक़े में से गुज़र रिहा था। सामरी यहूदियों के दुश्मन थे। वह एक आबादी बनाम सूख़ार के बाहर रुके। ईसा मसीह लंबे सफ़र से चकनाचूर हो गया था। वह वहाँ पड़े एक कुएं पर बैठ गया। उसके शागिर्द शहर में गए ताकि कुछ खाना ख़रीद लाएँ।

दोपहर के बारह बज गए थे।

तब एक सामरी औरत पानी भरने आई।

► **सामरी कौन थे?**

सामरी यहूदियों से मिलते-जुलते थे। वह भी ख़ुदा की परस्तिश करते थे, लेकिन यहूदियों से अलग। दोनों क़ौमों के दरमियान सख़्त नफ़रत थी।

भूले-भटके का प्यासा

आम तौर पर लोग सुबह-सवेरे और शाम को पानी भरने आते थे। लेकिन यह औरत बारह बजे कुएं पर आई।

► **क्यों?**

यह औरत बदनाम थी। यह गुनाह में उलझी हुई औरत थी।

तो भी ईसा मसीह ने उससे बात की।

► **क्या उसे पता नहीं था कि यह गुनाहगार औरत है?**

ज़रूर। उसे ख़ूब मालूम था।

► **तो उसने औरत से बात क्यों की?**

वह हर इनसान से मुहब्बत करता है चाहे वह कितना ही गुनाहगार क्यों न हो। वह तो हर इनसान की तलाश में रहता है। वह चाहता है कि हर एक पटरी पर वापस आए। कि हर एक ख़ुदा का फ़रज़ंद बने। कि हर एक जन्नत में दाख़िल हो जाए।

► **उसने क्या फ़रमाया? क्या उसने उसे झिड़की दी?**

नहीं। उसने कहा, “मुझे ज़रा पानी पिला।”

कैसी बात! दुश्मन की गुनाहगार औरत से ऐसी बात!

औरत चौंक पड़ी। कहने लगी, "आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी पिलाने की दरख़ास्त कर सकते हैं?"

हम भी यह सवाल पूछते हैं। मगर ईसा मसीह हम जैसा नहीं सोचता। वह औरत के दिल तक पहुँचना चाहता था, और वह जानता था कि इस सवाल से वह उसे अपनी तरफ़ खींचेगा।

► **पानी माँगने का क्या मक़सद था?**

अगर वह ख़ामोश रहता तो औरत से बात न छिड़ती। अगर वह झिड़की देता तो औरत की नफ़रत बढ़ जाती। पानी माँगने से उसने अपने आपको औरत के बराबर कर दिया। कितनी हलीमी!

► **इतनी हलीमी क्यों?**

इसलिए कि वह भूले-भटके का प्यासा है। वह चाहता है कि हर एक को नजात मिले।

आपको भी। मुझको भी।

ज़िंदगी का पानी

मगर पानी माँगने का एक और मक़सद भी है। वह एक बात छेड़ना चाहता है जिससे औरत को रूहानी ज़िंदगी मिले।

औरत के सवाल से शक टपक रहा है : आप तो यहूदी हैं। आप किस तरह पानी माँग सकते हैं? दाल में कुछ काला है।

फिर भी ईसा मसीह का मक़सद पूरा हो गया है। औरत उसकी बातें सुनने के लिए तैयार हो गई है। अब वह उसे सीधा असल बात तक ले जाता है। वह फ़रमाता है, "अगर तू उस बख़्शिश से वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का पानी देता।"

मतलब है, मेरे पास एक ख़ुशख़बरी है। ध्यान से सुन ले! ख़ुदा तुझे एक चीज़ देना चाहता है। इसे माँग ले तो तुझे यह मिलेगी ज़रूर।

► **क्या चीज़?**

ज़िंदगी का पानी।

अब औरत मज़े से सुनने लगी है। वह कुछ मज़ाक़ में कहती है, "ख़ुदावंद, आपके पास तो बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको ज़िंदगी का यह पानी कहाँ से मिला? क्या आप हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिसने हमें यह कुआँ दिया?"

आप ख़ुद पानी माँग रहे हैं क्योंकि कुआँ गहरा है। और आपके पास बालटी भी नहीं है। तो आप किस तरह इससे बेहतर पानी दे सकते हैं? कुएं का यह इंतज़ाम हज़ार सालों से ज़्यादा चलता आ रहा है, और हम भी इसका पानी इस्तेमाल करते हैं। आप इससे बेहतर इंतज़ाम किस तरह मुहैया कर सकते हैं?

ईसा मसीह इस हलके मज़ाक़ के जवाब में असल बात पर आ जाता है : "जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।"

जो पानी तुझे याक़ूब से मिला है वह तेरी रूह की प्यास नहीं बुझा सकता। मगर जो पानी मैं तुझे देता हूँ उससे रूह की यह प्यास बुझ जाएगी। इतनी कसरत से पानी मिलेगा कि तुझमें चश्मा बन जाएगा। ऐसा चश्मा जिसका पानी अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।

► **यह अबदी ज़िंदगी क्या चीज़ है?**

  कुएँ का पानी जिस्म की प्यास बुझा सकता है। मगर मसीह का पानी रूह की प्यास बुझाता है। कुएँ का पानी बार बार पीना पड़ता है, और तो भी आख़िर में जिस्म ख़त्म हो जाता है। मसीह का पानी एक बार पी लिया तो रूह की प्यास बुझ जाती है और इनसान को अबदी ज़िंदगी मिलती है। यह पानी दिल में चश्मा बनकर इनसान को मौत के बाद भी ज़िंदगी दिलाता है।

► **वाह! क्या हम सबको ऐसे पानी की ज़रूरत नहीं?**

अब तक औरत को समझ नहीं आती। वह कहती है, "ख़ुदावंद, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना नहीं पड़ेगा।"

ज़ख़म का इलाज

लगता है कि औरत अब तक मुतमइन नहीं है। लगता है वह ईसा मसीह को ललकार रही है कि पहले वह कुछ कर दिखाओ जो तुम कह रहे हो।

शायद वह यह भी सोच रही है कि क्या यह आदमी पीर है?

► **क्या ईसा मसीह सिर्फ़ पीर है? जादूगर क़िस्म का आदमी?**

नहीं। वह रूहानी डाक्टर है जो उसका इलाज करना चाहता है। वह कहता है, "जा, अपने ख़ावंद को बुला ला।"

औरत बात टालकर कहती है, "मेरा कोई ख़ावंद नहीं है।"

ईसा मसीह फ़रमाता है, "तूने सही कहा कि मेरा ख़ावंद नहीं है, क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।"

ईसा मसीह कितनी महारत से अपनी रूहानी नश्तर से पीप से भरे ज़ख़म को खोल देता है।

► **क्यों?**

वह जानता है कि औरत को इलाज की ज़रूरत है। ज़िंदगी का यह पानी सिर्फ़ इस सूरत में मिल सकता है कि वह अपने गुनाहों को तसलीम करे। कि वह तौबा करे। गुनाह का इक़रार शफ़ा का पहला क़दम है। तब ही ज़ख़म भरेगा। तब ही ज़िंदगी का पानी दिल में आ सकता है।

अब मज़ाक़ की कोई बात नहीं रही। औरत को सदमा आता है। हाय, इस अजनबी को सब कुछ मालूम है! वह कहती है, "ख़ुदावंद, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं।"

► **क्यों?**

यह अजनबी उसे उसके दिल की बातें खोलकर बताता है।

► **कौन यह कर सकता है?**

सिर्फ़ वह जो नबी है।

यरूशलम या गरिज़ीम?

लेकिन सामरियों के नज़दीक यहूदी काफ़िर हैं। यह अजनबी किस तरह नबी हो सकता है? इसलिए औरत आगे पूछती है, "हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।"

सामरी बैतुल-मुक़द्दस को नहीं मानते थे। वह क़रीब के पहाड़ गरिज़ीम पर इबादत करते थे।

► **क्या ईसा मसीह फ़रमाएगा कि वह अपनी क़ौम को छोड़ यरूशलम में इबादत करे?**

एक बार फिर वह औरत को चौंका देता है। "ऐ ख़ातून, यक़ीन जान कि वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम में।"

ईसा मसीह कितनी महारत से औरत का रूहानी इलाज कर रहा है। पहले वह उसे ज़िंदगी का पानी पीने की दावत देता है। फिर वह अपनी रूहानी नश्तर से उसके गुनाहों का ज़ख़म खोल देता है ताकि वह सही भर सके। अब वह उसकी आँखें एक नई रूहानी हक़ीक़त के लिए खोल देता है : ख़ुदा की रूहानी परस्तिश के लिए।

रूह और सच्चाई से परस्तिश

► **अगर न यरूशलम और न गरिज़ीम पहाड़ पर परस्तिश करनी है तो कहाँ करनी है?**

ईसा मसीह फ़रमाता है, "वह वक़्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हक़ीक़ी परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे।"

► **क्या इस परस्तिश के लिए किसी ख़ास जगह की ज़रूरत है?**

नहीं।

► **क्यों नहीं?**

इसलिए कि यह परस्तिश रूहानी होगी। रूहानी इबादत हर जगह हो सकती है।

► **हक़ीक़ी परस्तार किसकी परस्तिश करेंगे?**

ख़ुदा बाप की परस्तिश। ख़ुदा से रिश्ते की ज़रूरत है। बाप-बेटे का रिश्ता।

► **तो हम किस तरह हक़ीक़ी परस्तिश करेंगे?**

रूह और सच्चाई से। वफ़ादारी के इस रिश्ते में झूठ की कोई जगह नहीं रहेगी।

► **क्या झूठ आपकी ज़िंदगी से निकल चुका है?**

मैं ही मसीह हूँ

औरत का दिल उछल पड़ता है। क्या यह वह है जिसके इंतज़ार में सब हैं?

उसकी तड़पती रूह कहती है, "मुझे मालूम है कि मसीह आ रहा है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।"

अब ईसा मसीह सीधा उसे बताता है, "मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।"

नजातदहिंदा यही है

► **औरत का क्या जवाब है?**

उसमें इतना जज़बा आता है कि वह घड़ा वहाँ छोड़ शहर में चली जाती है। अब वह किसी से नहीं कतराती बल्कि हर मिलनेवाले से कहती है कि "आओ, एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?"

लोग शहर से निकलकर ईसा मसीह के पास आते हैं। न सिर्फ़ यह बल्कि उनमें से बहुत लोग उस पर ईमान भी लाते हैं। वह औरत से कहते हैं, "अब हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इसलिए कि हमने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही है।"

► **वह क्या जान लेते हैं?**

कि ईसा मसीह दुनिया का नजातदहिंदा है। वह जो ज़िंदगी का अबदी पानी देता है। जो गुनाहों का इलाज करता है। जिससे इनसान का ख़ुदा से रिश्ता बहाल हो जाता है और वह रूह और सच्चाई से उसकी परस्तिश करता है।

इंजील, यूहन्ना 4:3-30,39-42

ईसा मसीह [...] यहूदिया को छोड़कर गलील को वापस चला गया। वहाँ पहुँचने के लिए उसे सामरिया में से गुज़रना था।

चलते चलते वह एक शहर के पास पहुँच गया जिसका नाम सूख़ार था। यह उस ज़मीन के क़रीब था जो याक़ूब ने अपने बेटे यूसुफ़ को दी थी। वहाँ याक़ूब का कुआँ था। ईसा सफ़र से थक गया था, इसलिए वह कुएँ पर बैठ गया। दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे।

एक सामरी औरत पानी भरने आई। ईसा ने उससे कहा, "मुझे ज़रा पानी पिला।" (उसके शागिर्द खाना ख़रीदने के लिए शहर गए हुए थे।)

सामरी औरत ने ताज्जुब किया, क्योंकि यहूदी सामरियों के साथ ताल्लुक़ रखने से इनकार करते हैं। उसने कहा, "आप तो यहूदी हैं, और मैं सामरी औरत हूँ। आप किस तरह मुझसे पानी पिलाने की दरख़ास्त कर सकते हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, “अगर तू उस बख़्शिश से वाक़िफ़ होती जो अल्लाह तुझको देना चाहता है और तू उसे जानती जो तुझसे पानी माँग रहा है तो तू उससे माँगती और वह तुझे ज़िंदगी का पानी देता।”

ख़ातून ने कहा, “ख़ुदावंद, आपके पास तो बालटी नहीं है और यह कुआँ गहरा है। आपको ज़िंदगी का यह पानी कहाँ से मिला? क्या आप हमारे बाप याक़ूब से बड़े हैं जिसने हमें यह कुआँ दिया और जो ख़ुद भी अपने बेटों और रेवड़ों समेत उसके पानी से लुत्फ़अंदोज़ हुआ?”

ईसा ने जवाब दिया, “जो भी इस पानी में से पिए उसे दुबारा प्यास लगेगी। लेकिन जिसे मैं पानी पिला दूँ उसे बाद में कभी भी प्यास नहीं लगेगी। बल्कि जो पानी मैं उसे दूँगा वह उसमें एक चश्मा बन जाएगा जिससे पानी फूटकर अबदी ज़िंदगी मुहैया करेगा।”

औरत ने उससे कहा, “ख़ुदावंद, मुझे यह पानी पिला दें। फिर मुझे कभी भी प्यास नहीं लगेगी और मुझे बार बार यहाँ आकर पानी भरना नहीं पड़ेगा।”

ईसा ने कहा, “जा, अपने ख़ावंद को बुला ला।”

औरत ने जवाब दिया, “मेरा कोई ख़ावंद नहीं है।”

ईसा ने कहा, “तूने सही कहा कि मेरा ख़ावंद नहीं है, क्योंकि तेरी शादी पाँच मर्दों से हो चुकी है और जिस आदमी के साथ तू अब रह रही है वह तेरा शौहर नहीं है। तेरी बात बिलकुल दुरुस्त है।”

औरत ने कहा, “ख़ुदावंद, मैं देखती हूँ कि आप नबी हैं। हमारे बापदादा तो इसी पहाड़ पर इबादत करते थे जबकि आप यहूदी लोग इसरार करते हैं कि यरूशलम वह मरकज़ है जहाँ हमें इबादत करनी है।”

ईसा ने जवाब दिया, “ऐ ख़ातून, यक़ीन जान कि वह वक़्त आएगा जब तुम न तो इस पहाड़ पर बाप की इबादत करोगे, न यरूशलम में। तुम सामरी उसकी परस्तिश करते हो जिसे नहीं जानते। इसके मुक़ाबले में हम उसकी परस्तिश करते हैं जिसे जानते हैं, क्योंकि नजात यहूदियों में से है। लेकिन वह वक़्त आ रहा है बल्कि पहुँच चुका है जब हक़ीक़ी परस्तार रूह और सच्चाई से बाप की परस्तिश करेंगे, क्योंकि बाप ऐसे ही परस्तार चाहता है। अल्लाह रूह है,

इसलिए लाज़िम है कि उसके परस्तार रूह और सच्चाई से उसकी परस्तिश करें।”

औरत ने उससे कहा, “मुझे मालूम है कि मसीह यानी मसह किया हुआ शख़्स आ रहा है। जब वह आएगा तो हमें सब कुछ बता देगा।”

इस पर ईसा ने उसे बताया, “मैं ही मसीह हूँ जो तेरे साथ बात कर रहा हूँ।”

उसी लमहे शागिर्द पहुँच गए। उन्होंने जब देखा कि ईसा एक औरत से बात कर रहा है तो ताज्जुब किया। लेकिन किसी ने पूछने की जुर्रत न की कि “आप क्या चाहते हैं?” या “आप इस औरत से क्यों बातें कर रहे हैं?”

औरत अपना घड़ा छोड़कर शहर में चली गई और वहाँ लोगों से कहने लगी, “आओ, एक आदमी को देखो जिसने मुझे सब कुछ बता दिया है जो मैंने किया है। वह मसीह तो नहीं है?” चुनाँचे वह शहर से निकलकर ईसा के पास आए।

[…]

उस शहर के बहुत-से सामरी ईसा पर ईमान लाए। वजह यह थी कि उस औरत ने उसके बारे में यह गवाही दी थी, “उसने मुझे सब कुछ बता दिया जो मैंने किया है।” जब वह उसके पास आए तो उन्होंने मिन्नत की, “हमारे पास ठहरें।” चुनाँचे वह दो दिन वहाँ रहा।

और उसकी बातें सुनकर मज़ीद बहुत-से लोग ईमान लाए। उन्होंने औरत से कहा, “अब हम तेरी बातों की बिना पर ईमान नहीं रखते बल्कि इसलिए कि हमने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही है।”

फलता-फूलता ईमान

ईसा मसीह सामरियों के इलाक़े से होकर दुबारा गलील में पहुँच गया। सामरी यहूदियों के दुश्मन थे। तो भी रास्ते में कई एक सामरी उस पर ईमान लाए थे।

सियासी या रूहानी ईमान?

उसे देखकर गलीली ख़ुश हुए।

► **क्यों ख़ुश हुए?**

बहुत-सारे लोग फ़सह की ईद मनाने यरूशलम गए थे। वहाँ उन्होंने उसके अज़ीम काम और बातें देख ली थीं। उन्होंने बड़े जोश से उसे ख़ुशआमदीद कहा।

मगर ईसा मसीह ने उनके जोश से धोका न खाया। वह तो ख़ूब जानता था कि नबी की उसके अपने वतन में इज़्ज़त नहीं होती। मक़ामी लोगों का जोश जल्द ही ठंडा पड़ जाएगा। जल्द ही उनकी ख़ुशी काफ़ूर हो जाएगी।

► **क्यों?**

इसलिए कि वह उस पर ईमान नहीं रखते थे। वह सिर्फ़ अपना काम उससे करवाना चाहते थे। उनका मक़सद रूहानी नहीं था बल्कि सियासी।

► **तो फिर ईसा मसीह लोगों में क्या देखना चाहता था? क्या यह कि वह उसे पीर बाबा मान लें?**

हरगिज़ नहीं!

► **तो फिर वह क्या चाहता था?**

वह चाहता था कि वह उस पर ईमान लाएँ।

► **उस पर ईमान लाने का क्या मतलब था?**

यह कि वह मान लें कि ईसा मसीह मेरा ख़ुदावंद है। वह मुझे नजात दे सकता है। वह मेरे गुनाहों को मिटा सकता है। वह मुझे जन्नत में दाख़िल होने के लायक़ बना सकता है। हाँ, वह मेरी ज़िंदगी तबदील कर सकता है।

जिन सामरियों से उसका पाला पड़ा था उन्होंने यह बात मान ली थी। सामरियों ने इक़रार किया था, “हमने ख़ुद सुन और जान लिया है कि वाक़ई दुनिया का नजातदहिंदा यही है।”

चलते चलते ईसा मसीह अपने शागिर्दों के साथ क़ाना पहुँच गया। पिछली बार क़ाना में एक मोजिज़ा हुआ था। एक शादी पर पानी मै में बदल गया था।

इस दफ़ा शादी नहीं थी। एक आदमी था। एक आदमी जो सख़्त परेशान था। यह आदमी शाही अफ़सर था। ऐन उसी वक़्त उसका बेटा कफ़र्नहूम शहर में सख़्त बीमार पड़ गया था। कफ़र्नहूम तक़रीबन 30 किलोमीटर दूर था। क़ाना पहाड़ी पर था जबकि कफ़र्नहूम काफ़ी नीचे था। वह झील के किनारे पड़ा था। वहाँ जाने के लिए 500 मीटर उतरना पड़ता था। एक दिन में पहुँचना मुश्किल ही था।

कच्चे ईमान का बीज

जब इस अफ़सर को इत्तला मिली कि उस्ताद गलील पहुँच गया है तो वह भागकर उसके पास आया। उसने थरथराते हुए मिन्नत की, “ज़रा मेरे घर आएँ जो नीचे कफ़र्नहूम में है ताकि मेरे बेटे को शफ़ा मिले। इस वक़्त वह मरने को है।”

हम कह सकते हैं कि यह अफ़सर मसीह के बारे में दूसरे गलीलियों की-सी सोच रखता था। वह सियासी सोच रखता था। लेकिन अब उसका बेटा मरने को था। जिस तरह लोग मदद के लिए पीर के पास जाते हैं उसी तरह वह घबराए हुए ख़ुदावंद के पास भाग आया। जो ईमान ईसा मसीह हर एक में देखना चाहता है वह उसमें कम था। कह लें कि ईमान का बीज ही था। फिर भी बाप का दिल अपने बेटे के लिए धड़क रहा था। जब बेटा मरने को है तो माँ-बाप उसे बचाने के लिए क्या कुछ नहीं करते।

► **ईसा मसीह ने क्या जवाब दिया?**

उसने एक अजीब-सा जवाब दिया। कई बार ईसा मसीह ऐसे जवाब देता है जिनसे हमें सदमा पहुँचता है। उसने फ़रमाया, “जब तक तुम लोग इलाही निशान और मोजिज़े नहीं देखते ईमान नहीं लाते।”

► **क्या? यह कैसा जवाब है? ऐसी गुज़ारिश और यह जवाब! यह क्यों?**

प्लास्टिक के सस्ते खिलौने को थोड़ा इस्तेमाल करें तो टूट जाता है। क्या अफ़सर का ईमान भी इसी तरह टूट जाएगा? या क्या ईमान के बीज से मज़बूत पौधा उग आएगा?

लेकिन ईसा मसीह यह बात न सिर्फ़ शाही अफ़सर बल्कि सब सुननेवालों से कर रहा था। ईसा मसीह लोगों को सच्चे ईमान की तरफ़ लाना चाहता है। कि उनका ईमान सियासी न रहे बल्कि रूहानी हो जाए।

ईमान के बीज से नाज़ुक पौधा

मसीह की बात सुनकर शाही अफ़सर का मुँह उतर गया। अपने बेटे की वजह से वह तड़प रहा था। घिघियाने लगा, "ख़ुदावंद आएँ तो सही, इससे पहले कि मेरा लड़का मर जाए।"

► **अफ़सर ने ईसा मसीह को क्या कहा?**

ख़ुदावंद।

माँ-बाप जब बच्चे को कुछ हो जाए तो अपनी जान देने को भी तैयार हो जाते हैं। अब बाप के अंदर ईमान के छोटे बीज से नन्हा-सा पौधा उग आया। इसी लिए उसने ख़ुदावंद कहा। अब तक वह अपने हाथ उसकी तरफ़ फैलाए खड़ा है। ख़ुदावंद की तरफ़। पक्का ईमान तो नहीं है लेकिन एक नाज़ुक पौधा उग आया है। क्या वह और मज़बूत हो जाएगा या मुरझा जाएगा?

ईसा मसीह ईमान बढ़ाने का माहिर डाक्टर है। हमारा ईमान हमेशा कमज़ोर रहता है इसलिए वह महारत से उसे मज़बूत करने के मुख़्तलिफ़ तरीक़े इस्तेमाल करता है। फिर भी वह हमेशा हमारा दुख-दर्द महसूस करता है। उसे अफ़सर पर तरस आया। उसने फ़रमाया, "जा, तेरा बेटा ज़िंदा रहेगा।"

ईमान की आज़माइश

► **क्या ईसा मसीह ने फ़रमाया कि चलो मैं साथ आता हूँ?**

नहीं। न सिर्फ़ यह बल्कि अफ़सर को एक हुक्म भी मिला। उसे करेगा तो बेटा ज़िंदा रहेगा।

► **वह क्या था?**

जा। मेरे बग़ैर अपने घर जा।

► **क्यों?**

वह अफ़सर का ईमान आज़माना चाहता था। आज़माते वक़्त नक़ली ईमान उखड़ जाता है जबकि सच्चा ईमान और मज़बूत हो जाता है।

► **क्या अफ़सर यह सुनकर ज़िद करने लगा कि आपके बग़ैर मैं नहीं जाऊँगा?**

नहीं, वह चुप-चाप चला गया। ध्यान दें कि उसका ईमान किस तरह बढ़ गया था। पहले ईसा मसीह को साथ आना था। अब वह मान गया कि यह भी ज़रूरी नहीं। काम हो जाएगा। वह अपने घर चला गया।

दोपहर एक बज गए थे जब वह चलने लगा। चलते चलते उसे रास्ते में कहीं रात गुज़ारना पड़ा। अगले दिन वह अभी रास्ते में था कि उसके नौकर उससे मिले। लेकिन यह क्या था? वह ख़ुशी से नाच रहे थे। जब क़रीब पहुँचे तो पुकार उठे, "आपका बेटा ज़िंदा है। वह ठीक हो गया है!"

बाप हैरानी से उछल पड़ा। क्या सच?! मेरा बेटा! ज़िंदा! मेरा लाडला! मेरी आँखों का तारा!

उसने पूछा, "उसकी तबीयत कब सँभल गई?"

नौकर बोले, "बुख़ार कल दोपहर एक बजे उतर गया।"

यह तो कमाल है! ऐन उस वक़्त जब मसीह ने कहा था कि तेरा बेटा ज़िंदा रहेगा।

ईमान का फल

हम देख चुके हैं कि अकसर गलीलियों का मसीह पर नक़ली ईमान था। वह उससे फ़ायदा उठाना चाहते थे। लेकिन वह यह मानने के लिए तैयार नहीं थे कि वह ख़ुदावंद है। कि वह दुनिया को नजात देनेवाला है।

इसके मुक़ाबले में शाही अफ़सर के ईमान को देखो। पहले वह भी इतना ही समझता था कि ईसा मसीह पीर जैसा है जो मेरे बेटे को शफ़ा दे सकता है। ईमान का बीज। फिर ईसा मसीह ने उसे चैलेंज दिया कि तुम सिर्फ़ मोजिज़े देखने आए हो। इस बात ने उसे मसीह से दूर न किया बल्कि ईमान के बीज से एक नाज़ुक पौधा उग आया। वह ज़ोर-शोर करने लगा : ख़ुदावंद, आएँ तो सही, इससे पहले कि मेरा लड़का मर जाए। ईसा मसीह ने उसके साथ जाने से इनकार किया फिर भी वह मायूस न हुआ। उसका ईमान और मज़बूत हो गया।

जब बेटे को शफ़ा मिली तो शाही अफ़सर का ईमान बिलकुल पक्का हो चुका था। ईसा मसीह न सिर्फ़ उसका पीर बन गया जो उसकी मदद कर सके। वह उसका

ख़ुदावंद बन गया। वह नजात देनेवाला जो इस लायक़ है कि मैं अपनी पूरी ज़िंदगी उसे वक़्फ़ करूँ।

शाही अफ़सर का ईमान देखकर उसके तमाम घरवाले भी ईमान लाए।

► **रहा एक सवाल : आपका ईमान कैसा है?**

इंजील, यूहन्ना 4:43-54

वहाँ दो दिन गुज़ारने के बाद ईसा गलील को चला गया। उसने ख़ुद गवाही देकर कहा था कि नबी की उसके अपने वतन में इज़्ज़त नहीं होती। अब जब वह गलील पहुँचा तो मक़ामी लोगों ने उसे ख़ुशआमदीद कहा, क्योंकि वह फ़सह की ईद मनाने के लिए यरूशलम आए थे और उन्होंने सब कुछ देखा जो ईसा ने वहाँ किया था।

फिर वह दुबारा क़ाना में आया जहाँ उसने पानी को मै में बदल दिया था। उस इलाक़े में एक शाही अफ़सर था जिसका बेटा कफ़र्नहूम में बीमार पड़ा था। जब उसे इत्तला मिली कि ईसा यहूदिया से गलील पहुँच गया है तो वह उसके पास गया और गुज़ारिश की, "क़ाना से मेरे पास उतर आएँ और मेरे बेटे को शफ़ा दें। क्योंकि वह मरने को है।" ईसा ने उससे कहा, "जब तक तुम लोग इलाही निशान और मोजिज़े नहीं देखते ईमान नहीं लाते।"

शाही अफ़सर ने कहा, "ख़ुदावंद आएँ, इससे पहले कि मेरा लड़का मर जाए।"

ईसा ने जवाब दिया, "जा, तेरा बेटा ज़िंदा रहेगा।"

आदमी ईसा की बात पर ईमान लाया और अपने घर चला गया। वह अभी उतर रहा था कि उसके नौकर उससे मिले। उन्होंने उसे इत्तला दी कि बेटा ज़िंदा है।

उसने उनसे पूछ-गछ की कि उसकी तबीयत किस वक़्त से बेहतर होने लगी थी। उन्होंने जवाब दिया, "बुख़ार कल दोपहर एक बजे उतर गया।" फिर बाप ने जान लिया कि उसी वक़्त ईसा ने उसे बताया था, "तुम्हारा बेटा ज़िंदा रहेगा।" और वह अपने पूरे घराने समेत उस पर ईमान लाया।

यों ईसा ने अपना दूसरा इलाही निशान उस वक़्त दिखाया जब वह यहूदिया से गलील में आया था।

क्या तू तंदुरुस्त होना चाहता है?

यरूशलम में एक मशहूर हौज़ बनाम बैत-हसदा था। इस हौज़ के खंडरात आज तक देखे जा सकते हैं। हौज़ पाँच बड़े बरामदों से घिरा हुआ था। उनमें बेशुमार अंधे, लँगड़े और मफ़लूज पड़े रहते थे।

► **इतने माज़ूर लोग वहाँ क्यों जमा रहते थे?**

कभी-कभार हौज़ का पानी थोड़ी देर के लिए हिलने लगता था। उस वक़्त जो भी पहले पानी में जाता उसे शफ़ा मिलती थी।

एक दिन ईसा मसीह वहाँ से गुज़रा। उसने एक आदमी को फ़र्श पर पड़ा देखा जो 38 साल से माज़ूर था।

अब सोच लें : वहाँ तो भीड़ ही भीड़ थी। फिर भी ईसा मसीह ने एक ही आदमी पर निगाह डाली और उसी पर रहम किया।

► **क्यों? उसने दूसरों को शफ़ा क्यों न दी?**

वह जानता था कि यह आदमी बहुत सालों से माज़ूर है। फिर भी यह एक राज़ है कि ख़ुदा एक को शफ़ा देता है और दूसरे को नहीं। मसीह ने पूछा,

क्या तू तनदुरुस्त होना चाहता है?

► **यह कैसा सवाल है? कौन तनदुरुस्त नहीं होना चाहता? ईसा मसीह यह क्यों पूछता है?**

ईसा मसीह कभी ज़बरदस्ती नहीं करता। ज़रूरी है कि हम उसकी मदद क़बूल करें। कि हम उसे अपनी ज़िंदगी में आने दें। हम इनकार तो कर सकते हैं।

► **आज ईसा मसीह हम सबसे पूछ रहा है कि क्या तू तनदुरुस्त होना चाहता है? हम क्या जवाब देंगे? क्या हम अपना मुँह फेरकर अंधेरे में रहना पसंद करेंगे? या हम उसके नूर में आकर तनदुरुस्त हो जाएँगे?**

वह आदमी बोला, “ख़ुदावंद, यह मुश्किल है। मेरा कोई साथी नहीं जो मुझे उठाकर पानी में जब उसे हिलाया जाता है ले जाए। इसलिए मेरे वहाँ पहुँचने में इतनी देर लग जाती है कि कोई और मुझसे पहले पानी में उतर जाता है।”

ईसा मसीह ने कहा, “उठ, अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर!”

वह आदमी एकदम ठीक हो गया। उसने अपना बिस्तर उठाया और चलने-फिरने लगा।

जो हुक्म ईसा मसीह देता है वह हमेशा पूरा हो जाता है।

नुकताचीनी का मज़ा

कुछ लोगों ने देखा कि यह आदमी फिर रहा है तो सख़्त नाराज़ हुए। कहने लगे, “आज सबत का दिन है। आज बिस्तर उठाना मना है।”

सबत, हफ़्ते का दिन था। ख़ुदा ने मूसा नबी को फ़रमाया था कि सबत के दिन काम-काज मत करना। मक़सद यह था कि लोगों को इस दिन नौकरी से छुट्टी मिले। मगर बाद में यहूदी उस्तादों ने बेशुमार और पाबंदियाँ लगाई थीं। बिस्तर उठाकर घर ले जाना भी मना था। अब यह बेचारा क्या करे? उसे तो घर पहुँचना ही पहुँचना था।

► **क्या इन लोगों को माज़ूर की फ़िकर थी?**

इन लोगों को परवाह ही नहीं थी कि इस आदमी को शफ़ा मिली है, कि इतना बड़ा मोजिज़ा हुआ है। कितना अफ़सोस! यह कट्टर लोग मज़हब के नाम में बहुत सख़्त हो गए थे। मज़हब का क्या फ़ायदा अगर हम ख़ुदा से दूर हों? अगर एक दूसरे से मुहब्बत न हो?

► **क्या आप ऐसे लोगों से वाक़िफ़ हैं?**

आदमी घबरा गया। वह बोला, “एक आदमी ने मुझे शफ़ा दी। उसी ने मुझे बताया, ‘अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर।’”

उन्होंने सवाल किया, “वह कौन है जिसने तुझे यह कुछ बताया?” लेकिन उस आदमी को मालूम न था, क्योंकि ईसा मसीह हुजूम में ग़ायब हो गया था।

फिर गुनाह न करना

बाद में ईसा मसीह उसे बैतुल-मुक़द्दस में मिला। उसने कहा, “अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तेरा हाल पहले से भी बदतर हो जाए।”

कमाल है। माज़ूर की हालत तो ठीक हो गया था। लेकिन ईसा मसीह इनसान के दिल में देखता है। उसे मालूम था कि बीमारी की ज़हरीली जड़ बाक़ी रह गई थी। यह जड़ अब तक ख़त्म नहीं हुई थी।

► **जड़ क्या थी?**

गुनाह। हम नहीं जानते कि उसने क्या गुनाह किया था। मगर मसीह को मालूम था। हर बीमारी तो किसी ख़ास गुनाह की वजह से नहीं होती। लेकिन मसीह जानता था कि इस मरज़ के पीछे एक संजीदा गुनाह है।

► **सो ईसा मसीह का ख़ास ध्यान किस चीज़ पर था?**

गुनाह पर। आदमी की रूहानी हालत पर।

ईसा मसीह चाहता है कि हमारी अंदरूनी हालत बहाल हो जाए। इस दुनिया में रहते हुए हमारी हालत नाज़ुक रहती है। हम बीमार हों न हों, बड़ी बात यह है कि हम फिर गुनाह न करें। कि हम ईसा मसीह के क़दमों में बैठे रहें। उसकी बातें सुनते रहें। उसके पीछे चलते रहें। तब ही हम अंदर से बहाल हो जाएँगे।

► **आपका क्या ख़याल है कि उस आदमी ने जवाब में क्या किया?**

वह कमबख़्त सीधे यहूदी बुज़ुर्गों के पास गया और उन्हें इत्तला दी, "ईसा ने मुझे शफ़ा दी।" यह सुनकर वह ईसा मसीह को सताने लगे।

ईसा मसीह ने उस आदमी को न सिर्फ़ शफ़ा दी थी। उसने उसे अपने गुनाहों से बहाल होने का मौक़ा भी दिया था।

► **फिर भी उसने क्या किया?**

उसने उसके रहम को हक़ीर जाना।

► **जब ईसा मसीह हमसे हमकलाम होता है तो मेरा क्या जवाब है? आपका क्या जवाब है?**

बाप की मरज़ी सब कुछ है

► **जब बुज़ुर्ग ईसा मसीह को सताने लगे तो उसने जवाब में क्या कहा?**

उसने फ़रमाया, "मेरा बाप आज तक काम करता आया है, और मैं भी ऐसा करता हूँ।"

► **इससे वह क्या कहना चाहता है?**

ख़ुदा बाप हर वक़्त काम करता है। लमहा बलमहा वह दुनिया की हर चीज़ क़ायम रखता है वरना हम सब एकदम ख़त्म हो जाते। यों उसका काम सबत के दिन भी जारी रहता है। ईसा मसीह फ़रमाता है कि इसी लिए मेरा काम सबत के दिन भी जारी रहता है। मैं ख़ुदा का फ़रज़ंद हूँ इसलिए ज़ाहिर है कि मैं रोज़ाना उसकी मरज़ी पूरी करता हूँ।

यहूदी बुज़ुर्ग और ज़्यादा बिफर गए।

- ► **क्यों?**

  उनके नज़दीक उसने अल्लाह को अपना बाप कहकर अपने आपको अल्लाह के बराबर ठहराया था।

- ► **कैसे?**

  उसने फ़रमाया था, जिस तरह ख़ुदा बाप सबत के दिन काम करता है उसी तरह मैं भी करता हूँ।

लेकिन ईसा मसीह एक और बात कहना चाहता है। यह कि मैं पूरे तौर से बाप की मरज़ी करता हूँ। मैं अपनी मरज़ी से कुछ नहीं करता। उसी की मरज़ी थी कि मैं सबत के दिन उस आदमी को शफ़ा दूँ। इसलिए मैंने उसे शफ़ा दी। अपनी मरज़ी से नहीं। उसी की मरज़ी से।

- ► **हमारा इससे क्या वास्ता है?**

ख़ुदावंद हमें अबदी ज़िंदगी देता है

मसीह ने बुज़ुर्गों से कहा,

> जिस तरह बाप मुरदों को ज़िंदा करता है उसी तरह फ़रज़ंद भी जिन्हें चाहता है ज़िंदा कर देता है। (इंजील, यूहन्ना 5:21)

और यह ज़िंदगी इसी दुनिया में मिल सकती है।

मसीह की यह ज़िंदगी अनाज के एक दाने की तरह है। यह दाना देखने में मामूली-सा लगता है।

- ► **इसे ज़मीन में दबा दिया तो क्या होता है?**

  बीज गल जाता है।

- ► **क्या गल जाने से उसकी ताक़त और ज़िंदगी ख़त्म हो जाती है?**

  नहीं। एक दिन ज़मीन से पौधा उग आता है जो बढ़ता बढ़ता फल लाता है।

- ► **मैं इससे क्या कहना चाहता हूँ?**

  उस मामूली से बीज में पौधे की पूरी ताक़त और ज़िंदगी समाई हुई है। बीज गल जाता है मगर उसकी यह ताक़त और ज़िंदगी ख़त्म नहीं होती। उस ज़िंदगी से एक शानदार पौधा पैदा हो जाता है। बिलकुल इसी तरह वह ज़िंदगी है जो

मसीह हमें देता है। जब हम ईमान लाते हैं तो हमारे अंदर अबदी ज़िंदगी का बीज बोया जाता है। एक दिन हमारा जिस्म तो गल जाएगा। मगर हम ख़ुद ख़त्म नहीं होंगे। हमारे अंदर की यह अबदी ज़िंदगी हमें ख़ुदा की नज़र में मंज़ूर कराएगी। तब हमें एक नया जिस्म मिलेगा जो इस दुनियावी जिस्म से कहीं बेहतर होगा। ऐसे शख़्स के बारे में ईसा मसीह फ़रमाता है,

> उसे मुजरिम नहीं ठहराया जाएगा बल्कि वह मौत की गिरिफ़्त से निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गया है।
> (इंजील, यूहन्ना 5:24)

► **क्या आपके अंदर अबदी ज़िंदगी का यह बीज है?**

इंजील, यूहन्ना 5:1-29

कुछ देर के बाद ईसा किसी यहूदी ईद के मौक़े पर यरूशलम गया। शहर में एक हौज़ था जिसका नाम अरामी ज़बान में बैत-हसदा था। उसके पाँच बड़े बरामदे थे और वह शहर के उस दरवाज़े के क़रीब था जिसका नाम 'भेड़ों का दरवाज़ा' है। इन बरामदों में बेशुमार माज़ूर लोग पड़े रहते थे। यह अंधे, लँगड़े और मफ़लूज पानी के हिलने के इंतज़ार में रहते थे। [क्योंकि गाहे बगाहे रब का फ़रिश्ता उतरकर पानी को हिला देता था। जो भी उस वक़्त उसमें पहले दाख़िल हो जाता उसे शफ़ा मिल जाती थी ख़ाह उसकी बीमारी कोई भी क्यों न होती।] मरीज़ों में से एक आदमी 38 साल से माज़ूर था। जब ईसा ने उसे वहाँ पड़ा देखा और उसे मालूम हुआ कि यह इतनी देर से इस हालत में है तो उसने पूछा, "क्या तू तनदुरुस्त होना चाहता है?"

उसने जवाब दिया, "ख़ुदावंद, यह मुश्किल है। मेरा कोई साथी नहीं जो मुझे उठाकर पानी में जब उसे हिलाया जाता है ले जाए। इसलिए मेरे वहाँ पहुँचने में इतनी देर लग जाती है कि कोई और मुझसे पहले पानी में उतर जाता है।"

ईसा ने कहा, "उठ, अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर!" वह आदमी फ़ौरन बहाल हो गया। उसने अपना बिस्तर उठाया और चलने-फिरने लगा।

यह वाक़िया सबत के दिन हुआ। इसलिए यहूदियों ने शफ़ायाब आदमी को बताया, "आज सबत का दिन है। आज बिस्तर उठाना मना है।"

लेकिन उसने जवाब दिया, "जिस आदमी ने मुझे शफ़ा दी उसने मुझे बताया, 'अपना बिस्तर उठाकर चल-फिर।'"

उन्होंने सवाल किया, "वह कौन है जिसने तुझे यह कुछ बताया?" लेकिन शफ़ायाब आदमी को मालूम न था, क्योंकि ईसा हुजूम के सबब से चुपके से वहाँ से चला गया था।

बाद में ईसा उसे बैतुल-मुक़द्दस में मिला। उसने कहा, "अब तू बहाल हो गया है। फिर गुनाह न करना, ऐसा न हो कि तेरा हाल पहले से भी बदतर हो जाए।"

उस आदमी ने उसे छोड़कर यहूदियों को इत्तला दी, "ईसा ने मुझे शफ़ा दी।" इस पर यहूदी उसको सताने लगे, क्योंकि उसने उस आदमी को सबत के दिन बहाल किया था। लेकिन ईसा ने उन्हें जवाब दिया, "मेरा बाप आज तक काम करता आया है, और मैं भी ऐसा करता हूँ।"

यह सुनकर यहूदी उसे क़त्ल करने की मज़ीद कोशिश करने लगे, क्योंकि उसने न सिर्फ़ सबत के दिन को मनसूख़ क़रार दिया था बल्कि अल्लाह को अपना बाप कहकर अपने आपको अल्लाह के बराबर ठहराया था।

ईसा ने उन्हें जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि फ़रज़ंद अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता। वह सिर्फ़ वह कुछ करता है जो वह बाप को करते देखता है। जो कुछ बाप करता है वही फ़रज़ंद भी करता है, क्योंकि बाप फ़रज़ंद को प्यार करता और उसे सब कुछ दिखाता है जो वह ख़ुद करता है। हाँ, वह फ़रज़ंद को इनसे भी अज़ीम काम दिखाएगा। फिर तुम और भी ज़्यादा हैरतज़दा होगे। क्योंकि जिस तरह बाप मुरदों को ज़िंदा करता है उसी तरह फ़रज़ंद भी जिन्हें चाहता है ज़िंदा कर देता है। और बाप किसी की भी अदालत नहीं करता बल्कि उसने अदालत का पूरा इंतज़ाम फ़रज़ंद के सुपुर्द कर दिया है ताकि सब उसी तरह फ़रज़ंद की इज़्ज़त करें जिस तरह वह बाप की इज़्ज़त करते हैं। जो फ़रज़ंद की इज़्ज़त नहीं करता वह बाप की भी इज़्ज़त नहीं करता जिसने उसे भेजा है।

मैं तुमको सच बताता हूँ, जो भी मेरी बात सुनकर उस पर ईमान लाता है जिसने मुझे भेजा है अबदी ज़िंदगी उसकी है। उसे मुजरिम नहीं ठहराया जाएगा बल्कि वह मौत की गिरिफ़्त से निकलकर ज़िंदगी में दाख़िल हो गया है। मैं तुमको सच बताता हूँ कि एक वक़्त आनेवाला है बल्कि आ चुका है जब मुरदे अल्लाह के फ़रज़ंद की आवाज़ सुनेंगे। और जितने सुनेंगे वह ज़िंदा हो जाएँगे। क्योंकि जिस तरह बाप ज़िंदगी का मंबा है उसी तरह उसने अपने फ़रज़ंद को ज़िंदगी का मंबा बना दिया है। साथ साथ उसने उसे अदालत करने का इख़्तियार भी दे दिया है, क्योंकि वह इब्ने-आदम है। यह सुनकर ताज्जुब न करो क्योंकि एक वक़्त आ रहा है जब तमाम मुरदे उसकी आवाज़ सुनकर क़ब्रों में से निकल आएँगे। जिन्होंने नेक काम किया वह जी उठकर ज़िंदगी पाएँगे जबकि जिन्होंने बुरा काम किया वह जी तो उठेंगे लेकिन उनकी अदालत की जाएगी।

ईसा मसीह पर क्यों भरोसा
चार ठोस गवाह

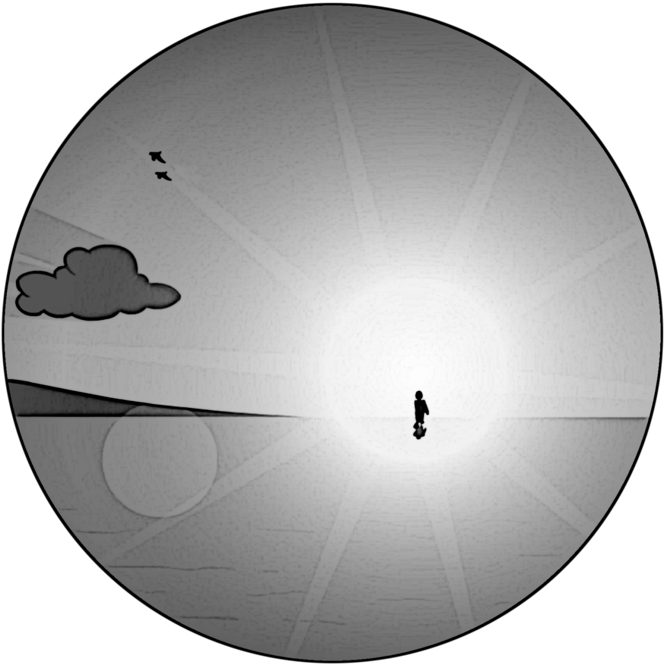

ईसा मसीह की तालीम अनोखी थी। यह ऐसी बातें थीं जो सिर्फ़ और सिर्फ़ अल-मसीह कर सकता था। सुननेवालों ने सोचा, यह तो बड़ी बड़ी बातें हैं।

► **लेकिन हम किस तरह जान सकते हैं कि उसकी यह बातें सच हैं? कि वह सचमुच अल-मसीह है?**

  यह हमारे लिए भी एक अहम सवाल है।

► **हम किस तरह उसकी बातों पर भरोसा कर सकते हैं?**

  ईसा मसीह लोगों का यह सवाल जानता था। एक मौक़े पर उसने इसका जवाब भी दिया।

► **जवाब क्या था?**

  जवाब में उसने फ़रमाया कि मेरे चार गवाह हैं। ऐसे ठोस और पक्के गवाह जो कोई भी झूठे नहीं ठहरा सकता।

पहला गवाह : यहया नबी

पहला गवाह यहया नबी है। जब यहया दरियाए-यरदन पर लोगों को बपतिस्मा देने लगा तो बुज़ुर्ग उसके पास आए। वह जानना चाहते थे कि यह अपने बारे में क्या कहता है। क्या यह मसीह तो नहीं है? यहया ने साफ़ जवाब दिया कि मैं मसीह नहीं हूँ। लेकिन एक दिन जब ईसा मसीह हाज़िर हुआ तो यहया ने फ़रमाया कि यही आनेवाला मसीह है :

> मैंने देखा कि रूहुल-क़ुद्स कबूतर की तरह आसमान पर से उतरकर उस पर ठहर गया। मैं तो उसे नहीं जानता था, लेकिन जब अल्लाह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए भेजा तो उसने मुझे बताया, ‘तू देखेगा कि रूहुल-क़ुद्स उतरकर किसी पर ठहर जाएगा। यह वही होगा जो रूहुल-क़ुद्स से बपतिस्मा देगा।’ अब मैंने देखा है और गवाही देता हूँ कि यह अल्लाह का फ़रज़ंद है।
> (यूहन्ना 1:32-34)

यों यहया नबी ने साफ़ फ़रमाया कि ईसा, अल-मसीह है, वह जो नजात देने के लिए दुनिया में भेजा गया है। इसलिए ईसा मसीह ने यहया के बारे में फ़रमाया,

> यहया एक जलता हुआ चराग़ था जो रौशनी देता था।
> (यूहन्ना 5:35)

► **यहया क्यों चराग़ था?**

चराग़ अंधेरे को रौशन करके हमें रास्ता दिखाता है। यहया नबी ने रूहानी अंधेरे को रौशन करके मसीह का रास्ता दिखाया।

दूसरा गवाह : ईसा मसीह के काम

यहया की गवाही अहम थी, लेकिन वह इनसान की गवाही थी। दो और गवाह ज़्यादा अहम हैं।

► **क्यों?**

इसलिए कि वह इनसानी गवाह नहीं हैं। मसीह ने फ़रमाया,

> मेरे पास एक और गवाह है जो यहया की निसबत ज़्यादा अहम है—वह काम जो बाप ने मुझे मुकम्मल करने के लिए दे दिया। (यूहन्ना 5:36)

► **यह किस क़िस्म के काम थे जो मसीह के गवाह थे?**

ईसा मसीह की पाक ज़िंदगी, उसके मोजिज़े और उसका कलाम। यह सब साफ़ साफ़ उसकी गवाही देते थे।

तीसरा गवाह : ख़ुदा बाप

तीसरा गवाह ख़ुदा बाप है। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> इसके अलावा बाप ने ख़ुद जिसने मुझे भेजा है मेरे बारे में गवाही दी है। (यूहन्ना 1:37)

► **ख़ुदा बाप ने किस तरह गवाही दी?**

जब यहया नबी ईसा मसीह को बपतिस्मा दे रहा था तो लिखा है कि

> जब वह दुआ कर रहा था तो आसमान खुल गया और रूहुल-क़ुद्स जिस्मानी सूरत में कबूतर की तरह उस पर उतर आया। साथ साथ आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, "तू मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, तुझसे मैं ख़ुश हूँ।" (लूक़ा 3:21-22)

किसी और दिन ईसा मसीह तीन शागिर्दों के साथ एक ऊँचे पहाड़ पर चढ़ गया कि अचानक मूसा और इलयास ज़ाहिर होकर उससे बातें करने लगे। अचानक

> एक चमकदार बादल आकर उन पर छा गया और बादल में से एक आवाज़ सुनाई दी, "यह मेरा प्यारा फ़रज़ंद है, जिससे मैं ख़ुश हूँ। इसकी सुनो।" यह सुनकर शागिर्द दहशत खाकर औंधे मुँह गिर गए। (मत्ती 17:5-6)

लेकिन शायद मसीह ज़्यादा यह वाक़ियात याद नहीं कर रहा था। क्योंकि इस बात के ऐन बाद उसने एक क़िस्म की पहेली पेश की। उसने फ़रमाया,

> अफ़सोस, तुमने कभी उसकी आवाज़ नहीं सुनी, न उसकी शक्लो-सूरत देखी, और उसका कलाम तुम्हारे अंदर नहीं रहता, क्योंकि तुम उस पर ईमान नहीं रखते जिसे उसने भेजा है। (यूहन्ना 5:37-38)

► **क्या कोई इनसान सीधे ख़ुदा की आवाज़ सुन सकता है?**
हरगिज़ नहीं!

► **क्या कोई इनसान उसकी शक्लो-सूरत देख सकता है?**
हरगिज़ नहीं!

► **तो फिर ईसा मसीह का क्या मतलब है?**
हम पहेली का हल तीन सवालों से कर सकते हैं।

► **यहूदी बुज़ुर्गों ने ख़ुदा बाप की आवाज़ क्यों न सुनी?**
ईसा मसीह उनके दरमियान था और उन्हें ख़ुदा बाप की आवाज़ सुनाता था। वह यह कलाम सुनते तो थे मगर उसकी आवाज़ उनके दिलों तक नहीं पहुँचती थी। वह रूहानी बहरे थे।

► **यहूदी बुज़ुर्गों ने ख़ुदा बाप की शक्लो-सूरत क्यों न देखी?**

ईसा मसीह ख़ुदा बाप को उन पर ज़ाहिर करता था मगर वह उसमें ख़ुदा की शक्लो-सूरत नहीं पहचान सकते थे। वह रूहानी अंधे थे।

► **ख़ुदा बाप का कलाम यहूदी बुज़ुर्गों के दिलों में क्यों नहीं बसता था?**

ईसा मसीह ख़ुदा का कलाम था, और वह उनके दरमियान था। लेकिन वह उस पर ईमान नहीं रखते थे, इसलिए उनके दिलों में नहीं बसता था।

ग़रज़ चूँकि ईसा मसीह ख़ुदा का कलाम है इसलिए वह ख़ुदा बाप की आवाज़ सुनाता और उसकी शक्लो-सूरत ज़ाहिर करता था। तो भी अकसर यहूदी बुज़ुर्गों ने उसे क़बूल न किया। उन्होंने यह गवाही अपने दिलों में बसने न दी। जिस तरह यूहन्ना रसूल फ़रमाता है कि

> अल्लाह की गवाही यह है कि उसने अपने फ़रज़ंद की तसदीक़ की है। जो अल्लाह के फ़रज़ंद पर ईमान रखता है उसके दिल में यह गवाही है। (1 यूहन्ना 5:9-10)

► **क्या ख़ुदा की गवाही आपके दिल में बसता है?**

चौथा गवाह : पाक नविश्ते

पाक नविश्ते बार बार मसीह की पेशगोई करते हैं। इसलिए ईसा मसीह ने यहूदी बुज़ुर्गों पर अफ़सोस किया,

> तुम अपने सहीफ़ों में ढूँडते रहते हो क्योंकि समझते हो कि उनसे तुम्हें अबदी ज़िंदगी हासिल है। लेकिन यही मेरे बारे में गवाही देते हैं! तो भी तुम ज़िंदगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते। (यूहन्ना 5:39-40)

कितनी अलमनाक बात। इन बुज़ुर्गों को मालूम था कि पाक नविश्तों से अबदी ज़िंदगी मिलती है। वह उसमें ढूँडते रहते थे मगर बेफ़ायदा। ढूँडने में कामयाबी उस वक़्त होती है जब रूहुल-क़ुद्स हमारी रूहानी आँखों को खोल देता है। तब ही हमें समझ आती है कि पाक नविश्ते ईसा मसीह की ठोस गवाही देते हैं। तब ही वह हमारे दिल में बसने लगता है, रग रग में धड़कने लगता है। मसीह की मुहब्बत, उसकी ज़िंदगी, उसका रहम, हाँ उसका पूरा वुजूद हममें बसने लगता है।

इनसान की इज़्ज़त या ख़ुदा की?

► **जब ईसा मसीह के इतने ठोस गवाह हैं तो यहूदी बुज़ुर्ग क्यों उस पर ईमान नहीं ला सकते थे?**

ईसा मसीह ने ख़ुद इसका जवाब दिया,

> कोई अजब नहीं कि तुम ईमान नहीं ला सकते। क्योंकि तुम एक दूसरे की इज़्ज़त चाहते हो जबकि तुम वह इज़्ज़त पाने की कोशिश ही नहीं करते जो वाहिद ख़ुदा से मिलती है। (यूहन्ना 5:44)

ईसा मसीह ईमान न रखने की ज़हरीली जड़ ज़ाहिर करता है।

► **वह क्या है?**

बुज़ुर्ग इतने ज़ोर से अपनी इज़्ज़त के पीछे पड़े रहते थे कि वह उस इज़्ज़त के लिए अंधे थे जो ख़ुदा देता है। जो भी धूमधाम से उनकी इज़्ज़त करता था उससे वह लिपट जाते थे। इसके मुक़ाबले में मसीह सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा बाप से इज़्ज़त पाना चाहता था। उसे बुज़ुर्गों से इज़्ज़त मिलने की परवाह ही नहीं थी। उसका पूरा ध्यान ख़ुदा बाप की मरज़ी पूरी करने पर था। वह ख़ूब जानता है कि दूसरों की तरफ़ से मिली इज़्ज़त पर भरोसा नहीं किया जा सकता।

► **क्या आप सचमुच सिर्फ़ ख़ुदा से इज़्ज़त मिलना चाहते हैं?**

अगर नहीं तो आप बुज़ुर्गों की तरह अंधे हैं। तब वह बात आप पर भी सादिक़ आएगी जो मसीह ने बुज़ुर्गों के बारे में फ़रमाया,

> यह न समझो कि मैं बाप के सामने तुम पर इलज़ाम लगाऊँगा। एक और है जो तुम पर इलज़ाम लगा रहा है—मूसा। (यूहन्ना 5:45)

► **मूसा नबी क्यों उन पर इलज़ाम लगा रहा है?**

इसलिए कि उनका पूरा ध्यान उस इज़्ज़त पर था जो इनसान की तरफ़ से है। इसलिए वह शरीअत के रूहानी उसूलों के लिए अंधे हो गए थे। अगर वह सचमुच मूसा नबी की बातों यानी शरीअत पर ईमान रखते और अमल करते तो वह ईसा मसीह पर भी ईमान लाते।

ग़रज़, ईसा मसीह के चार ठोस गवाह हैं। तो भी बुज़ुर्ग अपनी इज़्ज़त के बाइस उस पर ईमान नहीं ला सकते थे।
यह एक अहम बात है।

► **क्या आप अपनी इज़्ज़त बचाने या बढ़ाने की कोशिश में ईसा मसीह पर ईमान नहीं ला सकते?**
  याद रखो कि उसके चार ठोस गवाह हैं : यहया नबी, उसके काम, ख़ुदा बाप और पाक नविश्ते।

इंजील, यूहन्ना 5:30-47

मैं अपनी मरज़ी से कुछ नहीं कर सकता बल्कि जो कुछ बाप से सुनता हूँ उसके मुताबिक़ अदालत करता हूँ। और मेरी अदालत रास्त है क्योंकि मैं अपनी मरज़ी करने की कोशिश नहीं करता बल्कि उसी की जिसने मुझे भेजा है।
अगर मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता तो मेरी गवाही मोतबर न होती। लेकिन एक और है जो मेरे बारे में गवाही दे रहा है और मैं जानता हूँ कि मेरे बारे में उसकी गवाही सच्ची और मोतबर है। तुमने पता करने के लिए अपने लोगों को यहया के पास भेजा है और उसने हक़ीक़त की तसदीक़ की है। बेशक मुझे किसी इनसानी गवाह की ज़रूरत नहीं है, लेकिन मैं यह इसलिए बता रहा हूँ ताकि तुमको नजात मिल जाए। यहया एक जलता हुआ चराग़ था जो रौशनी देता था, और कुछ देर के लिए तुमने उसकी रौशनी में ख़ुशी मनाना पसंद किया।
लेकिन मेरे पास एक और गवाह है जो यहया की निसबत ज़्यादा अहम है— वह काम जो बाप ने मुझे मुकम्मल करने के लिए दे दिया। यही काम जो मैं कर रहा हूँ मेरे बारे में गवाही देता है कि बाप ने मुझे भेजा है।
इसके अलावा बाप ने ख़ुद जिसने मुझे भेजा है मेरे बारे में गवाही दी है। अफ़सोस, तुमने कभी उसकी आवाज़ नहीं सुनी, न उसकी शक्लो-सूरत

देखी, और उसका कलाम तुम्हारे अंदर नहीं रहता, क्योंकि तुम उस पर ईमान नहीं रखते जिसे उसने भेजा है।

तुम अपने सहीफ़ों में ढूँडते रहते हो क्योंकि समझते हो कि उनसे तुम्हें अबदी ज़िंदगी हासिल है। लेकिन यही मेरे बारे में गवाही देते हैं! तो भी तुम ज़िंदगी पाने के लिए मेरे पास आना नहीं चाहते।

मैं इनसानों से इज़्ज़त नहीं चाहता, लेकिन मैं तुमको जानता हूँ कि तुममें अल्लाह की मुहब्बत नहीं। अगरचे मैं अपने बाप के नाम में आया हूँ तो भी तुम मुझे क़बूल नहीं करते। इसके मुक़ाबले में अगर कोई अपने नाम में आएगा तो तुम उसे क़बूल करोगे। कोई अजब नहीं कि तुम ईमान नहीं ला सकते। क्योंकि तुम एक दूसरे से इज़्ज़त चाहते हो जबकि तुम वह इज़्ज़त पाने की कोशिश ही नहीं करते जो वाहिद ख़ुदा से मिलती है। लेकिन यह न समझो कि मैं बाप के सामने तुम पर इलज़ाम लगाऊँगा। एक और है जो तुम पर इलज़ाम लगा रहा है—मूसा, जिससे तुम उम्मीद रखते हो। अगर तुम वाक़ई मूसा पर ईमान रखते तो ज़रूर मुझ पर भी ईमान रखते, क्योंकि उसने मेरे ही बारे में लिखा। लेकिन चूँकि तुम वह कुछ नहीं मानते जो उसने लिखा है तो मेरी बातें क्योंकर मान सकते हो!

बादशाही के चार उसूल

जब ईसा मसीह ख़ुशख़बरी सुनाने लगा तो वह हमेशा अनगिनत लोगों से घिरा रहता था। और क्या अजब। उसकी बातें अनोखी थीं, उसके मोजिज़े देखकर लोग हक्का-बक्का रह जाते थे।

► **जल्द ही सवाल उठा कि क्या यह वह नहीं है जो आनेवाला है? क्या यह वह नहीं है जो दुश्मन को मुल्क से निकालेगा?**

ईसा मसीह उनकी सोच-बिचार जानता था। बेशक वह बादशाह था। लेकिन उसकी बादशाही इस दुनिया की नहीं थी। उसे सियासी बातों से सख़्त नफ़रत थी।

► **लेकिन अगर उसे सियासी बातें पसंद नहीं थीं तो वह किस क़िस्म की बादशाही लाना चाहता था?**

इसका जवाब जल्द ही पता चलेगा।

एक दिन ईसा मसीह अपने शागिर्दों के साथ कश्ती में बैठ गया। उसने उन्हें हिदायत दी कि झील को पार करो। क्योंकि ख़िदमत करते करते सबको आराम की सख़्त ज़रूरत थी। किनारे पर पहुँचकर वह क़रीब के पहाड़ पर चढ़ गए।

शागिर्दों ने सुकून की साँस ली। वाह! इतने शोर-शराबा के बाद यह कितनी पुरसुकून जगह थी! कोई आबादी नहीं थी, बिलकुल वीरान जगह थी। कोई नहीं था जो उन्हें अपने सवालों और मिन्नतों से तंग करे।

मगर यह क्या था? अचानक दो-चार लोग दूर से आते हुए दिखाई दिए। चलो, कोई बात नहीं। एक या दो लोगों को पता चला होगा कि हम यहाँ आए हैं। यह सोचकर शागिर्दों को कुछ तसल्ली हुई। लेकिन फिर वह चौंक उठे। पूरे का पूरा सैलाब उन पर टूट पड़ा। जल्द ही जगह की शांति काफ़ूर हो गई।

► **क्या हुआ था?**

लोगों ने अंदाज़ा लगाया था कि कश्ती किस तरफ़ चल रही है। तब वह पैदल से झील के किनारे चलते हुए उनके पीछे हो लिए थे। अब वह पहुँच गए।

► **क्या ईसा मसीह ने उन्हें भगाया? या क्या वह दुबारा कश्ती में बैठकर चला गया?**

नहीं। वह बैठकर उन्हें ख़ुदा का कलाम सिखाने लगा।

► **क्यों?**

उसे उन पर तरस आया। ईसा मसीह को हमेशा हम पर तरस आता है। उसे पता है कि हम उसके बग़ैर आवारा भेड़ें हैं। कि हमें अच्छे चरवाहे की सख़्त ज़रूरत है।

होते होते 5000 मर्द पहुँच गए। सिर्फ़ मर्दों का ज़िक्र है। उनके बाल-बच्चे भी काफ़ी तादाद में साथ आए होंगे। हो सकता है कि मिल-मिलाकर बीस हज़ार तक थे।

जल्द ही एक मसला मालूम हुआ। लोग इतने जोश से ईसा मसीह के पीछे भाग आए थे कि उनके पास खाना नहीं था।

ईसा मसीह हर एक की फ़िकर करता है। उनकी थकी-हारी हालत देखकर उसने अपने शागिर्द फ़िलिप्पुस से पूछा, "हम कहाँ से खाना ख़रीदें ताकि उन्हें खिलाएँ?" उसको मालूम था कि क्या करेगा। तो भी उसने पूछा।

► **क्यों?**

वह शागिर्दों को अपनी बादशाही के बारे में कुछ सिखाना चाहता था।

► **क्या सिखाना चाहता था?**

यह कि इस बादशाही के कुछ अनमिट उसूल होते हैं। पहला उसूल,

भाईचारा

► **क्या ईसा मसीह ने फ़िलिप्पुस से इसलिए बात की कि वह खाने का इंतज़ाम करवाए?**

नहीं। वह चाहता था कि फ़िलिप्पुस ख़ुद सोच ले कि क्या करना है। कि खाना कहाँ से आएगा। जगह तो वीरान थी। आबादी थी ही नहीं जहाँ से खाना मिले।

भाईचारा इससे शुरू होता है कि हम दूसरों की फ़िकर करें। ईसा मसीह चाहता है कि हम एक दूसरे की इस तरह फ़िकर करें जिस तरह वह करता है।

अब फ़िलिप्पुस सचमुच फ़िकर करने लगा। उसने लोगों की तादाद गिनकर जवाब दिया, "अगर हर एक को सिर्फ़ थोड़ा-सा मिले तो भी चाँदी के 200 सिक्के काफ़ी नहीं होंगे।"

मज़दूर को दिन में चाँदी का एक सिक्का मिलता था। 200 दिन में वह इतने पैसे कमा सकता था कि इन लोगों को थोड़ा-बहुत मिल जाए।

अब दूसरे शागिर्द भी फ़िकरमंद हुए। वह पता करने लगे कि क्या किसी के पास खाना है? मगर किसी के पास खाना न था। आख़िरकार एक शागिर्द बनाम अंदरियास आया और कहा, "यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। मगर इतने लोगों में यह क्या हैं!"

भाईचारे की झलक।

आसमान की बादशाही का दूसरा उसूल,

कमी से कसरत

ईसा मसीह का पूछने का मक़सद पूरा हो गया था। शागिर्दों में फ़िकरमंदी की रूह आ गई थी। अब ईसा मसीह एक और बात सिखाना चाहता है।

► **वह क्या है?**

यह कि आसमान की बादशाही में कमी कसरत में बदल जाती है। ऐसी कसरत जो सबके लिए काफ़ी हो।

उसने फ़रमाया, "लोगों को बिठा दो।"

सबको बिठा दिया गया तो ईसा मसीह ने शुक्रगुज़ारी की दुआ की। फिर उसने रोटी और मछलियों के टुकड़े टुकड़े करके उन्हें शागिर्दों के सुपुर्द किए। शागिर्द यह टुकड़े बाँटने में जुट गए। लेकिन यह क्या था? शागिर्द तक़सीम करते गए मगर खाना ख़त्म न हुआ। लोग न सिर्फ़ जी भरकर खा सके बल्कि खाना बच भी गया। बचे हुए खाने के 12 टोकरे भर गए—हर शागिर्द के लिए एक।

जिस लड़के ने खाना दिया था उसके पास थोड़ा ही था। लेकिन ईसा मसीह ने यह लेकर कसरत का खाना मुहैया किया। जो थोड़ा-बहुत हमारे पास है ईसा मसीह उसे इतना बढ़ा सकता है कि सब सेर हो जाएँ।

लड़का यह भी कह सकता था कि मुझे छोड़ दो। यह बस मेरे लिए काफ़ी है। मैं अपना खाना ख़ुद खाऊँगा। लेकिन जब उसने अपनी नेमत ईसा मसीह के सुपुर्द की तो बेशुमार लोगों को बरकत मिली।

आसमान की बादशाही में जब हम अपना थोड़ा-बहुत माल ईसा मसीह को सौंप दें तो सबको बरकत मिलती है। तब कमी कसरत में बदल जाती है।

► **क्या आप चाहते हैं कि ईसा मसीह आप की कमी को कसरत में बदल दे?**
फिर उसे ईसा मसीह के सुपुर्द करें।

आसमान की बादशाही का तीसरा उसूल,

सियासत बंद

जहाँ आसमान की बादशाही होती है वहाँ सियासत बंद हो जाती है।

जब लोगों ने यह मोजिज़ा देखा तो वह एक दूसरे से फुसफुसाने लगे।

► **क्या फुसफुसाने लगे?**
यह कि "यक़ीनन यह वही नबी है जिसे दुनिया में आना था।"

► **क्या मतलब? कौन-सा नबी?**
मूसा नबी ने पेशगोई की थी कि एक वक़्त आएगा जब

> रब तेरा ख़ुदा तेरे वास्ते तेरे भाइयों में से मुझ जैसे नबी को बरपा करेगा। (तौरेत, इस्तिसना 18:15)

लोग समझ गए कि ईसा मसीह यही नबी है। कि वह आनेवाला अल-मसीह है। कि यह हमारा बादशाह बनेगा। मोजिज़े को देखकर वह इतने जोश में आए कि वहीं के वहीं उसे बादशाह बनाना चाहते थे। आप ख़ुद अंदाज़ा लगाएँ : 5000 मर्द क्या कुछ नहीं कर पाते जब वह मिलकर काम करें। साथ ऐसा बादशाह हो।

लेकिन ईसा मसीह को मालूम हुआ कि वह आकर उसे ज़बरदस्ती बादशाह बनाना चाहते हैं।

► **क्या उसने उनकी इज़्ज़तो-एहतराम क़बूल की?**
नहीं। उसको उनकी इस सोच से नफ़रत थी। लोग बस सियासी सोच रखते थे। वह उससे दुनियावी फ़ायदा उठाना चाहते थे। लेकिन ईसा मसीह इस दुनिया की आम बादशाही क़ायम करने नहीं आया था। वह आसमान की बादशाही लाने को आया था।

► **आसमान की यह बादशाही क्या है?**
यह एक रूहानी, एक अंदरूनी बादशाही है। यह बादशाही दिलों में राज करती है। यह सख़्त और सियासी दिलों को नरम करना चाहती है—ख़ुदा की बातों के

लिए नरम, एक दूसरे के लिए नरम। यह हमें आसमान के शहरी बनाना चाहती है।

► **ईसा मसीह ने क्या किया जब लोग यों सोचने लगे?**

वह एकदम उनसे अलग होकर अकेला ही पहाड़ पर चढ़ गया।

आज भी बहुत-से लोग ईसा मसीह को अपने कामों के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं। वह उसे अपना बादशाह बनाकर दुनियावी फ़ायदा उठाना चाहते हैं। यों वह बादशाह को ग़ुलाम बनाना चाहते हैं। लेकिन यक़ीन करो : जब लोग ईसा मसीह को अपने मक़सदों के लिए इस्तेमाल करना चाहते हैं तब वह ओझल हो जाता है। वह सिर्फ़ उस वक़्त हाज़िर होता है जब हमारे दिल उसके रूहानी काम के लिए खुले हों। जब हम मान जाएँ कि वह आसमान का बादशाह है।

► **शागिर्दों के साथ क्या हुआ?**

ईसा मसीह ने उन्हें एकदम कश्ती में बिठाकर झील के पार भेज दिया।

► **क्यों?**

इसलिए कि वह भी सियासी बातों में उलझ न जाएँ।

आसमान की बादशाही का चौथा उसूल,

तूफ़ान में हिफ़ाज़त

अंधेरा छा गया और ईसा मसीह अब तक पहाड़ पर था। एकदम तेज़ हवा कश्ती पर टूट पड़ी। बड़ी बड़ी लहरें कश्ती से टकराने लगीं। कश्ती छोटे खिलौने की तरह इधर-उधर डगमगाने लगी। यह देखकर शागिर्द कश्ती को जल्द-अज़-जल्द अगले किनारे तक ले जाने में जुट गए। कश्ती को खेते खेते वह चार या पाँच किलोमीटर का सफ़र तय कर चुके थे कि अचानक चीख़ उठे। अंधेरे में एक शक्ल पानी पर चलती हुई नज़र आई।

► **क्या यह कोई भूत था जो उनको बरबाद करने आ रहा था?**

वह दहशत से पानी पानी हो गए।

तब ईसा मसीह की आवाज़ सुनाई दी, “मैं ही हूँ। ख़ौफ़ न करो।”

► **क्या हो रहा था?**

वह पानी पर चलते हुए उनके पास आ रहा था। वह पानी पर यों चल रहा था जिस तरह हम ठोस ज़मीन पर चलते हैं। कभी वह पानी के पहाड़ों पर चढ़ता

नज़र आता कभी पानी की वादियों में ओझल हो जाता था। आख़िरकार वह कश्ती के पास पहुँच गया। शागिर्द उसे कश्ती में बिठाने को थे कि कश्ती उस जगह पहुँच गई जहाँ वह जाना चाहते थे।

यह कैसी बात है। लोग ईसा मसीह को बादशाह बनाना चाहते थे जबकि उसे पानी और हवा पर पूरा इख़्तियार था। इसलिए आओ, हम उस पर ईमान रखें ताकि रोज़मर्रा की ज़िंदगी में उसकी हिफ़ाज़त पाएँ। जब तूफ़ान हम पर टूट पड़े तो हम मदद के लिए उसे पुकारें। जब पानी के पहाड़ हमसे टकराएँ तो उसकी क़ुरबत में महफ़ूज़ रहें।

► **यों शागिर्दों ने एक ही दिन में बहुत कुछ सीख लिया था :**

भाईचारा। आसमान की बादशाही में हम सब भाई-बहन हैं। जिस तरह ईसा मसीह हमारी फ़िकर करता है उसी तरह हमें एक दूसरे की फ़िकर करनी है।

कमी से कसरत। इस बादशाही में जो थोड़ा-बहुत मेरे पास है वह सबके लिए बरकत का बाइस बन जाता है।

सियासत बंद। जहाँ आसमान की बादशाही है वहाँ सियासत बंद हो जाती है।

तूफ़ान में हिफ़ाज़त। हमारे आक़ा को हवा और पानी पर इख़्तियार है। इसलिए जब ज़िंदगी के तूफ़ान हमें झकझोरते हैं तो हमें उसी के क़दमों में हिफ़ाज़त मिलती है।

इंजील, यूहन्ना 6:1-21

इसके बाद ईसा ने गलील की झील को पार किया। (झील का दूसरा नाम तिबरियास था।) एक बड़ा हुजूम उसके पीछे लग गया था, क्योंकि उसने इलाही निशान दिखाकर मरीज़ों को शफ़ा दी थी और लोगों ने इसका मुशाहदा किया था। फिर ईसा पहाड़ पर चढ़कर अपने शागिर्दों के साथ बैठ गया। (यहूदी ईदे-फ़सह क़रीब आ गई थी।) वहाँ बैठे ईसा ने अपनी नज़र उठाई तो देखा कि एक बड़ा हुजूम पहुँच रहा है। उसने फ़िलिप्पुस से पूछा, “हम कहाँ से खाना ख़रीदें ताकि उन्हें खिलाएँ?” (यह उसने फ़िलिप्पुस को आज़माने के लिए कहा। ख़ुद तो वह जानता था कि क्या करेगा।)

फ़िलिप्पुस ने जवाब दिया, "अगर हर एक को सिर्फ़ थोड़ा-सा मिले तो भी चाँदी के 200 सिक्के काफ़ी नहीं होंगे।"

फिर शमाऊन पतरस का भाई अंदरियास बोल उठा, "यहाँ एक लड़का है जिसके पास जौ की पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ हैं। मगर इतने लोगों में यह क्या हैं!"

ईसा ने कहा, "लोगों को बिठा दो।" उस जगह बहुत घास थी। चुनाँचे सब बैठ गए। (सिर्फ़ मर्दों की तादाद 5,000 थी।) ईसा ने रोटियाँ लेकर शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उन्हें बैठे हुए लोगों में तक़सीम करवाया। यही कुछ उसने मछलियों के साथ भी किया। और सबने जी भरकर रोटी खाई। जब सब सेर हो गए तो ईसा ने शागिर्दों को बताया, "अब बचे हुए टुकड़े जमा करो ताकि कुछ ज़ाया न हो जाए।" जब उन्होंने बचा हुआ खाना इकट्ठा किया तो जौ की पाँच रोटियों के टुकड़ों से बारह टोकरे भर गए।

जब लोगों ने ईसा को यह इलाही निशान दिखाते देखा तो उन्होंने कहा, "यक़ीनन यह वही नबी है जिसे दुनिया में आना था।" ईसा को मालूम हुआ कि वह आकर उसे ज़बरदस्ती बादशाह बनाना चाहते हैं, इसलिए वह दुबारा उनसे अलग होकर अकेला ही किसी पहाड़ पर चढ़ गया।

शाम को शागिर्द झील के पास गए और कश्ती पर सवार होकर झील के पार शहर कफ़र्नहूम के लिए रवाना हुए। अंधेरा हो चुका था और ईसा अब तक उनके पास वापस नहीं आया था। तेज़ हवा के बाइस झील में लहरें उठने लगीं। कश्ती को खेते खेते शागिर्द चार या पाँच किलोमीटर का सफ़र तय कर चुके थे कि अचानक ईसा नज़र आया। वह पानी पर चलता हुआ कश्ती की तरफ़ बढ़ रहा था। शागिर्द दहशतज़दा हो गए। लेकिन उसने उनसे कहा, "मैं ही हूँ। ख़ौफ़ न करो।" वह उसे कश्ती में बिठाने पर आमादा हुए। और कश्ती उसी लमहे उस जगह पहुँच गई जहाँ वह जाना चाहते थे।

ज़िंदगी की रोटी

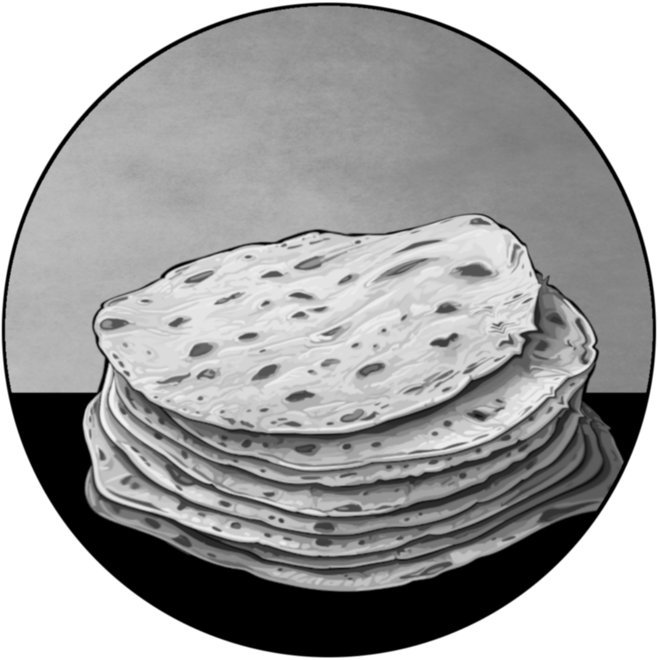

ईसा मसीह मोजिज़ों का मालिक है। एक दिन उसने पाँच रोटियाँ और दो मछलियाँ लेकर उनसे 5000 मर्दों को बाल-बच्चों समेत खाना खिलाया। लोग हक्का-बक्का रह गए। तब वह एक दूसरे से कहने लगे, यह तो हमारा बादशाह होना चाहिए। अगर यह हमारे आगे आगे चले तो हम क्या कुछ नहीं कर पाएँगे।

लेकिन ईसा मसीह को सियासत से नफ़रत है। ऐसी बातें बुलंद होने लगीं तो उसने अपने क़रीबी शागिर्दों को एकदम कश्ती में बिठाकर झील के पार भेज दिया। ख़ुद वह अकेले किसी पहाड़ पर चढ़ गया। अंधेरा छा गया तो वह तूफ़ानी लहरों पर चलते हुए शागिर्दों के पास आया। तब वह मिलकर कफ़र्नहूम चले गए।

जो लोग पीछे रह गए थे वह अगले दिन जाग उठे। अपनी आँखों को मल मलकर वह उस्ताद को तलाश करने लगे तो कहीं न पाए। काफ़ी देर के बाद पता चला कि वह झील के पार कफ़र्नहूम शहर में है। तब वह भी रवाना हुए। कफ़र्नहूम पहुँचने पर उन्होंने पूछा, "उस्ताद, आप किस तरह यहाँ पहुँच गए?"

► **ईसा मसीह ने क्या जवाब दिया?**

पहली बात,

ज़िंदगी की रोटी पाओ

वह सीधे असल बात पर आ गया। फ़रमाया,

> तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँड रहे कि इलाही निशान देखे हैं बल्कि इसलिए कि तुमने जी भरकर रोटी खाई है। (यूहन्ना 6:26)

► **वह क्या कहना चाहता था?**

तुम लोग सिर्फ़ दुनियावी सोच रखते हो। मैंने तुम सबको खाना खिलाया। लेकिन तुमने यह देखकर रूहानी नतीजा न निकाला। तुमने सिर्फ़ यह नतीजा निकाला कि इस बंदे को हमारा बादशाह बनना है, यही हमारी दुनियावी

ज़रूरियात पूरी करे। लेकिन मेरे मोजिज़ों का मक़सद और है। वह इलाही निशान हैं।

► **निशान क्यों?**

यह ज़ाहिर करते हैं कि ईसा मसीह को इलाही इख़्तियार है। कि उसे आसमान की बादशाही लाने का इख़्तियार है। लेकिन यह बादशाही दुनियावी नहीं है। यह रूहानी है। यह लोगों के दिलों को तबदील करेगी। उन्हें अगली दुनिया के लिए तैयार करेगी। लोगों को इस रूहानी बादशाही में दाख़िल होने की कोशिश करनी चाहिए।

उसने फ़रमाया,

> ऐसी ख़ुराक के लिए जिद्दो-जहद न करो जो सड़-गल जाती है, बल्कि ऐसी के लिए जो अबदी ज़िंदगी तक क़ायम रहती है और जो इब्ने-आदम तुमको देगा। (यूहन्ना 6:27)

► **लोग उस रोटी के लिए जिद्दो-जहद क्यों न करें जो सड़-गल जाए?**

आम रोटी खाकर इनसान को अबदी ज़िंदगी नहीं मिलती।

► **तो फिर लोग किस रोटी के लिए जिद्दो-जहद करें?**

उस रोटी के लिए जो अबद तक क़ायम रहती है।

► **क्यों?**

उसे खाकर इनसान अबद तक ज़िंदा रहेगा।

लेकिन यह रोटी सिर्फ़ एक ही दे सकता है।

► **वह कौन?**

इब्ने-आदम।

► **इब्ने-आदम कौन है?**

इब्ने-आदम ईसा मसीह का दूसरा नाम है। दूसरी बात,

मुझ पर ईमान लाओ

अब लोग सोच-बिचार में पड़ गए। उस्ताद ठीक ही कह रहे हैं। लेकिन हम क्या करें ताकि ज़िंदगी की रोटी पाएँ? क्या काम करें जो ख़ुदा को पसंद आए और हमें यह रोटी मिल जाए?

► **किसी वक़्त हर इनसान के दिल में यह सवाल उभर आता है कि मैं क्या करूँ ताकि अबदी ज़िंदगी पाऊँ?**

इन लोगों ने भी यह सवाल पूछा, “हमें क्या करना चाहिए ताकि अल्लाह का मतलूबा काम करें?”

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> अल्लाह का काम यह है कि तुम उस पर ईमान लाओ जिसे उसने भेजा है। (यूहन्ना 6:29)

► **यह क्या काम है जो देखकर ख़ुदा हमें अबदी ज़िंदगी की रोटी देगा?**

ईसा मसीह पर ईमान।

► **क्या ग़लत काम छोड़ना काफ़ी नहीं? क्या नेक काम काफ़ी नहीं? क्या शरीअत पर अमल करना काफ़ी नहीं?**

कभी नहीं। ईसा मसीह फ़रमाता है कि उस पर ईमान लाओ जिसे ख़ुदा ने भेजा है। यानी मुझ पर। एक ही वसीला है जिससे ज़िंदगी की यह रोटी मिल जाए : ईसा मसीह पर ईमान। अबदी रोटी पाने के लिए न नेक काम काफ़ी हैं न शरीअत पर अमल। एक ही रास्ता है : ईसा मसीह पर ईमान।

► **ईसा मसीह क्यों फ़रमाता है कि मुझ पर ईमान लाओ?**

वह जानता है कि हमारे नेक काम कभी काफ़ी नहीं होंगे।

► **क्यों?**

हमारी फ़ितरत इतनी ख़राब है कि हमारे नेक काम हमें ख़ुदा के सामने मंज़ूर नहीं करा सकते। हमारी फ़ितरत एक गली-सड़ी मछली जैसी है।

► **क्या पकाने से यह खाने लायक़ हो जाएगी?**

कभी नहीं!

► **क्या हम इसे किसी और तरीक़े से खाने लायक़ बना सकते हैं?**

कभी नहीं। हमारी इनसानी फ़ितरत हमारी अपनी कोशिशों से बहाल नहीं हो सकती। इसी लिए अल-मसीह इस दुनिया में नाज़िल हुआ ताकि ख़ुद ही हमें बहाल करे। इसी लिए उस पर ईमान लाना ज़रूरी है। क्योंकि उस पर ईमान लाने से वह हमें यह अबदी ज़िंदगी दे सकता है। तीसरी बात,

मैं ही ज़िंदगी की रोटी हूँ

► **क्या लोग यह सुनकर उस पर ईमान लाए?**

नहीं। वह शक में पड़कर कहने लगे, "तो फिर आप क्या इलाही निशान दिखाएँगे जिसे देखकर हम आप पर ईमान लाएँ? आप क्या काम सरंजाम देंगे? हमारे बापदादा ने तो रेगिस्तान में मन खाया। चुनाँचे कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि मूसा ने उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।"

► **वह ईसा मसीह से क्या माँग रहे थे?**

एक इलाही निशान।

► **इलाही निशान क्यों?**

वह कोई मोजिज़ा कर दिखाए जो साबित करे कि उसे इलाही इख़्तियार है।

► **क्या ईसा मसीह ने अभी अभी एक निशान नहीं दिखाया था?**

ज़रूर। उसने 5000 मर्दों को बाल-बच्चों समेत खाना खिलाया था।

► **तो फिर लोग क्यों इलाही निशान माँग रहे थे?**

यहाँ वह एक और बात माँग रहे थे। इसलिए उन्होंने कहा कि मूसा ने हमारे बापदादा को मन खिलाया। वह सीधे माँग रहे थे कि ईसा मसीह भी आसमान से मन बरसने दे।

► **मन का यह क्या मोजिज़ा था जो मूसा के ज़माने में हुआ था?**

जब इसराईली रेगिस्तान में सफ़र कर रहे थे तो ख़ुदा ने उन्हें मन खिलाया था।

► **मन क्या था?**

यह दाने थे जो आसमान से गिरते थे और जो धनिये की मानिंद सफ़ेद थे। खाने में वह शहद से बने केक की मानिंद था (तौरेत, ख़ुरूज 16:31)।

► **लोग ईसा मसीह से इस क़िस्म का मोजिज़ा माँग रहे थे। क्यों?**

यहूदी रिवायत के मुताबिक़ अल-मसीह की आमद पर मन आसमान से दुबारा गिरेगा। मतलब है, लोग चाहते थे कि ईसा मसीह मन बरसाकर साबित करे कि वह आनेवाला मसीह है।

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> ख़ुद मूसा ने तुमको आसमान से रोटी नहीं खिलाई बल्कि मेरे बाप ने। वही तुमको आसमान से हक़ीक़ी रोटी देता है। क्योंकि अल्लाह की रोटी वह शख़्स है जो आसमान पर से उतरकर दुनिया को ज़िंदगी बख़्शता है। (यूहन्ना 6:32-33)

► **क्या मूसा ने मन खिलाया था?**

नहीं, ख़ुदा बाप ने। यह पहली बात है। लेकिन अब ख़ुदा बाप एक और क़िस्म की रोटी देता है।

► **किस क़िस्म की रोटी?**

हक़ीक़ी रोटी।

► **मन और इस रोटी में क्या फ़रक़ है?**

मन गलनेवाली रोटी है जबकि यह रोटी एक शख़्स है। एक शख़्स जो अबदी ज़िंदगी बख़्शता है।

► **कौन-सा शख़्स?**

ईसा मसीह। वही अबदी ज़िंदगी की रोटी है। हक़ीक़ी मन का मोजिज़ा उसी में हो चुका है।

अब तक सुननेवालों को बात समझ न आई। उन्होंने कहा, "ख़ुदावंद, हमें यह रोटी हर वक़्त दिया करें।" तब ईसा मसीह ने साफ़ फ़रमाया,

> मैं ही ज़िंदगी की रोटी हूँ। जो मेरे पास आए उसे फिर कभी भूक नहीं लगेगी। और जो मुझ पर ईमान लाए उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी। (यूहन्ना 6:35)

सिर्फ़ और सिर्फ़ ईसा मसीह ज़िंदगी की रोटी है। उसी से अबदी ज़िंदगी मिलती है। कोई और रोटी यह नहीं दिला सकती। यह हमें एक चौथी बात की तरफ़ ले जाती है,

नजात पक्की है

यह रोटी खाने से नजात यक़ीनी है, पक्की है।

► **क्या आपको यक़ीन है कि आप अदालत के दिन बचेंगे?**

कोई और रोटी हमें क़ियामत के दिन ज़िंदा नहीं करेगी। कोई और रोटी हमें अदालत के दिन महफ़ूज़ नहीं रखेगी। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> जितने भी बाप ने मुझे दिए हैं वह मेरे पास आएँगे और जो भी मेरे पास आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा। (यूहन्ना 6:37)

यहाँ ईसा मसीह के किरदार का एक ठोस पहलू नज़र आता है।

► **वह क्या?**

चरवाहे का किरदार। वह अच्छा चरवाहा है जो अपनी हर भेड़ की फ़िकर करता है। जिसको भी ख़ुदा बाप ने उसके सुपुर्द किया है उसे वह हलाक नहीं होने देगा। कितनी तसल्ली की बात है। इसको और पक्का बनाकर उसने फ़रमाया,

> सिर्फ़ वह शख़्स मेरे पास आ सकता है जिसे बाप ... मेरे पास खींच लाया है। (यूहन्ना 6:44)

हम अपनी ही कोशिशों से नजात नहीं पा सकते। ख़ुदा बाप ख़ुद हमें खींच लाता है। जब हम ईसा मसीह पर ईमान लाते हैं तो यही बात हमें दिलासा देती है। क्योंकि यह नजात हमारी कमज़ोर कोशिशों पर मबनी नहीं होती बल्कि ख़ुदा बाप के पक्के वादे पर। तब हमें पूरी तसल्ली है कि हम अदालत के दिन भी महफ़ूज़ रहेंगे। पाँचवीं बात,

खाते-पीते रहो

तब ईसा मसीह ने एक हैरतअंगेज़ बात फ़रमाई,

> मैं ही ज़िंदगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से उतर आई है। जो इस रोटी से खाए वह अबद तक ज़िंदा रहेगा। और यह रोटी मेरा गोश्त है जो मैं दुनिया को ज़िंदगी मुहैया करने की ख़ातिर पेश करूँगा। (यूहन्ना 6:51)

मन खाने से इसराईलियों को अबदी ज़िंदगी न मिली।

► **क्या अबदी ज़िंदगी की यह रोटी भी इसी तरह है?**

नहीं। जो भी ज़िंदगी की यह नई रोटी खाए उसे अबदी ज़िंदगी हासिल है।

साथ साथ ईसा मसीह ने एक और बात फ़रमाई। यह कि यह रोटी मेरा गोश्त है।

► **क्यों?**

जब इसराईली रेगिस्तान में थे तो वह न सिर्फ़ रोटी बल्कि गोश्त के लिए भी तरस रहे थे (ख़ुरूज 16:3)। और ख़ुदा ने उनकी सुनी। उसी शाम बटेरों के ग़ोल आए जो पूरी ख़ैमागाह पर छा गए। तब इसराईलियों ने जी भरकर गोश्त खाया। अब ईसा मसीह फ़रमाता है कि मैं ज़िंदगी की रोटी भी हूँ और गोश्त भी। मन और गोश्त के मोजिज़े मुझमें हुए हैं।

लेकिन अब ईसा मसीह ने एक ज़्यादा चौंका देने वाली बात कही,

> मेरा गोश्त हक़ीक़ी ख़ुराक और मेरा ख़ून हक़ीक़ी पीने की चीज़ है। जो मेरा गोश्त खाता और मेरा ख़ून पीता है वह मुझमें क़ायम रहता है और मैं उसमें। (यूहन्ना 6:55-56)

► **ईस से वह क्या कहना चाहता था?**

गोश्त खाने और ख़ून पीने का ख़्याल तो घिनौना-सा लगता है।

► **हम किस तरह उसका गोश्त और ख़ून खा-पी सकते हैं?**

ईसा मसीह अपनी सलीबी मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था। थोड़े दिनों के बाद उसे अपनी जान हमारी ख़ातिर देनी थी यानी उसे अपना गोश्त और ख़ून क़ुरबान करना था।

► **क्यों?**

उसे हमारे गुनाहों की सज़ा उठानी थी ताकि हमें नजात मिल जाए। और यह सज़ा सख़्त थी। सज़ाए-मौत थी।

► **लेकिन गोश्त खाने और ख़ून पीने पर इतना ज़ोर देने से वह क्या कहना चाहता था?**

यह बहुत ज़रूरी है कि हम हर लमहा उसकी इस क़ुरबानी से अबदी ज़िंदगी पाते रहें। लाज़िम है कि हम हर लमहा उसकी क़ुरबत में रहें, हर लमहा उससे लिपटे रहें, हर लमहा उसे तकते रहें, हर लमहा उसकी बातें जज़ब करते रहें। तब यह अबदी ज़िंदगी हमारी रगों में दौड़ती रहेगी। तब हम ईसा मसीह जैसे बनते जाएँगे। चाहे हमारी ज़िंदगी कितनी दुखी क्यों न हो हमारे अंदर उसका सुकून

और उसकी तसल्ली रहेगी। तब उसका नूर हमारी ज़िंदगी में चमकती-दमकती रहेगी।

जब बल्ब में बिजली हो तो वह जलता है। बिजली बंद हो तो लाइट नहीं जलती। इसी तरह अगर हमारी ईसा मसीह के साथ रिफ़ाक़त आहिस्ता आहिस्ता बंद हो जाए तो हम इस भरपूर ज़िंदगी से महरूम रह जाएँगे। तब हमारी ज़िंदगी दुबारा गुनाह से भर जाएगी। तब हमारा दिल अंधेरा हो जाएगा।

एक आख़िरी बात,

पहले ईमान फिर पहचान

ईसा मसीह की यह बातें बहुत-से लोगों को ना-गवार लगीं।

► **क्यों?**

वह यह क़बूल करने के लिए तैयार नहीं थे कि ईसा मसीह ज़िंदगी की रोटी है। कि उस पर ईमान लाने से अबदी ज़िंदगी मिलती है। कि वह न सिर्फ़ आम क़िस्म का गुरू है बल्कि आसमान की हक़ीक़ी रोटी। वह रोटी जिससे इस दुनिया और अगली दुनिया में भरपूर ज़िंदगी मिल जाएगी।

अब बहुत-से लोगों ने ईसा मसीह को छोड़ दिया। तब उसने अपने क़रीबी शागिर्दों से पूछा कि क्या तुम भी मुझे छोड़ना चाहते हो?

शमाऊन पतरस ने जवाब दिया,

> ख़ुदावंद, हम किसके पास जाएँ? अबदी ज़िंदगी की बातें तो आप ही के पास हैं। और हमने ईमान लाकर जान लिया है कि आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं। (यूहन्ना 6:68-69)

पतरस और दूसरे क़रीबी शागिर्द उस्ताद की कई बातें समझ नहीं सकते थे। लेकिन बड़ी बात साफ़ थी : हमारे आक़ा के पास अबदी ज़िंदगी की बातें हैं। वही अल्लाह का क़ुद्दूस है।

► **हम किस तरह जान सकते हैं कि ईसा मसीह सचमुच अबदी ज़िंदगी की रोटी है?**

पतरस इसका जवाब देता है। यह जानने के लिए अक़्ल काफ़ी नहीं है। इसके लिए ईमान ज़रूरी है। पहले ईमान लाओ, तब ही जान लोगे। हम ख़ुदावंद का

किरदार अपनी अक़्ल से मालूम नहीं कर सकते। पहले ईमान ज़रूरी है। तब ही हम जान लेंगे कि वह अल्लाह का क़ुद्दूस है। कि वह अबदी ज़िंदगी की हक़ीक़ी रोटी है।

► **ग़रज़, ज़िंदगी की रोटी के बारे में 6 सच्चाइयाँ अपनानी चाहिएँ :**

- ज़िंदगी की रोटी पाओ।
- मुझ पर ईमान लाओ।
- मैं ही ज़िंदगी की रोटी हूँ।
- नजात यक़ीनी है।
- खाते-पीते रहो।
- पहले ईमान फिर पहचान।

इंजील, यूहन्ना 6:22-70

हुजूम तो झील के पार रह गया था। अगले दिन लोगों को पता चला कि शागिर्द एक ही कश्ती लेकर चले गए हैं और कि उस वक़्त ईसा कश्ती में नहीं था। फिर कुछ कश्तियाँ तिबरियास से उस मक़ाम के क़रीब पहुँचीं जहाँ ईसा मसीह ने रोटी के लिए शुक्रगुज़ारी की दुआ करके उसे लोगों को खिलाया था। जब लोगों ने देखा कि न ईसा और न उसके शागिर्द वहाँ हैं तो वह कश्तियों पर सवार होकर ईसा को ढूँडते ढूँडते कफ़र्नहूम पहुँचे।

जब उन्होंने उसे झील के पार पाया तो पूछा, "उस्ताद, आप किस तरह यहाँ पहुँच गए?"

ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता हूँ, तुम मुझे इसलिए नहीं ढूँड रहे कि इलाही निशान देखे हैं बल्कि इसलिए कि तुमने जी भरकर रोटी खाई है। ऐसी ख़ुराक के लिए जिद्दो-जहद न करो जो सड़-गल जाती है, बल्कि ऐसी के लिए जो अबदी ज़िंदगी तक क़ायम रहती है और जो इब्ने-आदम तुमको देगा, क्योंकि ख़ुदा बाप ने उस पर अपनी तसदीक़ की मोहर लगाई है।"

इस पर उन्होंने पूछा, "हमें क्या करना चाहिए ताकि अल्लाह का मतलूबा काम करें?"

ईसा ने जवाब दिया, "अल्लाह का काम यह है कि तुम उस पर ईमान लाओ जिसे उसने भेजा है।"

उन्होंने कहा, "तो फिर आप क्या इलाही निशान दिखाएँगे जिसे देखकर हम आप पर ईमान लाएँ? आप क्या काम सरंजाम देंगे? हमारे बापदादा ने तो रेगिस्तान में मन खाया। चुनाँचे कलामे-मुक़द्दस में लिखा है कि मूसा ने उन्हें आसमान से रोटी खिलाई।"

ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि ख़ुद मूसा ने तुमको आसमान से रोटी नहीं खिलाई बल्कि मेरे बाप ने। वही तुमको आसमान से हक़ीक़ी रोटी देता है। क्योंकि अल्लाह की रोटी वह शख़्स है जो आसमान पर से उतरकर दुनिया को ज़िंदगी बख़्शता है।"

उन्होंने कहा, "ख़ुदावंद, हमें यह रोटी हर वक़्त दिया करें।"

जवाब में ईसा ने कहा, "मैं ही ज़िंदगी की रोटी हूँ। जो मेरे पास आए उसे फिर कभी भूक नहीं लगेगी। और जो मुझ पर ईमान लाए उसे फिर कभी प्यास नहीं लगेगी। लेकिन जिस तरह मैं तुमको बता चुका हूँ, तुमने मुझे देखा और फिर भी ईमान नहीं लाए। जितने भी बाप ने मुझे दिए हैं वह मेरे पास आएँगे और जो भी मेरे पास आएगा उसे मैं हरगिज़ निकाल न दूँगा। क्योंकि मैं अपनी मरज़ी पूरी करने के लिए आसमान से नहीं उतरा बल्कि उसकी जिसने मुझे भेजा है। और जिसने मुझे भेजा उसकी मरज़ी यह है कि जितने भी उसने मुझे दिए हैं उनमें से मैं एक को भी खो न दूँ बल्कि सबको क़ियामत के दिन मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँ। क्योंकि मेरे बाप की मरज़ी यही है कि जो भी फ़रज़ंद को देखकर उस पर ईमान लाए उसे अबदी ज़िंदगी हासिल हो। ऐसे शख़्स को मैं क़ियामत के दिन मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँगा।"

यह सुनकर यहूदी इसलिए बुड़बुड़ाने लगे कि उसने कहा था, "मैं ही वह रोटी हूँ जो आसमान पर से उतर आई है।" उन्होंने एतराज़ किया, "क्या यह ईसा बिन यूसुफ़ नहीं, जिसके बाप और माँ से हम वाक़िफ़ हैं? वह क्योंकर कह सकता है कि 'मैं आसमान से उतरा हूँ'?"

ईसा ने जवाब में कहा, "आपस में मत बुड़बुड़ाओ। सिर्फ़ वह शख़्स मेरे पास आ सकता है जिसे बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे पास खींच लाया है। ऐसे

शख़्स को मैं क़ियामत के दिन मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँगा। नबियों के सहीफ़ों में लिखा है, 'सब अल्लाह से तालीम पाएँगे।' जो भी अल्लाह की सुनकर उससे सीखता है वह मेरे पास आ जाता है। इसका मतलब यह नहीं कि किसी ने कभी बाप को देखा। सिर्फ़ एक ही ने बाप को देखा है, वही जो अल्लाह की तरफ़ से है। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो ईमान रखता है उसे अबदी ज़िंदगी हासिल है। ज़िंदगी की रोटी मैं हूँ। तुम्हारे बापदादा रेगिस्तान में मन खाते रहे, तो भी वह मर गए। लेकिन यहाँ आसमान से उतरनेवाली ऐसी रोटी है जिसे खाकर इनसान नहीं मरता। मैं ही ज़िंदगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से उतर आई है। जो इस रोटी से खाए वह अबद तक ज़िंदा रहेगा। और यह रोटी मेरा गोश्त है जो मैं दुनिया को ज़िंदगी मुहैया करने की ख़ातिर पेश करूँगा।"

यहूदी बड़ी सरगरमी से एक दूसरे से बहस करने लगे, "यह आदमी हमें किस तरह अपना गोश्त खिला सकता है?"

ईसा ने उनसे कहा, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि सिर्फ़ इब्ने-आदम का गोश्त खाने और उसका ख़ून पीने ही से तुममें ज़िंदगी होगी। जो मेरा गोश्त खाए और मेरा ख़ून पिए अबदी ज़िंदगी उसकी है और मैं उसे क़ियामत के दिन मुरदों में से फिर ज़िंदा करूँगा। क्योंकि मेरा गोश्त हक़ीक़ी ख़ुराक और मेरा ख़ून हक़ीक़ी पीने की चीज़ है। जो मेरा गोश्त खाता और मेरा ख़ून पीता है वह मुझमें क़ायम रहता है और मैं उसमें। मैं उस ज़िंदा बाप की वजह से ज़िंदा हूँ जिसने मुझे भेजा। इसी तरह जो मुझे खाता है वह मेरी ही वजह से ज़िंदा रहेगा। यही वह रोटी है जो आसमान से उतरी है। तुम्हारे बापदादा मन खाने के बावुजूद मर गए, लेकिन जो यह रोटी खाएगा वह अबद तक ज़िंदा रहेगा।"

ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह कफ़र्नहूम में यहूदी इबादतख़ाने में तालीम दे रहा था।

यह सुनकर उसके बहुत-से शागिर्दों ने कहा, "यह बातें ना-गवार हैं। कौन इन्हें सुन सकता है!"

ईसा को मालूम था कि मेरे शागिर्द मेरे बारे में बुड़बुड़ा रहे हैं, इसलिए उसने कहा, "क्या तुमको इन बातों से ठेस लगी है? तो फिर तुम क्या सोचोगे

जब इब्ने-आदम को ऊपर जाते देखोगे जहाँ वह पहले था? अल्लाह का रूह ही ज़िंदा करता है जबकि जिस्मानी ताक़त का कोई फ़ायदा नहीं होता। जो बातें मैंने तुमको बताई हैं वह रूह और ज़िंदगी हैं। लेकिन तुममें से कुछ हैं जो ईमान नहीं रखते।" (ईसा तो शुरू से ही जानता था कि कौन कौन ईमान नहीं रखते और कौन मुझे दुश्मन के हवाले करेगा।) फिर उसने कहा, "इसलिए मैंने तुमको बताया कि सिर्फ़ वह शख़्स मेरे पास आ सकता है जिसे बाप की तरफ़ से यह तौफ़ीक़ मिले।"

उस वक़्त से उसके बहुत-से शागिर्द उलटे पाँव फिर गए और आइंदा को उसके साथ न चले। तब ईसा ने बारह शागिर्दों से पूछा, "क्या तुम भी चले जाना चाहते हो?"

शमाऊन पतरस ने जवाब दिया, "ख़ुदावंद, हम किसके पास जाएँ? अबदी ज़िंदगी की बातें तो आप ही के पास हैं। और हमने ईमान लाकर जान लिया है कि आप अल्लाह के क़ुद्दूस हैं।"

जवाब में ईसा ने कहा, "क्या मैंने तुम बारह को नहीं चुना? तो भी तुममें से एक शख़्स शैतान है।" (वह शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह की तरफ़ इशारा कर रहा था जो बारह शागिर्दों में से एक था और जिसने बाद में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।)

ईसा मसीह को पाना

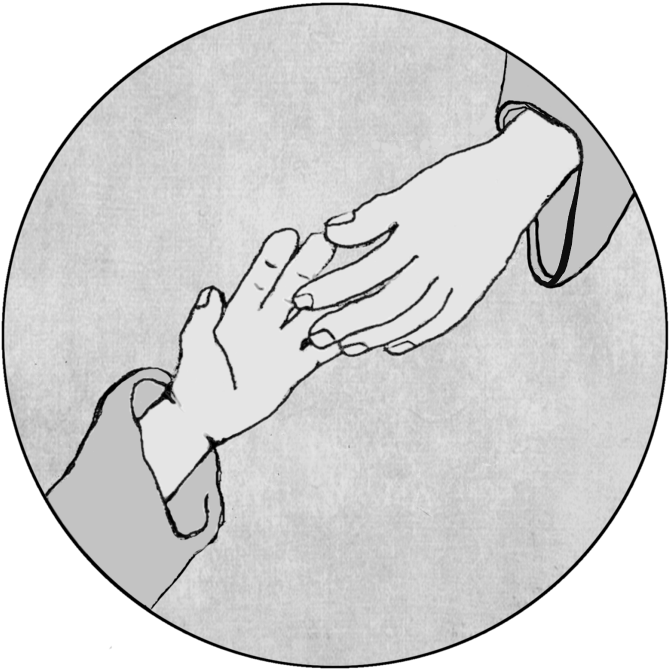

► **हम ईसा मसीह को किस तरह पा सकते हैं?**

हम मुग़ल बादशाह अकबर के बारे में बहुत कुछ पढ़ सकते हैं। तो भी हम उसे कभी नहीं पा सकते।

► **क्यों?**

वह तो गया-गुज़रा है। इसी तरह हम ईसा मसीह के बारे में बहुत कुछ पढ़ सकते हैं।

► **लेकिन क्या हम उसे पा भी सकते हैं?**

इंजील शरीफ़ फ़रमाती है कि हम उसे पा भी सकते हैं। उसे पाने से ही हमें नजात मिलती है।

► **तो सवाल यह है, क्या मैंने उसे पा लिया है? क्या वह मेरे दिल में बसता है? क्या मेरा उसके साथ शख़्सी ताल्लुक़ है? अगर नहीं तो मैं उसे किस तरह पाऊँ?**

अब हम इस सवाल पर ध्यान देंगे।

ईसा मसीह का किरदार अनोखा था। उसकी तालीम सुनकर लोग हक्का-बक्का रह जाते थे। उससे क़िस्म क़िस्म के मरीज़ों को शफ़ा भी मिलती थी। क्या अजब कि वह भीड़ों से घिरा रहता था। लेकिन कुछ लोग उसकी तालीम और मोजिज़े बरदाश्त नहीं कर सकते थे। ख़ासकर यरूशलम के मज़हबी राहनुमा उससे जलते थे। जल्द ही वह उसे पकड़ने की साज़िशें करने लगे। ईसा मसीह यह जानता था। इसलिए वह काफ़ी देर तक यरूशलम से दूर गलील में ख़िदमत करता रहा।

तब झोंपड़ियों की बड़ी ईद क़रीब आई। ईसा मसीह के घरवालों ने कहा, “यह जगह छोड़कर यहूदिया चला जा ताकि तेरे पैरोकार भी वह मोजिज़े देख लें जो तू करता है। जो शख़्स चाहता है कि अवाम उसे जाने वह पोशीदगी में काम नहीं करता। अगर तू इस क़िस्म का मोजिज़ाना काम करता है तो अपने आपको दुनिया पर ज़ाहिर कर।”

► **यह लोग क्या चाहते थे?**

यहूदिया में यरूशलम था। वह ख़ुश नहीं थे कि ईसा मसीह यरूशलम से दूर ख़िदमत कर रहा है।

► **क्यों?**

यरूशलम यहूदी ईमान का मरकज़ था। वह चाहते थे कि ईसा मसीह अपने मोजिज़े वहीं कर दिखाए जहाँ सब बड़े लोग ईद के मौक़े पर जमा होंगे।

► **क्या उनकी यह सोच ठीक नहीं थी?**

नहीं। उनकी सोच सियासी थी। उन्होंने मसीह के मोजिज़े देखकर ग़लत नतीजा निकाला था। वह समझते थे कि अब वक़्त आ गया है कि ईसा मसीह मोजिज़े दिखाकर इसराईल का दुनियावी बादशाह बन जाए। और इसके लिए ज़रूरी था कि वह यरूशलम में ही अपने मोजिज़े दिखाए। वह पोशीदगी में यानी यरूशलम से दूर काम न करे।

► **क्या वह सचमुच पोशीदगी में काम कर रहा था?**

बिलकुल नहीं। गलील में उसके मोजिज़ों और तालीम से बहुत लोगों की ज़िंदगी बदल रही थी। उन्हें जिस्मानी और रूहानी तरक़्क़ी मिल रही थी। ऐसी पोशीदगी तो ठीक ही है। इसका दुनियावी हुकूमत से क्या वास्ता? लेकिन उसके घरवाले यह बातें नहीं समझते थे। वह उससे सिर्फ़ दुनियावी फ़ायदा उठाना चाहते थे।

ईसा मसीह के जवाब से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं। पहली बात,

दुनिया की सोच छोड़ दो

ईसा मसीह ने उन्हें बताया,

> अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है। (यूहन्ना 7:6)

► **मौज़ूँ वक़्त का क्या मतलब है?**

ईसा मसीह हमेशा ख़ुदा बाप की मरज़ी के मुताबिक़ चलता था। उस वक़्त ख़ुदा बाप नहीं चाहता था कि वह जाए।

उसने फ़रमाया,

> लेकिन तुम जा सकते हो, तुम्हारे लिए हर वक़्त मौज़ूँ है। दुनिया तुमसे दुश्मनी नहीं रख सकती। लेकिन मुझसे वह दुश्मनी रखती है। (यूहन्ना 7:6-7)

उसके घरवाले दुनियावी सोच रखते थे। वह ख़याल ही नहीं करते थे कि ख़ुदा की मरज़ी क्या है। इसलिए उनके लिए हर वक़्त मौज़ूँ था। इसलिए दुनिया उनसे दुश्मनी नहीं रखती थी। वह ईसा मसीह से दुश्मनी रखती थी क्योंकि उसकी सोच फ़रक़ थी।

► **क्या आप ईसा मसीह को पाना चाहते हैं?**

दुनियावी सोच छोड़ दो। दूसरी बात,

ख़ुदा बाप की मरज़ी करो

घरवाले ईद मनाने यरूशलम चले गए। लेकिन कुछ देर बाद ईसा मसीह को ख़ुदा बाप से हिदायत मिली कि वह ईद पर जाए। तब वह चुपके से रवाना हुआ।

यरूशलम में यहूदी राहनुमा पहले से उसकी ताक में बैठे थे। बुड़बुड़ा रहे थे, “वह आदमी कहाँ है?” आम लोग भी आपस में फुसफुसा रहे थे। कुछ उसके हक़ में थे, कुछ उसके ख़िलाफ़। लेकिन कोई खुलकर बात नहीं कर रहा था क्योंकि सब यहूदी राहनुमाओं से डरते थे।

ईद का आधा हिस्सा गुज़र चुका था तो ईसा मसीह बैतुल-मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगा। उसे सुनकर लोग हैरतज़दा हुए।

► **क्यों?**

उन्होंने कहा, “यह आदमी किस तरह इतना इल्म रखता है हालाँकि इसने कहीं से भी तालीम हासिल नहीं की!”

► **ईसा मसीह ने जवाब में क्या कहा?**

> जो तालीम मैं देता हूँ वह मेरी अपनी नहीं बल्कि उसकी है जिसने मुझे भेजा। (यूहन्ना 7:16)

► **किसने उसे भेजा था?**

ख़ुदा बाप ने उसे भेजा था। यह किताबों से रटी-रटाई तालीम नहीं थी। यह तो सीधे ख़ुदा बाप से मिली तालीम थी। ईसा मसीह सिर्फ़ वह कुछ फ़रमाता और करता है जो ख़ुदा बाप की मरज़ी है।

अब उसने एक और चौंका देनेवाली बात फ़रमाई,

> जो उसकी मरज़ी पूरी करने के लिए तैयार है वह जान लेगा कि मेरी तालीम अल्लाह की तरफ़ से है। (यूहन्ना 7:17)

ईसा मसीह की तालीम ख़ुदा की तरफ़ से है।

► **हम यह किस तरह जान सकते हैं?**

ख़ुदा की मरज़ी करने से। जो ख़ुदा की मरज़ी करने के लिए तैयार रहता है वह एकदम जान लेता है कि ईसा मसीह की तालीम ख़ुदा की तरफ़ से है। यह दुश्मन ख़ुदा की मरज़ी करने को तैयार नहीं थे इसलिए वह रूहानी तौर से अंधे थे। वह बस अपनी इज़्ज़त के पीछे पड़े रहते थे। इसलिए ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> जो अपनी तरफ़ से बोलता है वह अपनी ही इज़्ज़त चाहता है। लेकिन जो अपने भेजनेवाले की इज़्ज़तो-जलाल बढ़ाने की कोशिश करता है वह सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं है। (यूहन्ना 7:18)

► **क्या आप ख़ुदा की मरज़ी करने को तैयार रहते हैं? क्या आप अपनी ज़िंदगी से उसकी इज़्ज़त कर रहे हैं?**

तब ही आप ईसा मसीह को पा सकते हैं। तीसरी बात,

जान लो कि मसीह शरीअत से बरतर है

► **तो यह दुश्मन किस नाते से ख़ुदा की मरज़ी करने को तैयार नहीं थे?**

अब ईसा मसीह ने इसका जवाब दिया। उसने फ़रमाया,

> क्या मूसा ने तुमको शरीअत नहीं दी? तो फिर तुम मुझे क़त्ल करने की कोशिश क्यों कर रहे हो? (यूहन्ना 7:19)

► **क्या शरीअत क़त्ल करने की इजाज़त देती है?**

हरगिज़ नहीं। तो भी दुश्मन उसे क़त्ल करने की कोशिश कर रहे थे। वह ख़ुदा की मरज़ी नहीं कर रहे थे। इसलिए वह सच्चे नहीं थे। इसलिए वह पहचान नहीं सकते थे कि ईसा, अल-मसीह है। सिर्फ़ सच्चा दिल उसे पहचान सकता है।

सुननेवालों ने कहा, "तुम किसी बदरूह की गिरिफ़्त में हो। कौन तुम्हें क़त्ल करने की कोशिश कर रहा है?" हालाँकि कम-से-कम राहनुमा ज़रूर उसे क़त्ल करने की कोशिश कर रहे थे।

► **वह क्यों उसे क़त्ल करना चाहते थे?**

कुछ महीनों पहले उसने यरूशलम में एक माज़ूर आदमी को सबत के दिन शफ़ा दी थी। यहूदी राहनुमा जलकर उसे क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे थे। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैंने सबत के दिन एक ही मोजिज़ा किया और तुम सब हैरतज़दा हुए। लेकिन तुम भी सबत के दिन काम करते हो। तुम उस दिन अपने बच्चों का ख़तना करवाते हो। और यह रस्म मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ही है ... क्योंकि शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि बच्चे का ख़तना आठवें दिन करवाया जाए, और अगर यह दिन सबत हो तो तुम फिर भी अपने बच्चे का ख़तना करवाते हो ताकि शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझसे क्यों नाराज़ हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी के पूरे जिस्म को शफ़ा दी? (यूहन्ना 7:21-23)

यहूदी उस्ताद ख़ुद कहते थे कि कुछ काम सबत के दिन किए जा सकते हैं। ख़तना एक ऐसा काम था।

अब ख़तना एक छोटा-सा काम है, और उससे इनसान बहाल नहीं होता। इसकी निसबत ईसा मसीह ने माज़ूर इनसान को रूहानी और जिस्मानी तौर पर बहाल किया था। ख़तना इनसान को बहाल नहीं कर सकता मगर ईसा मसीह यह कर सकता है। शरीअत इनसान को बताती है कि उसे क्या करना है। लेकिन वह उसे बहाल नहीं कर सकती। इसी लिए ईसा मसीह दुनिया में आया।

► **क्या आप उसे पाना चाहते हैं?**

जान लो कि वह शरीअत से बरतर है। चौथी बात,

जान लो कि मसीह ख़ुदा का भेजा हुआ है

माज़ूर की शफ़ा का ज़िक्र सुनते ही यरूशलम के कुछ रहनेवाले कहने लगे, "क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे लोग क़त्ल करने की कोशिश कर रहे हैं? ताहम वह यहाँ खुलकर बात कर रहा है और कोई भी उसे रोकने की कोशिश नहीं कर रहा। क्या हमारे राहनुमाओं ने हक़ीक़त में जान लिया है कि यह मसीह है?"

लेकिन फिर उन्होंने ख़ुद ही यह ख़याल रद किया : "जब मसीह आएगा तो किसी को भी मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से है। यह आदमी फ़रक़ है। हम तो जानते हैं कि यह कहाँ से है।"

► **वह क्यों सोचते थे कि जब मसीह आएगा तो किसी को भी मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से है?**

यहूदियों में यह ख़याल फैल गया था कि अल-मसीह पोशीदगी में आएगा और सिर्फ़ क़ौम को छुड़ाते वक़्त ज़ाहिर हो जाएगा। इस बिना पर लोग कह रहे थे कि हम इस बंदे को जानते हैं। वह तो गलील से है। लिहाज़ा यह अल-मसीह हो ही नहीं सकता। अब देखो कि उनसे कितनी बड़ी ग़लती हो रही थी। न वह ईसा मसीह को जानते थे, न यह कि वह हक़ीक़त में कहाँ से आया है। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ। लेकिन मैं अपनी तरफ़ से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है और उसे तुम नहीं जानते। लेकिन मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं उसकी तरफ़ से हूँ और उसने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 7:28-29)

► **ईसा मसीह अपने बारे में क्या कह रहा था?**

अच्छा, तुम जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ? हक़ीक़त में तुम मुझे नहीं जानते। क्योंकि मुझे ख़ुदा बाप से भेजा गया है जो तुम नहीं जानते।

यह लोग इस पर फ़ख्र करते थे कि हमें मूसा से शरीअत मिली है और इसलिए हम सच्चे ख़ुदा को जानते हैं। लेकिन इसमें उनसे ग़लती हो रही थी। वह अंधे थे। वह नहीं जानते थे कि ईसा मसीह नजात देने आया है। कितने अफ़सोस की बात।

► **मेरे दोस्त, क्या आप ख़ुदा की क़ुरबत के लिए तरसते हैं? क्या आप उसकी नज़र में मंज़ूर होना चाहते हैं?**

फिर उस पर ईमान लाओ जिसे ख़ुदा बाप ने भेजा है। ईसा मसीह पर। आख़िरी बात,

तब ही मसीह को पाओगे

जब राहनुमाओं ने देखा कि हुजूम में ऐसी बातें हो रही हैं तो उन्हों ने बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार ईसा मसीह को पकड़ने के लिए भेजे।

लेकिन ईसा मसीह ने कहा,

> मैं सिर्फ़ थोड़ी देर और तुम्हारे साथ रहूँगा, फिर मैं उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। उस वक़्त तुम मुझे ढूँडोगे मगर नहीं पाओगे, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते। (यूहन्ना 7:33-34)

► **वह क्या कहना चाहता है?**

थोड़ी देर बाद मैं ख़ुदा बाप के पास वापस लौटूँगा। तब तुम मुझे ढूँडोगे मगर नहीं पाओगे।

► **क्यों?**

- वह दुनिया की सोच रखते थे।
- वह ख़ुदा बाप की मरज़ी नहीं करते थे।
- वह नहीं पहचानते थे कि मसीह में एक आया है जो शरीअत से बरतर है।
- वह नहीं पहचानते थे कि मसीह ख़ुदा का भेजा हुआ है।

► **क्या आपने उसे पा लिया है?**

इंजील, यूहन्ना 7:1-36

इसके बाद ईसा ने गलील के इलाक़े में इधर-उधर सफ़र किया। वह यहूदिया में फिरना नहीं चाहता था क्योंकि वहाँ के यहूदी उसे क़त्ल करने का मौक़ा ढूँड रहे थे। लेकिन जब यहूदी ईद बनाम झोंपड़ियों की ईद क़रीब आई तो उसके भाइयों ने उससे कहा, “यह जगह छोड़कर यहूदिया चला जा ताकि तेरे पैरोकार भी वह मोजिज़े देख लें जो तू करता है। जो शख़्स चाहता है कि

अवाम उसे जाने वह पोशीदगी में काम नहीं करता। अगर तू इस क़िस्म का मोजिज़ाना काम करता है तो अपने आपको दुनिया पर ज़ाहिर कर।" (असल में ईसा के भाई भी उस पर ईमान नहीं रखते थे।)

ईसा ने उन्हें बताया, "अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है। लेकिन तुम जा सकते हो, तुम्हारे लिए हर वक़्त मौज़ूँ है। दुनिया तुमसे दुश्मनी नहीं रख सकती। लेकिन मुझसे वह दुश्मनी रखती है, क्योंकि मैं उसके बारे में यह गवाही देता हूँ कि उसके काम बुरे हैं। तुम ख़ुद ईद पर जाओ। मैं नहीं जाऊँगा, क्योंकि अभी वह वक़्त नहीं आया जो मेरे लिए मौज़ूँ है।" यह कहकर वह गलील में ठहरा रहा।

लेकिन बाद में, जब उसके भाई ईद पर जा चुके थे तो वह भी गया, अगरचे अलानिया नहीं बल्कि ख़ुफ़िया तौर पर। यहूदी ईद के मौक़े पर उसे तलाश कर रहे थे। वह पूछते रहे, "वह आदमी कहाँ है?"

हुजूम में से कई लोग ईसा के बारे में बुड़बुड़ा रहे थे। बाज़ ने कहा, "वह अच्छा बंदा है।" लेकिन दूसरों ने एतराज़ किया, "नहीं, वह अवाम को बहकाता है।" लेकिन किसी ने भी उसके बारे में खुलकर बात न की, क्योंकि वह यहूदियों से डरते थे।

ईद का आधा हिस्सा गुज़र चुका था जब ईसा बैतुल-मुक़द्दस में जाकर तालीम देने लगा। उसे सुनकर यहूदी हैरतज़दा हुए और कहा, "यह आदमी किस तरह इतना इल्म रखता है हालाँकि इसने कहीं से भी तालीम हासिल नहीं की!"

ईसा ने जवाब दिया, "जो तालीम मैं देता हूँ वह मेरी अपनी नहीं बल्कि उसकी है जिसने मुझे भेजा। जो उसकी मरज़ी पूरी करने के लिए तैयार है वह जान लेगा कि मेरी तालीम अल्लाह की तरफ़ से है या कि मेरी अपनी तरफ़ से। जो अपनी तरफ़ से बोलता है वह अपनी ही इज़्ज़त चाहता है। लेकिन जो अपने भेजनेवाले की इज़्ज़तो-जलाल बढ़ाने की कोशिश करता है वह सच्चा है और उसमें नारास्ती नहीं है। क्या मूसा ने तुमको शरीअत नहीं दी? तो फिर तुम मुझे क़त्ल करने की कोशिश क्यों कर रहे हो?"

हुजूम ने जवाब दिया, "तुम किसी बदरूह की गिरिफ़्त में हो। कौन तुम्हें क़त्ल करने की कोशिश कर रहा है?"

ईसा ने उनसे कहा, “मैंने सबत के दिन एक ही मोजिज़ा किया और तुम सब हैरतज़दा हुए। लेकिन तुम भी सबत के दिन काम करते हो। तुम उस दिन अपने बच्चों का ख़तना करवाते हो। और यह रस्म मूसा की शरीअत के मुताबिक़ ही है, अगरचे यह मूसा से नहीं बल्कि हमारे बापदादा इब्राहीम, इसहाक़ और याक़ूब से शुरू हुई। क्योंकि शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि बच्चे का ख़तना आठवें दिन करवाया जाए, और अगर यह दिन सबत हो तो तुम फिर भी अपने बच्चे का ख़तना करवाते हो ताकि शरीअत की ख़िलाफ़वरज़ी न हो जाए। तो फिर तुम मुझसे क्यों नाराज़ हो कि मैंने सबत के दिन एक आदमी के पूरे जिस्म को शफ़ा दी? ज़ाहिरी सूरत की बिना पर फ़ैसला न करो बल्कि बातिनी हालत पहचानकर मुंसिफ़ाना फ़ैसला करो।”

उस वक़्त यरूशलम के कुछ रहनेवाले कहने लगे, “क्या यह वह आदमी नहीं है जिसे लोग क़त्ल करने की कोशिश कर रहे हैं? ताहम वह यहाँ खुलकर बात कर रहा है और कोई भी उसे रोकने की कोशिश नहीं कर रहा। क्या हमारे राहनुमाओं ने हक़ीक़त में जान लिया है कि यह मसीह है? लेकिन जब मसीह आएगा तो किसी को भी मालूम नहीं होगा कि वह कहाँ से है। यह आदमी फ़रक़ है। हम तो जानते हैं कि यह कहाँ से है।”

ईसा बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था। अब वह पुकार उठा, “तुम मुझे जानते हो और यह भी जानते हो कि मैं कहाँ से हूँ। लेकिन मैं अपनी तरफ़ से नहीं आया। जिसने मुझे भेजा है वह सच्चा है और उसे तुम नहीं जानते। लेकिन मैं उसे जानता हूँ, क्योंकि मैं उसकी तरफ़ से हूँ और उसने मुझे भेजा है।”

तब उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश की। लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका, क्योंकि अभी उसका वक़्त नहीं आया था। तो भी हुजूम के कई लोग उस पर ईमान लाए, क्योंकि उन्होंने कहा, “जब मसीह आएगा तो क्या वह इस आदमी से ज़्यादा इलाही निशान दिखाएगा?”

फ़रीसियों ने देखा कि हुजूम में इस क़िस्म की बातें धीमी धीमी आवाज़ के साथ फैल रही हैं। चुनाँचे उन्होंने राहनुमा इमामों के साथ मिलकर बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार ईसा को गिरिफ़्तार करने के लिए भेजे। लेकिन ईसा ने

कहा, “मैं सिर्फ़ थोड़ी देर और तुम्हारे साथ रहूँगा, फिर मैं उसके पास वापस चला जाऊँगा जिसने मुझे भेजा है। उस वक़्त तुम मुझे ढूँडोगे, मगर नहीं पाओगे, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।”

यहूदी आपस में कहने लगे, “यह कहाँ जाना चाहता है जहाँ हम उसे नहीं पा सकेंगे? क्या वह बैरूने-मुल्क जाना चाहता है, वहाँ जहाँ हमारे लोग यूनानियों में बिखरी हालत में रहते हैं? क्या वह यूनानियों को तालीम देना चाहता है? मतलब क्या है जब वह कहता है, ‘तुम मुझे ढूँडोगे मगर नहीं पाओगे’ और ‘जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते’।”

जो प्यासा हो

एक दिन ईसा मसीह बैतुल-मुक़द्दस में तालीम दे रहा था। झोंपड़ियों की ईद थी। इस ईद पर लोग कच्ची झोंपड़ियों में रहते थे। यह ईद तालीम देने का अच्छा मौक़ा था।

► **तालीम देने का अच्छा मौक़ा क्यों था?**

यह बात समझने के लिए ज़रूरी है कि हम इस ईद का बुनियादी मक़सद समझ लें।

► **मक़सद क्या था?**

फ़सलों की ख़ुशी। इस ईद पर लोग ख़ुशी मनाते थे कि फ़सलें उग आई हैं। अब फ़सल का ख़ास ताल्लुक़ बारिश से है। बारिश कम हो तो फ़सल भी कम होगी। इसलिए इस ईद पर लोग दुआ भी करते थे कि आनेवाले साल में बारिशें पड़ें।

लेकिन साथ साथ वह अल-मसीह की आमद भी याद करते थे।

► **क्यों?**

अल-मसीह के आने का एक निशान कसरत का पानी था। सदियों पहले पेशगोई की गई थी कि उस वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के नीचे से ज़िंदगी का पानी बह निकलेगा (ज़करियाह 14:8; हिज़कियेल 47:1)। तब तमाम क़ौमें झोंपड़ियों की ईद मनाने यरूशलम आया करेंगी (ज़करियाह 14:16)।

ग़रज़ झोंपड़ियों की ईद पर लोग ख़ासकर दो बातों की ख़ुशी मनाते थे। पहले, इस साल फ़सलों को ख़ूब पानी मिला है। दूसरे, एक दिन हमें ज़िंदगी का पानी भी मिलेगा—उस दिन जब अल-मसीह आएगा।

► **ईद के दिन लोग क्या करते थे?**

उस दिन इमाम चश्मे से पानी लेकर बैतुल-मुक़द्दस की क़ुरबानगाह पर उंडेल देता था। साथ साथ लोग मसीहाना ज़माने के बारे में यह पेशगोई दोहराते थे कि

> तुम शादमानी से नजात के चश्मों से पानी भरोगे।
> (यसायाह 12:3)

पानी उंडेलने से यह याद किया जाता था कि ख़ुदा जो पानी देता रहता है एक दिन ज़िंदगी का पानी भी देगा।

अब हम वह कुछ समझ सकते हैं जो उस ईद पर हुआ। ईद के आख़िरी दिन ईसा मसीह खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा,

> जो प्यासा हो वह मेरे पास आए,
> और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए।
> कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ 'उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी।' (यूहन्ना 7:37-38)

► **ईसा मसीह क्या कहना चाहता है?**

पहली बात:

जो प्यासा हो

► **जो प्यासा है वह किस चीज़ के लिए तड़पता है?**

पानी के लिए।

► **क्या वह आम पानी के लिए तड़पता है?**

नहीं। ईसा मसीह आम पानी की बात नहीं कर रहा।

► **फिर क्या?**

यह वह पानी है जिसके इंतज़ार में लोग थे—अल-मसीह का पानी, ज़िंदगी का पानी जो बैतुल-मुक़द्दस से बह निकलेगा। यह वह आसमानी पानी है जो अबदी ज़िंदगी दिलाता है।

► **ज़िंदगी का यह पानी क्या है?**

यूहन्ना ख़ुद इसका मतलब बताता है,

> 'ज़िंदगी के पानी' से वह रूहुल-क़ुद्स की तरफ़ इशारा कर रहा था जो उनको हासिल होता है जो ईसा पर ईमान लाते हैं। लेकिन वह उस वक़्त तक नाज़िल नहीं हुआ था, क्योंकि ईसा अब तक अपने जलाल को न पहुँचा था। (यूहन्ना 7:39)

► **यूहन्ना के मुताबिक़ ज़िंदगी का पानी क्या है?**
यह आम पानी नहीं है। यह पानी रूहुल-क़ुद्स है।

► **लेकिन रूहुल-क़ुद्स क्या है?**
अगले आयात में हम रूहुल-क़ुद्स के बारे में और सीखेंगे। यहाँ यह जानना काफ़ी है कि रूहुल-क़ुद्स ज़िंदगी का यह पानी है। रूहुल-क़ुद्स उस वक़्त नाज़िल नहीं हुआ था। जब ईसा मसीह को आसमान पर उठा लिया गया तब ही रूहुल-क़ुद्स नाज़िल हुआ।

रूहुल-क़ुद्स फ़रिश्ता नहीं है। वह तसलीस में शामिल है। तसलीस का मतलब यह नहीं कि तीन ख़ुदा हैं। एक ही ख़ुदा है। बाप ख़ुदा है, फ़रज़ंद ख़ुदा है और रूहुल-क़ुद्स ख़ुदा है। लेकिन ख़ुदा में यह तीनों अलग हैं। जब हम ईसा मसीह पर ईमान लाते हैं तब रूहुल-क़ुद्स हमारे दिलों में आकर बसने लगता है। और चूँकि एक ही ख़ुदा है इसलिए रूहुल-क़ुद्स के आने से बाप और फ़रज़ंद भी दिल में आ बस्ते हैं।

रूहुल-क़ुद्स से हम ख़ुदा की मौजूदगी से सेर हो जाते हैं। तब ही हमारे दिल उसकी मुहब्बत और तसल्ली से भर जाते है।

► **क्या आप प्यासे हैं? क्या आप उस इलाही सेरी के लिए तड़पते हैं जो सिर्फ़ और सिर्फ़ ईसा मसीह रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए दे सकता है?**
वही हमारी अबदी ज़िंदगी की गारंटी है। दूसरी बात,

वह मेरे पास आए

► **प्यासे को क्या करना है ताकि वह पानी पी सके?**
ईसा मसीह फ़रमाता है,

> जो प्यासा हो वह मेरे पास आए। (यूहन्ना 7:39)

अमरीका के किसी रेगिस्तान में पानी का अच्छा चश्मा वाक़े है। एक दिन मालूम हुआ कि क़रीब ही किसी औरत की सूखी हुई लाश पड़ी है। उसके पास एक काग़ज़ था। उस पर लिखा था, “हाय! पानी चाहिए, पानी! मैं प्यास से मर रही हूँ।” अफ़सोस, दो मील आगे चश्मा था जिसमें पानी उबल रहा था। कितनी अलमनाक बात। वह पानी के क़रीब ही मर गई थी।

► **मेरे दोस्त, क्या आप प्यासे हैं?**

चश्मे के पास आओ। वह क़रीब ही है। रेगिस्तान में मत रहना। ज़िंदगी का पानी दस्तयाब है। यह वह पानी है जो ख़ुदा की तरफ़ से निकलता है। यह वह पानी है जिससे हमें हमेशा की ज़िंदगी मिलती है।

कितने लोग दुनिया में रहते हुए मुरदे हैं।

► **किस तरह?**

यों कि वह ज़िंदगी के पानी के पास नहीं आए हैं। शायद उनके पास दौलत हो। लेकिन न ख़ुदा की मुहब्बत, न उसकी भरपूर ख़ुशी या तसल्ली उनके दिलों में बसती है। इसलिए वह ज़िंदा हालत में मुरदे हैं।

► **क्या आप ज़िंदगी के पानी के प्यासे हैं?**

उसके पास आओ। तीसरी बात,

जो ईमान लाए

प्यासा होना ज़रूरी है। लेकिन जो चश्मे के पास न आए वह प्यासा रहता है। और जो उसके पास आए उसके लिए ज़रूरी है कि वह ईमान लाए।

उन्नीसवीं सदी में एक जहाज़ बनाम रॉयल चार्टर (Royal Charter) ऑस्ट्रेलिया से रवाना होकर इंग्लैंड के क़रीब पहुँचा। ख़बर आई तो मुसाफ़िरों के अज़ीज़ बंदरगाह में जहाज़ का इंतज़ार करने लगे। लेकिन वह कभी न पहुँचा। थोड़ी दूरी पर वह तूफ़ान में तबाह हुआ। तक़रीबन 450 मुसाफ़िर डूब गए। जब किसी की बीवी को बताया गया कि शौहर नहीं बचा तो वह चीख़ उठी, "हाय, घर के इतने क़रीब और फिर भी तबाह!"

मेरे अज़ीज़, जो अल-मसीह के क़रीब आता है लेकिन ईमान नहीं लाता वह उस मुरदे की मानिंद है। उसके बारे में कहा जा सकता है, "घर के इतने क़रीब और फिर भी तबाह!"

दो-चार मुसाफ़िर तैरते तैरते साहिल पर पहुँच गए। कुछ मुसाफ़िरों ने ऑस्ट्रेलिया में सोना हासिल किया था, और उन्होंने यह सोना जिस्म से बाँधकर बचने की कोशिश की। लेकिन अफ़सोस—सोना इतना भारी था कि वह तैर न सके और डूब मरे।

जब आप अल-मसीह के पास आते हैं तो उसे कुछ नहीं दिखा सकते। आप ख़ाली अपने आपको उसके सुपुर्द कर सकते हैं। न सोना न कोई नेक काम आपको

बचाएगा। ईमान का यही मतलब है कि हम ख़ाली अपने आपको उसके सुपुर्द करें और उसे बताएँ, "ऐ मेरे आक़ा, मैं आ गया हूँ। मेरे पास कुछ नहीं है जो मुझे मंज़ूर करा सके। न दौलत न अच्छा किरदार न नेक काम। लेकिन तेरा ही फ़ज़्ल काफ़ी है। नजात का वह काम काफ़ी है जो तूने मेरी ख़ातिर किया है। तू ही मुझे क़बूल कर। मुझे अपने पानी से सेर कर।"
चौथी बात,

वह पिए

अब हमें प्यास महसूस हुई है। हम ख़ाली हाथ उसके पास आए हैं। हम उस पर ईमान लाए हैं।

► **अब क्या?**

अब हम पी सकते हैं।

► **क्या पी सकते हैं?**

ज़िंदगी का पानी। तब रूहुल-क़ुद्स हमारे अंदर बसेगा और हम सेर हो जाएँगे। ग़रज़, चार चीज़ें दरकार हैं : प्यास, उसके पास आना, ईमान लाना और पीना।

तब पानी की नहरें बह निकलेंगी

ईसा मसीह फ़रमाता है कि पाक नविश्तों के मुताबिक़ उसके अंदर से पानी की नहरें बह निकलेंगी।

► **इसका क्या मतलब है?**

नबियों ने पेशगोई की थी कि अल-मसीह के आने पर यरूशलम से पानी की नहरें बह निकलेंगी। और यह ख़ास पानी होगा। यह ज़िंदगी का पानी होगा। अबदी ज़िंदगी बख़्शनेवाला पानी। अब ईसा मसीह फ़रमा रहा है कि मुझसे ही पानी की यह नहरें बह निकलेंगी। मैं ही ज़िंदगी का सरचश्मा हूँ। यही वजह है कि प्यासे उसके पास आते हैं। उस पर ईमान लाते हैं। उसका पानी पीते हैं। और जब हम ख़ूब पानी पीते हैं तो हमसे भी पानी निकलता है।

► **किस तरह?**

जब हम रूहुल-क़ुद्स से सेर हो जाते हैं तो वह हमारे अंदर से बहने लगता है।

► **इसका क्या मतलब है?**

- जब रूहुल-क़ुद्स का पानी हमें सींचता है तो हमारे मैले दिल धोए जाते हैं।

- जब रूहुल-क़ुद्स का पानी हमें सींचता है तो हम उसकी पाकीज़गी से भर जाते हैं।
- जब रूहुल-क़ुद्स का पानी हमें सींचता है तो हम रूहानी फल लाते हैं।
- जब रूहुल-क़ुद्स का पानी हमें सींचता है तो दूसरे हमारे फल से बरकत पाते हैं।
- जब रूहुल-क़ुद्स का पानी हमें सींचता है तो हमारी आसमानी मनज़िल यक़ीनी है।

मंज़ूर या मरदूद?

► **जो लोग यह बातें सुन रहे थे क्या वह ख़ुश हुए?**
नहीं। वह एक बार फिर बहस-मुबाहसा करने लगे कि क्या यह सचमुच अल-मसीह है?

यों उनमें फूट पड़ गई। कुछ उसे पकड़ने की कोशिश करने लगे। मज़हबी राहनुमाओं ने भी पहरेदार भेज दिए थे ताकि उसे पकड़ें। लेकिन पहरेदार उसके कलाम से इतने मुतअस्सिर हुए कि ख़ाली हाथ वापस आए।

ईसा मसीह के बारे में हमेशा फूट पड़ती है। कुछ उसे क़बूल करते हैं और कुछ उसे रद करते हैं।

► **सवाल यह है कि हमने क्या किया? क्या हमने उसे क़बूल किया है? क्या हम प्यासे होकर उसके पास आए हैं। क्या हमने ईमान लाकर ज़िंदगी का यह पानी पी लिया है?**

इंजील, यूहन्ना 7:37-52

ईद के आख़िरी दिन जो सबसे अहम है ईसा खड़ा हुआ और ऊँची आवाज़ से पुकार उठा, “जो प्यासा हो वह मेरे पास आए, और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए। कलामे-मुक़द्दस के मुताबिक़ ‘उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी’।” (‘ज़िंदगी के पानी’ से वह रूहुल-क़ुद्स की तरफ़ इशारा कर रहा था जो उनको हासिल होता है जो ईसा पर ईमान लाते हैं।

लेकिन वह उस वक़्त तक नाज़िल नहीं हुआ था, क्योंकि ईसा अब तक अपने जलाल को न पहुँचा था।)

ईसा की यह बातें सुनकर हुजूम के कुछ लोगों ने कहा, "यह आदमी वाक़ई वह नबी है जिसके इंतज़ार में हम हैं।"

दूसरों ने कहा, "यह मसीह है।"

लेकिन बाज़ ने एतराज़ किया, "मसीह गलील से किस तरह आ सकता है! पाक कलाम तो बयान करता है कि मसीह दाऊद के ख़ानदान और बैत-लहम से आएगा, उस गाँव से जहाँ दाऊद बादशाह पैदा हुआ।" यों ईसा की वजह से लोगों में फूट पड़ गई। कुछ तो उसे गिरिफ़्तार करना चाहते थे, लेकिन कोई भी उसको हाथ न लगा सका।

इतने में बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदार राहनुमा इमामों और फ़रीसियों के पास वापस आए। वह ईसा को लेकर नहीं आए थे, इसलिए राहनुमाओं ने पूछा, "तुम उसे क्यों नहीं लाए?"

पहरेदारों ने जवाब दिया, "किसी ने कभी इस आदमी की तरह बात नहीं की।"

फ़रीसियों ने तंज़न कहा, "क्या तुमको भी बहका दिया गया है? क्या राहनुमाओं या फ़रीसियों में कोई है जो उस पर ईमान लाया हो? कोई भी नहीं! लेकिन शरीअत से नावाक़िफ़ यह हुजूम लानती है!"

इन राहनुमाओं में नीकुदेमुस भी शामिल था जो कुछ देर पहले ईसा के पास गया था। अब वह बोल उठा, "क्या हमारी शरीअत किसी पर यों फ़ैसला देने की इजाज़त देती है? नहीं, लाज़िम है कि उसे पहले अदालत में पेश किया जाए ताकि मालूम हो जाए कि उससे क्या कुछ सरज़द हुआ है।"

दूसरों ने एतराज़ किया, "क्या तुम भी गलील के रहनेवाले हो? कलामे-मुक़द्दस में तफ़तीश करके ख़ुद देख लो कि गलील से कोई नबी नहीं आएगा।" यह कहकर हर एक अपने अपने घर चला गया।

पकड़ा गया

एक दिन ईसा मसीह पौ फटते ही बैतुल-मुक़द्दस में आ पहुँचा।

- **बैतुल-मुक़द्दस क्या था?**

  बैतुल-मुक़द्दस यरूशलम में वह जगह थी जहाँ यहूदी अपनी क़ुरबानियाँ चढ़ाते थे। कहीं और चढ़ाने की इजाज़त नहीं थी। वहाँ वह क़ुरबानियाँ चढ़ाने पूरी दुनिया से आते थे। उस ज़माने में यह शानदार इमारत दुनिया के अजूबों में गिनी जाती थी। आज उस जगह पर मसजिद अल-अक़्सा की सुनहरी गुंबद धूप में चमकती-दमकती है।

- **अल-मसीह का वहाँ आने का क्या मक़सद था? क्या वह क़ुरबानियाँ चढ़ाना चाहता था? या मोजिज़े दिखाने आया था?**

  नहीं। वह बैठकर लोगों को तालीम देने लगा। उस ज़माने में उस्ताद बैठता था जबकि सुननेवाले खड़े रहते थे।

- **वह लोगों को तालीम क्यों देने लगा?**

  लोग खोई हुई भेड़ों जैसे थे जो भूले-भटके फिर रहे थे। यह देखकर उसे उन पर तरस आता था। वह जो सच्चा चरवाहा था वह उन्हें जन्नत का रास्ता दिखाना चाहता था। मामूल के मुताबिक़ ज्योंही उसने अपना मुँह खोला लोग दौड़कर उसके गिर्द जमा हुए और बड़े मज़े से सुनने लगे।

बा-इख़्तियार कलाम

ईसा मसीह स्कूल का आम टीचर नहीं था। उसकी बातें सुन सुनकर उनकी आँखें फटी की फटी रह जाती थीं। वह रटी-रटाई बातें नहीं बताता था। वह बड़े इख़्तियार के साथ बात करता था, क्योंकि उसके फ़रमान सीधे ख़ुदा के फ़रमान थे।

आम उस्ताद तालाब का बासी पानी निकालकर अपने चेलों में बाँट देता है। ईसा मसीह फ़रक़ था। वह कलाम का आसमानी बीज बोकर आसमानी चश्मे के उबलते पानी से उसकी सिंचाई करता था। उसके कलाम से रूहानी ज़िंदगी उगकर फलती-

फूलती है। यह कलाम सीधा दिल में जा बसता है जहाँ वह सुननेवाले की पूरी ज़िंदगी उलट-पलट कर डालता है।

एक चाल

अचानक खलबली मच गई। शरीअत के कुछ आलिम एक औरत घसीटकर उनके बीच में आ धमके। इजाज़त माँगे बग़ैर उन्होंने औरत को उस्ताद को पेश करके कहा, "उस्ताद, इस औरत को ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया है।"

बेचारी औरत! वह थरथराती हुई उनके बीच में खड़ी रही। वह जानती थी कि ज़िना की सज़ा मौत है।

► **लेकिन रुको, रुको! एक ही इनसान से ज़िना कब से होती है?**
वह आदमी कहाँ था जिसने ज़िना की थी? क्या सिर्फ़ औरत को पकड़ा गया था? शरीअत के मुताबिक़ मर्द और औरत दोनों ही सज़ाए-मौत लायक़ हैं (तौरेत, इस्तिसना 22:22)।

► **और यह आलिम, औरत को यहाँ क्यों लाए? क्या ऐसे मामलों के लिए यहूदी अदालतें नहीं थीं?**
ज़रूर। दाल में कुछ काला था। हक़ीक़त यह है : औरत का गुनाह सिर्फ़ बहाना था। असली मक़सद एक और था। यह कि उस्ताद को पकड़ा जाए।

► **वह उसे किस तरह फँसाना चाहते थे?**
उन्होंने कहा, "मूसा ने शरीअत में हमें हुक्म दिया है कि ऐसे लोगों को संगसार करना है। आप क्या कहते हैं?"

► **संगसार करने का क्या तरीक़े-कार था?**
मुजरिम को ज़मीन पर पटख़कर पत्थरों से मार डाला जाता था। लाज़िम था कि गुनाह के गवाह पहले पत्थर मारें (तौरेत, इस्तिसना 17:7)।

बचने का रास्ता ही नहीं

यह आलिम बहुत चालाक थे। वह तो जानते थे कि ईसा मसीह निहायत रहमदिल है। वह पहले से नाराज़ थे कि वह गुनाहगारों से मिला करता है। हालाँकि उनके गुनाह उसे बहुत तकलीफ़ देते थे। ख़ुद तो वह पूरी तरह पाक था, इसलिए हर गुनाह उसे काँटे की तरह चुभता था। लेकिन उसे इस दुनिया में भेजा गया था कि गुनाहगारों को नजात दे। जिस तरह लिखा है,

> अल्लाह ने अपने फ़रज़ंद को इसलिए दुनिया में नहीं भेजा कि वह दुनिया को मुजरिम ठहराए बल्कि इसलिए कि वह उसे नजात दे। (यूहन्ना 3:17)

आलिमों का अंदाज़ा यह था : उस्ताद इस गुनाहगार औरत को माफ़ करेगा। तब हम उसे मुलज़िम ठहरा सकेंगे। हम कह सकेंगे कि यह कुफ़र बक रहा है। यह कहता है कि शरीअत की बातें नहीं माननी हैं।

एक और बात भी है। वह जानते थे कि अगर उस्ताद फ़रमाए कि औरत को सज़ा दो तो भी फँस जाएगा। रोमियों का मुल्क पर क़ब्ज़ा था, और वही सज़ाए-मौत देते थे। अगर उस्ताद औरत को सज़ाए-मौत लायक़ ठहराए तो रोमी उसे पकड़ेंगे।

वह पहला पत्थर मारे

अब ध्यान दें कि ईसा मसीह ने क्या किया। जिसे इलाही इख़्तियार होता है वह हर मौक़े पर बात नहीं करता। कभी कभी उसे ख़ामोश भी रहना पड़ता है। इस मौक़े पर ईसा मसीह ख़ामोश रहा। ख़ामोश रहना भी एक क़िस्म का जवाब होता है।

► **साथ साथ उसने क्या किया?**

जो उसने किया वह कुछ अजीब-सा लग रहा था। वह झुककर अपनी उँगली से ज़मीन पर लिखने लगा। हम नहीं जानते कि उसने क्या लिखा। लेकिन एक बात साफ़ है : वह वही जवाब देने को तैयार नहीं था जो आलिम उससे माँग रहे थे।

आलिम चौंक उठे। इससे काम नहीं बनेगा। आख़िर उसे कोई जवाब तो देना ही है! वह डटकर सवाल का जवाब माँगते रहे।

तब ईसा मसीह खड़ा होकर बोला, “तुममें से जिसने कभी गुनाह नहीं किया, वह पहला पत्थर मारे।”

वह फिर झुककर ज़मीन पर लिखने लगा।

पकड़ा गया

कितना अजीब मंज़र! यह आलिम लोगों को पकड़ने में बहुत माहिर थे। पहले उन्होंने औरत को पकड़ लिया था, और अब वह ईसा मसीह को भी पकड़ने पर तुले हुए थे। लेकिन यहाँ इसके उलट हुआ : उन्हीं को पकड़ा गया।

पहले सबकी आँखें औरत और उसके गुनाह पर लगी थीं। अब अचानक हर एक को उसके अपने गुनाह महसूस हुए।

पकड़नेवालों को ख़ुद पकड़ा गया।

आलिमों की सोच हम सबकी सोच है। हम सब पकड़नेवाले होते हैं। किसी को पकड़ा जाए चाहे उसकी ग़लती मामूली-सी क्यों न हो तो हम एकदम बड़ा मज़ा उठाते हैं। सबके सब उसे मोटी मोटी गालियाँ देते हैं। मगर ईसा मसीह के हुज़ूर एक बुनियादी बात ज़ाहिर हो जाती है—हम सबको ख़ुदा से पकड़ा गया है। गुनाह में हम सब बराबर होते हैं। हम सबके सब इस लायक़ नहीं कि ख़ुदा के हुज़ूर आएँ।

क्या मुझे सच्ची माफ़ी मिली है?

अब धीरे धीरे आलिम एक एक करके वहाँ से खिसक गए, पहले बुज़ुर्ग, फिर बाक़ी सब। औरत को उन्होंने वहीं छोड़ दिया।

आलिमों की चाल जवाब दे गई थी।

अब जो उस्ताद को पकड़ना चाहते थे उन्हीं को पकड़ा गया। अपने गुनाहों में पकड़े गए। इस कलाम की तेज़ रौशनी में वह अपने गुनाहों को महसूस करते हैं। लेकिन इससे पहले कि उनके गुनाह खुले-आम हो जाएँ वह भाग जाते हैं।

► **और औरत? उसका क्या हुआ?**

ईसा मसीह ने खड़े होकर कहा, "ऐ औरत, वह सब कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर फ़तवा नहीं लगाया?"

औरत ने जवाब दिया, "नहीं ख़ुदावंद।"

उस्ताद ने कहा, "मैं भी तुझ पर फ़तवा नहीं लगाता। जा, आइंदा गुनाह न करना।"

देखो, आलिम और औरत गुनाह में बराबर थे। यह भी गुनाहगार थी और वह भी। लेकिन एक फ़रक़ था।

► **वह क्या?**

आलिम अपने गुनाहों में उलझे रहे जबकि औरत को माफ़ी मिली। आलिम अपने गुनाहों को तसलीम नहीं कर सकते थे इसलिए वह माफ़ी मिले बग़ैर भाग गए। औरत को माफ़ी मिली और उसका दिल हलका हुआ।

माफ़ी से तबदीली

► **क्या आपके ख़याल में औरत इसके बाद दुबारा ज़िना करने में जुट गई?**

कलाम हमें इसके बारे में कुछ नहीं बताता। लेकिन मुझे यक़ीन है कि उस्ताद के कलाम से वह तबदील हुई और सही रास्ते पर आ गई।

► **क्यों?**

वह उसे ख़ुदावंद कहती है। ईसा मसीह उसका ख़ुदावंद बन गया, उसका मालिक। अब से उसकी ज़िंदगी उसके हाथ में थी। उसकी हुकूमत के तहत थी। इस हुकूमत के तहत वह पहली बार हक़ीक़ी मानों में आज़ाद थी। इस आज़ादी की ख़ुशी के मारे उसे अपनी पुरानी ज़िंदगी से घिन आई और वह सही राह पर आई।

जो ईसा मसीह से तबदील हो जाता है उसे अपनी पुरानी ज़िंदगी से घिन आती है और वह राहे-मुस्तक़ीम पर आ जाता है।

इंजील और शरीअत में फ़रक़

इससे इंजील और शरीअत में फ़रक़ भी पता चलता है।

ख़ुदा ने शरीअत नाज़िल की ताकि इनसान को ढाँचा मिले, एक क़ानून जिससे एक दूसरे के साथ ताल्लुक़ात महफ़ूज़ रहें। शरीअत का एक ज़रूरी हिस्सा सज़ा भी है। शरीअत ही हमें बताती है कि ऐ इनसान तुझसे गुनाह हुआ है। और शरीअत ही हमें सज़ा देती है जब हमसे गुनाह होता है।

शरीअत इनसान को पकड़कर सज़ा देती है जबकि ईसा मसीह उसे माफ़ी देकर गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद कर देता है।

यही इंजील की ख़ुशख़बरी है।

मसीह नहीं चाहता कि हम गुनाह के ग़ुलाम रहें। वह हमें इस ग़ुलामी से आज़ाद करना चाहता है। जब हमें यह आज़ादी हासिल हो तो हमें न सिर्फ़ माफ़ी मिलती है बल्कि हम गुनाह करना ही नहीं चाहते। हम ईसा मसीह के दामन को थामे हुए दिल की गहराइयों से सही रास्ते पर रहना चाहते हैं।

मेरा क्या जवाब है?

► **अब सवाल यह है : क्या हम आलिमों की तरह ईसा मसीह के हुज़ूर से भाग जाएँगे? या औरत की तरह अपने गुनाहों को मानकर माफ़ी पाएँगे? क्या हम गुनाह की ज़ंजीरों में जकड़े रहेंगे या इंजील की आज़ादी के साथ ज़िंदगी गुज़ारेंगे?**

इंजील, यूहन्ना 8:1-11

ईसा ख़ुद ज़ैतून के पहाड़ पर चला गया। अगले दिन पौ फटते वक़्त वह दुबारा बैतुल-मुक़द्दस में आया। वहाँ सब लोग उसके गिर्द जमा हुए और वह बैठकर उन्हें तालीम देने लगा। इस दौरान शरीअत के उलमा और फ़रीसी एक औरत को लेकर आए जिसे ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया था। उसे बीच में खड़ा करके उन्होंने ईसा से कहा, "उस्ताद, इस औरत को ज़िना करते वक़्त पकड़ा गया है। मूसा ने शरीअत में हमें हुक्म दिया है कि ऐसे लोगों को संगसार करना है। आप क्या कहते हैं?"

इस सवाल से वह उसे फँसाना चाहते थे ताकि उस पर इलज़ाम लगाने का कोई बहाना उनके हाथ आ जाए। लेकिन ईसा झुक गया और अपनी उँगली से ज़मीन पर लिखने लगा।

जब वह उससे जवाब का तक़ाज़ा करते रहे तो वह खड़ा होकर उनसे मुख़ातिब हुआ, "तुममें से जिसने कभी गुनाह नहीं किया, वह पहला पत्थर मारे।" फिर वह दुबारा झुककर ज़मीन पर लिखने लगा।

यह जवाब सुनकर इलज़ाम लगानेवाले यके-बाद-दीगरे वहाँ से खिसक गए, पहले बुज़ुर्ग, फिर बाक़ी सब।

आख़िरकार ईसा और दरमियान में खड़ी वह औरत अकेले रह गए। फिर उसने खड़े होकर कहा, "ऐ औरत, वह सब कहाँ गए? क्या किसी ने तुझ पर फ़तवा नहीं लगाया?"

औरत ने जवाब दिया, "नहीं ख़ुदावंद।"

ईसा ने कहा, "मैं भी तुझ पर फ़तवा नहीं लगाता। जा, आइंदा गुनाह न करना।"

सच्चा शागिर्द

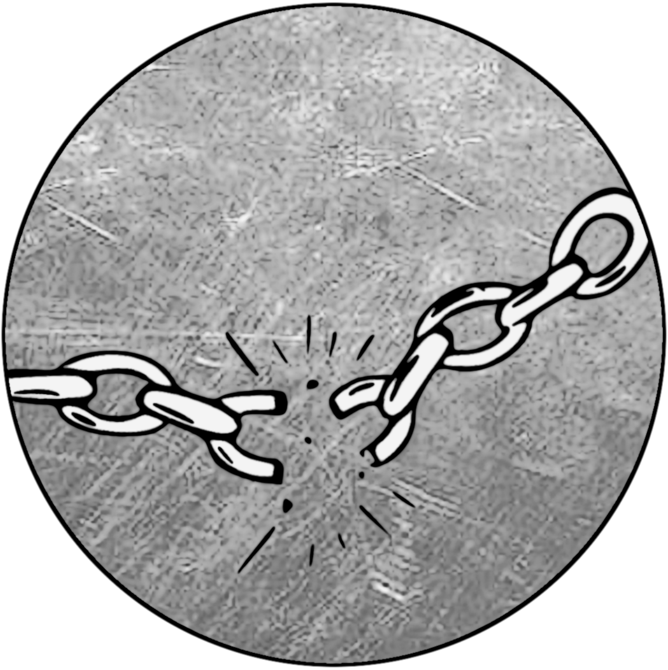

झोंपड़ियों की ईद थी। इस ईद पर लोग फ़सलों की ख़ुशी मनाते थे, यह कि ख़ुदा ने बारिश बरसाकर फ़सलें पैदा की हैं। साथ साथ वह याद करते थे कि एक दिन अल-मसीह आकर सब कुछ बहाल करेगा। उस वक़्त बैतुल-मुक़द्दस के नीचे से पानी बह निकलेगा। इसलिए ईसा मसीह ने इसी ईद पर खड़े होकर फ़रमाया था कि जो प्यासा हो वह मेरे पास आए, और जो मुझ पर ईमान लाए वह पिए। तब उसके अंदर से ज़िंदगी के पानी की नहरें बह निकलेंगी। इससे वह साफ़ कह रहा था कि मैं ही अल-मसीह हूँ, और मुझ पर ईमान लाकर तुम्हें अबदी ज़िंदगी मिलेगी।

► **जिसने अबदी ज़िंदगी का पानी पी लिया है वह क्या है?**

वह ईसा मसीह का शागिर्द है। लेकिन शागिर्द होने का क्या मतलब है? ईसा मसीह को झूठे शागिर्दों में कोई दिलचस्पी नहीं है। वह सच्चे शागिर्द चाहता है। यही वजह है कि अब उसने सच्चे शागिर्द का मज़मून छेड़ा। पहली बात,

शागिर्द को ज़िंदगी का नूर हासिल है

झोंपड़ियों की ईद का एक निशान पानी था। दूसरा निशान रौशनी थी। रात के वक़्त बैतुल-मुक़द्दस में बड़े बड़े चराग़दान जलाए जाते थे। इनकी रौशनी में यरूशलम शहर का कोना कोना चमकता-दमकता था। ईद के दौरान ईमानदार पूरी रात बैतुल-मुक़द्दस में ख़ुशी मनाते थे।

► **चराग़दानों के पीछे क्या ख़याल था?**

रौशनी ख़ुदा के नूर की तरफ़ इशारा है। जो ख़ुदा के नूर में चलता है वह सही राह पकड़ लेता है। न सिर्फ़ यह बल्कि पानी की तरह यह रौशनी उस नूर की तरफ़ इशारा थी जो अल-मसीह लाएगा। यों ज़करियाह नबी ने पेशगोई की थी,

> न दिन होगा और न रात बल्कि शाम को भी रौशनी होगी।
> (ज़करियाह 14:7)

मतलब है अल-मसीह के आने पर रात भी रौशन होगी। क्योंकि वह नूर का सरचश्मा होगा।

इस ईद पर ईसा मसीह कह चुका था कि मैं ज़िंदगी के पानी का सरचश्मा हूँ। अब उसने खड़े होकर फ़रमाया,

> दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह तारीकी में नहीं चलेगा, क्योंकि उसे ज़िंदगी का नूर हासिल होगा। (यूहन्ना 8:12)

► **कौन दुनिया का नूर है?**

ईसा मसीह।

► **ईसा मसीह ने इस ईद पर यह बात क्यों फ़रमाई?**

पानी की तरह नूर अल-मसीह का निशान है।

► **दुनिया का यह नूर हमें क्या दिलाता है?**

- नूर रास्ते को रौशन कर देता है। तब हम दुनिया की तारीकी में नहीं चलेंगे। हम नजात के रास्ते पर चलेंगे।
- नूर ज़िंदगी दिलाता है। रौशनी के बग़ैर पौधा मुरझा जाता है। रौशनी के बग़ैर इनसान भी आहिस्ता आहिस्ता ख़त्म हो जाता है। इसी तरह नूर हमें रूहानी ज़िंदगी दिलाता है, हमें ठीक मनज़िल तक पहुँचाता है, हमें अबदी ज़िंदगी दिलाता है।

एक दिन का ज़िक्र है कि एक बीज एक सूखे हुए कुएँ में गिर गया। जहाँ गिरा वहाँ तक सूरज की किरणें नहीं पहुँचती थीं। फिर भी बीज से नाज़ुक-सा पौधा फूट निकला जो आहिस्ता आहिस्ता कुएँ के मुँह तक बढ़ने लगा। आम तौर पर इस क़िस्म का पौधा सिर्फ़ दो-चार इंच लंबा हो जाता है। लेकिन रौशनी को ढूँडते ढूँडते यह पौधा सौ फ़ुट से ज़्यादा लंबा हो गया। आख़िरकार वह कुएँ के मुँह और सूरज की किरणों तक पहुँच गया।

► **इस पौधे को पूरी रौशनी और ज़िंदगी क्यों मिली?**

इसलिए कि वह रौशनी के पीछे पड़ा रहा। नजात का एक ही रास्ता है : उस नूर के पीछे चलना जो ईसा मसीह है।

► **क्या हम ऐसी शिद्दत से नूर के पीछे पड़ गए हैं?**

ईसा मसीह का यह दावा सुनकर सुननेवाले एतराज़ करने लगे, "आप तो अपने बारे में गवाही दे रहे हैं। ऐसी गवाही मोतबर नहीं होती।"

यह एतराज़ पहले भी किया जा चुका था (देखिए बाब 5)। उस वक़्त ईसा मसीह ने तफ़सील से इसका जवाब दिया था। इस मौक़े पर उसने यह फ़रमाना काफ़ी समझा कि मैं और मेरा बाप दोनों इसके मोतबर गवाह हैं। मसला मैं नहीं हूँ बल्कि तुम। उसने फ़रमाया,

> मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जा रहा हूँ। लेकिन तुमको तो मालूम नहीं कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। (यूहन्ना 8:14)

► **मसला क्या था?**

जब सूरज की किरणें हम पर पड़ती हैं तो हम जान लेते हैं कि यह सूरज से निकली हुई हैं। हम यह भी जान लेते हैं कि इनसे ज़मीन रौशन होकर फल लाती है। इलाही सूरज का नूर दुनिया में आया था मगर इन मुख़ालिफ़ों के दिल रौशन नहीं हुए थे न वह रूहानी फल लाए थे। अफ़सोस!

ईसा मसीह उन्हें आगाह करना चाहता था, इसलिए उसने फ़रमाया कि सिर्फ़ सच्चे शागिर्द को ज़िंदगी का नूर हासिल है। दूसरे,

शागिर्द अपने गुनाहों में नहीं मरेगा

उसने फ़रमाया,

> मैं जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँड ढूँडकर अपने गुनाह में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते। (यूहन्ना 8:21)

अकसर लोग शिद्दत से अल-मसीह का इंतज़ार करेंगे, मगर बेफ़ायदा। वह अपने गुनाहों में मर जाएँगे।

► **किस चीज़ में मर जाएँगे?**

अपने गुनाहों में।

► **क्यों?**

ईसा मसीह ने सलीब पर अपनी जान दी ताकि हमारे गुनाह मिट जाएँ। जो उसके पीछे हो ले उसके गुनाह मिट गए हैं। लेकिन जो उसे क़बूल न करे उसके गुनाह हमेशा तक रहेंगे। इसलिए वह अपने गुनाहों में मर जाएगा।

► **जो अपने गुनाह में मर जाता है क्या उसे जन्नत की उम्मीद है?**

नहीं। गुनाह इनसान को ख़ुदा से दूर रख देता है। सिर्फ़ ईसा मसीह के पाक नूर में रहने से नजात मिलेगी। उसी में रहकर हमारे गुनाह दूर हो जाते हैं। कोई और हल नहीं।

► **मेरे दोस्त, क्या आपको नजात का यक़ीन है?**

बहुत-सारे लोग नजात को ढूँडते ढूँडते हलाक हो रहे हैं।

► **क्यों?**

इसलिए कि वह मसीह के नूर में नहीं आए हैं। ऐसे लोगों को ईसा मसीह फ़रमाता है कि जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते। सिर्फ़ सच्चा शागिर्द अपने गुनाहों में नहीं मरेगा। लेकिन सच्चे शागिर्द का एक तीसरा निशान है।

शागिर्द जानता है कि नूर कहाँ से है

सुननेवालों ने पूछा कि आप कौन हैं?

उसने फ़रमाया,

> मैं वही हूँ जो मैं शुरू से ही बताता आया हूँ। (यूहन्ना 8:25)

► **क्या मतलब है?**

मैं अपने काम और कलाम से तुम पर ज़ाहिर हुआ हूँ, फिर भी तुम ईमान नहीं लाए। ईसा मसीह जानता था कि तू तू मैं मैं करने से बात नहीं बनेगी। जो लोग ईमान लाना नहीं चाहते उन्हें मनवाना बेकार है। फिर उसने एक बात फ़रमाई जो समझने में मुश्किल है,

> जब तुम इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तब ही तुम जान लोगे कि मैं वही हूँ। (यूहन्ना 8:28)

► **इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाने का क्या मतलब है?**

इब्ने-आदम से मुराद ईसा मसीह है। उसके मुख़ालिफ़ उसे ऊँचे पर यानी सलीब पर चढ़ाएँगे। लेकिन वह मुरदों में नहीं रहेगा। वह जी उठकर आसमान पर उठा लिया जाएगा और एक दिन दुनिया की अदालत करने के लिए लौटेगा। उस वक़्त सब जान लेंगे कि वह कौन है।

► **वह क्या जान लेंगे?**

मसीह फ़रमाता है, वह जान लेंगे कि मैं वही हूँ।

► **इसका क्या मतलब है?**

जब ख़ुदा ने मूसा नबी को हिदायत दी कि वह इसराईलियों को मिसर से फ़लस्तीन ले जाए तो मूसा ने पूछा कि मैं क्या कहूँ जब वह कहेंगे कि किसने तुझे भेज दिया है, उसका नाम क्या है? ख़ुदा ने जवाब दिया,

> मैं जो हूँ सो मैं हूँ। उनसे कहना, 'मैं हूँ ने मुझे तुम्हारे पास भेजा है।' (तौरेत, ख़ुरूज 3:14)

इसी तरह ख़ुदा ने यसायाह नबी के वसीले से फ़रमाया था,

> ऐ इसराईली क़ौम, तुम ही मेरे गवाह हो, तुम ही मेरे ख़ादिम हो जिसे मैंने चुन लिया ताकि तुम जान लो, मुझ पर ईमान लाओ और पहचान लो कि मैं ही हूँ। (यसायाह 43:10)

► **इसराईल क्या पहचान ले?**

कि मैं ही हूँ।

► **क्यों?**

हर मख़लूक़ के पीछे वही है। उसके पीछे या ऊपर कुछ नहीं है। वह है इसी लिए हम हैं। अब ईसा मसीह ने फ़रमाया कि मैं ही हूँ।

► **इससे वह क्या कहना चाहता था?**

मैं जो फ़रज़ंद हूँ ख़ुदा बाप से भेजा गया हूँ, इसलिए मैं ही हूँ। ख़ुदा बाप सूरज है, मैं उसकी रौशनी हूँ। इसलिए मैं सिर्फ़ वह कुछ करता हूँ जो ख़ुदा बाप की मरज़ी है। यह एक बहुत अज़ीम बात है जो हममें से कोई भी अपने बारे में नहीं कह सकता।

उसके मुख़ालिफ़ सोच-बिचार में पड़ गए कि क्या यह कुफ़र नहीं है? लेकिन बहुत-से लोग उस पर ईमान लाए। सच्चा शागिर्द जानता है कि नूर कहाँ से है। वह जानता है कि वह 'मैं हूँ' है। सच्चे शागिर्द का एक चौथा निशान :

शागिर्द गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद है

उसने फ़रमाया,

> अगर तुम मेरी तालीम के ताबे रहोगे तब ही तुम मेरे सच्चे शागिर्द होगे। फिर तुम सच्चाई को जान लोगे और सच्चाई तुमको आज़ाद कर देगी। (यूहन्ना 8:31-32)

► **सच्चा शागिर्द कौन है?**

वह जो मसीह की तालीम के ताबे रहेगा।

► **ताबे रहने का क्या मतलब है?**

यह कि शागिर्द उसकी हुकूमत के तहत हो। कि नूर की किरणें दिल का कोना कोना रौशन करें।

► **सच्चा शागिर्द क्या जान लेगा?**

सच्चाई को।

► **सो सच्चाई को जानने का पहला क़दम क्या है?**

उसका पहला क़दम नूर के ताबे हो जाना है। पहले मुझे यह क़बूल करना है कि ईसा मसीह मेरा आक़ा, मेरा नूर है। तब ही मैं सच्चाई को जान लूँगा। इसके उलट नहीं हो सकता। पहले नूर मेरी ज़िंदगी को रौशन करे, तब ही मैं सच्चाई को जान सकता हूँ।

► **सच्चाई को जान लेने के बाद क्या नतीजा निकलेगा?**

सच्चाई सच्चे शागिर्द को आज़ाद कर देगी।

► **लेकिन सच्चाई क्या है?**

सच्चाई ख़ुद ईसा मसीह है जिसमें ख़ुदा बाप ज़ाहिर हुआ है। वही हमें आज़ाद करेगा (देखिए यूहन्ना 8:36)।

► **सच्चाई किस चीज़ से आज़ाद करेगी?**

ग़ुलामी से।

यहूदियों ने एतराज़ किया, "हम तो इब्राहीम की औलाद हैं, हम कभी भी किसी के ग़ुलाम नहीं रहे। फिर आप किस तरह कह सकते हैं कि हम आज़ाद हो जाएँगे?" यहूदी तो इस पर बहुत फ़ख्र करते थे कि हम इब्राहीम की आज़ाद औलाद हैं। गो रोमी हम पर हुकूमत करें तो भी हमारी फ़ितरत आज़ाद है।

लेकिन यहाँ ईसा मसीह हक़ीक़ी आज़ादी की बात कर रहा था—रूहानी आज़ादी की बात। उसने फ़रमाया,

> जो भी गुनाह करता है वह गुनाह का ग़ुलाम है। (यूहन्ना 8:34)

► **कौन रूहानी ग़ुलाम होता है?**

जो भी गुनाह करता है। क्योंकि वह गुनाह का ग़ुलाम है।

► **क्या कोई इनसान है जो गुनाह नहीं करता?**

एक भी नहीं। इस दुनिया में सिर्फ़ ईसा मसीह बेगुनाह था। कोई भी इनसान नहीं है जो अपनी ही ताक़त से गुनाह से दूर रह सके। हम सब गुनाहगार हैं। इसलिए हम सबके सब गुनाह के ग़ुलाम हैं। सिर्फ़ एक है जो हमें आज़ाद कर सकता है : ईसा मसीह। ईसा मसीह दुनिया का नूर है। उसकी पाक रौशनी में इनसान अपनी किसी भी चीज़ पर फ़ख्र नहीं कर सकता। हर चीज़ जिस पर हम फ़ख्र करते हैं इस रौशनी में नाक़िस साबित होती है।

► **तो फिर हम किस तरह गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद हो सकते हैं?**

दुनिया के नूर से जो इस दुनिया में नाज़िल हुआ ताकि इनसान को गुनाह से आज़ाद करे।

► **आज़ाद हो जाने के लिए क्या ज़रूरी है?**

ज़रूरी है कि उसका कलाम हमारे अंदर बसे। उसका नूर हमारे तारीक दिलों को रौशन करे। यही उसके ताबे रहने का मतलब है। यों ही सच्चा शागिर्द गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद हो जाता है। ईसा मसीह के मुख़ालिफ़ रौशन नहीं हुए थे। उनका हक़ीक़ी बाप इब्राहीम नहीं बल्कि इबलीस था जिसने उन्हें तारीकी की ज़ंजीरों में जकड़ लिया था।

सच्चे शागिर्द के बारे में एक आख़िरी बात,

शागिर्द अबदी मौत नहीं देखेगा

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> जो भी मेरे कलाम पर अमल करता रहे वह मौत को कभी नहीं देखेगा। (यूहन्ना 8:51)

उसके मुख़ालिफ़ नाराज़ हुए। उन्होंने पूछा कि यह किस तरह हो सकता है? “क्या तुम हमारे बाप इब्राहीम से बड़े हो? वह मर गया, और नबी भी मर गए। तुम अपने आपको क्या समझते हो?”

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> तुम्हारे बाप इब्राहीम ने ख़ुशी मनाई जब उसे मालूम हुआ कि वह मेरी आमद का दिन देखेगा, और वह उसे देखकर मसरूर हुआ। (यूहन्ना 8:56)

► **उसने ख़ुशी क्यों मनाई?**

इब्राहीम नबी था। इसलिए उसने देखा कि एक आनेवाला है जो मुझसे बढ़कर है। दुनिया का नूर आनेवाला है जो इनसान को गुनाह की ग़ुलामी से नजात देगा।

यहूदियों ने एतराज़ किया, “तुम्हारी उम्र तो अभी पचास साल भी नहीं, तो फिर तुम किस तरह कह सकते हो कि तुमने इब्राहीम को देखा है?”

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> इब्राहीम की पैदाइश से पेशतर ‘मैं हूँ’। (यूहन्ना 8:58)

यह बात यहूदी बरदाश्त नहीं कर सकते थे। वह उसे संगसार करने के लिए पत्थर उठाने लगे।

► **क्यों?**

अब ईसा मसीह ने अपने बारे में साफ़ साफ़ कहा था कि ‘मैं हूँ।’ न सिर्फ़ मैं इब्राहीम से पहले था बल्कि मैं इब्राहीम से पहले हूँ। मतलब है अज़ल से हूँ। मैं इलाही सूरज का नूर हूँ। मैं वह हूँ जो इस दुनिया में नाज़िल हुआ ताकि तुम्हें गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद करे। यह यहूदियों की नज़र में कुफ़र था।

मेरे अज़ीज़, बहुत-से लोग यह रूहानी हक़ीक़त क़बूल नहीं कर सकते। उनके नज़दीक ईसा मसीह अच्छा इनसान और अज़ीम नबी था। लेकिन वह यह क़बूल नहीं कर सकते कि वह दुनिया का नूर है, कि वह 'मैं हूँ' यानी ख़ुदा का फ़रज़ंद है। लेकिन ऐसे लोगों से मैं एक ही सवाल पूछना चाहता हूँ,

► **आप किस तरह गुनाह की ग़ुलामी से आज़ाद हो जाएँगे?**
उसी के पास यह इख़्तियार है, वही पूरी तरह पाक है, वही हमारे गुनाहों को मिटाकर हमें जन्नत में दाख़िल होने के क़ाबिल बना सकता है। कोई और वसीला नहीं है।

इंजील, यूहन्ना 8:12-59

फिर ईसा दुबारा लोगों से मुख़ातिब हुआ, "दुनिया का नूर मैं हूँ। जो मेरी पैरवी करे वह तारीकी में नहीं चलेगा, क्योंकि उसे ज़िंदगी का नूर हासिल होगा।"
फ़रीसियों ने एतराज़ किया, "आप तो अपने बारे में गवाही दे रहे हैं। ऐसी गवाही मोतबर नहीं होती।"
ईसा ने जवाब दिया, "अगरचे मैं अपने बारे में ही गवाही दे रहा हूँ तो भी वह मोतबर है। क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ को जा रहा हूँ। लेकिन तुमको तो मालूम नहीं कि मैं कहाँ से आया हूँ और कहाँ जा रहा हूँ। तुम इनसानी सोच के मुताबिक़ लोगों का फ़ैसला करते हो, लेकिन मैं किसी का भी फ़ैसला नहीं करता। और अगर फ़ैसला करूँ भी तो मेरा फ़ैसला दुरुस्त है, क्योंकि मैं अकेला नहीं हूँ। बाप जिसने मुझे भेजा है मेरे साथ है। तुम्हारी शरीअत में लिखा है कि दो आदमियों की गवाही मोतबर है। मैं ख़ुद अपने बारे में गवाही देता हूँ जबकि दूसरा गवाह बाप है जिसने मुझे भेजा।"
उन्होंने पूछा, "आपका बाप कहाँ है?" ईसा ने जवाब दिया, "तुम न मुझे जानते हो, न मेरे बाप को। अगर तुम मुझे जानते तो फिर मेरे बाप को भी जानते।"

ईसा ने यह बातें उस वक़्त कीं जब वह उस जगह के क़रीब तालीम दे रहा था जहाँ लोग अपना हदिया डालते थे। लेकिन किसी ने उसे गिरिफ़्तार न किया क्योंकि अभी उसका वक़्त नहीं आया था।

एक और बार ईसा उनसे मुख़ातिब हुआ, "मैं जा रहा हूँ और तुम मुझे ढूँड ढूँडकर अपने गुनाह में मर जाओगे। जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते।"

यहूदियों ने पूछा, "क्या वह ख़ुदकुशी करना चाहता है? क्या वह इसी वजह से कहता है, 'जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं पहुँच सकते'?"

ईसा ने अपनी बात जारी रखी, "तुम नीचे से हो जबकि मैं ऊपर से हूँ। तुम इस दुनिया के हो जबकि मैं इस दुनिया का नहीं हूँ। मैं तुमको बता चुका हूँ कि तुम अपने गुनाहों में मर जाओगे। क्योंकि अगर तुम ईमान नहीं लाते कि मैं वही हूँ तो तुम यक़ीनन अपने गुनाहों में मर जाओगे।"

उन्होंने सवाल किया, "आप कौन हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, "मैं वही हूँ जो मैं शुरू से ही बताता आया हूँ। मैं तुम्हारे बारे में बहुत कुछ कह सकता हूँ। बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिनकी बिना पर मैं तुमको मुजरिम ठहरा सकता हूँ। लेकिन जिसने मुझे भेजा है वही सच्चा और मोतबर है और मैं दुनिया को सिर्फ़ वह कुछ सुनाता हूँ जो मैंने उससे सुना है।"

सुननेवाले न समझे कि ईसा बाप का ज़िक्र कर रहा है। चुनाँचे उसने कहा, "जब तुम इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाओगे तब ही तुम जान लोगे कि मैं वही हूँ, कि मैं अपनी तरफ़ से कुछ नहीं करता बल्कि सिर्फ़ वही सुनाता हूँ जो बाप ने मुझे सिखाया है। और जिसने मुझे भेजा है वह मेरे साथ है। उसने मुझे अकेला नहीं छोड़ा, क्योंकि मैं हर वक़्त वही कुछ करता हूँ जो उसे पसंद आता है।"

यह बातें सुनकर बहुत-से लोग उस पर ईमान लाए।

जो यहूदी उसका यक़ीन करते थे ईसा अब उनसे हमकलाम हुआ, "अगर तुम मेरी तालीम के ताबे रहोगे तब ही तुम मेरे सच्चे शागिर्द होगे। फिर तुम सच्चाई को जान लोगे और सच्चाई तुमको आज़ाद कर देगी।"

उन्होंने एतराज़ किया, “हम तो इब्राहीम की औलाद हैं, हम कभी भी किसी के ग़ुलाम नहीं रहे। फिर आप किस तरह कह सकते हैं कि हम आज़ाद हो जाएँगे?”

ईसा ने जवाब दिया, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो भी गुनाह करता है वह गुनाह का ग़ुलाम है। ग़ुलाम तो आरिज़ी तौर पर घर में रहता है, लेकिन मालिक का बेटा हमेशा तक। इसलिए अगर फ़रज़ंद तुमको आज़ाद करे तो तुम हक़ीक़तन आज़ाद होगे। मुझे मालूम है कि तुम इब्राहीम की औलाद हो। लेकिन तुम मुझे क़त्ल करने के दरपै हो, क्योंकि तुम्हारे अंदर मेरे पैग़ाम के लिए गुंजाइश नहीं है। मैं तुमको वही कुछ बताता हूँ जो मैंने बाप के हाँ देखा है, जबकि तुम वही कुछ सुनाते हो जो तुमने अपने बाप से सुना है।”

उन्होंने कहा, “हमारा बाप इब्राहीम है।” ईसा ने जवाब दिया, “अगर तुम इब्राहीम की औलाद होते तो तुम उसके नमूने पर चलते। इसके बजाए तुम मुझे क़त्ल करने की तलाश में हो, इसलिए कि मैंने तुमको वही सच्चाई सुनाई है जो मैंने अल्लाह के हुज़ूर सुनी है। इब्राहीम ने कभी भी इस क़िस्म का काम न किया। नहीं, तुम अपने बाप का काम कर रहे हो।”

नूर या अंधेरा

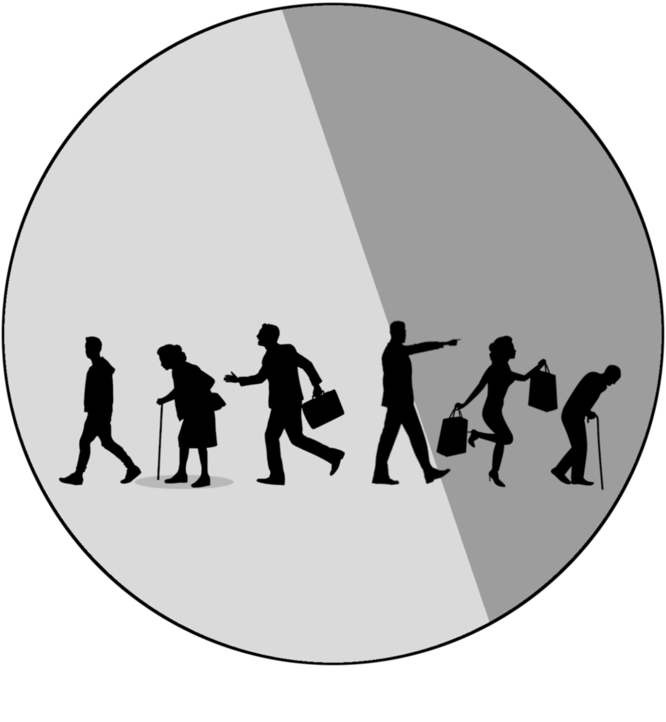

एक ख़ास ईद पर ईसा मसीह ने फ़रमाया था कि मैं दुनिया का नूर हूँ। इसका क्या मतलब है? थोड़ी देर बाद कुछ हुआ जिससे मतलब साफ़ पता चला।

यों हुआ : ईसा मसीह अपने शागिर्दों के साथ यरूशलम में चल रहा था कि एक भिक्षु को गली के किनारे देखा। यह आदमी आम भिक्षु नहीं था। यह भीख माँगने पर मजबूर था। क्यों? वह तो नौजवान था, उस उम्र में जब ताक़त अच्छी-ख़ासी होती है, जब इनसान ख़ूब पैसे कमा सकता है। लेकिन उसका एक मसला था : वह पैदाइश से ही अंधा था।

सब रुक गए। शागिर्द उस पर अफ़सोस करने लगे। हाय, इस आदमी ने कभी सूरज की किरणें ओस की मोतियों में चमकती-दमकती नहीं देखी थीं। उसका दिल कभी रंगदार फूलों के नज़ारे से लबरेज़ नहीं हुआ था। उसकी आँखें खेतों की हरियाली से कभी तरो-ताज़ा नहीं हुई थीं। उसने कभी नहीं देखा था कि पक्षी किस तरह आसमान को पार करते हैं। कि हुदहुद किस तरह फुदकता हुआ अपनी लंबी चोंच से ज़मीन में से कीड़े निकालता है। सबसे बढ़कर यह कि न उसने कभी अपनी माँ की प्यार-भरी आँखें देखी थीं न अपने बाप का उस पर ललकारता फ़ख्र। इनसान तो अपने चेहरे से हर जज़बा ज़ाहिर करता है। प्यार और नफ़रत, ग़ुस्सा और शांति, हँसी और रोना—यह सब कुछ हमारे चेहरों से मालूम होता है। लेकिन यह सब कुछ उस अंधे के लिए एक मुहरबंद किताब थी जो वह कभी नहीं पढ़ेगा।

लेकिन ईसा मसीह अफ़सोस करने नहीं रुका था। वह तो कह चुका था कि मैं दुनिया का नूर हूँ। अब वह शागिर्दों को दिखाना चाहता था कि इसका क्या मतलब है। पहली बात,

नूर ख़ुदा का काम ज़ाहिर करता है

अंधे को देखते देखते शागिर्दों को वह ख़याल आया जो हमें भी जल्द ही आता है : "उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यों पैदा हुआ? क्या इसका कोई गुनाह है या इसके वालिदैन का?"

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> न इसका कोई गुनाह है और न इसके वालिदैन का। यह इसलिए हुआ कि इसकी ज़िंदगी में अल्लाह का काम ज़ाहिर हो जाए। (यूहन्ना 9:3)

ईसा मसीह गुनाह के नतीजों के बारे में एक अहम बात फ़रमाता है।

► **कौन-सी बात?**

हम नहीं कह सकते कि हर मुसीबत गुनाह का नतीजा है। नौजवान गुनाह के बाइस अंधा नहीं हुआ था बल्कि इसके पीछे ख़ुदा का ख़ास मक़सद था।

► **मक़सद क्या था?**

यह कि ख़ुदा का काम नौजवान की ज़िंदगी में ज़ाहिर हो जाए। ईसा मसीह उसकी मिसाल से शागिर्दों को दिखाना चाहता था कि नूर का क्या असर होता है। हम देखेंगे कि नूर का मुख़्तलिफ़ लोगों पर असर फ़रक़ फ़रक़ होता है। नूर का पहला असर,

नूर आँखें खोल देता है

ईसा मसीह ने ज़मीन पर थूककर मिट्टी सानी और अंधे की आँखों पर लगा दी। फिर कहा,

> जा, शिलोख़ के हौज़ में नहा ले। (शिलोख़ का मतलब 'भेजा हुआ' है।) (यूहन्ना 9:5)

► **यह किस तरह का हौज़ था?**

इस हौज़ का पानी सुरंग के ज़रीए शहर में पहुँचता था।

► **शिलोख़ का क्या मतलब है?**

भेजा हुआ।

► **मसीह ने यह क्यों फ़रमाया?**

- वह अपनी तरफ़ इशारा कर रहा था जो ख़ुदा बाप से भेजा गया था।
- उसने उसकी आँखों को एकदम शफ़ा न दी।

► **क्यों?**

मोजिज़े का अव्वल मक़सद बहाली नहीं बल्कि ईमान था। ईसा मसीह चाहता था कि अंधा हौज़ पर जाकर ईमान का पहला क़दम उठाए। ख़ुद अमल में आने से उसका ईमान थोड़ा मज़बूत हो जाएगा।

► **इससे हम सच्चे शागिर्द के बारे में क्या सीख सकते हैं?**

सच्चा शागिर्द हमेशा ख़ुद अमल में आता है। आसमान की बादशाही में सुस्त और ला-परवाह शागिर्दों के लिए जगह नहीं है।

► **क्या अंधा हौज़ के पास गया?**

बिलकुल, वह एकदम गया। उसने रास्ते में क्या सोचा होगा जब वह गलियों में टटोल टटोलकर हौज़ की तरफ़ जा रहा था? उसका दिल कितना तड़प रहा होगा।

► **हौज़ पर अंधे ने क्या किया?**

उसने नहा लिया। वह काम जो उस्ताद ने फ़रमाया था।

► **फिर क्या हुआ?**

उसकी आँखें बहाल हुई और वह देखने लगा।

► **क्या उसकी शफ़ा हौज़ के पानी से हुई?**

नहीं। वह दुनिया के नूर से खुल गईं। वाह! एकदम कितना मज़ा! नौजवान पहली बार हौज़ का पानी धूप में झिलमिलाता हुआ देख सकता था। आसमान कितना नीला था! जो छोटे बादल नन्ही-सी भेड़ों की तरह चरते चरते उस पर से गुज़र रहे थे वह कितने दिलफ़रेब थे। कुछ लोग हौज़ के किनारे बैठे या खड़े दिखाई दिए। नौजवान फूले न समाया। उसने सोचा, पहले घरवालों को इस ख़ुशी में शरीक करूँ। वह कूदता-फलाँगता हुआ अपने घर चल दिया। अब नूर के दूसरे असर पर ध्यान दें :

नूर खलबली मचा देता है

नौजवान के पड़ोसी और जाननेवाले दंग रह गए। वह पूछने लगे, “क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख माँगा करता था?”

बाज़ ने कहा, “हाँ, वही है।”

दूसरे शक में पड़ गए। “नहीं, यह सिर्फ़ उसका हमशक्ल है।”

लेकिन नौजवान बोला, “मैं वही हूँ।”

उन्होंने उससे सवाल किया, "तेरी आँखें किस तरह बहाल हुई?"

उसने जवाब दिया, "वह आदमी जो ईसा कहलाता है उसने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उसने मुझे कहा, 'शिलोख़ के हौज़ पर जा और नहा ले।' मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें बहाल हो गईं।"

► **क्या नौजवान ने यह छिपाने की कोशिश की कि मोजिज़ा ईसा मसीह से हुआ है?**

नहीं। उसने साफ़ इक़रार किया कि ईसा मसीह ने यह काम किया है। ईमान का एक अहम हिस्सा इक़रार है।

यह सुनकर खलबली मच गई। उन्होंने पूछा, "वह कहाँ है?"

उसने जवाब दिया, "मुझे नहीं मालूम।" बेचारा तो अंधा था जब ईसा मसीह उसके पास आया था। न उसने उसे देखा था, न यह कि वह बाद में कहाँ चला गया था। नूर खलबली मचा देता है। लेकिन नूर का एक तीसरा असर भी होता है :

नूर शक में डाल देता है

पड़ोसी इतने जज़्बे में आ गए कि वह नौजवान को फ़रीसियों के पास ले गए। फ़रीसी उनके मज़हबी राहनुमा थे।

► **क्या यह राहनुमा ख़ुश हुए?**

नहीं। वह एकदम शक में पड़ गए।

► **क्यों?**

यह मोजिज़ा सबत यानी हफ़्ते के दिन हुआ था।

► **यह राहनुमाओं के लिए क्यों ठोकर का बाइस था?**

शरीअत के मुताबिक़ सबत के दिन काम-काज करना मना था। मक़सद यह था कि लोगों को हफ़्ते में एक दिन आराम मिले। लेकिन बाद में आलिमों ने एक सीधी-सी बात पेचीदा बना ली थी। अब सबत के दिन आटा गूँधना भी मना था। इस नाते से थोड़ी-सी गीली मिट्टी अंधे की आँखों पर लगाना भी काम ठहराया जा सकता था।

बुज़ुर्गों ने नौजवान से पूछ-गछ की कि उसकी आँखें किस तरह बहाल हुईं।

आदमी ने जवाब दिया, "उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैंने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।"

बुज़ुर्गों में से बाज़ ने कहा, “यह आदमी अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।”

दूसरों ने एतराज़ किया, “गुनाहगार इस क़िस्म के इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?” यों उनमें फूट पड़ गई।

► **इस फूट से हम क्या सीखते हैं?**

जहाँ ईसा मसीह का नूर पहुँचता है वहाँ फूट पड़ती है। कुछ उसे क़बूल करते हैं लेकिन कुछ उसके ख़िलाफ़ हो जाते हैं। कुछ उस नूर में आ जाते हैं लेकिन कुछ अंधेरे के सायों में खिसक जाते हैं।

► **आपने क्या फ़ैसला किया है? क्या आपने उसे क़बूल किया या उसके ख़िलाफ़ हो गए हैं?**

बुज़ुर्ग दुबारा नौजवान से मुख़ातिब हुए, “तू ख़ुद इसके बारे में क्या कहता है? उसने तो तेरी ही आँखों को बहाल किया है।”

नौजवान ने जवाब दिया, “वह नबी है।”

► **क्या आपने कुछ महसूस किया?**

आहिस्ता आहिस्ता अंधे की ईसा मसीह के बारे राय बढ़ रही है। अब वह उसे नबी ठहरा रहा है।

► **आपकी ईसा मसीह के बारे में राय क्या है?**

नूर का एक चौथा असर भी होता है,

नूर डाँवाँडोल कर देता है

बुज़ुर्गों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि नौजवान पहले अंधा था। उन्होंने उसके वालिदैन को बुलाया। उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता है?”

उसके वालिदैन ने जवाब दिया, “हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त अंधा था। लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख सकता है या कि किसने इसकी आँखों को बहाल किया है। इससे ख़ुद पता करें, यह बालिग़ है। यह ख़ुद अपने बारे में बता सकता है।”

असल में वालिदैन को डर था इसलिए यों कहा। क्योंकि फ़ैसला हो चुका था कि जो भी ईसा मसीह के हक़ में हो उसे जमात से निकाल दिया जाएगा।

► **क्या आपको ऐसा कोई डर है?**

माँ-बाप बुज़ुर्गों से डरकर गोल-मोल बातें करने लगे। कितने लोग गोल-मोल बातें करने लगते हैं जब उनसे पूछा जाए कि तुम ईसा मसीह के बारे में क्या सोचते हो। वह साफ़ बात करने को तैयार नहीं होते। नूर का पाँचवाँ असर :

नूर शरीअत की क़ैद से आज़ाद कर देता है

बुज़ुर्गों ने एक बार फिर नौजवान को बुलाया, "अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।"

आदमी ने जवाब दिया, "मुझे क्या पता है कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ : पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ!"

यह आदमी कितना चुस्त था। उसने अपने माँ-बाप की-सी गोल-मोल बातें न कीं बल्कि सीधा वह बात की जो सबकी आँखों के सामने थी।

फिर उन्होंने उससे सवाल किया, "उसने तेरे साथ क्या किया? उसने किस तरह तेरी आँखों को बहाल कर दिया?"

अब नौजवान ने अपना आपा खो बैठा। उसने जवाब दिया, "मैं पहले भी आपको बता चुका हूँ और आपने सुना नहीं। क्या आप भी उसके शागिर्द बनना चाहते हैं?"

बुज़ुर्गों का सिर्फ़ एक मक़सद था। यह कि बार बार पूछने से उसे ग़लत साबित करें। इसलिए नौजवान ने मज़ाक़ में कहा कि क्या आप भी उसके शागिर्द बनना चाहते हैं? वह तो ख़ूब जानता था कि वह शागिर्द नहीं बनना चाहते थे।

► **क्या आपने ध्यान दिया कि नौजवान ने अपने बारे में क्या कहा?**

अपनी बात से उसने साफ़ कह दिया कि मैं उसका शागिर्द हूँ। अब तक उसने उसे देखा तक नहीं था। तो भी वह अपने आपको उसका पक्का शागिर्द समझता था।

बुज़ुर्ग तैश में आ गए। उन्होंने उसे बुरा-भला कहा, "तू ही उसका शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं। हम तो जानते हैं कि अल्लाह ने मूसा से बात की है, लेकिन इसके बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।"

इस जगह पर नौजवान और बुज़ुर्गों में फूट साफ़ नज़र आती है।

► **कैसी फूट?**

बुज़ुर्ग शरीअत पर बहुत फ़ख्र करते थे। लेकिन इस फ़ख्र ने उन्हें अल-मसीह के लिए अंधा कर दिया जब वह उनके सामने आ मौजूद हुआ। शरीअत और नबियों के नविश्ते तो अल-मसीह की पेशगोई करते थे। घमंड इनसान को ख़ुदा से दूर कर देता है।

नौजवान ने जवाब दिया, "अजीब बात है, उसने मेरी आँखों को शफ़ा दी है और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है। हम जानते हैं कि अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उसकी सुनता है जो उसका ख़ौफ़ मानता और उसकी मरज़ी के मुताबिक़ चलता है। इब्तिदा ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की आँखों को बहाल कर दिया हो। अगर यह आदमी अल्लाह की तरफ़ से न होता तो कुछ न कर सकता।"

नौजवान सादा-सा आदमी था जबकि बुज़ुर्ग आलिम थे। कितनी अजीब बात कि उसी ने रूहानी हक़ीक़त को समझ ली थी जबकि बुज़ुर्ग इसके लिए अंधे थे। जितना नौजवान नूर की सच्चाई की तरफ़ बढ़ रहा था उतना ही बुज़ुर्ग तारीकी के सायों में गुम होते जा रहे थे।

► **नौजवान ने दो जवाब दिए। वह क्या थे?**

ज़ाहिर है कि ईसा मसीह ख़ुदा की तरफ़ से है। क्योंकि

- ख़ुदा उसी की सुनता है जो गुनाह नहीं करता। जो उसका ख़ौफ़ रखता और उसकी मरज़ी के मुताबिक़ चलता है।
- ऐसा मोजिज़ा पहले कभी नहीं हुआ है।

यह सुनकर बुज़ुर्गों ने उसे गालियाँ दीं, "तू जो गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा उस्ताद बनना चाहता है?" यह कहकर उन्होंने उसे जमात में से निकाल दिया।

► **क्या आपने नोट किया कि उन्होंने उसे क्या ठहराया?**

उन्होंने कहा कि तू गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है।

► **लेकिन ईसा मसीह ने उसके बारे में क्या कहा था?**

उसके अंधेपन की वजह गुनाह नहीं है।

► **ईसा मसीह और बुज़ुर्गों में क्या फ़रक़ नज़र आता है?**

बुज़ुर्ग शरीअत को जेल समझते हैं। हर एक को ज़ंजीरों में जकड़कर उसमें डालना है। अपने आपको वह जेल के गार्ड समझते हैं। ईसा मसीह की फ़ितरत

बिलकुल फ़रक़ है। वह हमें जेल की ज़ंजीरों से निकालना चाहता है। वह हमें अपने नूर में लाना चाहता है ताकि हम उसकी इलाही धूप सेंकें। वह नहीं चाहता कि हम ख़ुदा के क़ैदी हों। वह चाहता है कि हम ख़ुदा के आज़ाद फ़रज़ंद हों। यही नूर की बड़ी ख़ुशख़बरी है।

शरीअत और ईसा मसीह में यही बड़ा फ़रक़ है। शरीअत हमें बताती है कि क्या करना है। ज़रूर वह हमें गुनाह के ख़तरों से महफ़ूज़ रखना चाहती है। लेकिन जल्द ही हमें पता चलता है कि हम ख़ुदा के अहकाम पूरे नहीं कर सकते। बार बार हम फ़ेल हो जाते हैं। ईसा मसीह इसी लिए आया ताकि हमारी यह नाक़िस हालत बहाल करे। ताकि हमारे गुनाहों को मिटाकर हमें आज़ाद करे। नूर का छटा असर,

नूर की मनज़िल : परस्तिश

अब देखो यह अज़ीम बात : इस नौजवान ने ईसा मसीह को अब तक नहीं देखा था। तो भी उसने मज़बूती से बुज़ुर्गों की धमकियों का सामना किया। वह अपने यक़ीन पर क़ायम रहा कि मैं ईसा मसीह का शागिर्द हूँ हालाँकि अब तक उसकी दुबारा मुलाक़ात उससे नहीं हुई थी।

ईसा मसीह को पता चला कि उसे निकाल दिया गया है तो वह उसको मिला और पूछा,

> क्या तू इब्ने-आदम पर ईमान रखता है? (यूहन्ना 9:35)

► **इब्ने-आदम से क्या मुराद है?**

दानियाल नबी ने सदियों पहले अल-मसीह के बारे में एक रोया देखी थी। उसमें उसने देखा था कि

> आसमान के बादलों के साथ साथ कोई आ रहा है जो इब्ने-आदम-सा लग रहा है। जब क़दीमुल-ऐयाम के क़रीब पहुँचा तो उसके हुज़ूर लाया गया। उसे सलतनत, इज़्ज़त और बादशाही दी गई, और हर क़ौम, उम्मत और ज़बान के अफ़राद ने उसकी परस्तिश की। उसकी हुकूमत अबदी है और कभी ख़त्म नहीं होगी। उसकी बादशाही कभी तबाह नहीं होगी। (दानियाल 9:13-14)

नौजवान ने कहा, “ख़ुदावंद, वह कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।” नौजवान का ईसा मसीह पर इतना भरोसा था कि उसकी हर फ़रमाइश पूरी करने को तैयार था।

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> तूने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझसे बात कर रहा है। (यूहन्ना 9:37)

► **नौजवान ने क्या जवाब दिया?**

उसने कहा, “ख़ुदावंद, मैं ईमान रखता हूँ” और उसे सिजदा किया।

यों नौजवान पूरे ईमान तक पहुँच गया। पहले वह उसका नाम ही जानता था। फिर उसने इक़रार किया कि यह नबी है। इसके बाद जब बुज़ुर्गों ने उसे धमकी दी तो उसने साफ़ कहा कि मैं उसका शागिर्द हूँ। यों वह क़दम बक़दम ईमान में तरक़्क़ी करता गया। अब जब ईसा मसीह ने फ़रमाया कि मैं ही इब्ने-आदम यानी अल-मसीह हूँ तो वह एक पल भी न झिजका बल्कि सीधा उसे सिजदा किया। पहले उसकी जिस्मानी आँखें रौशन हुईं, लेकिन अब इससे बढ़कर हुआ। अब उसकी रूहानी आँखें खुल गईं और ईसा मसीह के नूर से रौशन हुईं।

नूर या अंधेरा?

तब ईसा मसीह ने कहा,

> मैं अदालत करने के लिए इस दुनिया में आया हूँ, इसलिए कि अंधे देखें और देखनेवाले अंधे हो जाएँ। (यूहन्ना 9:39)

► **वह किस नाते से अदालत करने आया है?**

रात के वक़्त जब लाइट अंधेरे को रौशन करे तो शरीफ़ लोग उसमें चलते हैं। लेकिन चोर और डाकू लाइट से दूर सायों में छिपे रहते हैं। इसी तरह कुछ की आँखें ईसा मसीह के नूर से रौशन हो जाती हैं। ऐसे लोग उसकी सच्चाई पहचानकर उसे ख़ुशी से क़बूल करते हैं। लेकिन अफ़सोस, दूसरे नूर को बरदाश्त नहीं कर सकते। ऐसे लोग नूर से दूर सायों में खिसक जाते हैं। ऐसे लोग रूहानी अंधे रहते हैं।

कितनी अजीब बात! जो पहले अंधा था वह न सिर्फ़ अपनी जिस्मानी आँखों से देखने लगा बल्कि उसकी रूहानी आँखें भी रौशन हुईं। बुज़ुर्गों के साथ इसके उलट हुआ। वह अपनी जिस्मानी आँखों से देख तो सकते थे मगर उनकी रूहानी आँखें अंधी रहीं।

मेरे अज़ीज़, क्या आप चाहते हैं कि आपकी आँखें रौशन हो जाएँ? ईसा मसीह के पास आएँ। वही दुनिया का नूर है। शरीअत और अपने नेक कामों पर फ़ख्र मत करना, अपने आप पर भरोसा मत करना। उसी नूर से मिन्नत करें कि वह आकर आपको रौशन करे।

इंजील, यूहन्ना 9

चलते चलते ईसा ने एक आदमी को देखा जो पैदाइश का अंधा था। उसके शागिर्दों ने उससे पूछा, "उस्ताद, यह आदमी अंधा क्यों पैदा हुआ? क्या इसका कोई गुनाह है या इसके वालिदैन का?"

ईसा ने जवाब दिया, "न इसका कोई गुनाह है और न इसके वालिदैन का। यह इसलिए हुआ कि इसकी ज़िंदगी में अल्लाह का काम ज़ाहिर हो जाए। अभी दिन है। लाज़िम है कि हम जितनी देर तक दिन है उसका काम करते रहें जिसने मुझे भेजा है। क्योंकि रात आनेवाली है, उस वक़्त कोई काम नहीं कर सकेगा। लेकिन जितनी देर तक मैं दुनिया में हूँ उतनी देर तक मैं दुनिया का नूर हूँ।"

यह कहकर उसने ज़मीन पर थूककर मिट्टी सानी और उसकी आँखों पर लगा दी। उसने उससे कहा, "जा, शिलोख़ के हौज़ में नहा ले।" (शिलोख़ का मतलब 'भेजा हुआ' है।) अंधे ने जाकर नहा लिया। जब वापस आया तो वह देख सकता था।

उसके हमसाये और वह जिन्होंने पहले उसे भीख माँगते देखा था पूछने लगे, "क्या यह वही नहीं जो बैठा भीख माँगा करता था?"

बाज़ ने कहा, "हाँ, वही है।"

औरों ने इनकार किया, "नहीं, यह सिर्फ़ उसका हमशक्ल है।"

लेकिन आदमी ने ख़ुद इसरार किया, “मैं वही हूँ।”

उन्होंने उससे सवाल किया, “तेरी आँखें किस तरह बहाल हुईं?”

उसने जवाब दिया, “वह आदमी जो ईसा कहलाता है उसने मिट्टी सानकर मेरी आँखों पर लगा दी। फिर उसने मुझे कहा, ‘शिलोख़ के हौज़ पर जा और नहा ले।’ मैं वहाँ गया और नहाते ही मेरी आँखें बहाल हो गईं।”

उन्होंने पूछा, “वह कहाँ है?”

उसने जवाब दिया, “मुझे नहीं मालूम।”

तब वह शफ़ायाब अंधे को फ़रीसियों के पास ले गए। जिस दिन ईसा ने मिट्टी सानकर उसकी आँखों को बहाल किया था वह सबत का दिन था। इसलिए फ़रीसियों ने भी उससे पूछ-गछ की कि उसे किस तरह बसारत मिल गई। आदमी ने जवाब दिया, “उसने मेरी आँखों पर मिट्टी लगा दी, फिर मैंने नहा लिया और अब देख सकता हूँ।”

फ़रीसियों में से बाज़ ने कहा, “यह शख़्स अल्लाह की तरफ़ से नहीं है, क्योंकि सबत के दिन काम करता है।”

दूसरों ने एतराज़ किया, “गुनाहगार इस क़िस्म के इलाही निशान किस तरह दिखा सकता है?” यों उनमें फूट पड़ गई।

फिर वह दुबारा उस आदमी से मुख़ातिब हुए जो पहले अंधा था, “तू ख़ुद इसके बारे में क्या कहता है? उसने तो तेरी ही आँखों को बहाल किया है।”

उसने जवाब दिया, “वह नबी है।”

यहूदियों को यक़ीन नहीं आ रहा था कि वह वाक़ई अंधा था और फिर बहाल हो गया है। इसलिए उन्होंने उसके वालिदैन को बुलाया। उन्होंने उनसे पूछा, “क्या यह तुम्हारा बेटा है, वही जिसके बारे में तुम कहते हो कि वह अंधा पैदा हुआ था? अब यह किस तरह देख सकता है?”

उसके वालिदैन ने जवाब दिया, “हम जानते हैं कि यह हमारा बेटा है और कि यह पैदा होते वक़्त अंधा था। लेकिन हमें मालूम नहीं कि अब यह किस तरह देख सकता है या कि किसने इसकी आँखों को बहाल किया है। इससे ख़ुद पता करें, यह बालिग़ है। यह ख़ुद अपने बारे में बता सकता है।” उसके वालिदैन ने यह इसलिए कहा कि वह यहूदियों से डरते थे। क्योंकि वह फ़ैसला

कर चुके थे कि जो भी ईसा को मसीह क़रार दे उसे यहूदी जमात से निकाल दिया जाए। यही वजह थी कि उसके वालिदैन ने कहा था, "यह बालिग़ है, इससे ख़ुद पूछ लें।"

एक बार फिर उन्होंने शफ़ायाब अंधे को बुलाया, "अल्लाह को जलाल दे, हम तो जानते हैं कि यह आदमी गुनाहगार है।"

आदमी ने जवाब दिया, "मुझे क्या पता है कि वह गुनाहगार है या नहीं, लेकिन एक बात मैं जानता हूँ, पहले मैं अंधा था, और अब मैं देख सकता हूँ!"

फिर उन्होंने उससे सवाल किया, "उसने तेरे साथ क्या किया? उसने किस तरह तेरी आँखों को बहाल कर दिया?"

उसने जवाब दिया, "मैं पहले भी आपको बता चुका हूँ और आपने सुना नहीं। क्या आप भी उसके शागिर्द बनना चाहते हैं?"

इस पर उन्होंने उसे बुरा-भला कहा, "तू ही उसका शागिर्द है, हम तो मूसा के शागिर्द हैं। हम तो जानते हैं कि अल्लाह ने मूसा से बात की है, लेकिन इसके बारे में हम यह भी नहीं जानते कि वह कहाँ से आया है।"

आदमी ने जवाब दिया, "अजीब बात है, उसने मेरी आँखों को शफ़ा दी है और फिर भी आप नहीं जानते कि वह कहाँ से है। हम जानते हैं कि अल्लाह गुनाहगारों की नहीं सुनता। वह तो उसकी सुनता है जो उसका ख़ौफ़ मानता और उसकी मरज़ी के मुताबिक़ चलता है। इब्तिदा ही से यह बात सुनने में नहीं आई कि किसी ने पैदाइशी अंधे की आँखों को बहाल कर दिया हो। अगर यह आदमी अल्लाह की तरफ़ से न होता तो कुछ न कर सकता।"

जवाब में उन्होंने उसे बताया, "तू जो गुनाहआलूदा हालत में पैदा हुआ है क्या तू हमारा उस्ताद बनना चाहता है?" यह कहकर उन्होंने उसे जमात में से निकाल दिया।

जब ईसा को पता चला कि उसे निकाल दिया गया है तो वह उसको मिला और पूछा, "क्या तू इब्ने-आदम पर ईमान रखता है?"

उसने कहा, "ख़ुदावंद, वह कौन है? मुझे बताएँ ताकि मैं उस पर ईमान लाऊँ।"

ईसा ने जवाब दिया, “तूने उसे देख लिया है बल्कि वह तुझसे बात कर रहा है।”

उसने कहा, “ख़ुदावंद, मैं ईमान रखता हूँ” और उसे सिजदा किया।

ईसा ने कहा, “मैं अदालत करने के लिए इस दुनिया में आया हूँ, इसलिए कि अंधे देखें और देखनेवाले अंधे हो जाएँ।”

कुछ फ़रीसी जो साथ खड़े थे यह कुछ सुनकर पूछने लगे, “अच्छा, हम भी अंधे हैं?”

ईसा ने उनसे कहा, “अगर तुम अंधे होते तो तुम क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब चूँकि तुम दावा करते हो कि हम देख सकते हैं इसलिए तुम्हारा गुनाह क़ायम रहता है।

चरवाहे की आवाज़

एक दिन का ज़िक्र है कि ईसा मसीह ने एक पैदाइशी अंधे की आँखों को बहाल कर दिया। उस वक़्त न सिर्फ़ अंधे की जिस्मानी आँखें खुल गईं। उसकी रूहानी आँखें भी रौशन हुईं। दुनिया के नूर ने उन्हें रौशन कर दिया। लेकिन सबकी आँखें ईसा मसीह के नूर से रौशन नहीं होतीं। मज़हबी बुज़ुर्गों ने यह मोजिज़ा देखा। फिर भी वह रूहानी अंधे रहे।

► **यह किस तरह मुमकिन था?**

उन्होंने अपनी आँखों को इस नूर के लिए बंद कर रखा। यों वह रूहानी अंधे रहे। उनका अंधापन देखकर ईसा मसीह ने सुननेवालों को एक तमसील सुनाई। एक तस्वीर से वह उन्हें सही पटरी पर लाना चाहता था।

► **तस्वीर क्या थी?**

चरवाहे और भेड़ों की तस्वीर। उसने फ़रमाया,

> मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो दरवाज़े से भेड़ों के बाड़े में दाख़िल नहीं होता बल्कि फलाँगकर अंदर घुस आता है वह चोर और डाकू है। लेकिन जो दरवाज़े से दाख़िल होता है वह भेड़ों का चरवाहा है। (यूहन्ना 10:1-2)

► **यह तमसील किसके बारे में है?**

चरवाहे और उसकी भेड़ों के बारे में।

► **ईसा मसीह इससे क्या सिखाना चाहता है?**

पहली बात,

अच्छे चरवाहे की आवाज़ सुनो

► **चरवाहा कौन है?**

अच्छा चरवाहा ईसा मसीह है।

► **भेड़ें कौन हैं?**

भेड़ें हम सब हैं।

► **क्या चरवाहे के अलावा दूसरे भी बाड़े में आते हैं?**

हाँ, चोर और डाकू भी आते हैं।

► **वह किस तरह आते हैं?**

वह दरवाज़े से नहीं आते। वह दीवार को फलाँगकर बाड़े में घुस आते हैं।

► **चोर और डाकू कौन हैं?**

यह वह राहनुमा हैं जो लोगों को ग़लत तालीम देते हैं और उनसे ग़लत फ़ायदा उठाते हैं। उनसे नुक़सान ही नुक़सान पैदा होता है।

► **चरवाहे और इनमें क्या फ़रक़ है?**

अच्छा चरवाहा डाकू नहीं है। वह भेड़ों की बड़ी फ़िकर करता है। वह उनकी सलामती चाहता है।

► **यह फ़िकर कैसे नज़र आती है?**

वह फलाँगकर बाड़े में नहीं आता। वह दरवाज़े से दाख़िल होता है। लेकिन यह फ़िकर और बातों से भी नज़र आती है। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> चौकीदार उसके लिए दरवाज़ा खोल देता है और भेड़ें उसकी आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम लेकर उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है। (यूहन्ना 10:3)

► **यहाँ यह फ़िकर कैसे नज़र आती है?**

अच्छा चरवाहा अपनी हर भेड़ को जानता है। वह हर एक का नाम लेकर उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है।

► **तब चरवाहा क्या करता है?**

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने के बाद वह उनके आगे आगे चलने लगता है और भेड़ें उसके पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्योंकि वह उसकी आवाज़ पहचानती हैं। (यूहन्ना 10:4)

► **चरवाहा क्या करता है?**

वह पूरे गल्ले को बाहर निकालकर उनके आगे आगे चलने लगता है।

► **तब भेड़ें क्या करती हैं?**

वह उसके पीछे पीछे पड़ती हैं।

► **वह क्यों उसके पीछे पड़ती हैं?**

वह उसकी आवाज़ पहचानती हैं।

► **क्या चरवाहा उनके पीछे चलकर उन्हें हाँकता है?**

नहीं। वह उनके आगे आगे चलता है। फ़लस्तीन में चरवाहा हमेशा भेड़ों के आगे आगे चलता है।

काफ़ी साल पहले का ज़िक्र है कि कुछ लोग सफ़र करके फ़लस्तीन पहुँचे। वहाँ किसी गाइड ने उन्हें यह बात बताई कि चरवाहा आगे आगे चलता है। कुछ दिनों बाद उनकी मुलाक़ात एक आदमी से हुआ जो भेड़ों के पीछे चलकर उन्हें हाँक रहा था। मुसाफ़िर दंग रह गए। उन्होंने आदमी से पूछा कि क्या फ़लस्तीन में चरवाहा भेड़ों के आगे आगे नहीं चलता?

उसने जवाब दिया, "जी हाँ, हमारे हाँ ऐसा ही होता है। लेकिन बात यह है, मैं चरवाहा नहीं हूँ। मैं तो क़साई हूँ।"

► **आगे चलने में क्या रूहानी सबक़ है?**

- भेड़ों का चरवाहे पर इतना ठोस भरोसा है कि उन्हें हाँकने की ज़रूरत नहीं होती। वह ख़ुद बख़ुद उसके पीछे चलती हैं।
- जहाँ भी हम चलते हैं वहाँ हमारा चरवाहा पहले से क़दम रख चुका है। रास्ते में चाहे दुख हो या सुख वह पहले से वहाँ क़दम रख चुका है। क्योंकि वह हमारे आगे आगे चलता है।

► **उसने हमारे आगे चलकर क्या दुख सहा है?**

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। (यूहन्ना 10:11)

उसने हमारी ख़ातिर अपनी जान दी। उसने वह सज़ा उठाई जो हमें भुगतनी थी। गुनाह हमें ख़ुदा से जुदा कर देता है। हममें से कोई भी जन्नत में दाख़िल होने के लायक़ नहीं है क्योंकि हम सब गुनाहगार हैं। हमारे गुनाहों को मिटाने के लिए ईसा मसीह ने सलीब पर हमारी जगह सज़ा बरदाश्त की। अब से जो

भेड़ उसके पीछे चलती है उसे यह सज़ा सहनी नहीं पड़ती। सलीब पर चरवाहे की मौत उसकी भेड़ों के लिए ज़िंदगी का बाइस बन गई।

जब हम मुसीबत की वादी में से गुज़रते हैं तो यह बात हमारे लिए तसल्ली का बाइस है कि उसने हमारे वास्ते दुख सहा है। वह हमारा दुख समझता है। हर जगह जहाँ हम चल रहे हैं वहाँ वह पहले ही क़दम रख चुका है।

► **हमारे आगे चलकर उसे क्या सुख हासिल हुआ है?**

वह जी उठा और आसमान पर उठा लिया गया। इस वजह से हमारा मुस्तक़बिल ठोस और पुरउम्मीद है। क्योंकि जहाँ वह है वहाँ हम भी आख़िर में पहुँचकर सुख की साँस लेंगे।

► **जो भेड़ें चरवाहे की नहीं हैं क्या वह चरवाहे की सुनती हैं?**

नहीं।

► **क्यों नहीं?**

उनका और मालिक है। पैदाइशी अंधे की मिसाल लें। ईसा मसीह ने उसे बुलाकर बहाल किया। तब वह सीधा उसके पीछे चलने लगा हालाँकि वह शुरू में उसके बारे में कुछ नहीं जानता था। यह एक राज़ है कि अच्छा चरवाहा तमाम भेड़ों को बुलाता है लेकिन सब उसके पीछे चलने नहीं लगतीं। सिर्फ़ वह जो उसकी आवाज़ सुनती हैं उसके पीछे हो लेती हैं। ईसा मसीह के दुश्मन उसकी भेड़ें नहीं थे। न वह उसके नूर में चलते थे न उसकी आवाज़ सुनते थे।

► **क्या आप उसकी आवाज़ सुनते हैं?**

एक और बात : चरवाहे की भेड़ें हर किसी के पीछे नहीं चलतीं। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> लेकिन वह किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी बल्कि उससे भाग जाएँगी, क्योंकि वह उसकी आवाज़ नहीं पहचानतीं।
> (यूहन्ना 10:5)

► **वह अजनबी के पीछे क्यों नहीं चलतीं?**

वह उसकी आवाज़ नहीं पहचानतीं।

किसी ने फ़लस्तीन की एक नदी पर तीन चरवाहे देखे जो अपने जानवरों को पानी पिला रहे थे। कुछ देर बाद एक उठा और अपनी भेड़ों को आवाज़ देकर चल पड़ा।

उसकी अपनी भेड़ें एकदम उसके पीछे हो लीं। इसके बाद दूसरा चरवाहा अपनी भेड़ों को पुकारकर चला गया। उसने उन्हें गिनने की तकलीफ़ भी न उठाई। फिर भी पूरा गल्ला उसके पीछे हो लिया। तब मुसाफ़िर ने तीसरे चरवाहे से कहा,“मुझे अपनी पगड़ी और लाठी दे दो तो मैं ही उन्हें बुलाऊँगा।” चरवाहे ने उसे यह चीज़ें दीं और मुसाफ़िर ने भेड़ों को आवाज़ दी।

► **क्या वह उसके पीछे हो लीं?**

बिलकुल नहीं। एक भी जानवर अपनी जगह से न हिला।

मुसाफ़िर ने पूछा, “क्या आपकी भेड़ें कभी किसी अजनबी के पीछे हो लेती हैं?” चरवाहा बोला, “बेशक। जब कभी कोई भेड़ बीमार पड़ जाए तो हो सकता है वह किसी अजनबी के पीछे हो ले।” दूसरी बात,

सही दरवाज़े से अंदर आओ

ईसा मसीह न सिर्फ़ अच्छा चरवाहा है। वह नजात का दरवाज़ा भी है। उसने फ़रमाया,

> मैं ही दरवाज़ा हूँ। जो भी मेरे ज़रीए अंदर आए उसे नजात मिलेगी। वह आता-जाता और हरी चरागाहें पाता रहेगा। (यूहन्ना 10:9)

► **जो इस दरवाज़े में जाए उसे क्या मिलेगा?**

उसे नजात मिलेगी।

► **यहाँ नजात का असर बयान किया गया है। वह क्या है?**

जिसे नजात मिली है वह आता-जाता और हरी चरागाहें पाता रहेगा।

► **इसका क्या मतलब है?**

उसे अबदी ज़िंदगी मिलेगी। इसका मतलब न सिर्फ़ यह है कि वह जन्नत में दाख़िल होगा। वह इस दुनिया में भी भरपूर ज़िंदगी पाएगा।

► **भरपूर ज़िंदगी का क्या मतलब है?**

चरवाहा अपनी भेड़ों को रात के वक़्त बाड़े में महफ़ूज़ करके उनकी निगहबानी करता है। सुबह को वह उन्हें बाड़े से निकालकर चरागाहों में ले जाता है। उसे मालूम है कि कहाँ कहाँ अच्छी घास मिलती है, कि ज़मीन में से चश्मे कहाँ कहाँ उबलते हैं। वह उन्हें ज़हरीले पौधों और जंगली जानवरों से महफ़ूज़ रखता

है। वही जानता है कि भेड़ के लिए क्या क्या अच्छा होता है। यही बातें हम पर भी सादिक़ आती हैं। जब अच्छा चरवाहा हमारे आगे चलता है तो हम उसी के हाथ में हैं। वही हमारा मुहाफ़िज़ है। वही वक़्त पर हर ज़रूरत मुहैया करता है।

लेकिन नजात का एक ही दरवाज़ा है—ईसा मसीह जो हमारा अच्छा चरवाहा है। हमें सिर्फ़ उसी दरवाज़े से दाख़िल होकर नजात मिलती है। तीसरी बात,

ख़ानदानी रिश्ता पाओ

अच्छा चरवाहा कहाँ तक अपनी भेड़ों की फ़िकर करता है? ईसा मसीह ने इसका साफ़ जवाब दिया,

> अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। (यूहन्ना 10:11)

अगर जंगली जानवर आए तो अच्छा चरवाहा अपनी जान देने को तैयार है। मज़दूर ऐसा नहीं होता। भेड़िया आया तो मज़दूर ओझल हो गया। ईसा मसीह ऐसा नहीं है। वह न सिर्फ़ अपनी जान देने को तैयार था बल्कि उसने सचमुच अपनी जान दी।

► **उसने क्यों अपनी जान दी?**

इसलिए कि उसका अपनी भेड़ों से ख़ानदान का गहरा रिश्ता है। वह फ़रमाता है,

> मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ और वह मुझे जानती हैं, बिलकुल उसी तरह जिस तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। (यूहन्ना 10:14-15)

► **ईसा मसीह अपनी भेड़ों को किस तरह जानता है?**

उस तरह जिस तरह वह ख़ुदा बाप को जानता है। जिस तरह बाप का ईसा मसीह से गहरा रिश्ता है उसी तरह ईसा मसीह का अपनी भेड़ों से रिश्ता है। इसी रिश्ते की वजह से उसने अपनी जान दी।

► **यह किस तरह का रिश्ता है?**

यह ख़ानदान का रिश्ता है। सब भेड़ों का एक ही बाप है—ख़ुदा बाप। सब भेड़ों का एक ही चरवाहा है—ईसा मसीह जो ख़ुदा बाप का फ़रज़ंद है। इसलिए सब भेड़ें भाई-बहन हैं। चौथी बात,

सबको दावत है

ईसा मसीह न सिर्फ़ यहूदियों का चरवाहा है। उसने फ़रमाया,

> मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। लाज़िम है कि उन्हें भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर एक ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा। (यूहन्ना 10:16)

► **दूसरी भेड़ें कौन हैं?**

दूसरी भेड़ें पूरी दुनिया की क़ौमें हैं। ईसा मसीह सबको बुला रहा है कि आओ और मेरे पीछे हो लो। मेरी भेड़ें बनो। इनमें मैं और आप भी शामिल हैं।

► **क्या आप उसकी भेड़ हैं?**

ईसा मसीह पूरे ज़ोर से हमको बुला रहा है। यह उसकी अपनी ही मरज़ी है। वह पक्के इरादे से इस दुनिया में नाज़िल हुआ ताकि हमें नजात दे। उसे शुरू ही से पता था कि वह अपनी जान देगा। उसे यह भी पता था कि वह दुबारा जी उठेगा और आसमान पर उठा लिया जाएगा। उसने अपनी ही मरज़ी से यह रास्ता अपनाया। इसलिए उसने फ़रमाया,

> कोई मेरी जान मुझसे छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी मरज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इख़्तियार है और उसे वापस लेने का भी। (यूहन्ना 10:18)

► **उसने यह रास्ता क्यों इख़्तियार किया?**

एक ही वजह है : वह अच्छा चरवाहा है। वह हमें प्यार करता है। उसे हमारी फ़िकर है। वह ख़ूब जानता है कि हम सब गुनाहगार हैं। वह नहीं कहता कि तू नालायक़ है, दफ़ा हो जा। नहीं, वह हर एक को प्यार से बुलाकर फ़रमाता है कि क्या तू मेरी भेड़ नहीं होना चाहता? मेरे पीछे हो ले तो तुझे हरी हरी चरागाहें मिलेंगी। जन्नत की चरागाहें। अबदी ज़िंदगी के सरचश्मे। वहाँ तू गुनाह, मुसीबत और मौत से आज़ाद होकर सुख की साँस लेगा। आओ मेरे पीछे।

ईसा मसीह की यह बातें सुनकर बहुतों ने कहा कि यह बदरूह के क़ब्ज़े में है। यह दीवाना है। लेकिन कुछ ने कहा कि बदरूह के क़ब्ज़े में आदमी ऐसी बातें और काम किस तरह कर सकता है? उसने तो अंधे की आँखें बहाल कीं।

दो मुमकिन रास्ते हैं। आप उसे क़बूल करके उसकी भेड़ बन सकते हैं या आप उसे रद करके उसकी नजात से महरूम रह सकते हैं। आप कौन-सा रास्ता चुनेंगे?

इंजील, यूहन्ना 10:1-21

मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो दरवाज़े से भेड़ों के बाड़े में दाख़िल नहीं होता बल्कि फलाँगकर अंदर घुस आता है वह चोर और डाकू है। लेकिन जो दरवाज़े से दाख़िल होता है वह भेड़ों का चरवाहा है। चौकीदार उसके लिए दरवाज़ा खोल देता है और भेड़ें उसकी आवाज़ सुनती हैं। वह अपनी हर एक भेड़ का नाम लेकर उन्हें बुलाता और बाहर ले जाता है। अपने पूरे गल्ले को बाहर निकालने के बाद वह उनके आगे आगे चलने लगता है और भेड़ें उसके पीछे पीछे चल पड़ती हैं, क्योंकि वह उसकी आवाज़ पहचानती हैं। लेकिन वह किसी अजनबी के पीछे नहीं चलेंगी बल्कि उससे भाग जाएँगी, क्योंकि वह उसकी आवाज़ नहीं पहचानतीं।”

ईसा ने उन्हें यह तमसील पेश की, लेकिन वह न समझे कि वह उन्हें क्या बताना चाहता है।

इसलिए ईसा दुबारा इस पर बात करने लगा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि भेड़ों के लिए दरवाज़ा मैं हूँ। जितने भी मुझसे पहले आए वह चोर और डाकू हैं। लेकिन भेड़ों ने उनकी न सुनी। मैं ही दरवाज़ा हूँ। जो भी मेरे ज़रीए अंदर आए उसे नजात मिलेगी। वह आता-जाता और हरी चरागाहें पाता रहेगा। चोर तो सिर्फ़ चोरी करने, ज़बह करने और तबाह करने आता है। लेकिन मैं इसलिए आया हूँ कि वह ज़िंदगी पाएँ, बल्कि कसरत की ज़िंदगी पाएँ।

अच्छा चरवाहा मैं हूँ। अच्छा चरवाहा अपनी भेड़ों के लिए अपनी जान देता है। मज़दूर चरवाहे का किरदार अदा नहीं करता, क्योंकि भेड़ें उसकी अपनी नहीं होतीं। इसलिए ज्योंही कोई भेड़िया आता है तो मज़दूर उसे देखते ही भेड़ों को छोड़कर भाग जाता है। नतीजे में भेड़िया कुछ भेड़ें पकड़ लेता और बाक़ियों को मुंतशिर कर देता है। वजह यह है कि वह मज़दूर ही है और भेड़ों की फ़िकर नहीं करता। अच्छा चरवाहा मैं हूँ। मैं अपनी भेड़ों को जानता हूँ

और वह मुझे जानती हैं, बिलकुल उसी तरह जिस तरह बाप मुझे जानता है और मैं बाप को जानता हूँ। और मैं भेड़ों के लिए अपनी जान देता हूँ। मेरी और भी भेड़ें हैं जो इस बाड़े में नहीं हैं। लाज़िम है कि उन्हें भी ले आऊँ। वह भी मेरी आवाज़ सुनेंगी। फिर एक ही गल्ला और एक ही गल्लाबान होगा। मेरा बाप मुझे इसलिए प्यार करता है कि मैं अपनी जान देता हूँ ताकि उसे फिर ले लूँ। कोई मेरी जान मुझसे छीन नहीं सकता बल्कि मैं उसे अपनी मरज़ी से दे देता हूँ। मुझे उसे देने का इख़्तियार है और उसे वापस लेने का भी। यह हुक्म मुझे अपने बाप की तरफ़ से मिला है।”

इन बातों पर यहूदियों में दुबारा फूट पड़ गई। बहुतों ने कहा, “यह बदरूह की गिरिफ़्त में है, यह दीवाना है। इसकी क्यों सुनें!”

लेकिन औरों ने कहा, “यह ऐसी बातें नहीं हैं जो बदरूह-गिरिफ़्ता शख़्स कर सके। क्या बदरूहें अंधों की आँखें बहाल कर सकती हैं?”

सच्ची क़ुरबानगाह

सर्दियों का मौसम था। मख़सूसियत की ईद के बाइस बैतुल-मुक़द्दस और लोगों के घर बेशुमार चराग़ों से चमक-दमक रहे थे।

► **यह किस क़िस्म की ईद थी?**

तक़रीबन दो सौ साल पहले एक परदेसी बादशाह ने बैतुल-मुक़द्दस की क़ुरबानगाह पर बुत लगाकर उसकी बेहुरमती की थी। यह देखकर यहूदियों ने उस पर फ़तह पाकर क़ुरबानगाह को नए सिरे से मख़सूस किया था। यह ईद इसी मख़सूसियत की ख़ुशी में मनाई जाती थी। हम देखेंगे कि इस ईद का ईसा मसीह से गहरा ताल्लुक़ है।

ईद के दौरान ईसा मसीह बैतुल-मुक़द्दस में आया। जब वह वहाँ के एक बरामदे में टहल रहा था तो लोग उसे घेरकर कहने लगे, "आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।" ईसा मसीह ने जवाब में क्या कहा? पहली बात,

मेरी नजात क़बूल करो

► **क्या ईसा मसीह ने अपने काम और कलाम से साबित नहीं किया था कि वह अल-मसीह है?**

ज़रूर।

► **तो यह लोग क्यों चाहते थे कि वह साफ़ साफ़ बता दे कि मैं मसीह हूँ?**

जो कुछ ईसा मसीह ने किया था वह उनके नज़दीक नाकाफ़ी था। उनके ख़याल में अल-मसीह रोमी दुश्मन का जुआ तोड़कर यहूदी क़ौम को आज़ाद करेगा। वह एक दुनियावी हाकिम चाहते थे, इसलिए उनकी आँखें ईसा मसीह के असली किरदार के लिए बंद रहीं। वह मानते तो थे कि आनेवाला मसीह शफ़ा देगा और दूसरे मोजिज़े करेगा। लेकिन वह इस बात के लिए अंधे थे कि ईसा मसीह के आने का अव्वल मक़सद क्या था।

► **अव्वल मक़सद क्या था?**

अव्वल मक़सद यह था कि इनसान को नजात दे—गुनाहों से नजात।

► **यह क्यों उसके आने का अव्वल मक़सद था?**

अपने गुनाहों की वजह से हम पाक ख़ुदा के हुज़ूर मंज़ूर नहीं हो सकते। इसलिए ज़रूरी है कि हम गुनाहों से आज़ाद हो जाएँ। आज भी अकसर लोग ईसा मसीह के मोजिज़े पसंद करते हैं। लेकिन कम ही उसका अव्वल मक़सद क़बूल करते हैं। कम ही अपने गुनाहों से आज़ाद होकर ख़ुदा के हुज़ूर मंज़ूर हो जाते हैं। इसी लिए ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> मैं तुमको बता चुका हूँ, लेकिन तुमको यक़ीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं। लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो।
> (यूहन्ना 10:25-27)

► **जो ईमान न लाए क्या वह ईसा मसीह की भेड़ें थे?**

नहीं।

► **इससे हम ईमान के बारे में क्या सीखते हैं?**

ईमान अच्छे चरवाहे के साथ रिश्ता है—भेड़ का रिश्ता जिसकी आँखें हमेशा अपने आक़ा की तरफ़ लगी हुई हैं। शागिर्द वह है जो उसकी आवाज़ सुनकर उसके पीछे चलता है। सबने उसका कलाम और उसके काम देख लिया था। लेकिन सब ईमान न लाए। जो ईमान न लाए उनका अच्छे चरवाहे से रिश्ता पैदा न हुआ। उन्हीं को ईसा मसीह ने कहा कि मेरी नजात क़बूल करो। लेकिन उन्होंने इनकार किया। दूसरी बात,

मेरी हिफ़ाज़त क़बूल करो

उसने फ़रमाया,

> मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं। मैं उन्हें अबदी ज़िंदगी देता हूँ, इसलिए वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा।
> (यूहन्ना 10:27-28)

► **यहाँ ईसा मसीह कौन-सी तस्वीर इस्तेमाल करता है?**

चरवाहे और भेड़ों की तस्वीर। वह अच्छा चरवाहा है।

► **उसकी भेड़ें कौन हैं?**

उस पर ईमान लानेवाले।

► **यह भेड़ें क्या करती हैं?**

- वह उसकी आवाज़ सुनती हैं।
- वह उसके पीछे चलती हैं।

► **चरवाहा क्या करता है?**

- वह उन्हें जानता है।
- वह उन्हें अबदी ज़िंदगी देता है।

► **अबदी ज़िंदगी का क्या नतीजा निकलता है?**

- उसकी भेड़ें कभी हलाक नहीं होंगी।
- कोई उन्हें उसके हाथ से छीन न लेगा। उसकी भेड़ें उसके हाथ में हैं। इसलिए वह महफ़ूज़ हैं।

ईसा मसीह की नजात पाने से हमें अबदी हिफ़ाज़त मिलती है। तीसरी बात,

ख़ुदा बाप की गारंटी क़बूल करो

जब ईसा मसीह हमारा चरवाहा है तो हमें नजात और हिफ़ाज़त मिलती है। लेकिन हम किस तरह यक़ीन रख सकते हैं कि यह हिफ़ाज़त पक्की है? अब ईसा मसीह इस सवाल का जवाब देता है,

> क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सुपुर्द किया है और वही सबसे बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता। मैं और बाप एक हैं। (यूहन्ना 10:29-30)

► **कौन हमारी हिफ़ाज़त की गारंटी देता है?**

ख़ुदा बाप। उसी ने भेड़ें अपने फ़रज़ंद के सुपुर्द की हैं।

► **उसकी गारंटी क्यों ठोस है?**

इसलिए कि वह सबसे बड़ा है।

► **लेकिन ख़ुदा बाप क्यों भेड़ों की गारंटी देता है?**

इसलिए कि ईसा मसीह और बाप एक हैं। यों उनका एक ही इरादा और एक ही काम है। यह सुनकर लोग पत्थर उठाने लगे ताकि उसे संगसार करें।

► **वह ईसा मसीह को क्यों क़त्ल करना चाहते थे?**

ईसा मसीह ने भी यही सवाल पूछा,

> मैंने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई इलाही निशान दिखाए हैं। तुम मुझे इनमें से किस निशान की वजह से संगसार कर रहे हो? (यूहन्ना 10:30)

► **इलाही निशान से क्या मुराद है?**

ईसा मसीह के मोजिज़े इलाही निशान थे, क्योंकि यह ज़ाहिर करते थे कि ईसा मसीह को ख़ुदा बाप से भेजा गया है। अनगिनत मोजिज़े हुए थे जो सिर्फ़ ख़ुदा की तरफ़ से हो सकते थे। यही ज़ाहिर करते थे कि वह और बाप एक हैं। कि जो भी वह कर रहा है वह ख़ुदा बाप की तरफ़ से है।

► **उसके मुख़ालिफ़ों ने क्या जवाब दिया?**

उन्होंने जवाब दिया कि तुमने कुफ़्र बका है। तुम जो सिर्फ़ इनसान हो अल्लाह होने का दावा करते हो। यह एक संजीदा इलज़ाम था इसलिए लाज़िम है कि हम उस पर ग़ौर करें जो ईसा मसीह कहना चाहता था।

► **ख़ुदा बाप और ईसा मसीह किस तरह एक हैं?**

- ईसा मसीह कहना चाहता है कि इरादे और काम में हम एक हैं। मैं ख़ुदा बाप की मरज़ी के अलावा और कुछ नहीं करता। इसका मतलब यह नहीं है कि मैं ख़ुदा बाप हूँ। हम फ़रक़ हैं और एक भी हैं। वह ख़ुदा बाप है और मैं फ़रज़ंद हूँ। उसी ने मुझे दुनिया में भेजा ताकि इनसान को नजात दूँ।
- ईसा मसीह न सिर्फ़ इनसान है। वह ख़ुदा का फ़रज़ंद है जिसने इनसान बनने का रास्ता इख़्तियार किया ताकि हमें नजात दे। यों वह ख़ुदा का फ़रज़ंद भी है और इनसान भी। इनसान की हैसियत से उसने हमारी सज़ा बरदाश्त की ताकि हमारे गुनाह मिट जाएँ। फ़रज़ंद की हैसियत से वह जी उठा और आसमान पर उठा लिया गया। यों जो भी उसकी आवाज़ सुने वह उसके पीछे चलकर एक दिन जी उठेगा।

यही बात हमें नजात की तसल्ली देती है। हमारे नेक काम हमें यह तसल्ली नहीं दिला सकते कि हम जन्नत में दाख़िल हो जाएँगे। ख़ुदा बाप ही इसकी गारंटी है।

वह फ़रमाता है कि नजात का जो काम मैंने अपने फ़रज़ंद के वसीले से किया वह पक्का है। मैं ही उसकी गारंटी देता हूँ।

ईसा मसीह के मुख़ालिफ़ उसके मोजिज़े क़बूल कर सकते थे। लेकिन वह यह क़बूल नहीं कर सकते थे कि ऐसे मोजिज़े सिर्फ़ ख़ुदा का फ़रज़ंद कर सकता है। आज तक बहुत-से लोग यह बात क़बूल नहीं कर सकते।

► **क्या आप यह क़बूल कर सकते हैं?**

उसकी आवाज़ सुनो। ख़ुदा बाप की गारंटी क़बूल करो। चौथी बात,

अल्लाह के फ़रज़ंद को क़बूल करो

फिर भी ईसा मसीह ने मुख़ालिफ़ों के ज़हनों को खोलने की कोशिश की। उसने फ़रमाया,

> क्या यह तुम्हारी शरीअत में नहीं लिखा है कि अल्लाह ने फ़रमाया, 'तुम ख़ुदा हो'? उन्हें 'ख़ुदा' कहा गया जिन तक अल्लाह का यह पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलामे-मुक़द्दस को मनसूख़ नहीं किया जा सकता। तो फिर तुम कुफ़र बकने की बात क्यों करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं अल्लाह का फ़रज़ंद हूँ? (यूहन्ना 10:34-36)

► **यह कौन-सा हवाला है जिसका ज़िक्र ईसा मसीह ने किया?**

यहाँ उसने एक ज़बूर का ज़िक्र किया। वहाँ लिखा है,

> बेशक मैंने कहा, "तुम ख़ुदा हो, सब अल्लाह तआला के फ़रज़ंद हो। लेकिन तुम फ़ानी इनसान की तरह मर जाओगे, तुम दीगर हुक्मरानों की तरह गिर जाओगे।" (ज़बूर 82:6)

► **इस ज़बूर का क्या मतलब है?**

शरीअत के यहूदी उस्ताद मुत्तफ़िक़ थे कि ख़ुदा ने यह बात इसराईली जमात से फ़रमाई थी।

► **इसराईलियों को किस तरह कहा जा सकता था कि तुम अल्लाह के फ़रज़ंद हो?**

उन पर शरीअत नाज़िल हुई थी इसी लिए वह ख़ुदा जैसे यानी उसके फ़रज़ंद थे। शरीअत ने उन्हें यह रोब और वक़ार दिला दिया था। लेकिन अपनी ना-फ़रमानी की वजह से यहूदी यह रोब और वक़ार खो बैठे थे। इसलिए ज़बूर कहता है कि तुम फ़ानी इनसान की तरह मर जाओगे।

► **ईसा मसीह यहाँ क्या कहना चाहता है?**

जब शरीअत नाज़िल हुई तो तुम्हें इतना रोब मिला कि अल्लाह तआला के फ़रज़ंद कहा गया। लेकिन तुम इस लायक़ न रहे। इसी लिए मैं दुनिया में आया। ज़रूरी था कि ख़ुदा का फ़रज़ंद नाज़िल हो जाए ताकि तुम अच्छे चरवाहे की भेड़ें बन जाओ। लाज़िम था कि ख़ुदा का फ़रज़ंद नाज़िल हो जाए ताकि तुम ख़ुदा के ख़ानदान में शामिल हो जाओ। पाँचवीं बात,

सच्ची क़ुरबानगाह क़बूल करो

ईसा मसीह की बातें हमेशा बड़ी गहराइयों में ले जाती हैं। अब उसने फ़रमाया,

> आख़िर बाप ने ख़ुद मुझे मख़सूस करके दुनिया में भेजा है। (यूहन्ना 10:36)

► **इसके पीछे क्या ख़याल है?**

मख़सूसियत की ईद थी। उस पर यह याद किया जाता था कि बेहुरमती के बाद क़ुरबानगाह को नए सिरे से मख़सूस किया गया था। अब ईसा मसीह ने फ़रमाया कि मुझे ही मख़सूस किया गया है। जिस क़ुरबानगाह की मख़सूसियत तुम मना रहे हो वह अब बेमानी है।

► **क्यों?**

क़ुरबानगाह वह इंतज़ाम था जिससे इनसान का ख़ुदा से मेल-मिलाप हो जाता था। उसी पर लोग अपनी क़ुरबानियाँ पेश करते थे ताकि अल्लाह तआला उनके गुनाह माफ़ करे। लेकिन बैतुल-मुक़द्दस की क़ुरबानगाह हक़ीक़त का बस साया था। साया असल काम नहीं कर सकता। वह सिर्फ़ असल की तरफ़ इशारा करता है। किसी आदमी का साया उस आदमी का काम नहीं कर सकता। साये को देखकर शायद ही हम आदमी की शक्ल का अंदाज़ा लगा सकें। न यह साया साँस ले सकता है न हाथ-पाँव हिला सकता है। अब ईसा मसीह में साये

का असल आ गया था। वह सच्ची क़ुरबानगाह है। उसे मख़सूस करके दुनिया में भेज दिया गया था ताकि उसकी क़ुरबानी ख़ुदा से हक़ीक़ी मेल-मिलाप पैदा करे।

► **क्या लोग यह सुनकर ख़ुश हुए?**

नहीं। यह सुनकर उन्होंने उसे पकड़ने की कोशिश की। लेकिन वह उनके हाथ से निकल गया। एक आख़िरी बात,

क्या आपको यह नजात मिली है?

यरूशलम में रहना मुश्किल हो गया था इसलिए ईसा मसीह अपने शागिर्दों के साथ दरियाए-यरदन के पार उस जगह चला गया जहाँ यहया नबी शुरू में बपतिस्मा दिया करता था। वहाँ बहुत-से लोग उस पर ईमान लाए।

► **लोग क्यों उस पर ईमान लाए?**

उन्होंने कहा,

> यहया ने कभी कोई इलाही निशान न दिखाया, लेकिन जो कुछ उसने इसके बारे में बयान किया, वह बिलकुल सही निकला। (यूहन्ना 10:41)

यह लोग पहले अल्लाह के पैग़ंबर यहया पर ईमान लाए थे, और अब उन्होंने देखा कि हर एक बात जो यहया ने ईसा मसीह के बारे में फ़रमाई थी सही निकली है।

► **इनमें और ईसा मसीह के मुख़ालिफ़ों में क्या फ़रक़ था?**

काफ़ी देर से यह लोग पहचान चुके थे कि अल्लाह, यहया नबी के वसीले से बात कर रहा है। अब उन्होंने यही बात ईसा मसीह में पाई। उन्होंने उसकी नजात और हिफ़ाज़त क़बूल की। वह जानते थे कि यह नजात पक्की है क्योंकि ख़ुदा बाप इसकी गारंटी देता है।

दूसरों ने ईसा मसीह की नजात क़बूल न की। वह उसकी आवाज़ नहीं सुन सकते थे, और उसकी भेड़ें न बने। न सिर्फ़ यह बल्कि वह उसके सख़्त मुख़ालिफ़ बन गए।

अब सवाल यह है : क्या आपने नजात पाई है? क्या आप अच्छे चरवाहे के पीछे चलकर अपने आपको महफ़ूज़ समझते हैं? क्या आपको पूरा यक़ीन है कि ख़ुदा

बाप इस नजात की गारंटी देता है? क्या आपने उसके फ़रज़ंद की क़ुरबानी क़बूल की है?

इंजील, यूहन्ना 10:22-42

सर्दियों का मौसम था और ईसा बैतुल-मुक़द्दस की मख़सूसियत की ईद बनाम हनूका के दौरान यरूशलम में था। वह बैतुल-मुक़द्दस के उस बरामदे में फिर रहा था जिसका नाम सुलेमान का बरामदा था। यहूदी उसे घेरकर कहने लगे, "आप हमें कब तक उलझन में रखेंगे? अगर आप मसीह हैं तो हमें साफ़ साफ़ बता दें।"

ईसा ने जवाब दिया, "मैं तुमको बता चुका हूँ, लेकिन तुमको यक़ीन नहीं आया। जो काम मैं अपने बाप के नाम से करता हूँ वह मेरे गवाह हैं। लेकिन तुम ईमान नहीं रखते क्योंकि तुम मेरी भेड़ें नहीं हो। मेरी भेड़ें मेरी आवाज़ सुनती हैं। मैं उन्हें जानता हूँ और वह मेरे पीछे चलती हैं। मैं उन्हें अबदी ज़िंदगी देता हूँ, इसलिए वह कभी हलाक नहीं होंगी। कोई उन्हें मेरे हाथ से छीन न लेगा, क्योंकि मेरे बाप ने उन्हें मेरे सुपुर्द किया है और वही सबसे बड़ा है। कोई उन्हें बाप के हाथ से छीन नहीं सकता। मैं और बाप एक हैं।"

यह सुनकर यहूदी दुबारा पत्थर उठाने लगे ताकि ईसा को संगसार करें। उसने उनसे कहा, "मैंने तुम्हें बाप की तरफ़ से कई इलाही निशान दिखाए हैं। तुम मुझे इनमें से किस निशान की वजह से संगसार कर रहे हो?"

यहूदियों ने जवाब दिया, "हम तुमको किसी अच्छे काम की वजह से संगसार नहीं कर रहे बल्कि कुफ़र बकने की वजह से। तुम जो सिर्फ़ इनसान हो अल्लाह होने का दावा करते हो।"

ईसा ने कहा, "क्या यह तुम्हारी शरीअत में नहीं लिखा है कि अल्लाह ने फ़रमाया, 'तुम ख़ुदा हो'? उन्हें 'ख़ुदा' कहा गया जिन तक अल्लाह का यह पैग़ाम पहुँचाया गया। और हम जानते हैं कि कलामे-मुक़द्दस को मनसूख़ नहीं किया जा सकता। तो फिर तुम कुफ़र बकने की बात क्यों करते हो जब मैं कहता हूँ कि मैं अल्लाह का फ़रज़ंद हूँ? आख़िर बाप ने ख़ुद मुझे मख़सूस

करके दुनिया में भेजा है। अगर मैं अपने बाप के काम न करूँ तो मेरी बात न मानो। लेकिन अगर उसके काम करूँ तो बेशक मेरी बात न मानो, लेकिन कम-अज़-कम उन कामों की गवाही तो मानो। फिर तुम जान लोगे और समझ जाओगे कि बाप मुझमें है और मैं बाप में हूँ।”

एक बार फिर उन्होंने उसे गिरिफ़्तार करने की कोशिश की, लेकिन वह उनके हाथ से निकल गया।

फिर ईसा दुबारा दरियाए-यरदन के पार उस जगह चला गया जहाँ यहया शुरू में बपतिस्मा दिया करता था। वहाँ वह कुछ देर ठहरा। बहुत-से लोग उसके पास आते रहे। उन्होंने कहा, “यहया ने कभी कोई इलाही निशान न दिखाया, लेकिन जो कुछ उसने इसके बारे में बयान किया, वह बिलकुल सही निकला।” और वहाँ बहुत-से लोग ईसा पर ईमान लाए।

अबदी जिंदगी कैसे पाऊँ

- **क्या आपने कभी सोचा कि मौत के बाद क्या होगा? क्या मैं अल्लाह तआला को मंज़ूर हूँगा? क्या मैं जन्नत में दाख़िल होने लायक़ हूँगा?**

  इंजीले-शरीफ़ में हमें इसका साफ़ जवाब मिलता है कि हम किस तरह अबदी ज़िंदगी पा सकते हैं।

यरूशलम के क़रीब एक गाँव था। उसका नाम बैत-अनियाह था। गाँव में दो बहनें अपने भाई के साथ रहती थीं। बहनों के नाम मर्था और मरियम थे, भाई का लाज़र। तीनों ईसा मसीह के शागिर्द थे। वह उसे बहुत अज़ीज़ रखते थे। एक दिन भाई बीमार पड़ गया। जल्द ही पता चला कि यह आम बीमारी नहीं है, यह मोहलक मरज़ है। लाज़र की हालत बिगड़ती गई तो बहनें परेशान हो गईं। अब क्या करें? तब बहनों को ईसा मसीह का ख़याल आया। क्या उसके कहने पर लातादाद मरीज़ों को शफ़ा नहीं मिली थी? क्या वह मदद नहीं करेगा? लेकिन ईसा मसीह वहाँ नहीं था। वह दूर, दरियाए-यरदन के पार ख़िदमत अंजाम दे रहा था। पहुँचने में तो एक या दो दिन लगते थे। शायद लाज़र उतने में कूच कर जाए। ख़ूब कहा गया है कि डूबते को तिनके का सहारा। बहनों ने उम्मीद का यह तिनका पकड़कर फुरती से इत्तला भेजी कि “ख़ुदावंद, जिसे आप प्यार करते हैं वह बीमार है।” दोनों बहनों को एक बात का पूरा यक़ीन था : ईसा मसीह हमारी सुनता है। ईसा मसीह हमारी फ़िकर करता है। वह हमेशा हमारे दुख और सुख में शरीक होता है।

जब ईसा मसीह को यह ख़बर मिली उस वक़्त वह ख़ाली हाथ तो नहीं बैठा था। हमेशा की तरह वह अपनी ख़िदमत में मसरूफ़ था। मरीज़ आते-जाते थे और वह भीड़ से घिरा रहता था।

- **लोग क्यों उसका पीछा नहीं छोड़ते थे?**

  उसका किरदार और तालीम अनोखी थी। लोग सब कुछ छोड़कर भाग आते थे। यह आम आदमी नहीं था। उसे ख़ास इख़्तियार हासिल था।

जब ईसा मसीह को यह ख़बर मिली तो उसने फ़रमाया,

> इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इससे अल्लाह के फ़रज़ंद को जलाल मिले। (यूहन्ना 11:4)

► **इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है : इससे वह क्या कहना चाहता था?**
वह जानता था कि लाज़र मरनेवाला है। थोड़ी देर बाद वह वफ़ात पाएगा। लेकिन वह मौत के क़ब्ज़े में नहीं रहेगा। वह ईसा मसीह के कहने पर दुबारा ज़िंदा हो जाएगा।

► **इससे किस को जलाल मिलेगा?**
पहले ख़ुदा बाप को और दूसरे उसके फ़रज़ंद ईसा मसीह को। ईसा मसीह लाज़र को ज़िंदा करेगा मगर अपने आपको बड़ा करने के लिए नहीं। इस काम से ख़ुदा बाप को जलाल मिलेगा। इससे हम एक अहम उसूल सीखते हैं :

ख़ुदा को जलाल दो

► **जलाल देने का क्या मतलब है?**
जलाल देने का मतलब यह है कि हम उसकी इज़्ज़तो-एहतराम करें। न सिर्फ़ अपनी बातों से बल्कि अपनी ज़िंदगी से भी। हर काम जो ईसा मसीह करता वह इसलिए करता था कि ख़ुदा बाप को जलाल मिले। और क्या अजब। जो ताल्लुक़ ख़ुदा बाप, फ़रज़ंद और रूहुल-क़ुद्स के दरमियान है वह बहुत गहरा है। इस यगांगत की बिना पर ईसा मसीह का हर क़दम, हर साँस ख़ुदा बाप का जलाल बढ़ाने के लिए था।

► **क्या आप अपनी ज़िंदगी से ख़ुदा को जलाल देते हैं? या क्या आपकी ज़िंदगी को देखकर लोगों को घिन आती है?**
अगर आपका ईमान सच्चा हो तो आपकी ज़िंदगी ख़ुद बख़ुद इसकी गवाही देगी।

शागिर्द मसीह की यह बात समझ न पाए। वह मुतमइन हुए। उन्होंने सोचा, चलो बंदा ख़ुद बख़ुद ठीक हो जाएगा। वह रवाना न हुए बल्कि दो और दिन वहीं ठहरे रहे। फिर ईसा मसीह ने फ़रमाया, “आओ, हम दुबारा यहूदिया चले जाएँ।” शागिर्द दंग रह गए।

► **वह क्यों दंग रह गए?**

वह बोले, “उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहूदी आपको संगसार करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?” वह तो यरूशलम शहर से इसी लिए चले गए थे कि वहाँ के बुज़ुर्ग नाराज़ थे। बुज़ुर्ग उस्ताद को पकड़ना चाहते थे क्योंकि वह नहीं मानते थे कि वह आनेवाला अल-मसीह है। साथ साथ उन्हें यह डर था कि कहीं इससे हमारी अपनी कुरसी हिल न जाए। कैसी बात। वह सच्चाई को क़बूल नहीं कर सकते थे क्योंकि उनके लिए उनकी अपनी इज़्ज़त सब कुछ थी।

शागिर्द परेशानी से उस्ताद को ताकने लगे। तब ईसा मसीह ने उन्हें एक और बात सिखाई। यह कि

नूर में चलो

उसने फ़रमाया,

> क्या दिन में रौशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शख़्स दिन के वक़्त चलता-फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्योंकि वह इस दुनिया की रौशनी के ज़रीए देख सकता है। लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्योंकि उसके पास रौशनी नहीं है। (यूहन्ना 11:9-10)

► **जो दिन के वक़्त चलता है। दिन के वक़्त चलने का क्या मतलब है?**

अब तक दिन का वक़्त है। दिन के वक़्त इनसान चल-फिर सकता है। मेरे बाप ने दिन का वक़्त भी मुक़र्रर किया है और रात का वक़्त भी। मैं दुनिया का नूर हूँ। जब तक मैं साथ हूँ तुम्हें डरने की ज़रूरत नहीं है।

मेरे अज़ीज़, क्या आपने यह नूर पाया है? जो नूर के बग़ैर चले वह मुख़्तलिफ़ चीज़ों से टकराता रहता है। उसे चोट लगती रहती है।

► **चोट क्यों लगती है?**

इसलिए कि वह ख़ुदा का रास्ता देख नहीं सकता। वह कभी बाईं तरफ़ भटकता है, कभी दाईं तरफ़। जो रास्ता सीधा अबदी आराम तक ले जाता है उसे वह नहीं देखता।

अब ईसा मसीह ने एक तीसरी बात सिखाई :

अपने ईमान को बढ़ने दो

उसने कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जाकर उसे जगा दूँगा।” शागिर्दों ने कहा, “ख़ुदावंद, अगर वह सो रहा है तो बच जाएगा।” अगर वह आराम से सो रहा हो तो इसका मतलब है बीमारी घटनेवाली है और वह ठीक हो जाएगा। लेकिन उस्ताद ने उन्हें साफ़ बता दिया,

> लाज़र वफ़ात पा गया है। और तुम्हारी ख़ातिर मैं ख़ुश हूँ कि मैं उसके मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उसके पास जाएँ। (यूहन्ना 11:14-15)

► **ईसा मसीह क्यों ख़ुश था?**

इसलिए कि शागिर्द ईमान लाएँगे।

► **क्या वह ईमान नहीं लाए थे?**

ज़रूर। देखें बात यह है : जब हम ईमान लाते हैं तो हमारा ईमान बीज जैसा छोटा होता है। उसे बढ़ाने की ज़रूरत होती है ताकि वह जड़ पकड़े, उग आए और बढ़ते बढ़ते फल लाए। उस्ताद ख़ुश है कि लाज़र के पास जाने से शागिर्द का कमज़ोर ईमान मज़बूत हो जाएगा।

शायद आपके दिल में ईमान का यह बीज डाला गया है। क्या आप उसे बढ़ने दे रहे हैं? क्या आप रोज़ाना अपनी ज़िंदगी में उसके नूर और उसकी क़ुव्वत का तजरिबा कर रहे हैं? अगर नहीं तो उसे पुकारें। मिन्नत करें कि मुझे छू दे। मुझ पर अपनी मुहब्बत और अपनी ताक़त उंडेल दे ताकि मेरा कमज़ोर ईमान बढ़ता जाए, मज़बूत होता जाए।

► **क्या शागिर्द ख़ुश थे?**

नहीं, उनके रोंगटे खड़े हो गए। लेकिन इतना उन्होंने सीख लिया था कि उस्ताद के पीछे चलना ही है चाहे ख़तरा कितना क्यों न हो। तोमा बोला, “चलो, हम भी वहाँ जाकर उसके साथ मर जाएँ।” तोमा यह बात मज़ाक़ में नहीं कह रहा था। सब जानते थे कि यरूशलम के क़रीब आना अपनी जान हथेली पर रखने के बराबर है।

वहाँ पहुँचकर मालूम हुआ कि लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। यह गाँव यरूशलम के क़रीब ही था इसलिए बहुत-से यहूदी मर्था और मरियम को तसल्ली देने के लिए आए हुए थे। इस मौक़े पर ईमान का एक और पहलू उभर आया :

पूरा भरोसा रखो

मर्था को इत्तला मिली कि उस्ताद पहुँचकर बाहर इंतज़ार कर रहा है तो वह उसे मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। मर्था ने कहा, "ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह आपको जो भी माँगेंगे देगा।"

► **अब ध्यान दें। मर्था ने क्या दो बातें कहीं?**

- पहले, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।
- लेकिन दूसरी बात इससे बढ़कर है। वह बोली, मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह आपको जो भी माँगेंगे देगा। मर्था का अपने आक़ा पर बड़ा ईमान है। वह शिकायत नहीं करती, क्योंकि अब भी मर्था को उस पर पूरा भरोसा है।

► **मर्था को इतना पक्का भरोसा क्यों है?**

उसने पहचान लिया है कि ख़ुदा बाप उसे जो माँगेगा देगा। ईसा मसीह अपनी पूरी ज़िंदगी से ख़ुदा बाप को जलाल दे रहा है इसलिए ख़ुदा बाप उसकी सुनता है।

ईसा मसीह ने फ़रमाया, "तेरा भाई जी उठेगा।"

मर्था ने जवाब दिया, "जी, मुझे मालूम है कि वह क़ियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।"

तब ईसा मसीह ने एक चौंका देनेवाली बात कही,

> क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए। और जो ज़िंदा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। (यूहन्ना 11:25-26)

► **जो ईमान रखे उसे क्या हासिल होगा?**

ज़िंदगी। अबदी ज़िंदगी। मतलब है कि

उसे क़बूल करो जो ज़िंदगी है

► **क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। ईसा मसीह इससे क्या कहना चाहता है?**
अबदी ज़िंदगी उसी के ज़रीए मिलती है। यह किसी और से हासिल नहीं हो सकती। इसी लिए कि हम अपनी कोशिशों से जन्नत में दाख़िल नहीं हो सकते। हमारी हालत कमज़ोर है। हम जो नापाक हैं अल्लाह के हुज़ूर आ नहीं सकते। हमारी सिफ़ारिश करने से कुछ नहीं होता, क्योंकि सिफ़ारिश से हम पाक नहीं हो जाएँगे। सिफ़ारिश से हम वह रूहानी हालत नहीं पाएँगे जिससे हम मंज़ूर हो जाएँगे। यही वजह है कि ईसा मसीह ने हमारे वास्ते अपनी जान दी। उसने अपने ऊपर वह सज़ा ली जो हमें उठानी थी। न सिर्फ़ यह बल्कि उसके मरने और जी उठने के बाद उसने रूहुल-क़ुद्स भेज दिया जो सच्चे ईमानदार के दिल में रहकर उसे तसल्ली और हिदायत देता रहता है। यह चीज़ें सिफ़ारिश से पैदा नहीं होतीं।

► **लेकिन इसका क्या मतलब है कि जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा? क्या वह इस दुनिया में नहीं मरेगा?**
यहाँ दो सच्चाइयाँ एक दूसरे के साथ जुड़ी हुई हैं, एक जिस्मानी और दूसरी रूहानी। जो उस पर ईमान रखे वह इस दुनिया में रहते हुए यह अबदी ज़िंदगी पाता है। कह लें कि अबदी ज़िंदगी का बीज ईमानदार के दिल में डाला जाता है। जिस्म कितना घटता और गलता क्यों न जाए लेकिन यह बीज कभी नहीं गलता। यह बीज बढ़ता जाता है, रूहानी फल लाता रहता है और आख़िर में जब जिस्म गुज़र जाए ईमानदार को ख़ुदा के हुज़ूर ले जाता है। यही है हमारी ठोस उम्मीद। यही वजह है कि ईसा मसीह फ़रमाता है कि जो ज़िंदा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा।

उस्ताद तो माहिर डाक्टर है। उसने मर्था के दिल में तेज़ नज़र डालकर पूछा, "मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?" उसे हमेशा हमारी रूहानी हालत की फ़िकर रहती है।

मर्था ने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, मैं ईमान रखती हूँ कि आप ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं, जिसे दुनिया में आना था।"

बेशक मर्था यह बातें पूरे तौर से नहीं समझती, मगर देखो उसका ईमान! वह जवाब देती है कि आप ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं। आप वही हैं जिसे हमें नजात देने के लिए

आना था। अब वह वापस घर में खिसक गई ताकि चुपके से मरियम को बुलाए। उस्ताद के साथ रिफ़ाक़त बाक़ी लोगों से फ़रक़ थी, गहरी थी। उसके हुज़ूर हर पल क़ीमती था। इसलिए वह तड़प रही थी कि मातम करनेवालों के शोरो-ग़ुल से दूर होकर मरियम के साथ अपने आक़ा की धूप सेंके। उसने मरियम से कहा, उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।

मरियम एकदम उठ खड़ी हुई और फुरती से गाँव से बाहर उस जगह गई जहाँ ईसा मसीह अभी तक था। अगर कोई तसल्ली दे सके तो उसका आक़ा। अगर कोई बोझ हलका कर पाए तो उसका आक़ा। दूसरे सब लोग यह देखकर उसके पीछे हो लिए। उन्हें लग रहा था कि मरियम क़ब्र पर जा रही है। ईसा मसीह को देखते ही वह उसके पाँवों में गिर गई और बोली, "ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।" वह फूटकर रोने लगी। दूसरे हमदर्दी से साथ साथ रोने लगे।

हाय, मौत कितनी तलख़ है। एक लमहे में इनसान इस दुनिया और तमाम अज़ीज़ों से जुदा हो जाता है। न वह रुपए-पैसे, न जूते-कपड़े अपने साथ ले सकता है। तनहा ही वह कूच कर जाता है। तब क्या होगा? दूसरी तरफ़ उसके अज़ीज़ बैठे रो पड़ते हैं। उनका दिल छिद जाता है। कौन यह प्यारी जान वापस लाएगा?

ईसा मसीह को बड़ी रंजिश हुई। उसने पूछा, तुमने उसे कहाँ रखा है?

उन्होंने जवाब दिया, आएँ, देख लें।

तब ईसा मसीह रो पड़ा।

► **यह हमें उसके बारे में क्या सिखाता है?**

हम इनसान उसे इतने प्यारे हैं कि वह हमारे हर दुख-सुख में शरीक होता है। जब हम ख़ुश हों तो वह भी ख़ुश, जब हम रोएँ तो वह भी रोता है।

लोग यह देखकर काफ़ी मुतअस्सिर हुए। "देखो, वह उसे कितना अज़ीज़ था," उन्होंने कहा। लेकिन कुछ ने कहा, "इस आदमी ने अंधे को शफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?"

तब ईसा मसीह दुबारा रंजीदा होकर क़ब्र पर आया। यह एक ख़ास क़ब्र थी। एक ग़ार जिसके मुँह पर पत्थर रखा गया था। ईसा मसीह बोला, "पत्थर को हटा दो।" मर्था बोली, "ख़ुदावंद, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।"

यह देखने में आया है कि कोई सबके सामने मुरदा लगे मगर कुछ घंटों के बाद दुबारा हरकतें करने लगे। दिल धड़कने लगता, साँस चल पड़ती है। यहाँ ऐसी कोई बात नहीं थी। चार दिन के बाद लाज़र पक्का मुरदा था।

इसका एक और पहलू है : पहले मर्था तो ईसा मसीह की बात मान गई थी कि वह क़ियामत और ज़िंदगी है, कि वह अबदी ज़िंदगी का सरचश्मा है। लेकिन अब क़ब्र की नज़र में उसका यह यक़ीन माँद पड़ गया। क्या ईसा मसीह सचमुच लाज़र को जिला सकता है?

ईसा मसीह ने उससे कहा, "क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का जलाल देखेगी?" तब उन्होंने पत्थर को मुँह से हटा दिया। फिर ईसा मसीह ने अपनी नज़र उठाकर कहा, "ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैंने यह बात पास खड़े लोगों की ख़ातिर की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तूने मुझे भेजा है।" फिर वह ज़ोर से पुकार उठा, "लाज़र, निकल आ!"

► **फिर क्या हुआ?**

मुरदा निकल आया। अभी तक उसके हाथ और पाँव पट्टियों से बँधे हुए थे जबकि उसका चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा मसीह ने उनसे कहा, "इसके कफ़न को खोलकर इसे जाने दो।"

लाज़र की बहनें कितनी ख़ुश हुई होंगी! उनका भाई मौत की दुनिया से वापस आ गया था!

इस पूरे सिलसिले से हम एक मरकज़ी बात सीखते हैं।

► **क्या सीखते हैं?**

यह कि ईसा मसीह ज़िंदगी का मंबा है। वही जी उठने का वसीला है। शायद लाज़र बूढ़ा हो गया। तो भी उसे दुबारा मरना ही था। लेकिन लाज़र के अंदर अबदी ज़िंदगी का वह बीज था जो ईसा मसीह ने उसमें डाल दिया था। इस दुनिया से कूच कर जाने के बाद यह बीज उसे उठाकर उसके आक़ा के पास ले गया।

► **क्या आपको यह उम्मीद है? क्या यह बीज आपके अंदर है? क्या आप पक्के जानते हैं कि यह बीज आपको मरने के बाद ईसा मसीह की गोद में**

ले जाएगा जहाँ आप इस दुनिया की तगो-दो से आज़ाद होकर सुकून और इतमीनान से बसेंगे?

एक आख़िरी पहलू है जिस पर हमें ध्यान देना है : यह काम देखकर सब ख़ुश न हुए। कुछ उसके ख़िलाफ़ हुए। आइए हम देखें

इनकार करनेवालों का जवाब

यह मोजिज़ा देखकर बहुत-से लोग ईसा मसीह पर ईमान लाए। मतलब है वह मान गए कि यही नजात देनेवाला अल-मसीह है। कोई और ऐसा मोजिज़ा नहीं कर सकता। लेकिन कुछ ने बुज़ुर्गों के पास जाकर उन्हें इत्तला दी कि क्या हुआ है।

► **क्या बुज़ुर्ग ख़ुश हुए कि ऐसा मोजिज़ा हुआ है?**

नहीं। वह आपस में कहने लगे, "हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत-से इलाही निशान दिखा रहा है। अगर हम उसे खुला छोड़ें तो आख़िरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर रोमी आकर हमारे बैतुल-मुक़द्दस और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।"

► **यह लोग क्यों ख़ुश नहीं थे?**

उन्हें कोई परवाह नहीं थी कि मोजिज़ा हुआ है। उन्हें सिर्फ़ यह फ़िकर थी कि हमारी इज़्ज़त कम हो जाएगी। वह तो रोमी सरकारी अफ़सरों के साथ मिले-जुले थे। लोग ईसा मसीह का इख़्तियार मानें तो हो सकता है कि रोमी सरकार नाराज़ होकर बैतुल-मुक़द्दस और मुल्क को नेस्तो-नाबूद करें।

तब इमामे-आज़म बोल उठा। उसका नाम कायफ़ा था। उसने कहा, "आप कुछ नहीं समझते और इसका ख़याल भी नहीं करते कि इससे पहले कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।"

उसका मतलब था कि ईसा मसीह को ख़त्म करना चाहिए, इससे पहले कि पूरा मुल्क ख़त्म हो जाए। लेकिन हक़ीक़त में ख़ुदा उसके वसीले से पेशगोई कर रहा था। ईसा मसीह उन सबके लिए मरेगा जो उस पर ईमान लाएँगे, यहूदियों के लिए भी और दूसरों के लिए भी।

उस दिन से वह पक्के इरादे के साथ ईसा मसीह को क़त्ल करने की साज़िशें करने लगे। कितनी अजीब बात! एक तरफ़ ईसा मसीह ने एक मुरदे को ज़िंदगी दी। दूसरी तरफ़ लोग यह देखकर उसे मौत के घाट उतारने की साज़िशें करने लगे। एक

तरफ़ अबदी ज़िंदगी की खुली दावत, दूसरी तरफ़ क़त्लो-ग़ारत का पक्का इरादा। एक तरफ़ अपनी जान देने की तैयारी, दूसरी तरफ़ अपनी कुरसी मज़बूत करने की सियासत।

► **सवाल यह है : आप ईसा मसीह के बारे में क्या सोचते हैं?**

शायद आप मानें कि ईसा मसीह अच्छा इनसान है। यह काफ़ी नहीं है। इससे आपको अबदी ज़िंदगी नहीं मिलेगी। सच्चे ईमान की ज़रूरत है। वह ईमान जो अपनी ज़िंदगी से ख़ुदा को जलाल देकर नूर में चलता है। ऐसा ईमान बढ़ता रहता है, अपने आक़ा पर पूरा भरोसा रखता है। सबसे बढ़कर यह कि वह अबदी ज़िंदगी का बीज अपने अंदर पाता है। वह अबदी ज़िंदगी जो सिर्फ़ ईसा मसीह दे सकता है।

इंजील, यूहन्ना 11,1-54

लाज़र की मौत

उन दिनों में एक आदमी बीमार पड़ गया जिसका नाम लाज़र था। वह अपनी बहनों मरियम और मर्था के साथ बैत-अनियाह में रहता था। यह वही मरियम थी जिसने बाद में ईसा मसीह पर ख़ुशबू उंडेलकर उसके पाँव अपने बालों से ख़ुश्क किए थे। उसी का भाई लाज़र बीमार था। चुनाँचे बहनों ने ईसा को इत्तला दी, "ख़ुदावंद, जिसे आप प्यार करते हैं वह बीमार है।"

जब ईसा को यह ख़बर मिली तो उसने कहा, "इस बीमारी का अंजाम मौत नहीं है, बल्कि यह अल्लाह के जलाल के वास्ते हुआ है, ताकि इससे अल्लाह के फ़रज़ंद को जलाल मिले।"

ईसा मर्था, मरियम और लाज़र से मुहब्बत रखता था। तो भी वह लाज़र के बारे में इत्तला मिलने के बाद दो दिन और वहीं ठहरा। फिर उसने अपने शागिर्दों से बात की, "आओ, हम दुबारा यहूदिया चले जाएँ।"

शागिर्दों ने एतराज़ किया, "उस्ताद, अभी अभी वहाँ के यहूदी आपको संगसार करने की कोशिश कर रहे थे, फिर भी आप वापस जाना चाहते हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, “क्या दिन में रौशनी के बारह घंटे नहीं होते? जो शख़्स दिन के वक़्त चलता-फिरता है वह किसी भी चीज़ से नहीं टकराएगा, क्योंकि वह इस दुनिया की रौशनी के ज़रीए देख सकता है। लेकिन जो रात के वक़्त चलता है वह चीज़ों से टकरा जाता है, क्योंकि उसके पास रौशनी नहीं है।”

फिर उसने कहा, “हमारा दोस्त लाज़र सो गया है। लेकिन मैं जाकर उसे जगा दूँगा।”

शागिर्दों ने कहा, “ख़ुदावंद, अगर वह सो रहा है तो वह बच जाएगा।”

उनका ख़याल था कि ईसा लाज़र की फ़ितरी नींद का ज़िक्र कर रहा है जबकि हक़ीक़त में वह उसकी मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था। इसलिए उसने उन्हें साफ़ बता दिया, “लाज़र वफ़ात पा गया है। और तुम्हारी ख़ातिर मैं ख़ुश हूँ कि मैं उसके मरते वक़्त वहाँ नहीं था, क्योंकि अब तुम ईमान लाओगे। आओ, हम उसके पास जाएँ।”

तोमा ने जिसका लक़ब जुड़वाँ था अपने साथी शागिर्दों से कहा, “चलो, हम भी वहाँ जाकर उसके साथ मर जाएँ।”

ईसा क़ियामत और ज़िंदगी है

वहाँ पहुँचकर ईसा को मालूम हुआ कि लाज़र को क़ब्र में रखे चार दिन हो गए हैं। बैत-अनियाह का यरूशलम से फ़ासला तीन किलोमीटर से कम था, और बहुत-से यहूदी मर्था और मरियम को उनके भाई के बारे में तसल्ली देने के लिए आए हुए थे।

यह सुनकर कि ईसा आ रहा है मर्था उसे मिलने गई। लेकिन मरियम घर में बैठी रही। मर्था ने कहा, “ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता। लेकिन मैं जानती हूँ कि अब भी अल्लाह आपको जो भी माँगेंगे देगा।”

ईसा ने उसे बताया, “तेरा भाई जी उठेगा।”

मर्था ने जवाब दिया, “जी, मुझे मालूम है कि वह क़ियामत के दिन जी उठेगा, जब सब जी उठेंगे।”

ईसा ने उसे बताया, “क़ियामत और ज़िंदगी तो मैं हूँ। जो मुझ पर ईमान रखे वह ज़िंदा रहेगा, चाहे वह मर भी जाए। और जो ज़िंदा है और मुझ पर ईमान रखता है वह कभी नहीं मरेगा। मर्था, क्या तुझे इस बात का यक़ीन है?”

मर्था ने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, मैं ईमान रखती हूँ कि आप ख़ुदा के फ़रज़ंद मसीह हैं, जिसे दुनिया में आना था।”

ईसा रोता है

यह कहकर मर्था वापस चली गई और चुपके से मरियम को बुलाया, “उस्ताद आ गए हैं, वह तुझे बुला रहे हैं।” यह सुनते ही मरियम उठकर ईसा के पास गई। वह अभी गाँव के बाहर उसी जगह ठहरा था जहाँ उसकी मुलाक़ात मर्था से हुई थी। जो यहूदी घर में मरियम के साथ बैठे उसे तसल्ली दे रहे थे, जब उन्होंने देखा कि वह जल्दी से उठकर निकल गई है तो वह उसके पीछे हो लिए। क्योंकि वह समझ रहे थे कि वह मातम करने के लिए अपने भाई की क़ब्र पर जा रही है।

मरियम ईसा के पास पहुँच गई। उसे देखते ही वह उसके पाँवों में गिर गई और कहने लगी, “ख़ुदावंद, अगर आप यहाँ होते तो मेरा भाई न मरता।”

जब ईसा ने मरियम और उसके साथियों को रोते देखा तो उसे बड़ी रंजिश हुई। मुज़तरिब हालत में उसने पूछा, “तुमने उसे कहाँ रखा है?”

उन्होंने जवाब दिया, “आएँ ख़ुदावंद, और देख लें।”

ईसा रो पड़ा। यहूदियों ने कहा, “देखो, वह उसे कितना अज़ीज़ था।”

लेकिन उनमें से बाज़ ने कहा, “इस आदमी ने अंधे को शफ़ा दी। क्या यह लाज़र को मरने से नहीं बचा सकता था?”

लाज़र को ज़िंदा कर दिया जाता है

फिर ईसा दुबारा निहायत रंजीदा होकर क़ब्र पर आया। क़ब्र एक ग़ार थी जिसके मुँह पर पत्थर रखा गया था। ईसा ने कहा, “पत्थर को हटा दो।”

लेकिन मरहूम की बहन मर्था ने एतराज़ किया, “ख़ुदावंद, बदबू आएगी, क्योंकि उसे यहाँ पड़े चार दिन हो गए हैं।”

ईसा ने उससे कहा, “क्या मैंने तुझे नहीं बताया कि अगर तू ईमान रखे तो अल्लाह का जलाल देखेगी?” चुनाँचे उन्होंने पत्थर को हटा दिया। फिर ईसा ने अपनी नज़र उठाकर कहा, “ऐ बाप, मैं तेरा शुक्र करता हूँ कि तूने मेरी सुन ली है। मैं तो जानता हूँ कि तू हमेशा मेरी सुनता है। लेकिन मैंने यह बात पास

खड़े लोगों की ख़ातिर की, ताकि वह ईमान लाएँ कि तूने मुझे भेजा है।” फिर ईसा ज़ोर से पुकार उठा, “लाज़र, निकल आ!” और मुरदा निकल आया। अभी तक उसके हाथ और पाँव पट्टियों से बँधे हुए थे जबकि उसका चेहरा कपड़े में लिपटा हुआ था। ईसा ने उनसे कहा, “इसके कफ़न को खोलकर इसे जाने दो।”

ईसा के ख़िलाफ़ मनसूबाबंदी

उन यहूदियों में से जो मरियम के पास आए थे बहुत-से ईसा पर ईमान लाए जब उन्होंने वह देखा जो उसने किया। लेकिन बाज़ फ़रीसियों के पास गए और उन्हें बताया कि ईसा ने क्या किया है। तब राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदी अदालते-आलिया का इजलास मुनअक़िद किया। उन्होंने एक दूसरे से पूछा, “हम क्या कर रहे हैं? यह आदमी बहुत-से इलाही निशान दिखा रहा है। अगर हम उसे खुला छोड़ें तो आख़िरकार सब उस पर ईमान ले आएँगे। फिर रोमी आकर हमारे बैतुल-मुक़द्दस और हमारे मुल्क को तबाह कर देंगे।” उनमें से एक कायफ़ा था जो उस साल इमामे-आज़म था। उसने कहा, “आप कुछ नहीं समझते और इसका ख़याल भी नहीं करते कि इससे पहले कि पूरी क़ौम हलाक हो जाए बेहतर यह है कि एक आदमी उम्मत के लिए मर जाए।” उसने यह बात अपनी तरफ़ से नहीं की थी। उस साल के इमामे-आज़म की हैसियत से ही उसने यह पेशगोई की कि ईसा यहूदी क़ौम के लिए मरेगा। और न सिर्फ़ इसके लिए बल्कि अल्लाह के बिखरे हुए फ़रज़ंदों को जमा करके एक करने के लिए भी।

उस दिन से उन्होंने ईसा को क़त्ल करने का इरादा कर लिया। इसलिए उसने अब से अलानिया यहूदियों के दरमियान वक़्त न गुज़ारा, बल्कि उस जगह को छोड़कर रेगिस्तान के क़रीब एक इलाक़े में गया। वहाँ वह अपने शागिर्दों समेत एक गाँव बनाम इफ़राईम में रहने लगा।

ख़ुशबू या बदबू?
सफल ज़िंदगी का राज़

हर इनसान के दिल में एक गहरी ख़ाहिश होती है। ख़ाहिश क्या है? यह कि मेरी ज़िंदगी सफल हो, मेरा जीवन कामयाब निकले। मेरी ज़िंदगी किस तरह कामयाब हो सकती है? यूहन्ना 12 में इसका अजीबो-ग़रीब जवाब मिलता है। एक जवाब जो आम सोच से कहीं दूर है। आइए हम इस पर ग़ौर करें।

लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा करने के बाद ईसा मसीह लाज़र के गाँव बनाम बैत-अनियाह से चला गया था।

► **वह क्यों चला गया था?**

उसके मुख़ालिफ़ यह मोजिज़ा देखकर ख़ुश नहीं थे। इसके उलट वह उसके ख़िलाफ़ साज़िशें करने लगे। ईसा मसीह उनके मनसूबे जानता था इसलिए वह चला गया। उसे मालूम तो था कि उसे पकड़ा जाएगा। लेकिन वह यह भी जानता था कि अब तक ख़िदमत के कुछ दिन बाक़ी रह गए हैं।

यह बात ज़हन में रखकर वह कुछ देर के लिए कहीं और ख़िदमत करने लगा। लेकिन एक दिन वह दुबारा बैत-अनियाह पहुँचा। यह ख़बर सूखे हुए जंगल में आग की तरह फैल गई। गाँव के लोग इतने ख़ुश हुए कि उन्होंने ईसा मसीह को दावत देकर खाने का ख़ास इंतज़ाम किया।

अब ध्यान दें : यह दावत लाज़र की तरफ़ से नहीं थी। किसी और ने अपने घर में यह इंतज़ाम करवाया। तो भी मर्था आकर मदद करने में जुट गई। यह बात हमें एक अहम सबक़ सिखाती है। यह कि

मर्था का-सा जोश अपनाओ

► **मर्था क्यों ईसा मसीह की ख़िदमत करने लगी हालाँकि यह ज़ियाफ़त उसके अपने घर में नहीं थी?**

जिसे ईसा मसीह की मुहब्बत पकड़कर शागिर्द बना लेती है वह ख़ुशी से ख़िदमत करता है। उसे अपनी ही इज़्ज़त की फ़िकर नहीं रहती।

► **तो मर्था इतने जोश से क्यों इस ख़िदमत में लग गई?**

इसलिए कि वह ईसा मसीह के लिए शदीद मुहब्बत महसूस करती थी। कोई भी काम बोझ नहीं लगता था।

एक औरत का ज़िक्र है जो अपने शौहर से नफ़रत रखती थी। वह हर फ़र्ज़ अदा तो करती थी, मगर बड़ी मुश्किल से। मिसाल के तौर पर बीवी को रोज़ाना छः बजे सुबह तक उसका नाश्ता तैयार रखना था। इस क़िस्म का काम उसे हमेशा ज़ुल्म और ज़्यादती लगता था और वह उसके तहत कुढ़ती रहती थी।

एक दिन शौहर वफ़ात पा गया, और होते होते औरत की किसी और से शादी हुई। नया शौहर हलीम था, और उनका आपस में प्यार बढ़ता गया। एक दिन बीवी को अलमारी से एक पुरानी कापी मिली जिसमें पुराने शौहर के तमाम हुक्म दर्ज थे। उसमें यह भी लिखा था कि बीवी को हर सूरत में 6 बजे सुबह तक ब्रेकफ़ास्ट तैयार रखना है। तब औरत को एक अजीब सी बात महसूस हुई। उसने सोचा, अब भी मैं अपने शौहर के लिए सुबह 6 बजे नाश्ता बनाती हूँ। अब भी मैं यह सारे हुक्म पूरे करती हूँ। लेकिन मैंने कभी भी दिक़्क़त महसूस न की। अब तो मैं इससे ज़्यादा मुश्किल काम करती हूँ।

► **आपका क्या ख़याल है। उसने क्यों कभी दिक़्क़त महसूस नहीं की थी?**

इसलिए कि बीवी अपने नए शौहर से शदीद मुहब्बत रखती थी। मुहब्बत के बाइस कोई भी काम मुश्किल नहीं लगता था।

देखो, मर्था उस औरत की तरह थी : वह अपने आक़ा को इतनी प्यार करती थी कि किसी भी काम में दिक़्क़त महसूस नहीं होती थी। अब तो वह यह काम करते वक़्त बड़ी ख़ुशी महसूस करती थी। यहाँ तक कि वह दूसरे के घर में गई ताकि अपने आक़ा की ख़िदमत करे।

यही ईसा मसीह और शरीअत में फ़रक़ है : शरीअत हमें बताती रहती है कि हमें क्या करना है। और हम जानते भी हैं कि उसके हुक्म सही हैं। लेकिन हम हमेशा कुढ़ते रहते हैं। इसके मुक़ाबले में जब ईसा मसीह हमारे दिलों में बसता है तो हम यह हुक्म ख़ुशी से सरंजाम देते हैं।

► **क्यों?**

इसलिए कि उसकी मुहब्बत और हुज़ूरी हमारे अंदर रहती है। तब हम ख़ुद बख़ुद यह काम करना चाहते हैं, और हम दुख महसूस करते हैं जब कभी इसमें फ़ेल हो जाते हैं।

► **क्या आपके दिल में यह मुहब्बत बसती है? क्या ईसा मसीह आपके दिल में बसता है?**

जब वह हमारे दिल में बसता है तो हमें सचमुच आज़ादी हासिल है—वह आज़ादी जो सिर्फ़ और सिर्फ़ इंजील की ख़ुशख़बरी से मिलती है।

लाज़र भी खाने में शरीक था। अब तक वह लोगों के ध्यान का मरकज़ रहा था। अब तक सब हैरान थे कि कफ़न में लिपटा हुआ यह आदमी किस तरह क़ब्र में से निकला था। तब एक वाक़िया हुआ जो हमें एक और सबक़ सिखाता है। यह कि

मरियम जैसे दीवाना हो जाओ

अचानक लाज़र और मर्था की बहन मरियम कमरे में दाख़िल हुई। वह बेचैन थी। उसके हाथ में निहायत क़ीमती इत्र का इत्रदान था। उसने सारे मेहमानों के सामने इत्रदान का मुँह तोड़कर पूरा इत्र उस्ताद पर उंडेल दिया। फिर पाँवों पर टपकते तेल को अपने बालों से पोंछकर ख़ुश्क किया।

मेज़बान हक्का-बक्का रह गए। यह कैसी हरकत थी? हाँ, यह थी कैसी हरकत? यहाँ की तरह ख़वातीन अपने बालों को खुले कभी नहीं रखती थीं। फिर किसी के पाँवों को अपने बालों से पोंछना—ऐसी हरकत कोई नहीं करता था। ग़ुलाम भी ऐसी हरकत नहीं करते थे। लेकिन मरियम को कोई परवाह नहीं थी।

► **मरियम को परवाह क्यों नहीं थी?**

ऐसा काम सिर्फ़ वह करता है जो किसी के बारे में इतना पागल है कि उसे दूसरों की परवाह ही नहीं रहती। एक और मौक़े पर मरियम ईसा मसीह की बातों से इस क़दर मुतअस्सिर हुई थी कि मर्था को उसे झिड़की देनी पड़ी। क्योंकि उस्ताद की बातों के जादू में आकर वह मेज़बानों की ख़िदमत करना भूल गई थी। ईसा मसीह की हुज़ूरी यों उसके दिमाग़ पर बैठ गई थी कि वह हिल भी नहीं सकती थी।

► **क्या आप ईसा मसीह के बाइस इस तरह पागल हो गए हैं?**

एक और बात मरियम के ज़हन में ज़रूर थी। इसराईल में तीन क़िस्म के लोगों के सर पर तेल उंडेला जाता था—बादशाह पर, नबी पर और इमाम पर।

- ► **तेल क्यों उनके सर पर उंडेला जाता था?**

  इससे उन्हें अपनी ख़िदमत के लिए मख़सूस किया जाता था। अल-मसीह का मतलब ही यह है यानी वह जिसे मसह किया गया है, जिस पर तेल उंडेल दिया गया है, जो ख़ुदा से एक ख़ास काम के लिए मख़सूस किया गया है।

मरियम को यक़ीन था कि ईसा मसीह यह सब कुछ है : वह मेरा बादशाह, मेरा नबी, मेरा इमाम है। उसे यक़ीन था कि यही अल-मसीह है, वह हस्ती जो मुझे मेरे गुनाहों से रिहा करेगा। जो मुझे फ़िरदौस में दाख़िल होने के क़ाबिल बना देगा।

इसी हस्ती के सामने हम किस तरह ठंडे दिल खड़े रह सकते हैं? जब हम ईसा मसीह के पक्के शागिर्द हो जाते हैं तब हम पागल हो जाते हैं। तब उसके पाँवों में झुककर अपने बालों से उन्हें पोंछना अजीब या नामुनासिब नहीं लगता। हम इससे एक तीसरा सबक़ भी सीखते हैं, यह कि

अपनी हरकतों से ख़ुशबू फैलाओ

जब मरियम ने इत्र उंडेल दिया तो ख़ुशबू घर के कोने कोने तक पहुँच गई। मरियम की यह हरकत छिपी न रही। वह सब पर ज़ाहिर हुई।

- ► **हम इससे अपने लिए क्या सीख सकते हैं?**

  जब हम ईसा मसीह के बाइस पागल हो जाते हैं तो इसकी ख़ुशबू पूरी दुनिया में फैल जाती है।

- ► **क्या आप इस तरह पागल हो गए हैं कि आपसे ख़ुशबू फैल रही है? या क्या आपकी बदबू लोगों को भगा देती है?**

- ► **दूसरा सवाल, किस तरह पता चलता है कि हमसे ख़ुशबू फैलती है?**

  इससे कि हम मसीह के पाँव पोंछ देते हैं। ध्यान दें कि मरियम ने सर को नहीं पोंछ दिया बल्कि पाँवों को।

- ► **मरियम ने क्यों सर को नहीं बल्कि पाँवों को पोंछ दिया?**

  पोंछने का यह काम हलीमी का काम है। जो यह काम करता है वह अपने आपको सर को पोंछने के लायक़ नहीं समझता।

कुछ फूल देखने में बहुत अच्छे लगते हैं लेकिन उनकी ख़ुशबू नहीं होती। बहुत-से ईमानदार ऐसे फीके होते हैं। उनसे मालूम नहीं होता कि वह ईसा मसीह के शागिर्द हैं।

► **क्यों?**

उन्होंने कभी अपने बालों से उसके पाँव नहीं पोंछे। ऐसे लोगों का ईमान बेमानी है।

► **पाँव पोंछना इतना मुश्किल क्यों होता है?**

पाँव गंदे रास्तों पर चलते हैं, इसलिए वह धूल और गंद से लतपत हो जाते हैं। इसलिए क़दीम ज़माने में लोग किसी के पाँवों को धोकर पोंछने से अपनी हलीमी ज़ाहिर करते थे, साथ साथ वह दूसरे की ख़ास इज़्ज़त करते थे।

► **तो आज हम किस तरह मसीह के पाँव पोंछ सकते हैं?**

आज हम ज़रूरतमंदों की ख़िदमत करने से उसके पाँव पोंछ सकते हैं। दूसरों पर राज करना—यह ईसा मसीह की राह नहीं है। अपने आप को दूसरों से छोटा समझना—यही ईसा मसीह की राह है। क्या यह एक ऐसी बात नहीं है जो उस के बहुत से शागिर्द भूल गए हैं? क्या अजब जब उन की ज़िंदगी फीकी और नाकाम रह जाती है?

► **अब ध्यान दें : जब मरियम ने अपने बालों से अपने आक़ा के पाँव पोंछकर ख़ुश्क किए तो उसके बालों के साथ क्या हुआ?**

अपने बालों से उसके पाँव पोंछने से यह ख़ुशबू मरियम के बालों में भी आ गई।

► **जब हम ईसा मसीह के पाँव पोंछते हैं तो हमारे बालों के साथ क्या हो जाता है?**

जब हम उसके पाँवों को पोंछते हैं तो उसकी ख़ुशबू हमारे बालों में भी आ जाती है—वह ख़ुशबू जो हमें उसकी याद दिलाती है; वह महक जो दूसरों में भी फैल जाती है। यही हमारी ज़िंदगी का असल मक़सद है। कि हम अपने आक़ा की ख़ुशबू दूसरों में फैलाएँ।

एक चौथा सबक़,

मुहब्बत से ख़ाली सोच से दूर रहो

इत्र की ख़ुशबू पूरे घर में फैल गई। सब यह ख़ुशबू सूँघ सूँघकर तरो-ताज़ा हो गए। सब ख़ुशबू के जादू में आ गए।

► **क्या सचमुच सब?**

नहीं। एक नाख़ुश हुआ। ईसा मसीह का शागिर्द यहूदाह इस्करियोती ग़ुस्से हुआ। उसने एतराज़ किया, "इस इत्र की क़ीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यों नहीं बेचा गया ताकि इसके पैसे ग़रीबों को दिए जाते?"

► **क्या यह बात सच नहीं थी?**

ज़रूर। कुछ बातें सच तो होती हैं मगर फिर भी कुछ मौक़ों पर ग़लत साबित होती हैं। यह एक ऐसा मौक़ा था।

► **चाँदी के 300 सिक्कों की क्या क़ीमत थी?**

उस ज़माने में मज़दूर दिन में एक सिक्का कमाता था। ग़रज़ वह साल में लगभग 300 सिक्के कमा सकता था। मतलब है यह इत्र काफ़ी महँगा था। जो इत्र मरियम ने उंडेल दिया था वह बेशक़ीमत था।

► **क्या यहूदाह ने यह बात इसलिए छेड़ी कि उसे ग़रीबों की फ़िकर थी?**

नहीं। असल में वह चोर था। जो थोड़े बहुत पैसे शागिर्दों को रास्ते में मिलिते थे उन्हें वह सँभालता था। कुछ न कुछ वह अपने लिए निकालता रहता था। तो भी क्या उसकी बात दुरुस्त नहीं थी? क्या मरियम यह इत्र बेचने से ग़रीबों की बहुत मदद नहीं कर सकती थी?

ईसा मसीह का जवाब हमें चौंका देता है। उसने फ़रमाया, "उसे छोड़ दे! उसने मेरी तदफ़ीन की तैयारी के लिए यह किया है। ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।"

► **इसका क्या मतलब है?**

ग़रीबों की मदद करना बेशक अच्छा है। लेकिन ऐसा काम कभी हमारे ध्यान का मरकज़ नहीं होना चाहिए। ख़ुद ईसा मसीह हमारी ज़िंदगी का मरकज़ होना चाहिए। उसी से हमें सब कुछ मिलता है, और उसी की मुहब्बत सब कुछ है। यों पौलुस रसूल फ़रमाता है,

> अगर मैं अपना सारा माल ग़रीबों में तक़सीम कर दूँ बल्कि अपना बदन जलाए जाने के लिए दे दूँ, लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से ख़ाली हो तो मुझे कुछ फ़ायदा नहीं। (1 कुरिंथियों 13:3)

इसमें मरियम एक अच्छा नमूना है। वह हमें दिखाती है कि हमारी ज़िंदगी में सबसे अहम बात क्या है। बेशक माज़ूरों और ग़रीबों की मदद करना अच्छा है। लेकिन सबसे अहम यह है कि हम मुहब्बत रखें। कि हम ईसा मसीह को देखकर दीवाना हो जाएँ। कि हम उसे देखकर इतने पागल हो जाएँ कि हमारी बेइज़्ज़ती होने पर भी हमें परवाह ही न हो। मरियम को यह ला-परवाही हासिल है। वह महसूस करती है कि मेरा आक़ा सब कुछ है। वह मेरी ज़िंदगी का सरचश्मा, मरकज़ और मनज़िल है। इसलिए मैं उस के लिए अपनी सबसे क़ीमती चीज़ क़ुरबान करती हूँ।

► **क्या ईसा मसीह सचमुच आपका आक़ा है? जब आपको उसका ख़याल आता है तो क्या आपके दिल में मरियम का-सा वलवला उभर आता है? क्या जब उसका ख़याल आता है तो आप दीवाना हो जाते हैं?**

रही यह सवाल कि

मेरा क्या जवाब है?

इतने में इर्दगिर्द के बहुत-से लोगों को मालूम हुआ कि ईसा मसीह वहाँ है, और वह उससे मिलने आए। इसके अलावा वह लाज़र से भी मिलना चाहते थे। यह देखकर राहनुमा इमाम लाज़र को भी क़त्ल करने का मनसूबा बनाने लगे। क्योंकि उसकी वजह से बहुत-से लोग उनमें से चले गए और ईसा मसीह पर ईमान ले आए थे।

अब देखो कि किस तरह के लोग ईसा मसीह से मिलने आए। कुछ न उसके ख़िलाफ़, न उसके हक़ में थे। वह बस तमाशा देखना चाहते थे। दूसरे उसे देखकर ईमान लाए। लेकिन ऐसे लोग भी थे जो उसके दुश्मन थे। ज़्यादातर राहनुमा उसके दुश्मन थे। क्योंकि वह यह बरदाश्त नहीं कर सकते थे कि हमारे अपने लोग ईसा मसीह के पीछे हो लिए हैं।

सवाल यह है कि आप क्या सोचते हैं? ऐसा न हो कि आप यहूदाह की तरह हों। उसकी तरह जो मर्था और मरियम की-सी मुहब्बत नहीं रखता था। जो ठंडे दिल से अंदाज़ा लगाता रहता था कि मुझे उस्ताद से क्या फ़ायदा मिलेगा। लेकिन शायद आप उन लोगों जैसे हों जो सिर्फ़ तमाशा देखने उसके पास आए हैं।

ख़ुदा करे कि हम सब मर्था की तरह हों जो अपनी मुहब्बत पूरे जोश से ख़िदमत करने से दिखाती थी। कि हम मरियम जैसे दीवाना हों, जिसकी ख़िदमत से कोने कोने तक ख़ुशबू फैल गई।

इंजील, यूहन्ना 12:1-11

फ़सह की ईद में अभी छः दिन बाक़ी थे कि ईसा बैत-अनियाह पहुँचा। यह वह जगह थी जहाँ उस लाज़र का घर था जिसे ईसा ने मुरदों में से ज़िंदा किया था। वहाँ उसके लिए एक ख़ास खाना बनाया गया। मर्था खानेवालों की ख़िदमत कर रही थी जबकि लाज़र ईसा और बाक़ी मेहमानों के साथ खाने में शरीक था। फिर मरियम ने आधा लिटर ख़ालिस जटामासी का निहायत क़ीमती इत्र लेकर ईसा के पाँवों पर उंडेल दिया और उन्हें अपने बालों से पोंछकर ख़ुश्क किया। ख़ुशबू पूरे घर में फैल गई। लेकिन ईसा के शागिर्द यहूदाह इस्करियोती ने एतराज़ किया (बाद में उसी ने ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया)। उसने कहा, “इस इत्र की क़ीमत चाँदी के 300 सिक्के थी। इसे क्यों नहीं बेचा गया ताकि इसके पैसे ग़रीबों को दिए जाते?” उसने यह बात इसलिए नहीं की कि उसे ग़रीबों की फ़िकर थी। असल में वह चोर था। वह शागिर्दों का ख़ज़ानची था और जमाशुदा पैसों में से बददियानती करता रहता था।
लेकिन ईसा ने कहा, “उसे छोड़ दे! उसने मेरी तदफ़ीन की तैयारी के लिए यह किया है। ग़रीब तो हमेशा तुम्हारे पास रहेंगे, लेकिन मैं हमेशा तुम्हारे पास नहीं रहूँगा।”
इतने में यहूदियों की बड़ी तादाद को मालूम हुआ कि ईसा वहाँ है। वह न सिर्फ़ ईसा से मिलने के लिए आए बल्कि लाज़र से भी जिसे उसने मुरदों में से ज़िंदा किया था। इसलिए राहनुमा इमामों ने लाज़र को भी क़त्ल करने का मनसूबा बनाया। क्योंकि उसकी वजह से बहुत-से यहूदी उनमें से चले गए और ईसा पर ईमान ले आए थे।

ज़मीन में दाना
अल-मसीह के पीछे हो लेने का मतलब

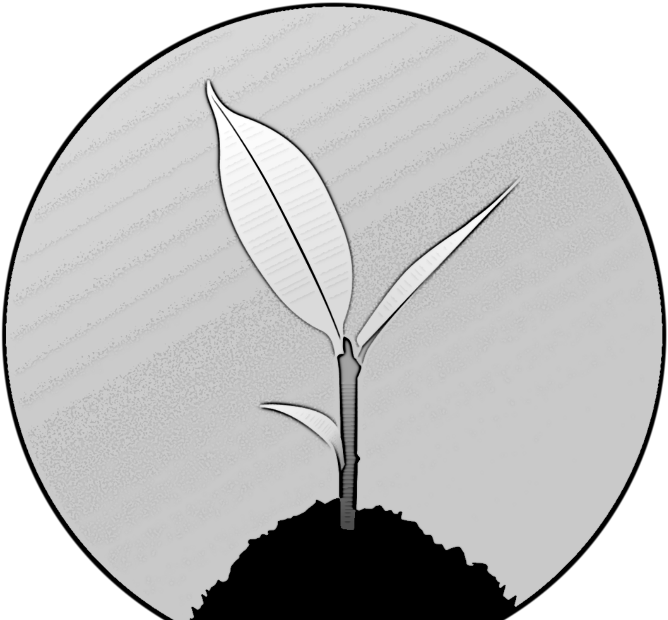

ईसा मसीह बैत-अनियाह में ठहरा हुआ था। यह गाँव यरूशलम शहर के नज़दीक था। वहाँ उसने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था। वहाँ लाज़र की बहन मरियम ने ईसा मसीह पर तेल उंडेलकर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया था।

फ़सह की बड़ी ईद क़रीब थी, इसलिए अनगिनत लोग दूर-दराज़ मुल्कों से यरूशलम आ चुके थे। यरूशलम में ईसा मसीह के दुश्मन भी ताक में बैठे थे। वहाँ उस पर क़ब्ज़ा करने के बहुत मौक़े थे।

ईसा मसीह उनकी साज़िशें ख़ूब जानता था। तो भी वह अगले दिन यरूशलम के लिए रवाना हुआ। एक बड़ी भीड़ साथ चल पड़ी। शहर से भी एक बड़ा हुजूम उससे मिलने निकल आया। बहुतों के हाथ में खजूर की डाली थी।

► **खजूर की डाली क्यों?**

खजूर की डाली ख़ुशी और फ़तह का निशान थी। खजूर की डालियों से वह अपनी तवक़्क़ो ज़ाहिर कर रहे थे कि ईसा मसीह यरूशलम में दाख़िल होकर बादशाह बनेगा। इसलिए वह चिल्लाकर नारे भी लगाने लगे,

> होशाना!
> मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!
> इसराईल का बादशाह मुबारक है! (यूहन्ना 12:13)

► **होशाना का क्या मतलब है?**

होशाना इबरानी है। इसका मतलब 'मेहरबानी करके हमें बचा!' है।

► **यह आम नारा नहीं है। यह नारा पाक कलाम का एक हवाला है। कौन-सा हवाला?**

यह नारा एक ज़बूर का हवाला है जो फ़सह की ईद पर गाया जाता था (ज़बूर 118:25-26)। यह गाकर लोग आनेवाले अल-मसीह को याद करते थे। 'इसराईल का बादशाह मुबारक है' उनकी तरफ़ से इज़ाफ़ा था।

► **वह यह क्यों चिल्ला रहे थे?**

इससे वह साफ़ एलान कर रहे थे कि ईसा आनेवाला अल-मसीह है, वह बादशाह जो दुश्मन को मुल्क से हटा देगा।

अब ध्यान दें कि ईसा मसीह ने जवाब में क्या किया, क्योंकि इससे हम एक अहम सबक़ सीखते हैं। यह कि

मसीह की हलीमी अपनाओ

ईसा मसीह एक जवान गधे पर बैठ गया।

► **वह गधे पर क्यों बैठ गया?**

यूहन्ना इसका जवाब देता है :

> जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,
> ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!
> देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।
> (यूहन्ना 12:15)

► **यह कलामे-मुक़द्दस का कौन-सा हवाला है?**

ज़करियाह नबी ने यह फ़रमाया था।

► **इससे यूहन्ना क्या कहना चाहता है?**

हम इसका मतलब बेहतर तौर से समझेंगे अगर हम ज़करियाह का पूरा हवाला पढ़ें। वहाँ लिखा है,

> ऐ सिय्यून बेटी, शादियाना बजा! ऐ यरूशलम बेटी, शादमानी के नारे लगा! देख, तेरा बादशाह तेरे पास आ रहा है। वह रास्तबाज़ और फ़तहमंद है, वह हलीम है और गधे पर, हाँ गधी के बच्चे पर सवार है। [...] मौऊदा बादशाह के कहने पर तमाम अक़वाम में सलामती क़ायम हो जाएगी। उसकी हुकूमत एक समुंदर से दूसरे तक और दरियाए-फ़ुरात से दुनिया की इंतहा तक मानी जाएगी। (ज़करियाह 9:9-10)

► **इससे आनेवाले बादशाह अल-मसीह के बारे में क्या क्या बातें निकलती हैं?**

- वह हलीम होगा। इसलिए वह गधे के बच्चे पर सवार होगा।
- वह तमाम अक़वाम में सलामती क़ायम करेगा।

- उसकी हुकूमत पूरी दुनिया पर होगी।

► **इस सोच में और यरूशलम के लोगों की सोच में क्या फ़रक़ थी?**

लोग एक जंगजू बादशाह चाहते थे जो दुश्मन से इंतक़ाम लेगा। इसके मुक़ाबले में ईसा मसीह गधे पर बैठकर एक और रास्ता दिखा रहा था—हलीमी का रास्ता, सलामती का रास्ता। बेशक उसकी हुकूमत बैनुल-अक़्वामी होगी, लेकिन यह अमनो-अमान की हुकूमत होगी। दूसरी क़ौमें भी इसमें शामिल होंगी।

उस वक़्त उसके शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन ईसा मसीह के जी उठने के बाद उन्हें समझ आई।

► **शागिर्दों को क्या बात समझ न आई? क्या हुजूम ने पहले से नहीं पुकारा था कि ईसा मसीह इसराईल का बादशाह है?**

ज़रूर। लेकिन उस वक़्त किसी को यह बात समझ न आई कि ईसा मसीह की राह हलीमी की राह है, वह राह जो सलीब तक पहुँचाएगी।

दूसरा सबक़ जो हम सीखते हैं,

मसीह से मिलो

कुछ यूनानी यरूशलम में थे। वह भी ईद मनाने के लिए आए थे।

► **यह यूनानी क्यों ईद मनाने आए थे? यह तो ग़ैरयहूदी थे जो यूनानी बोलते थे।**

यह लोग यहूदी मज़हब और शरीअत बहुत पसंद करते थे इसलिए उनकी ईदें मनाते थे।

अब वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए। उन्होंने कहा, “जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।”

► **यह ग़ैरयहूदी क्यों ईसा मसीह से मिलना चाहते थे?**

इंजील की ख़ुशख़बरी ग़ैरयहूदियों में भी फैलने लगी थी। उन्हें पता चल गया था कि यह आम राहनुमा नहीं है। इसलिए वह जानना चाहते थे कि क्या यह अल-मसीह है।

इन लोगों ने एक काम ठीक किया : वह ईसा मसीह से मिलने आए। जो इस दुनिया की तारीकी से नजात पाना चाहता है लाज़िम है कि वह ईसा मसीह से मिलने आए। यह पहला क़दम है।

► **क्या आप ईसा मसीह से मिलने आए हैं?**

यहूदियों की तरह यह लोग भी अंदाज़ा लगा रहे थे कि ईसा मसीह बड़ा बादशाह बनेगा। इसलिए बेहतर यह है कि हम पहले से उसके साथी बनें। अब ध्यान दें कि ईसा मसीह ने क्या जवाब दिया, क्योंकि यह बहुत अहम है। इससे हम तीसरा सबक़ सीख लेते हैं। यह कि

ज़मीन में दाना बनो, तब फल लाओगे

उसने फ़रमाया,

> अब वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम को जलाल मिले। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब तक गंदुम का दाना ज़मीन में गिरकर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत-सा फल लाता है। (यूहन्ना 12:23-24)

► **दाने की इस मिसाल का क्या मतलब है?**

गंदुम का दाना अगर ज़मीन में डाला न जाए तो अकेला ही रहता है। जब ज़मीन में डाला जाता है तो वह मर जाता है, तब ही कसरत का फल लाता है।

► **ईसा मसीह दाने की मिसाल से यूनानियों को क्या बताना चाहता था?**

तुम लोग देखना चाहते हो कि मैं इसराईल का जंगजू बादशाह बन जाऊँ। लेकिन मेरी राह फ़रक़ है। मैं ज़रूर जलाल पाऊँगा, मगर इस दुनिया में बड़ा बनने से नहीं। मेरी राह सलीब की राह है—वह राह जिससे मैं सचमुच कसरत का फल लाऊँगा। वह राह जिससे तुम सचमुच आज़ाद हो जाओगे, सचमुच अबदी ज़िंदगी पाओगे। जिससे सचमुच सलामती हासिल होगी। शर्त यह है कि तुम मुझ पर ईमान लाओ, मुझ पर जिसने हलीमी की यह राह अपनाई है।

लेकिन हलीमी की यह राह न सिर्फ़ ईसा मसीह की है। यह उसके शागिर्दों की भी है। इसलिए उसने फ़रमाया,

> जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनिया में अपनी जान से दुश्मनी रखता है वह उसे अबद तक महफ़ूज़ रखेगा। अगर कोई मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा। और जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उसकी इज़्ज़त करेगा।
> (यूहन्ना 12:25-26)

► **अपनी जान से दुश्मनी रखने का क्या मतलब है? क्या इसका मतलब यह है कि हम योगी बन जाएँ? कि हम अपने जिस्म को दबाते रहें, अपने अना को ख़त्म करने की कोशिश करें?**

नहीं, ईसा मसीह यहाँ अपने पीछे हो लेने की बात कर रहा था : जो अपनी जान को अव्वलियत देता है उसका आक़ा ईसा मसीह नहीं हो सकता। ऐसा शख़्स अपनी जान को खो देगा, यानी वह नजात नहीं पाएगा। इसके मुक़ाबले में अपनी जान से दुश्मनी रखने का मतलब यह है कि मैं ईसा मसीह को अव्वलियत दूँ। जो ऐसा करता है वह अपनी जान को अबद तक महफ़ूज़ रखेगा। ईसा मसीह के पीछे हो लेने का मतलब यही है : कि मैं उसकी ख़ातिर अपनी जान देने तक तैयार हूँ।

► **इसका क्या मतलब है कि 'जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा'?**

ईसा मसीह की राह हलीमी की राह है, ऐसी हलीमी जो सलीब तक पहुँचती है। जो उसका शागिर्द है उसकी भी यही राह है।

► **हलीमी की यह राह कैसी है?**

बड़ी बात यह है कि हम मसीह को प्यार करें, उसे अव्वलियत दें। तब हमारी जान महफ़ूज़ रहेगी, चाहे हम उसकी ख़िदमत में मर भी जाएँ। लेकिन अगर इस दुनिया की इज़्ज़त और दौलत हमारी ज़िंदगी में अव्वलियत रखे तो अपनी जान को अबद तक महफ़ूज़ रखने का चांस ही नहीं रहता। यों शागिर्द की राह ईसा मसीह की राह है।

सफ़दर अली एक ऐसा आदमी था जिसने ईसा मसीह को अव्वलियत दी। वह ऊँचे दर्जे का मौलवी था। ईसा मसीह के पीछे हो लेने से उसे सख़्त दिक़्क़त हुई। वह फ़रमाता है, मेरी क़ौम के लोगों ने मुझे दूध से मक्खी की मानिंद दूर फेंक दिया। उन्होंने मुहब्बत और क़राबत के तमाम वास्ते तोड़ डाले। किसी ने हमारे

अहलो-अयाल को बहकाया और भगाया। किसी ने नोट, किसी ने किताबें, किसी ने बहुत-से क़ीमती काग़ज़ों को चुराया। बाज़ों ने अच्छी तरह से भारी चलते-चलाते प्रेस को तुड़वाया। कोई रुपए और किताबें लेकर भाग गया। किसी ने प्रेस की कई हज़ार किताबों पर हमला करके कौड़ियों के मोल बिकवाया। किसी ने मालो-असबाब दबाया। किसी ने मकान ही दबवाया। और इसी तरह जिसके जो जी में आया कर गुज़रा। अब तक वह मेरा पीछा नहीं छोड़ते।

सफ़दर अली को पता चला कि ज़मीन में बीज बोने का क्या मतलब है।
सलीब की राह के बारे में हम एक और सबक़ सीखते हैं। यह कि

अपनी ज़िंदगी से ख़ुदा को जलाल दो

► **क्या सलीब की यह राह ईसा मसीह के लिए आसान थी?**
नहीं, वह हद से ज़्यादा परेशान था। उसने फ़रमाया,

> अब मेरा दिल मुज़तरिब है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, 'ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख'? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे। (यूहन्ना 12:27-28)

► **क्या उसने यह दुआ की कि मुझे मौत से बचा?**
नहीं।

► **क्यों नहीं?**
वह तो इसलिए आया था।

► **क्यों आया था?**
ताकि अपनी मौत से हमारी सज़ा उठाए, हमें गुनाह और मौत के क़ब्ज़े से छुड़ाए।

► **बचने के बजाए ईसा मसीह ने क्या दुआ की?**
ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।

► **सो हमारी सबसे बड़ी दुआ क्या होनी चाहिए?**
यह कि ख़ुदा हमारी ज़िंदगी से अपने नाम को जलाल दे।

तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, "मैं उसे जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल दूँगा।"

जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने यह सुनकर कहा, “बादल गरज रहे हैं।” औरों ने ख़याल पेश किया, “कोई फ़रिश्ता उससे हमकलाम हुआ है।”

► **क्या उन्हें समझ आई कि आवाज़ क्या कह रही है?**

नहीं। लेकिन वह समझ गए कि यह ख़ुदा की तरफ़ से जवाब है। ईसा मसीह ने फ़रमाया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी।” मतलब है ताकि तुम समझो कि यह बात अल्लाह तआला की तरफ़ से है।

लेकिन जो ईसा मसीह की यह राह नहीं अपनाता उसके साथ क्या होगा? उसे ईसा ने आगाह किया कि

अदालत से बचो

उसने फ़रमाया,

> अब दुनिया की अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया के हुक्मरान को निकाल दिया जाएगा। और मैं ख़ुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा।
> (यूहन्ना 12:31-33)

► **सलीब की राह किस क़िस्म की राह है?**

अदालत की राह।

► **किसकी अदालत की जाएगी?**

दुनिया की और दुनिया के हुक्मरान की।

► **दुनिया का हुक्मरान कौन है?**

इबलीस।

► **उसकी अदालत किस तरह की जाएगी?**

अपनी सलीबी मौत से ईसा मसीह उस पर फ़तह पाएगा।

► **क्या इसका मतलब है कि सलीबी मौत से इबलीस दुनिया का हुक्मरान नहीं रहा?**

नहीं। इसका मतलब है कि अब से उसकी तबाही यक़ीनी है, अब उसका थोड़ा वक़्त बाक़ी रह गया है (देखिए मुकाशफ़ा 12:12)।

► **दुनिया की अदालत किस तरह की जाएगी?**

जो ईसा मसीह की सलीबी मौत क़बूल करके उस पर ईमान लाएँगे वह अदालत से बच जाएँगे। जो इनकार करेंगे उनकी अदालत की जाएगी। उन्होंने ईसा मसीह की नजात क़बूल नहीं की, इसलिए वह अपने गुनाहों में तबाह हो जाएँगे।

► **मैं ख़ुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा : इसका क्या मतलब है?**

ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के दो मानी हैं। पहले, मसीह को सलीब पर चढ़ाया जाएगा। दूसरे, इस रास्ते से उसे आसमान पर उठा लिया जाएगा। वहाँ पहुँचकर वह उनको अपने पास खींच लाएगा जो उस पर ईमान लाए हैं। एक आख़िरी सबक़,

नूर में चलो, तब मसीह को जान लोगे

► **यह बात सुनकर लोगों ने क्या जवाब दिया?**

वह बोल उठे, "कलामे-मुक़द्दस से हमने सुना है कि मसीह अबद तक क़ायम रहेगा। तो फिर आपकी यह कैसी बात है कि इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आख़िर इब्ने-आदम है कौन?"

ईसा मसीह की बातें सुनकर लोग समझ गए कि मसीह वह कुछ नहीं करेगा जो हम चाहते हैं। इसलिए उन्होंने कहा कि आख़िर तुम कौन हो?

तब ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> नूर थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस नूर में चलते रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। नूर के तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम नूर के फ़रज़ंद बन जाओ। (यूहन्ना 12:35-36)

► **जब लोगों ने पूछा कि आख़िर तुम कौन हो तो ईसा मसीह ने यह जवाब क्यों दिया?**

कुछ बातें ऐसी हैं जो हम सिर्फ़ और सिर्फ़ ईसा मसीह के पीछे हो लेने से समझ सकते हैं। इसलिए वह फ़रमाता है कि नूर में चलते रहो। जो तारीकी में चलता है वह नहीं समझ सकता कि ईसा मसीह कौन है।

यह कहने के बाद ईसा चला गया और ग़ायब हो गया। वह क्यों ग़ायब हुआ? लोग उसकी बातों से मायूस हो रहे थे, क्योंकि सलीब की यह राह उन्हें नहीं भाती थी। साथ साथ अब ईसा मसीह की अलानिया ख़िदमत ख़त्म हुई। अब से उसकी तालीम शागिर्दों पर महदूद रही।

ईसा मसीह की यह बातें इत्तफ़ाक़ से नहीं हुई। अपनी अलानिया ख़िदमत के इख़्तिताम पर वह अपनी सलीबी राह पर ज़ोर देना चाहता था हालाँकि वह जानता था कि उस वक़्त यह उन्हें बेतुकी-सी लग रही थी। लेकिन यह बातें आज भी मसीह की पैरवी की बुनियाद रही हैं। इसलिए आओ,

- **मसीह की हलीमी अपनाओ।**
- **मसीह से मिलो।**
- **ज़मीन में दाना बनो, तब फल लाओगे।**
- **ख़ुदा को जलाल दो।**
- **अदालत से बचो।**
- **नूर में चलो, तब मसीह को जान लोगे।**

इंजील, यूहन्ना 12:12-36

अगले दिन ईद के लिए आए हुए लोगों को पता चला कि ईसा यरूशलम आ रहा है। एक बड़ा हुजूम खजूर की डालियाँ पकड़े शहर से निकलकर उससे मिलने आया। चलते चलते वह चिल्लाकर नारे लगा रहे थे,

> होशाना!
> मुबारक है वह जो रब के नाम से आता है!
> इसराईल का बादशाह मुबारक है!

ईसा को कहीं से एक जवान गधा मिल गया और वह उस पर बैठ गया, जिस तरह कलामे-मुक़द्दस में लिखा है,

> ऐ सिय्यून बेटी, मत डर!
> देख, तेरा बादशाह गधे के बच्चे पर सवार आ रहा है।

उस वक़्त उसके शागिर्दों को इस बात की समझ न आई। लेकिन बाद में जब ईसा अपने जलाल को पहुँचा तो उन्हें याद आया कि लोगों ने उसके साथ यह कुछ किया था और वह समझ गए कि कलामे-मुक़द्दस में इसका ज़िक्र भी है।

जो हुजूम उस वक़्त ईसा के साथ था जब उसने लाज़र को मुरदों में से ज़िंदा किया था, वह दूसरों को इसके बारे में बताता रहा था। इसी वजह से इतने लोग ईसा से मिलने के लिए आए थे, उन्होंने उसके इस इलाही निशान के बारे में सुना था। यह देखकर फ़रीसी आपस में कहने लगे, "आप देख रहे हैं कि बात नहीं बन रही। देखो, तमाम दुनिया उसके पीछे हो ली है।"

कुछ यूनानी भी उनमें थे जो फ़सह की ईद के मौक़े पर परस्तिश करने के लिए आए हुए थे। अब वह फ़िलिप्पुस से मिलने आए जो गलील के बैत-सैदा से था। उन्होंने कहा, "जनाब, हम ईसा से मिलना चाहते हैं।"

फ़िलिप्पुस ने अंदरियास को यह बात बताई और फिर वह मिलकर ईसा के पास गए और उसे यह ख़बर पहुँचाई। लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "अब वक़्त आ गया है कि इब्ने-आदम को जलाल मिले। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जब तक गंदुम का दाना ज़मीन में गिरकर मर न जाए वह अकेला ही रहता है। लेकिन जब वह मर जाता है तो बहुत-सा फल लाता है। जो अपनी जान को प्यार करता है वह उसे खो देगा, और जो इस दुनिया में अपनी जान से दुश्मनी रखता है वह उसे अबद तक महफ़ूज़ रखेगा। अगर कोई मेरी ख़िदमत करना चाहे तो वह मेरे पीछे हो ले, क्योंकि जहाँ मैं हूँ वहाँ मेरा ख़ादिम भी होगा। और जो मेरी ख़िदमत करे मेरा बाप उसकी इज़्ज़त करेगा।

अब मेरा दिल मुज़तरिब है। मैं क्या कहूँ? क्या मैं कहूँ, 'ऐ बाप, मुझे इस वक़्त से बचाए रख'? नहीं, मैं तो इसी लिए आया हूँ। ऐ बाप, अपने नाम को जलाल दे।"

तब आसमान से एक आवाज़ सुनाई दी, "मैं उसे जलाल दे चुका हूँ और दुबारा भी जलाल दूँगा।"

हुजूम के जो लोग वहाँ खड़े थे उन्होंने यह सुनकर कहा, "बादल गरज रहे हैं।" औरों ने ख़याल पेश किया, "कोई फ़रिश्ता उससे हमकलाम हुआ है।"

ईसा ने उन्हें बताया, “यह आवाज़ मेरे वास्ते नहीं बल्कि तुम्हारे वास्ते थी। अब दुनिया की अदालत करने का वक़्त आ गया है, अब दुनिया के हुक्मरान को निकाल दिया जाएगा। और मैं ख़ुद ज़मीन से ऊँचे पर चढ़ाए जाने के बाद सबको अपने पास खींच लूँगा।” इन अलफ़ाज़ से उसने इस तरफ़ इशारा किया कि वह किस तरह की मौत मरेगा।

हुजूम बोल उठा, “कलामे-मुक़द्दस से हमने सुना है कि मसीह अबद तक क़ायम रहेगा। तो फिर आपकी यह कैसी बात है कि इब्ने-आदम को ऊँचे पर चढ़ाया जाना है? आख़िर इब्ने-आदम है कौन?”

ईसा ने जवाब दिया, “नूर थोड़ी देर और तुम्हारे पास रहेगा। जितनी देर वह मौजूद है इस नूर में चलते रहो ताकि तारीकी तुम पर छा न जाए। जो अंधेरे में चलता है उसे नहीं मालूम कि वह कहाँ जा रहा है। नूर के तुम्हारे पास से चले जाने से पहले पहले उस पर ईमान लाओ ताकि तुम नूर के फ़रज़ंद बन जाओ।”

अल-मसीह पर ईमान
यह क्या है?

जब ईसा मसीह आख़िरी बार यरूशलम में दाख़िल हुआ तो उसका पुरजोश इस्तिक़बाल हुआ। लोग ख़ुशी मनाने लगे। उन्हें लगा कि ईसा मसीह बादशाह बनकर दुश्मन को मुल्क से हटा देगा। लेकिन उसने ऐसा न किया। उसने उन्हें बताया कि मेरी राह हलीमी की राह है। इसके बाद वह छिप गया। यों उसकी खुले-आम ख़िदमत इख़्तिताम पर पहुँचा। उस वक़्त से वह सिर्फ़ अपने शागिर्दों के महदूद दायरे में तालीम देने लगा।

इससे पहले कि यूहन्ना यह आख़िरी बातें पेश करता है वह मसीह की आमद का मक़सद और कलाम थोड़े लफ़्ज़ों में दोहराता है।

► **यूहन्ना इस जगह पर यह ख़ुलासा क्यों पेश करता है?**

यूहन्ना हमें साफ़ दिखाना चाहता है कि ईसा मसीह पर ईमान क्या चीज़ है। पहली बात,

ईसा मसीह को हक़ीर मत जानो

ईसा मसीह ने यह तमाम इलाही निशान लोगों के सामने ही दिखाए। तो भी वह उस पर ईमान न लाए। कितनी बड़ी त्रैजेडी! उसने इतने मोजिज़े कर दिखाए थे, तो भी अकसर लोग ईमान न लाए। सब उसका कलाम सुनकर दंग रह जाते थे। उनके दीनी राहनुमा तो इस तरह की बातें नहीं करते थे। तो भी अकसर लोग ईमान न लाए।

► **ईमान न लाने की क्या वजह थी?**

ईमान न लाने के पीछे एक रूहानी हक़ीक़त थी। सदियों पहले यसायाह नबी फ़रमा चुका था कि

> ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया?
> और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई?
> (यूहन्ना 12:38; यसायाह 53:1 से)

► **इसके पीछे रूहानी हक़ीक़त क्या है?**

अकसर लोग ख़ुदा के कलाम पर ईमान नहीं लाएँगे।

► **जब लोग उसका कलाम हक़ीर जानते हैं तो क्या ख़ुदा को इस से कोई फ़रक़ नहीं पड़ता?**

उसे ज़रूर फ़रक़ पड़ता है। यूहन्ना, यसायाह नबी का हवाला लेकर फ़रमाता है,

> अल्लाह ने उनकी आँखों को अंधा
> और उनके दिल को बेहिस कर दिया है,
> ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
> अपने दिल से समझें,
> मेरी तरफ़ रुजू करें
> और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।
> (यूहन्ना 12:40; यसायाह 6:9-10 से)

► **जब कोई ख़ुदा का कलाम हक़ीर जानता है तो ख़ुदा का क्या जवाब है?**

ख़ुदा होने देता है कि ऐसा शख़्स रूहानी बातों के लिए इतना अंधा और बेहिस हो जाए कि वह आइंदा शायद ही तौबा करके रूहानी शफ़ा पाए।

► **यूहन्ना लोगों का कुफ़र क्यों इतनी सख़्ती से पेश करता है?**

वह नहीं चाहता कि हम ईसा मसीह का कलाम और काम हक़ीर जानने से उस नजात से महरूम रह जाएँ जो ईसा मसीह के वसीले से मिलती है। आगे वह कुफ़र के बुरे नतीजों पर और ज़ोर देता है।

कुफ़र के बुरे नतीजे

यूहन्ना फ़रमाता है कि

> यसायाह ने यह इसलिए फ़रमाया क्योंकि उसने ईसा का जलाल देखकर उसके बारे में बात की। (यूहन्ना 12:41)

► **यसायाह नबी तो कई सदियों पहले मर चुका था। उसने किस तरह ईसा मसीह का जलाल देख लिया था?**

यूहन्ना का कहना है कि ख़ुदा और ईसा मसीह का जलाल एक ही है। जहाँ ख़ुदा बाप है वहाँ ख़ुदा बेटा भी होता है। जब नबी ने रोया में ख़ुदा का जलाल देखा तो उसने ईसा मसीह का जलाल भी देखा।

यों मसीह का जलाल नबी पर ज़ाहिर हुआ। तब ख़ुदा ने फ़रमाया कि मेरा पैग़ाम सुनाकर तू लोगों के दिलों को बेहिस कर डालेगा। नबी ने पूछा कि मैं कब तक कलाम सुनाऊँ? उसे जवाब मिला कि उस वक़्त तक कि मुल्क के शहर वीरानो-सुनसान, उसके घर ग़ैरआबाद और उसके खेत बंजर न हों (यसायाह 6:11)। यह पेशगोई नबी के जीते-जी पूरी हुई : इसराईल बरबाद हुआ और क़ौम मुख़्तलिफ़ मुल्कों में तित्तर-बित्तर हुई।

► **यूहन्ना इस हवाले से क्या कहना चाहता है?**

जिस तरह इसराईलियों ने यसायाह नबी का कलाम रद किया था उसी तरह अकसर लोगों ने ईसा मसीह का कलाम रद किया है। यसायाह नबी का पैग़ाम रद करने से लोगों के दिल रूहानी सच्चाइयों के लिए अंधे हो गए और नतीजे में पूरा मुल्क तबाह हुआ। इसी तरह ईसा मसीह का कलाम रद करने से लोगों के दिल रूहानी सच्चाइयों के लिए अंधे हो गए और बाद में पूरा मुल्क बरबाद हुआ, बेशुमार यहूदी मुख़्तलिफ़ मुल्कों में तित्तर-बित्तर हुए।

► **क्या आप समझते हैं कि ईसा मसीह एक अज़ीम नबी है और बस?**

यह काफ़ी नहीं है। इससे नजात नहीं मिलेगी। इससे आप गुनाह के बुरे नतीजों से नहीं बचेंगे। इससे आप ख़ुदा की नज़र में मंज़ूर नहीं हो जाएँगे, आप जन्नत में दाख़िल नहीं हो पाएँगे।

लेकिन यूहन्ना हमें एक और क़िस्म की बेईमानी से भी ख़बरदार रखना चाहता है। वह फ़रमाता है कि

अपना ईमान छिपाए मत रखो

पूरी क़ौम ने तो ईसा मसीह को रद नहीं किया था। काफ़ी लोग उस पर ईमान रखते थे। कुछ राहनुमा भी उनमें शामिल थे, हालाँकि वह दूसरों के बाइस यह बात खुले तौर से नहीं कहते थे।

► **यह राहनुमा क्यों खुले तौर से नहीं कहते थे कि हम ईमान रखते हैं?**

यूहन्ना फ़रमाता है कि वह नहीं चाहते थे कि उन्हें यहूदी जमात से निकाला जाए। वह अल्लाह की इज़्ज़त की निसबत इनसान की इज़्ज़त को ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे।

► **इससे हम क्या सीखते हैं?**

उन लोगों जैसे मत बनो जो ईमान तो लाए थे फिर भी यह बात छिपाए रखते थे। जब हम अपना ईमान छिपाते हैं तो हम ईसा मसीह को दुख पहुँचाते हैं। यूहन्ना फ़रमाता है कि यह नहीं चलेगा कि तुम अल्लाह की इज़्ज़त की निसबत इनसान की इज़्ज़त ज़्यादा अज़ीज़ रखो।

अब तक यूहन्ना ने खुले तौर से ईमान रखने पर ज़ोर दिया। लेकिन ईसा मसीह पर ईमान है क्या? इसका जवाब वह अब देता है। पहले,

नूर पाकर तारीकी से बचो

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैं नूर की हैसियत से इस दुनिया में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह तारीकी में न रहे। (यूहन्ना 12:46)

► **नूर का अंधेरे पर क्या असर होता है?**

जहाँ नूर की तेज़ रौशनी फैलती है वहाँ अंधेरा दूर हो जाता है। जिसके दिल में नूर बसने लगे उससे अंधेरा दूर हो जाता है।

► **नूर किस तरह मिलता है?**

ईसा मसीह पर ईमान लाने से। वह ख़ुद नूर है।

► **उस पर ईमान क्यों इतना ठोस है (आयत 44)?**

इसलिए कि उसे ख़ुदा बाप से भेजा गया है। जो उस पर ईमान रखे वह ख़ुदा बाप पर ईमान रखता है।

ग़रज़, ईसा मसीह ख़ुदा बाप से भेजा गया नूर है, और सिर्फ़ उसे पाने से इनसान तारीकी से बचेगा। यों पहला क़दम यह है कि हम इलाही नूर यानी मसीह को पाकर उससे भर जाएँ।

► **हम किस तरह यह नूर पा सकते हैं?**

ईसा मसीह और उसका कलाम क़बूल करने से। तब यह नूर हमारे अंदर फैलने लगता, चमकने-दमकने लगता है। दूसरी बात,

उसे देखते रहो

ईसा मसीह ने यह भी फ़रमाया,

> जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 12:45)

► **हम किस तरह ईसा मसीह को देख सकते हैं?**
ईमान लाने से वह हमारे दिलों में बसने लगता है। तब हम ईमान में उसे देख सकते हैं। और उसे देखकर हम ख़ुदा बाप को भी देख सकते हैं।

► **हम मसीह के ज़रीए ख़ुदा बाप को क्यों देख सकते हैं?**
इसलिए कि वह ख़ुदा का नूर है जो इस दुनिया में भेजा गया ताकि हमें रौशन करके बचाए। ख़ुदा बाप सूरज जैसा है जबकि ईसा मसीह उसकी रौशनी है, उसका नूर जो इस दुनिया में आ गया है। हम सूरज को सिर्फ़ नूर के ज़रीए देख सकते हैं।

► **ग़रज़ ईमानदार को क्या करना है?**
उसे बस मसीह को देखता रहना है जो नूर है। मसीह को देखने से उसकी ज़िंदगी नूर और पाकीज़गी से भर जाएगी। तीसरी बात,

उस की सुनते रहो

इनसान अपनी आँखों से देखता है। देखने से वह ख़ुदा का नूर पाता है। अब ईसा मसीह सुनने की बात भी छेड़ता है : इनसान अपने कानों से सुनता है, तब जवाब में चलने लगता है। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> जो मेरी बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता मैं उसकी अदालत नहीं करूँगा, क्योंकि मैं दुनिया की अदालत करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के लिए। तो भी एक है जो उसकी अदालत करता है। जो मुझे रद करके मेरी बातें क़बूल नहीं करता मेरा पेश किया गया कलाम ही क़ियामत के दिन उसकी अदालत करेगा। (यूहन्ना 12:47-48)

हम बहुत कुछ सुनने के आदी हो गए हैं। हमारे हुक्मरान बड़े बड़े वादे करते हैं जो बाद में अधूरे रह जाते हैं। इंटरनेट के दौर में हर एक ने अपने आपको अच्छी तरह पेश करना सीख लिया है। हर एक ने दूसरों को मनवाने का गुर अपना लिया है। बहुत कुछ सुनने में आता है जो हम सीधे ताक़ पर रखकर भूल जाते हैं। और सच कहें, अगर ऐसे न करते तो बार बार मायूस हो जाते। इसलिए ज़रूरी है कि हम मसीह की हिदायत पर ध्यान दें कि मेरी सुनो। मतलब है मेरी बातें सुनकर उन पर अमल करो। जिसके अंदर नूर है वह ख़ुद बख़ुद उसकी सुनता रहेगा। वह यह बातें महफ़ूज़ रखेगा, और उनका उसकी ज़िंदगी पर गहरा असर पड़ेगा।

ईसा मसीह की बातें ताक़ पर रखकर छोड़ेंगे तो समझ लो कि आप नहीं बचेंगे।

► **आप क्यों नहीं बचेंगे? क्या ईसा मसीह ने नहीं फ़रमाया था कि मैं अदालत करने नहीं आया?**

ज़रूर। बात यह है कि उसका कलाम ही आपकी अदालत करेगा। उसका कलाम रद करने से आपकी अदालत हो चुकी होगी।

► **लेकिन क्या हम उसकी सारी बातों पर अमल कर पाएँगे? क्या कुछ न कुछ अधूरा नहीं रहेगा?**

बेशक। बात यह नहीं है। अमल करने के पीछे जो यूनानी लफ़्ज़ है उसका मतलब महफ़ूज़ रखना भी है। अमल करने का पहला क़दम मसीह की बातें अपने दिल में महफ़ूज़ रखना है। जब हम नूर की धूप सेंकते रहते हैं तो उसका कलाम भी हमारे दिल में बैठकर फल लाता है। बड़ी बात यह नहीं कि हम हर बात पर पूरे उतरें। बड़ी बात यह है कि ईसा मसीह जो हमारा नूर है हमारे अंदर बसे और अपनी बातें हरकत में लाए। वह हमारा अज़ीम उस्ताद है, और वह जानता है कि हम उसके कमज़ोर शागिर्द हैं। बड़ी बात यह है कि वह हमारा हाथ थामे साथ चले।

► **क्या नूर आपके दिल में बसा हुआ है? क्या वह आपका हाथ थामे आपके साथ चल रहा है?**

यों यूहन्ना हमें आगाह करता है कि ईसा मसीह को हक़ीर मत जानो बल्कि उस पर ईमान लाओ। और यह ईमान छिपाए मत रखो। क्योंकि ईसा मसीह **नूर** है, और नूर की फ़ितरत यह है कि वह फैल जाए।

► **ईमानदार को क्या करना है?**

- पहले, उसे देखते रहो ताकि उसका नूर आप में फैलता जाए, आप में चमकता-दमकता रहे।
- दूसरे, उसकी आवाज़ सुनकर उसकी राहों पर चलते रहो। सबसे बड़ी बात यह कि उसका हाथ थामे रखो। तब जन्नत की राह यक़ीनी है।

हक़ीक़त में ईसा मसीह पर ईमान सबसे मुश्किल और सबसे आसान काम है।

► **उस पर ईमान सबसे मुश्किल काम क्यों है?**

जब हम उसके शागिर्द बन जाते हैं तो वह चाहता है कि हम अपना ईमान छिपाए न रखें। साथ साथ वह चाहता है कि हम उसकी राह पर चलें। मतलब है मुहब्बत की राह पर। हलीमी की राह पर।

लेकिन उस पर ईमान सबसे आसान काम भी है।

► **उस पर ईमान सबसे आसान काम क्यों है?**

हमें सिर्फ़ उस पर ईमान लाना है जो नूर है। तब वह हमारे अंदर फैलकर हमें अपनी मुहब्बत से भर देगा, हमारा हाथ थामे हमारे साथ चलेगा। अदालत के दिन जब उस का कलाम हमारा सामना करेगा तो हमें कोई नुक़सान नहीं पहुँचेगा, क्योंकि हमारे अंदर बसने वाला नूर हमें बचाए रखेगा। वही हमें जन्नत तक पहुँचाएगा।

इंजील, यूहन्ना 12:37-50

अगरचे ईसा ने यह तमाम इलाही निशान उनके सामने ही दिखाए तो भी वह उस पर ईमान न लाए। यों यसायाह नबी की पेशगोई पूरी हुई,

> ऐ रब, कौन हमारे पैग़ाम पर ईमान लाया?
> और रब की क़ुदरत किस पर ज़ाहिर हुई?

चुनाँचे वह ईमान न ला सके, जिस तरह यसायाह नबी ने कहीं और फ़रमाया है,

> अल्लाह ने उनकी आँखों को अंधा
> और उनके दिल को बेहिस कर दिया है,
> ऐसा न हो कि वह अपनी आँखों से देखें,
> अपने दिल से समझें,
> मेरी तरफ़ रुजू करें
> और मैं उन्हें शफ़ा दूँ।

यसायाह ने यह इसलिए फ़रमाया क्योंकि उसने ईसा का जलाल देखकर उसके बारे में बात की।

तो भी बहुत-से लोग ईसा पर ईमान रखते थे। उनमें कुछ राहनुमा भी शामिल थे। लेकिन वह इसका अलानिया इक़रार नहीं करते थे, क्योंकि वह डरते थे कि फ़रीसी हमें यहूदी जमात से ख़ारिज कर देंगे। असल में वह अल्लाह की इज़्ज़त की निसबत इनसान की इज़्ज़त को ज़्यादा अज़ीज़ रखते थे।

फिर ईसा पुकार उठा, "जो मुझ पर ईमान रखता है वह न सिर्फ़ मुझ पर बल्कि उस पर ईमान रखता है जिसने मुझे भेजा है। और जो मुझे देखता है वह उसे देखता है जिसने मुझे भेजा है। मैं नूर की हैसियत से इस दुनिया में आया हूँ ताकि जो भी मुझ पर ईमान लाए वह तारीकी में न रहे। जो मेरी बातें सुनकर उन पर अमल नहीं करता मैं उसकी अदालत नहीं करूँगा, क्योंकि मैं दुनिया की अदालत करने के लिए नहीं आया बल्कि उसे नजात देने के लिए। तो भी एक है जो उसकी अदालत करता है। जो मुझे रद करके मेरी बातें क़बूल नहीं करता मेरा पेश किया गया कलाम ही क़ियामत के दिन उसकी अदालत करेगा। क्योंकि जो कुछ मैंने बयान किया है वह मेरी तरफ़ से नहीं है। मेरे भेजनेवाले बाप ही ने मुझे हुक्म दिया कि क्या कहना और क्या सुनाना है। और मैं जानता हूँ कि उसका हुक्म अबदी ज़िंदगी तक पहुँचाता है। चुनाँचे जो कुछ मैं सुनाता हूँ वही कुछ है जो बाप ने मुझे बताया है।"

शैतानी ताकतों से कैसे बचूँ?

► **हम शैतानी ताक़तों से किस तरह निपट सकते हैं?**

हर एक का अपना ही तरीक़ा होता है। अकसर तावीज़ रखते हैं। बहुत लोग पीर के पास जाते हैं। अनगिनत और तरीक़े भी देखने में आते हैं।

► **इतने तरीक़े क्यों होते हैं?**

इसलिए कि हम सबको शैतानी ताक़तों का तजरिबा हुआ करता है। किसी की बुरी नज़र लग जाती है। या काले जादू से कोई हादसा होता है। कभी सपनों में, कभी जागते वक़्त शैतानी ताक़तें हमारे पल्ले पड़ती रहती हैं। लेकिन इनके क़ाबू में रहने की ज़रूरत नहीं है। इंजील शरीफ़ हमें इनसे बचने का हल बताती है।

► **इंजील शरीफ़ हमें इनसे बचने का क्या हल बताती है?**

आइए हम यूहन्ना की इंजील में पेश किए गए हल पर ग़ौर करें। फ़सह की ईद शुरू होनेवाली थी। ईसा मसीह जानता था कि थोड़ी देर बाद मुझे इस दुनिया को छोड़कर बाप के पास वापस जाना है।

► **ईसा मसीह को किस तरह ख़ुदा बाप के पास जाना था?**

सलीबी मौत के रास्ते से।

दिन ढलने लगा तो शाम का खाना तैयार हुआ। खाने में यहूदाह भी शरीक था, वही जो उसे दुश्मन के हवाले करेगा। ईसा मसीह को बहुत दुख हो रहा था क्योंकि वह यह जानता था। लेकिन वह यह भी जानता था कि मेरी सलीबी मौत ज़रूरी है। साथ साथ वह महसूस कर रहा था कि अब वक़्त आ गया है कि मैं अपने शागिर्दों को एक बहुत अहम सबक़ सिखाऊँ। उसने दस्तरख़ान से उठकर अपना लिबास उतार दिया और कमर पर तौलिया बाँध लिया। फिर बासन में पानी डालकर वह शागिर्दों के पाँव बारी बारी धो धोकर तौलिया से ख़ुश्क करने लगा। शागिर्द दंग रह गए।

► **वह क्यों दंग रह गए? क्या पाँव धोना आम-सा काम नहीं था?**

ज़रूर। क़दीम ज़माने के अकसर रास्ते पक्के नहीं थे। वह धूल और कीचड़ से भरे रहते थे। आम लोग या नंगे पाँव या चमड़े के चप्पल पहने सफ़र करते थे। ज़ाहिर है कि रोज़ाना अपने पाँवों को धोना पड़ता था। वैसे भी इस ख़ास मौक़े पर ज़रूरी था कि सब अपने पाँव धो लें।

► **तो फिर शागिर्द क्यों दंग रह गए?**

इसलिए कि उनका उस्ताद यह काम कर रहा था।

► **यह क्यों हैरानी की बात थी?**

ऐसा काम बहुत गंदा समझा जाता था। आम तौर पर शायद ही कोई ग़ुलाम या लौंडी दूसरों के पाँव धोती थी।

इसलिए जब उस्ताद ने अपना लिबास उतारकर कमर पर तौलिया बाँध लिया तो तमाम शागिर्द बुत बन गए। पतरस की बारी आई तो उसने कहा, "ख़ुदावंद, आप मेरे पाँव धोना चाहते हैं?"

ईसा मसीह ने जवाब दिया, "इस वक़्त तू नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में यह तेरी समझ में आ जाएगा।"

पतरस बोला, "मैं कभी भी आपको मेरे पाँव धोने नहीं दूँगा!"

► **पतरस अपने एतराज़ से क्या कहना चाहता है?**

- पहले, यह शर्म की बात है कि आप हमारे पाँव धो रहे हैं।
- दूसरे, ऐ उस्ताद, आप यह क्यों कर रहे हैं? हम तो आपके एजंट, आपके वज़ीर हैं। हम ही बेहतर जानते हैं कि आपको क्या करना है। बस हम पर सारा मामला छोड़ दो।

► **क्या आप ऐसे लोग जानते हैं जो अपने आपको ख़ुदा के एजंट समझते हैं?**

लेकिन ईसा मसीह की सोच हमारी सोच से बहुत फ़रक़ है। उसने क्या जवाब दिया? जवाब यह दिया कि

मुझसे पाक-साफ़ हो जाओ

उसने फ़रमाया, "अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरा कोई हिस्सा नहीं होगा।"

► **इसका क्या मतलब है?**

ज़रूरी है कि मैं ही तुझे धोऊँ। मेरा यह काम क़बूल करो तब ही तेरा मेरे साथ हिस्सा होगा।

- **मसीह के साथ हिस्सा होने का क्या मतलब है?**

  जब मेरा मसीह के साथ हिस्सा है तो मैं उसके घर का हूँ, उसके घरवालों में से हूँ।

- **उसका घर कहाँ है?**

  ख़ुदा के पास। जन्नत कह लें या आसमान।

- **क्या हम अपनी कोशिशों से उसके घरवाले बन सकते हैं?**

  कभी भी नहीं। लाज़िम है कि हम पहले अपने गुनाहों से पाक-साफ़ होकर शैतानी ताक़तों से आज़ाद हो जाएँ।

- **धोने से ईसा मसीह अपने एक ख़ास काम की तरफ़ इशारा कर रहा था। वह क्या है?**

  वह अपनी सलीबी मौत की तरफ़ इशारा कर रहा था।

- **सलीबी मौत क्यों धोने की तरह है?**

  उसकी सलीबी मौत हमें गुनाहों की गंद से धोकर शैतानी ताक़तों से छुड़ा देती है।

- **सलीबी मौत का रास्ता क्यों ज़रूरी था?**

  हम अपने नेक कामों से ख़ुदा को मनवा नहीं सकते कि वह हमें जहन्नुम से छूट दे। कोई भी इनसान दावा नहीं कर सकता कि उसने अपने नेक कामों से अपने बुरे कामों को ढाँप दिया है।

- **वह क्यों यह दावा नहीं कर सकता?**

  इसलिए कि हमारे तमाम नेक काम नाकाफ़ी हैं। हमारे बुरे कामों की गंद हमसे लिपटी रहती है और इन्हीं की वजह से हम शैतानी ताक़तों से घेरे रहते हैं। जिस तरह मक्खियाँ गले-सड़े खाने के इर्दगिर्द भिभिनाती रहती हैं, उसी तरह शैतानी ताक़तें हमारे बुरे कामों के बाइस हमारे इर्दगिर्द भिभिनाती रहती हैं। जब तक यह गंद दूर न हो जाए कोई सहारा नहीं है।

किसी लड़के का ज़िक्र है जो ध्यान न देकर खुले गटर में गिर गया। शुक्र है कि बच गया। मगर जब निकला तो उसकी हालत क़ाबिले-रहम थी। पूरा बदन गंदे पानी से काला था, और बदबू चारों तरफ़ फैल गई।

- **पहला काम क्या था, जो उसने किया?**

  उसने अच्छी तरह नहा लिया।

- **क्या यह काफ़ी न होता अगर वह नहाने के बजाए अपने ऊपर ख़ुशबू छिड़कता?**

  कभी नहीं। ख़ुशबू छिड़कने से गंद दूर नहीं होती। बहुत इमकान भी होता कि वह बीमार पड़ जाता। यही हमारी ख़ुदा के सामने हालत है। हम अपने नेक कामों की ख़ुशबू से वह गंद दूर नहीं कर सकते जो हमारे बुरे कामों से हमसे लतपत हो गई है। ख़ुशबू के बावुजूद यह बदबू रहती है। ख़ुशबू के बावुजूद शैतानी ताक़तें हमें घेरे रखती हैं। पहले नहाने की ज़रूरत है, पाक-साफ़ हो जाने की ज़रूरत है। तब ही ख़ुशबू ठीक काम करेगी। तब ही शैतानी ताक़तें हमें छोड़ जाएँगी। इसलिए ईसा मसीह इस दुनिया में उतर आया। उसने वह काम किया जो हम न कर पाए। सिर्फ़ उसका यह काम हमें धोकर हमारे बुरे कामों की गंद दूर कर सकता है। उससे हमारे गुनाह न सिर्फ़ माफ़ हो जाते हैं। उन्हें मिटाया भी जाता है।

- **वह किस तरह मिटाए जाते हैं?**

  इससे कि ईसा मसीह ने सलीब पर हमारे गुनाहों की सज़ा उठा ली है। ज्योंही हम उस पर ईमान लाते हैं हमारे गुनाह मिट जाते हैं, हम ख़ुदा के सामने पाक-साफ़ होकर शैतानी ताक़तों से आज़ाद हो जाते हैं।

  कभी कभी जब गटर बंद हो जाए तो किसी आदमी को गटर के पानी में उतरकर उसे खोलना पड़ता है। देखो, ईसा मसीह उस जैसा आदमी है। वह जो नूर है, जो सरासर पाक है इस दुनिया के गंदे गटर में उतर आया ताकि हमारे बुरे कामों की गंद दूर करके हमें शैतानी ताक़तों से बचाए।

- **क्या आपने धोने का यह काम क़बूल कर लिया है?**

  ऐसा काम सिर्फ़ वह कर सकता है जो सरासर नूर, सरासर पाक है।

- **छोटे बच्चे की मिसाल लो। क्या छोटा बच्चा अपने पाँवों पर खड़ा हो सकता है?**

  नहीं। छोटा बच्चा अपने माँ-बाप का एक काम भी नहीं कर सकता। माँ-बाप पैसे कमाते, उसकी देख-भाल करते, उसे खाना खिलाते, उसे नहाते हैं। यही ख़ुदा के सामने हमारा हाल है।

- **हम ख़ुदा के सामने किस तरह बच्चे जैसे होते हैं?**

हम अपने आपको छुड़ा नहीं सकते। यही बात ईसा मसीह पतरस को बताना चाहता था : तू नजात का यह काम नहीं कर सकता। छोटे बच्चे की तरह अपने हाथ मेरी तरफ़ फैला दे ताकि मैं तुझे धो दूँ, तुझे अपनी गोद में लेकर शैतानी ताक़तों से बचाए रखूँ।

ईसा मसीह के सामने यही हमारी हालत है। दुनिया में हम न उसके नुमाइंदे न उसके वज़ीर हैं। हम सिर्फ़ उसके क़र्ज़दार हैं। क्योंकि उसी ने सब कुछ हमारी ख़ातिर किया है। हम अपनी नजात के लिए कुछ नहीं कर सकते। न नेक काम न हदिये हमें नजात दिला सकते हैं। ख़ुदा के सामने न हम किसी और पर इलज़ाम लगा सकते हैं न कोई तक़ाज़ा कर सकते हैं। उसके सामने हम सब गुनाहगार ही हैं। इसलिए हमें उसकी ज़रूरत है जिसने हमारी जगह हमारी सज़ा बरदाश्त की।

► **क्या आपने ईसा मसीह का पाक-साफ़ करनेवाला काम क़बूल किया है?**
पतरस जैसा मत बनो। उसने सोचा, मुझसे ही धोने का काम हो जाएगा। मैं ही आपके लिए लड़ूँगा। मुझे आपकी मदद की क्या ज़रूरत है? आपको तो मेरी ही मदद की ज़रूरत है।

► **क्या आप पतरस की तरह सोचते हैं कि मुझसे सब कुछ हो जाएगा? या क्या आपने अपनी ज़िंदगी मसीह के सुपुर्द की है?**
अपनी कोशिशों को छोड़ दो। अपने आप पर भरोसा मत करो। सिर्फ़ उस पर पूरा भरोसा करने से आप शैतानी ताक़तों से बच जाएँगे। सिर्फ़ उस पर एतमाद करने से आप अदालत के दिन बच जाएँगे।

लेकिन ईसा मसीह एक और बात भी बताना चाहता है। यह कि

रोज़ाना पाक-साफ़ हो जाओ

► **जब ईसा मसीह ने फ़रमाया कि मैं ही पाक-साफ़ करने का यह काम कर सकता हूँ तो पतरस ने क्या जवाब दिया?**
वह बोला, “तो फिर ख़ुदावंद, न सिर्फ़ मेरे पाँवों बल्कि मेरे हाथों और सर को भी धोएँ!”

► **क्या आपने कुछ महसूस किया?**
पतरस अब तक उस्ताद को बताना चाहता था कि उसे क्या करना है।

► **तब ईसा मसीह ने क्या जवाब दिया?**

> जिस शख़्स ने नहा लिया है उसे सिर्फ़ अपने पाँवों को धोने की ज़रूरत होती है, क्योंकि वह पूरे तौर पर पाक-साफ़ है। तुम पाक-साफ़ हो, लेकिन सबके सब नहीं। (यूहन्ना 13:10)

► **इसका क्या मतलब है? क्या वजह है कि सिर्फ़ अपने पाँवों को धोने की ज़रूरत होती है?**

इसमें दो बातें जुड़ी हुई हैं :

- ईमान लाने से हम उसकी सलीबी मौत से एक बार सदा के लिए पाक-साफ़ हो जाते हैं। इससे हमें नजात यक़ीनी है।
- फिर भी रोज़ाना इसकी ज़रूरत है कि हम उसके हुज़ूर आकर उससे पाक-साफ़ किए जाएँ। जब तक हम दुनिया की गंदी गलियों में फिरते चलेंगे तब तक हमारे पाँव बार बार धूल और कीचड़ से लतपत हो जाएँगे, तब तक हमसे ग़लतियाँ होती रहेंगी। इसलिए ज़रूरी है कि हम रोज़ाना उससे मिन्नत करें कि वह हमारे पाँवों को धोए। वरना ख़तरा है कि हम आहिस्ता आहिस्ता दुबारा शैतानी ताक़तों की ज़द में आ जाएँ।

मेरे दोस्त, पतरस जैसे मत बनो। ईसा मसीह को मत बताना कि उसे क्या करना है। चुप रहो और उसे तकते रहो। उसी की आवाज़ सुनते रहो। क़बूल करो कि वही आपको रोज़ाना पाक-साफ़ कर सकता है। वही आपको रोज़ाना शैतानी ताक़तों से महफ़ूज़ रख सकता है।

► **लेकिन ईसा मसीह का क्या मतलब था कि सबके सब पाक-साफ़ नहीं हैं?**

यहूदाह इस्करियोती पाक-साफ़ नहीं था।

► **इससे हम क्या नतीजा निकाल सकते हैं?**

अनगिनत लोग ईसा मसीह के शागिर्द कहलाते हैं लेकिन झूठे शागिर्द हैं। यहूदाह इनमें से एक था। वह पाक-साफ़ नहीं हो सकता था। वह शैतानी ताक़तों से बच नहीं सकता था।

► **क्यों?**

उसके दिल ने ईसा मसीह को रद किया था। अपनी सलीबी मौत से ईसा मसीह ने हमें पाक-साफ़ करने का काम सरंजाम दिया। लेकिन सिर्फ़ वह नजात पाता है जो उसका यह काम क़बूल करता है।

► **क्या आपने मसीह की यह नजात क़बूल की है?**

तब ईसा मसीह ने एक तीसरी बात फ़रमाई। यह कि

मेरी ख़ादिमाना रूह अपनाओ

सबके पाँव धोने के बाद ईसा मसीह दुबारा अपना लिबास पहनकर बैठ गया। उसने फ़रमाया,

> क्या तुम समझते हो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या किया है? तुम मुझे 'उस्ताद' और 'ख़ुदावंद' कहकर मुख़ातिब करते हो और यह सही है, क्योंकि मैं यही कुछ हूँ। मैं, तुम्हारे ख़ुदावंद और उस्ताद ने तुम्हारे पाँव धोए। इसलिए अब तुम्हारा फ़र्ज़ भी है कि एक दूसरे के पाँव धोया करो। मैंने तुमको एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैंने तुम्हारे साथ किया है। मैं तुमको सच बताता हूँ कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैग़ंबर अपने भेजनेवाले से। अगर तुम यह जानते हो तो इस पर अमल भी करो, फिर ही तुम मुबारक होगे। (यूहन्ना 13:12-17)

► **शागिर्दों का क्या फ़र्ज़ है?**

फ़र्ज़ यह है कि वह एक दूसरे के पाँव धोया करें।

► **क्यों?**

इसलिए कि उनके उस्ताद और ख़ुदावंद ने यह काम किया।

► **क्या बड़ों के पाँव धोने पर ज़्यादा ध्यान देना चाहिए?**

नहीं। सब बराबर हैं, चाहे बड़े हों या छोटे।

► **क्यों?**

क्योंकि उस्ताद और ख़ुदावंद ने शागिर्दों की ख़ातिर यह काम किया है।

► **हम किस तरह एक दूसरे के पाँव धोते हैं?**

इससे कि हम सबकी बराबर ख़िदमत करते हैं। ईसा मसीह यह तक़ाज़ा नहीं करता कि हम उसकी तरह अपनी जान देकर दूसरे को पाक-साफ़ करें। यह हम कर ही नहीं सकते। लेकिन जब उसने हमारे लिए नजात का काम सरंजाम दिया तो क्या हमें उसके नमूने पर नहीं चलना चाहिए?

साथ साथ ईसा मसीह ने एक वादा भी किया,

> जो शख़्स उसे क़बूल करता है जिसे मैंने भेजा है वह मुझे क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल करता है वह उसे क़बूल करता है जिसने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 13:20)

► **इस वादे का क्या मतलब है?**

जो भी मसीह के नाम में आता है उसे क़बूल करना है। जब हम उसे क़बूल करते हैं तो हम मसीह को और उसमें ख़ुदा बाप को क़बूल करते हैं। तब ही हमें कसरत से बरकत मिलती है। एक दूसरे की ख़िदमत करने से हम तक़वियत भी पाते हैं, वह तक़वियत जिससे हम शैतानी ताक़तों से महफ़ूज़ रहते हैं।

आख़िरी बात जो ईसा मसीह हमें बताना चाहता है :

शैतानी ताक़तों से मेरी हिफ़ाज़त क़बूल करो

अब ईसा मसीह मुज़तरिब होने लगा। वह बोला, "मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।"

► **ईसा मसीह ने यह क्यों फ़रमाया? अगर यह होना ही था तो यह कहने से क्या फ़रक़ पड़ता था?**

- वह चाहता था कि हर एक अपने आपको परखे।
- वह यहूदा को तौबा करने का एक आख़िरी मौक़ा देना चाहता था।

शागिर्द उलझन में पड़ गए। तब एक शागिर्द ने ईसा मसीह की तरफ़ सर झुकाकर पूछा, "ख़ुदावंद, यह कौन है?"

ईसा मसीह ने जवाब दिया, "जिसे मैं रोटी का लुक़मा शोरबे में डुबोकर दूँ, वही है।" फिर लुक़मे को डुबोकर उसने यहूदाह इस्करियोती को दे दिया। ज्योंही यहूदाह ने यह लुक़मा ले लिया इबलीस उसमें समा गया। उस्ताद ने उसे बताया, "जो कुछ करना है वह जल्दी से कर ले।" दूसरों को मालूम न हुआ कि उस्ताद ने यह क्यों कहा। लेकिन लुक़मा लेते ही यहूदाह बाहर निकल गया। रात का वक़्त था।

► **लुक़मा लेने से हम यहूदाह के बारे में क्या सीखते हैं?**

लुक़मा लेने से यहूदाह ने अपनी ग़लत राह पर चलने का इसरार किया। मसीह ने पाक-साफ़ हो जाने की दावत दी पर यहूदाह ने यह दावत रद की। मसीह ने यहूदाह को तौबा करने का आख़िरी मौक़ा दिया पर यहूदाह ने इनकार किया। नतीजे में वह इबलीस के पूरे क़ब्ज़े में आ गया। अब वह ईसा मसीह

की हिफ़ाज़त से निकलकर इबलीस के राज में आ गया। अब वापस आना नामुमकिन हो गया। रात का वक़्त था, और यहूदा के दिल में भी अंधेरा ही अंधेरा था।

► **क्या आपको ईसा मसीह की हिफ़ाज़त हासिल है?**

पहले क़बूल करो कि वही आपको पाक-साफ़ कर सकता है। हाँ, वही आपको रोज़ाना पाक-साफ़ कर सकता है। वही आपको ख़िदमत की वह रूह दे सकता है जिससे सब पर बरकत बरसेगी। और वही आपकी शैतानी ताक़तों से हिफ़ाज़त कर सकता है।

इंजील, यूहन्ना 13:1-30

फ़सह की ईद अब शुरू होनेवाली थी। ईसा जानता था कि वह वक़्त आ गया है कि मुझे इस दुनिया को छोड़कर बाप के पास जाना है। गो उसने हमेशा दुनिया में अपने लोगों से मुहब्बत रखी थी, लेकिन अब उसने आख़िरी हद तक उन पर अपनी मुहब्बत का इज़हार किया।

फिर शाम का खाना तैयार हुआ। उस वक़्त इबलीस शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह के दिल में ईसा को दुश्मन के हवाले करने का इरादा डाल चुका था। ईसा जानता था कि बाप ने सब कुछ मेरे सुपुर्द कर दिया है और कि मैं अल्लाह में से निकल आया और अब उसके पास वापस जा रहा हूँ। चुनाँचे उसने दस्तरख़ान से उठकर अपना लिबास उतार दिया और कमर पर तौलिया बाँध लिया। फिर वह बासन में पानी डालकर शागिर्दों के पाँव धोने और बँधे हुए तौलिया से पोंछकर ख़ुश्क करने लगा। जब पतरस की बारी आई तो उसने कहा, "ख़ुदावंद, आप मेरे पाँव धोना चाहते हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, "इस वक़्त तू नहीं समझता कि मैं क्या कर रहा हूँ, लेकिन बाद में यह तेरी समझ में आ जाएगा।"

पतरस ने एतराज़ किया, "मैं कभी भी आपको मेरे पाँव धोने नहीं दूँगा!"

ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैं तुझे न धोऊँ तो मेरे साथ तेरा कोई हिस्सा नहीं होगा।"

यह सुनकर पतरस ने कहा, “तो फिर ख़ुदावंद, न सिर्फ़ मेरे पाँवों बल्कि मेरे हाथों और सर को भी धोएँ!”

ईसा ने जवाब दिया, “जिस शख़्स ने नहा लिया है उसे सिर्फ़ अपने पाँवों को धोने की ज़रूरत होती है, क्योंकि वह पूरे तौर पर पाक-साफ़ है। तुम पाक-साफ़ हो, लेकिन सबके सब नहीं।” (ईसा को मालूम था कि कौन उसे दुश्मन के हवाले करेगा। इसलिए उसने कहा कि सबके सब पाक-साफ़ नहीं हैं।)

उन सबके पाँव धोने के बाद ईसा दुबारा अपना लिबास पहनकर बैठ गया। उसने सवाल किया, “क्या तुम समझते हो कि मैंने तुम्हारे लिए क्या किया है? तुम मुझे ‘उस्ताद’ और ‘ख़ुदावंद’ कहकर मुख़ातिब करते हो और यह सही है, क्योंकि मैं यही कुछ हूँ। मैं, तुम्हारे ख़ुदावंद और उस्ताद ने तुम्हारे पाँव धोए। इसलिए अब तुम्हारा फ़र्ज़ भी है कि एक दूसरे के पाँव धोया करो। मैंने तुमको एक नमूना दिया है ताकि तुम भी वही करो जो मैंने तुम्हारे साथ किया है। मैं तुमको सच बताता हूँ कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता, न पैग़ंबर अपने भेजनेवाले से। अगर तुम यह जानते हो तो इस पर अमल भी करो, फिर ही तुम मुबारक होगे।

मैं तुम सबकी बात नहीं कर रहा। जिन्हें मैंने चुन लिया है उन्हें मैं जानता हों। लेकिन कलामे-मुक़द्दस की इस बात का पूरा होना ज़रूर है, ‘जो मेरी रोटी खाता है उसने मुझ पर लात उठाई है।’ मैं तुमको इससे पहले कि वह पेश आए यह अभी बता रहा हूँ, ताकि जब वह पेश आए तो तुम ईमान लाओ कि मैं वही हूँ। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो शख़्स उसे क़बूल करता है जिसे मैंने भेजा है वह मुझे क़बूल करता है। और जो मुझे क़बूल करता है वह उसे क़बूल करता है जिसने मुझे भेजा है।”

इन अलफ़ाज़ के बाद ईसा निहायत मुज़तरिब हुआ और कहा, “मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुममें से एक मुझे दुश्मन के हवाले कर देगा।”

शागिर्द उलझन में एक दूसरे को देखकर सोचने लगे कि ईसा किसकी बात कर रहा है। एक शागिर्द जिसे ईसा प्यार करता था उसके क़रीबतरीन बैठा

था। पतरस ने उसे इशारा किया कि वह उससे दरियाफ़्त करे कि वह किसकी बात कर रहा है।

उस शागिर्द ने ईसा की तरफ़ सर झुकाकर पूछा, "ख़ुदावंद, यह कौन है?"

ईसा ने जवाब दिया, "जिसे मैं रोटी का लुक़मा शोरबे में डुबोकर दूँ, वही है।" फिर लुक़मे को डुबोकर उसने शमाऊन इस्करियोती के बेटे यहूदाह को दे दिया। ज्योंही यहूदाह ने यह लुक़मा ले लिया इबलीस उसमें समा गया। ईसा ने उसे बताया, "जो कुछ करना है वह जल्दी से कर ले।" लेकिन मेज़ पर बैठे लोगों में से किसी को मालूम न हुआ कि ईसा ने यह क्यों कहा। बाज़ का ख़याल था कि चूँकि यहूदाह ख़ज़ानची था इसलिए वह उसे बता रहा है कि ईद के लिए दरकार चीज़ें ख़रीद ले या ग़रीबों में कुछ तक़सीम कर दे। चुनाँचे ईसा से यह लुक़मा लेते ही यहूदाह बाहर निकल गया। रात का वक़्त था।

अल-मसीह की नई बिरादरी

एक शाम ईसा मसीह ने दस्तरख़ान से उठकर अपने शागिर्दों के पाँव धो दिए।

► **इससे वह हमें क्या सिखाना चाहता था?**

यह कि तुम सबको मेरी ख़िदमत की ज़रूरत है—पाक-साफ़ करने की ख़िदमत। मेरा शागिर्द बनने की बस एक ही शर्त है—यह कि तुम मेरी यह ख़िदमत क़बूल करो। यह न सोचो कि तुम अपनी कोशिशों से पाक-साफ़ हो सकते हो। मेरी ख़िदमत क़बूल करो। तब ही तुम शैतानी ताक़तों से महफ़ूज़ रहोगे। तब ही तुम अदालत के दिन बच जाओगे। तब ही तुम ख़ुद भी यह ख़िदमत करना सीख जाओगे। क्योंकि एक दूसरे की ख़िदमत मेरे घरवालों का लासानी निशान है।

एक था जो मसीह की यह ख़िदमत क़बूल करने के लिए तैयार नहीं था—यहूदाह। नतीजे में उसका दिल अंधेरा हो गया और वह इबलीस के क़ब्ज़े में आ गया। तब वह चला गया ताकि मसीह को दुश्मन के हवाले करे।

अब मसीह ने एक नया मज़मून छेड़ा।

► **कौन-सा मज़मून?**

यह कि मेरी मौत और जी उठने से एक नया ज़माना शुरू होगा। एक नई बिरादरी क़ायम हो जाएगी। इसमें तीन बातें अहम हैं। पहली बात,

नई बिरादरी की शान पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> अब इब्ने-आदम ने जलाल पाया और अल्लाह ने उसमें जलाल पाया है। (यूहन्ना 13:31)

► **इब्ने-आदम कौन है?**

इब्ने-आदम ईसा मसीह है जिसके बारे में दानियाल नबी ने सदियों पहले रोया देखकर फ़रमाया था कि

> आसमान के बादलों के साथ साथ कोई आ रहा है जो इब्ने-आदम-सा लग रहा है। जब क़दीमुल-ऐयाम के क़रीब पहुँचा तो उसके हुज़ूर लाया गया। उसे सलतनत, इज़्ज़त और बादशाही दी गई, और हर क़ौम, उम्मत और ज़बान के अफ़राद ने उसकी परस्तिश की। उसकी हुकूमत अबदी है और कभी ख़त्म नहीं होगी। उसकी बादशाही कभी तबाह नहीं होगी। (दानियाल 7:13-14)

► **क़दीमुल-ऐयाम कौन है?**
ख़ुदा जिसके सामने इब्ने-आदम को लाया गया। यानी ईसा मसीह अपनी जान देने के बाद जी उठा और दुबारा ख़ुदा बाप के हुज़ूर आया।

► **किसने जलाल पाया?**
ईसा मसीह और ख़ुदा बाप दोनों ने जलाल पाया।

► **ईसा मसीह ने किस तरह जलाल पाया?**
अपनी जान हमारी ख़ातिर देकर जी उठने से।

► **ख़ुदा बाप को किस तरह जलाल मिल गया?**
उसने अज़ल से अपने फ़रज़ंद को इस दुनिया में भेजने का मनसूबा बनाया था। सब कुछ उसके मनसूबे के तहत हुआ था। यों उसे अपने फ़रज़ंद में जलाल मिल गया।

यह कितना अज़ीम मनसूबा था! उसका फ़रज़ंद अपनी शानो-शौकत छोड़कर इस दुनिया में उतर आया ताकि नाक़िस इनसान की ख़ातिर अपनी जान दे। यह कैसी गहरी मुहब्बत थी! उसने हमें बचाया, हम जो इस लायक़ नहीं थे।

यूहन्ना की पूरी इंजील इसी पर ज़ोर देती है : कि ख़ुदा बाप ने अपने फ़रज़ंद के वसीले से ऐसा काम किया जो इनसान की आम सोच से कहीं दूर है। इनसान अपने आपको बड़ा बनाना चाहता है। इसके बरअक्स ख़ुदा के फ़रज़ंद ने आसमानी जलाल से उतरकर अपने आपको पस्त कर दिया और मौत तक ताबे रहा। इसी से उसने जलाल पाया।

इनसान को ज़्यादातर अपनी ही फ़िकर रहती है। उसकी मुहब्बत का दायरा बहुत महदूद रहती है। ख़ुदा फ़रक़ है। उसे हम सबकी फ़िकर रहती है। वह नहीं चाहता था कि हम सब जन्नत की ख़ुशियों से महरूम रह जाएँ। इसलिए उसने अपने फ़रज़ंद

के वसीले से हमें गुनाह और मौत के पंजे से छुड़ाया। उसकी इस गहरी मुहब्बत से उसका लासानी जलाल ज़ाहिर होता है।

लेकिन अब ध्यान दें। पसे-परदा ईसा मसीह एक और बात भी अपने शागिर्दों को बताना चाहता था। यह कि जो मुझ पर ईमान लाए वह भी मेरे इस जलाल में शरीक हो जाएगा।

► **ईमानदार क्यों इस जलाल में शरीक हो जाएगा?**

जो उस पर ईमान लाता है वह उसका घरवाला बन जाता है। इससे वह उसके जलाल में भी शरीक हो जाता है।

► **क्या आपको यह शान हासिल हुई है जो उसके घरवालों को हासिल होती है?**

दूसरी बात,

नई बिरादरी के नए हुक्म पर चलो

ईसा मसीह ने अपने शागिर्दों को बताया कि थोड़ी देर बाद मैं चला जाऊँगा। और जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते।

> मैं तुमको एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैंने तुमसे मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो। अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो। (यूहन्ना 13:34-35)

► **एक दूसरे से मुहब्बत रखना नया हुक्म नहीं था। क्या ख़ुदा ने पहले से इसराईलियों को नहीं बताया था कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो?**

ज़रूर (देखिए तौरेत, अहबार 19:18)।

► **तो फिर इसे क्यों नया हुक्म कहा जाता है?**

अपनी सलीबी मौत से ईसा मसीह ने एक नई बिरादरी की बुनियाद डाली। इस बिरादरी का निशान वह मुहब्बत है जो उसने ख़ुद दुनिया में उतरकर इनसान के वास्ते अपनी जान देने से दिखाई।

► **क्या आप इस हुक्म पर चलते हैं?**

तीसरी बात,

नई बिरादरी की ठोस बुनियाद पर खड़े रहो

अब ध्यान दें कि पतरस ने ईसा मसीह की बात पर क्या कहा। उसने पूछा, "ख़ुदावंद, आप कहाँ जा रहे हैं?"

► **यह सवाल कुछ अजीब-सा लगता है। क्यों?**

अभी अभी ईसा मसीह ने अपने शागिर्दों को मुहब्बत का नया हुक्म दिया था, लेकिन पतरस ने इस पर ग़ौर ही न किया। उसे बस इसकी फ़िकर थी कि उस्ताद कहीं जा रहा है।

► **वह यह क्यों जानना चाहता था?**

पतरस अब तक अपने आपको मसीह का एजंट समझता था। उसका वज़ीर जो सब कुछ कंट्रोल करना चाहता था।

ईसा मसीह ने जवाब दिया, "जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तू मेरे पीछे नहीं आ सकता। लेकिन बाद में तू मेरे पीछे आ जाएगा।"

पतरस ने सवाल किया, "ख़ुदावंद, मैं आपके पीछे अभी क्यों नहीं जा सकता? मैं आपके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।"

लेकिन ईसा मसीह ने जवाब दिया, "तू मेरे लिए अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुर्ग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन मरतबा मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।"

पतरस को पूरा यक़ीन था कि वह अपनी जान देने को तैयार था। लेकिन ईसा मसीह का जवाब साफ़ है : तू मेरे लिए कुछ नहीं कर सकता। तेरी कोशिशें नाकाफ़ी हैं।

► **वह क्यों नाकाफ़ी हैं?**

हम अपनी तरफ़ से कुछ नहीं कर सकते। न हम अपनी कोशिशों से जन्नत में दाख़िल हो सकते हैं, न सवाब कमा सकते हैं। मसीह तो जन्नत में दाख़िल होने का वाहिद वसीला है, क्योंकि उसने अपनी सलीबी मौत से हमें छुटकारा दिया है।

यही नई बिरादरी की मज़बूत बुनियाद है। अगर हमारी नाक़िस कोशिशें इस बिरादरी की बुनियाद होतीं तो यह बुनियाद नाक़िस होती। लेकिन नई बिरादरी की बुनियाद नजात का वह काम है जो उसने हमारी ख़ातिर किया है।

क्या आपको मसीह की नई बिरादरी की शान हासिल है? क्या इस बिरादरी का नया हुक्म आपको उभार रहा है? क्या आपकी ज़िंदगी और मुस्तक़बिल इसी बिरादरी की ठोस बुनियाद पर क़ायम है?

इंजील, यूहन्ना 13:31-38

यहूदाह के चले जाने के बाद ईसा ने कहा, "अब इब्ने-आदम ने जलाल पाया और अल्लाह ने उसमें जलाल पाया है। हाँ, चूँकि अल्लाह को उसमें जलाल मिल गया है इसलिए अल्लाह अपने में फ़रज़ंद को जलाल देगा। और वह यह जलाल फ़ौरन देगा। मेरे बच्चो, मैं थोड़ी देर और तुम्हारे पास ठहरूँगा। तुम मुझे तलाश करोगे, और जो कुछ मैं यहूदियों को बता चुका हूँ वह अब तुमको भी बताता हूँ, जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तुम नहीं आ सकते। मैं तुमको एक नया हुक्म देता हूँ, यह कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। जिस तरह मैंने तुमसे मुहब्बत रखी उसी तरह तुम भी एक दूसरे से मुहब्बत करो। अगर तुम एक दूसरे से मुहब्बत रखोगे तो सब जान लेंगे कि तुम मेरे शागिर्द हो।"

पतरस ने पूछा, "ख़ुदावंद, आप कहाँ जा रहे हैं?"

ईसा ने जवाब दिया, "जहाँ मैं जा रहा हूँ वहाँ तू मेरे पीछे नहीं आ सकता। लेकिन बाद में तू मेरे पीछे आ जाएगा।"

पतरस ने सवाल किया, "ख़ुदावंद, मैं आपके पीछे अभी क्यों नहीं जा सकता? मैं आपके लिए अपनी जान तक देने को तैयार हूँ।"

लेकिन ईसा ने जवाब दिया, "तू मेरे लिए अपनी जान देना चाहता है? मैं तुझे सच बताता हूँ कि मुर्ग़ के बाँग देने से पहले पहले तू तीन मरतबा मुझे जानने से इनकार कर चुका होगा।

मत घबराओ
अबदी मनज़िल की राह

फ़सह की ईद थी। ईसा मसीह शागिर्दों को इसके लिए तैयार करने लगा कि थोड़ी देर बाद मैं तुम्हारी ख़ातिर अपनी जान दूँगा। शागिर्द उस वक़्त पूरी बात न समझ सके, लेकिन वह बेचैन होने लगे। थोड़ी देर पहले यों लग रहा था कि उस्ताद इसराईल का वह बादशाह बनेगा जिसके लिए सब तड़प रहे थे। अब इसके उलट हो रहा था। यह सवाल भी उठने लगा कि हमारा क्या बनेगा?

इस दुखी माहौल में ज़रूरी था कि शागिर्दों की हौसलाअफ़्ज़ाई की जाए। उनका आक़ा जानता था कि इस वक़्त वह सब कुछ समझ नहीं पाएँगे। लेकिन बाद में यह बातें उन्हें सही पटरी पर लाएँगी। पहली बात,

मत घबराओ : तुम्हारा अबदी घर है

उसने फ़रमाया,

> तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो। मेरे बाप के घर में बेशुमार मकान हैं। अगर ऐसा न होता तो क्या मैं तुमको बताता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? और अगर मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ तो वापस आकर तुमको अपने साथ ले जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो। और जहाँ मैं जा रहा हूँ उसकी राह तुम जानते हो। (यूहन्ना 14:1-4)

► **शागिर्द किस पर ईमान रखते हैं?**

ख़ुदा पर।

► **अगर वह ख़ुदा पर ईमान रखते हैं तो उनको किस पर ईमान रखना चाहिए?**

उनको ईसा मसीह पर भी ईमान रखना चाहिए।

► **क्यों?**

क्योंकि वह ख़ुदा बाप का फ़रज़ंद है जो उसके पास जाकर उनके लिए जगह तैयार करेगा।

► **ख़ुदा के घर में क्या है?**

ख़ुदा के घर के बहुत-से मकान हैं।

► **हमारे लिए यह क्यों ख़ुशख़बरी है?**

यह ख़ुशख़बरी इसलिए है कि ख़ुदा के घरवालों के लिए मकान तैयार हैं। घबराने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उसके पास हमारा अबदी घर तैयार है।

► **लेकिन हम किस तरह उसके घरवाले बन सकते हैं?**

ईसा मसीह पर ईमान रखने से। उसी ने अपने लोगों के लिए जगह तैयार कर ली है।

► **वह क्यों अपने लोगों के लिए जगह तैयार करने जा रहा था?**

ताकि जहाँ वह है हम भी हों।

► **लेकिन हम वहाँ किस तरह पहुँच सकते हैं?**

एक ख़ास राह से। ईसा मसीह ने फ़रमाया, "जहाँ मैं जा रहा हूँ उसकी राह तुम जानते हो।"

तोमा शागिर्द झट से बोल उठा, "ख़ुदावंद, हमें मालूम नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उसकी राह किस तरह जानें?"

जवाब में ईसा मसीह ने एक नया सबक़ सिखाया। यह कि

मत घबराओ : मैं अबदी घर की राह हूँ

उसने फ़रमाया,

> राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता। (यूहन्ना 14:6)

► **राह कौन है?**

राह ईसा मसीह है।

► **इससे वह क्या कहना चाहता है?**

अपनी सलीबी मौत से मैं न सिर्फ़ ख़ुदा बाप के पास जा रहा हूँ। इससे मैं तुम्हारे लिए ख़ुदा के घर तक पहुँचने की राह बना रहा हूँ। हाँ, मैं ही वह राह हूँ। ख़ुदा तक पहुँचानेवाली और कोई राह नहीं है।

► **ईसा मसीह राह है। लेकिन इसका क्या मतलब है कि वह हक़ है?**

हक़ का मतलब सच्चाई है। इसके पीछे यह ख़याल है कि जिस पर पूरा भरोसा किया जा सकता है वह सच्चा, वह हक़ है। जो चीज़ झूठी है उस पर भरोसा नहीं किया जा सकता। लेकिन ईसा मसीह पर पूरा भरोसा किया जा सकता है। उसमें उन्नीस-बीस का फ़रक़ भी नहीं है।

► **ईसा मसीह राह और हक़ है। तो इसका क्या मतलब है कि वह ज़िंदगी है?**
वह ज़िंदगी का सरचश्मा है। वह मौत पर ग़ालिब आया, इसलिए हम भी उससे ज़िंदगी हासिल कर सकते हैं।

घबराने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि वही ख़ुदा के घर पहुँचने का रास्ता है, उसी पर हम पूरा भरोसा रख सकते हैं, और उसी से हमें अबदी ज़िंदगी मिलती है। तीसरी बात,

मत घबराओ : मेरा बाप तुम्हारा बाप भी है

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> अगर तुमने मुझे जान लिया है तो इसका मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और अब से ऐसा है भी। तुम उसे जानते हो और तुमने उसको देख लिया है। (यूहन्ना 14:7)

► **ईसा मसीह को जान लिया तो किस को जान लिया?**
उसे जान लिया तो बाप को भी जान लिया।

► **ईसा मसीह को जान लेने से हम ख़ुदा बाप को किस तरह जान लेते हैं?**
ईसा मसीह ख़ुदा बाप का फ़रज़ंद है। इसलिए जब हम मसीह को जानते हैं तो ख़ुदा बाप को भी जानते हैं। इसलिए ईसा मसीह कह सकता था कि तुम उसे जानते हो।

अब फ़िलिप्पुस से रहा न गया। उसने पूछा, “ऐ ख़ुदावंद, बाप को हमें दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।”

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> फ़िलिप्पुस, मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इसके बावुजूद तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा है। (यूहन्ना 14:9)

► **जवाब क्या है?**

जिसने ईसा मसीह को देखा उसने ख़ुदा बाप को देखा है।

► **यह किस तरह हो सकता है?**

इसकी वजह यह है कि ईसा मसीह ख़ुदा बाप का फ़रज़ंद है। इसलिए जो उसे देखता है वह ख़ुदा बाप को भी देखता है। यही इसका मतलब है जब उसने फ़रमाया कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है।

► **जब हम ख़ुदा बाप को जानते और देखते हैं तो हमारे लिए क्या नतीजा निकलता है?**

जब हम ईसा मसीह पर ईमान लाते हैं तो उसका बाप हमारा बाप भी बन जाता है। ईसा मसीह से हम न सिर्फ़ ख़ुदा के घरवाले बन जाते हैं बल्कि ख़ुदा हमारा बाप भी बन जाता है। इसलिए घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। एक आख़िरी बात,

मत घबराओ : तुम बड़े काम करोगे

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मेरी बात का यक़ीन करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है। या कम-अज़-कम उन कामों की बिना पर यक़ीन करो जो मैंने किए हैं। (यूहन्ना 14:11)

► **शागिर्दों को किसकी बात का यक़ीन करना चाहिए?**

अपने उस्ताद की बात का।

► **सबसे बड़ी वजह क्या थी कि उन्हें उसकी बात का यक़ीन करना चाहिए था?**

उन्होंने उसके मोजिज़े देखे, उसका कलाम सुना था।

► **उन्हें उसके कामों से क्यों यक़ीन आना चाहिए था?**

इसलिए कि उसके काम आम काम नहीं थे। मसीह का हर काम उसके बाप की तरफ़ इशारा करता था। जितने यह काम ईसा मसीह के थे उतने ही वह बाप के काम भी थे। क्योंकि ख़ुदा बाप और फ़रज़ंद में पूरी यगांगत है।

लेकिन ईसा मसीह ने आगे एक बात फ़रमाई जो हैरानकुन है :

> मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे वह वही कुछ करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ़ यह बल्कि वह इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ। (यूहन्ना 14:12)

► **हैरानकुन बात क्या है?**

यह कि ईसा मसीह के शागिर्द उसके काम करेंगे।

► **वह क्यों उसके काम करेंगे?**

इसलिए कि जो ईमान रखता है वह उसका घरवाला है। और घरवालों के लिए यह एक क़ुदरती बात है कि वह मिलकर वह काम करें जो उनका सरपरस्त चाहता है।

ईमानदार न सिर्फ़ ईसा मसीह के से काम करेंगे बल्कि इनसे बढ़कर काम भी करेंगे।

► **यह किस तरह हो सकता है?**

ईसा मसीह इसकी वजह बताता है : मैं बाप के पास जा रहा हूँ।

► **बाप के पास जाना क्यों इसकी वजह है?**

मसीह के जी उठने के बाद रूहुल-क़ुद्स नाज़िल होगा। इसी रूह की मदद से मसीह के शागिर्द बड़े काम करेंगे। लेकिन उनके यह काम उनकी अपनी ताक़त से किए नहीं जाएँगे। यह साफ़ बयान करने के लिए मसीह ने फ़रमाया,

> जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को फ़रज़ंद में जलाल मिल जाए। जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझसे चाहो वह मैं करूँगा। (यूहन्ना 14:13-14)

► **यह काम किसके नाम में किए जाएँगे?**

यह काम मसीह के नाम में माँगने से किए जाएँगे।

ग़रज़, घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है। हमारा अबदी घर है, और हमें वहाँ पहुँचने की राह भी हासिल है यानी ईसा मसीह। घबराने की कोई ज़रूरत नहीं है क्योंकि मसीह का बाप हमारा बाप भी बन गया है। घरवालों की हैसियत से हम मसीह के नाम में बड़े काम करेंगे।

► **क्या आप भी मसीह के नाम में बड़े काम करने के लिए तैयार हैं?**

इंजील, यूहन्ना 14:1-14

“तुम्हारा दिल न घबराए। तुम अल्लाह पर ईमान रखते हो, मुझ पर भी ईमान रखो। मेरे बाप के घर में बेशुमार मकान हैं। अगर ऐसा न होता तो क्या मैं तुमको बताता कि मैं तुम्हारे लिए जगह तैयार करने के लिए वहाँ जा रहा हूँ? और अगर मैं जाकर तुम्हारे लिए जगह तैयार करूँ तो वापस आकर तुमको अपने साथ ले जाऊँगा ताकि जहाँ मैं हूँ वहाँ तुम भी हो। और जहाँ मैं जा रहा हूँ उसकी राह तुम जानते हो।”

तोमा बोल उठा, “ख़ुदावंद, हमें मालूम नहीं कि आप कहाँ जा रहे हैं। तो फिर हम उसकी राह किस तरह जानें?”

ईसा ने जवाब दिया, “राह और हक़ और ज़िंदगी मैं हूँ। कोई मेरे वसीले के बग़ैर बाप के पास नहीं आ सकता। अगर तुमने मुझे जान लिया है तो इसका मतलब है कि तुम मेरे बाप को भी जान लोगे। और अब से ऐसा है भी। तुम उसे जानते हो और तुमने उसको देख लिया है।”

फ़िलिप्पुस ने कहा, “ऐ ख़ुदावंद, बाप को हमें दिखाएँ। बस यही हमारे लिए काफ़ी है।”

ईसा ने जवाब दिया, “फ़िलिप्पुस, मैं इतनी देर से तुम्हारे साथ हूँ, क्या इसके बावुजूद तू मुझे नहीं जानता? जिसने मुझे देखा उसने बाप को देखा है। तो फिर तू क्योंकर कहता है, ‘बाप को हमें दिखाएँ’? क्या तू ईमान नहीं रखता कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है? जो बातें मैं तुमको बताता हूँ वह मेरी नहीं बल्कि मुझमें रहनेवाले बाप की तरफ़ से हैं। वही अपना काम कर रहा है। मेरी बात का यक़ीन करो कि मैं बाप में हूँ और बाप मुझमें है। या कम-अज़-कम उन कामों की बिना पर यक़ीन करो जो मैंने किए हैं। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो मुझ पर ईमान रखे वह वही कुछ करेगा जो मैं करता हूँ। न सिर्फ़ यह बल्कि वह इनसे भी बड़े काम करेगा, क्योंकि मैं बाप के पास जा रहा हूँ। और जो कुछ तुम मेरे नाम में माँगो मैं दूँगा ताकि बाप को फ़रज़ंद में जलाल मिल जाए। जो कुछ तुम मेरे नाम में मुझसे चाहो वह मैं करूँगा।

फ़तहमंद ज़िंदगी
रूहुल-क़ुद्स का काम

हर इनसान कामयाब होना चाहता है। हर एक अपने घरवालों के लिए इज़्ज़त और सुख का बाइस होना चाहता है। हम सब फ़तहमंद ज़िंदगी गुज़ारना चाहते हैं—ऐसी ज़िंदगी जो हर चैलेंज का सामना कर पाए, हर रुकावट पर ग़ालिब आए।

► **लेकिन हम किस तरह फ़तहमंद रह सकते हैं?**
ईसा मसीह ने इसका साफ़ जवाब दिया। ईसा मसीह जानता था कि थोड़ी देर बाद मुझे इस दुनिया से कूच कर जाना है। इसलिए ज़रूरी है कि अपने शागिर्दों को कुछ हिदायात दूँ। अब उसने एक नई बात छेड़ी। एक ऐसी बात जो शागिर्द उस वक़्त नहीं समझ सकते थे। बात क्या थी? रूहुल-क़ुद्स।

► **उसने रूहुल-क़ुद्स की बात क्यों छेड़ी?**
वह शागिर्दों को इस बात के लिए तैयार करना चाहता था कि मेरे जी उठने के बाद रूहुल-क़ुद्स नाज़िल होगा।

► **लेकिन रूहुल-क़ुद्स के आने का क्या मक़सद था? उसे पाने से हमें क्या हासिल होता है?**
इसका मुख़तसर जवाब यह है कि उससे हमें फ़तहमंद ज़िंदगी हासिल होगी। फ़तहमंद ज़िंदगी गुज़ारने में रूहुल-क़ुद्स हमारी मदद करेगा।

► **रूहुल-क़ुद्स फ़तहमंद ज़िंदगी गुज़ारने में हमारी मदद किस तरह करेगा?**
इस सवाल का जवाब ईसा मसीह देना चाहता था। पहली बात,

रूह से मेरी क़ुरबत पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारोगे। और मैं बाप से गुज़ारिश करूँगा तो वह तुमको एक और मददगार देगा जो अबद तक तुम्हारे साथ रहेगा यानी सच्चाई का रूह, जिसे दुनिया पा नहीं सकती, क्योंकि वह न तो उसे देखती

> न जानती है। लेकिन तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और आइंदा तुम्हारे अंदर रहेगा। (यूहन्ना 14:15-17)

► **कौन मसीह के अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा?**

वह जो उसे प्यार करता है। मसीह के पीछे हो लेने का यह मतलब नहीं कि हम उसे अपना वोट दें। उसे पार्टीबाज़ी से नफ़रत है। वह एक ही बात चाहता है। यह कि हम उसे प्यार करें। क्योंकि उसे प्यार करेंगे तो ख़ुद बख़ुद उसके अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेंगे।

आजकल सोलर लाइट आम हो गई है। धूप में उसकी बैटरी, सोलर पैनल से चार्ज होने लगती है। अंधेरा शुरू हुआ तो लाइट ऑन हो जाती है। मतलब है जो बिजली सोलर पैनल से पैदा हुई है वह लाइट के लिए इस्तेमाल होती है।

हम भी उस जैसी लाइट हैं। हमारा बस एक ही काम है, यह कि ईसा मसीह की मुहब्बत-भरी धूप सेंकें। उसकी मुहब्बत जज़ब कर लेने से हमारी मुहब्बत भड़क उठती है और हम सोलर पैनल की लाइट की तरह दुनिया के अंधेरे में उसकी रौशनी फैलाने लगते हैं। यही ईसा मसीह का मतलब है : जब हम उसे प्यार करते हैं तो उसकी मुहब्बत-भरी धूप सेंकते हैं। तब ही हम उसके अहकाम पर चल पाएँगे।

► **लेकिन ईसा मसीह को बाप के पास जाना था। उसके बाद शागिर्द किस तरह उसकी धूप सेंक सकते थे?**

ख़ुदा बाप एक और मददगार देगा।

► **पहला मददगार कौन था?**

पहला मददगार ईसा मसीह था जो अब कूच कर जानेवाला था। इसलिए बाप एक और मददगार भेजेगा।

► **यह मददगार कौन है?**

सच्चाई का रूह यानी रूहुल-क़ुद्स। वही मसीह के जी उठने के बाद शागिर्दों पर नाज़िल होगा। उस वक़्त से वह हर सच्चे ईमानदार की मदद करेगा। अगर बाप सूरज है तो फ़रज़ंद सूरज की रौशनी और रूहुल-क़ुद्स सूरज की गरमी है।

► **क्या दुनिया रूहुल-क़ुद्स को पा सकती है?**

नहीं।

► **कौन रूहुल-क़ुद्स को पा सकता है?**

सिर्फ़ वह जो ईसा मसीह पर ईमान रखता है।

► **इसका क्या मतलब है कि 'तुम मददगार को जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है'? यह मददगार हाल ही में किस तरह शागिर्दों के साथ रहता था? उस वक़्त तो रूहुल-क़ुद्स नाज़िल नहीं हुआ था।**

हाल में ईसा मसीह ख़ुद उनका मददगार था। वही उनके साथ रहता था। शागिर्द उसे और उसके काम अपनी आँखों से देख सकते थे, उसे अपने हाथों से छू सकते थे। यों शागिर्द उसे जानते थे, और वह उनकी मदद करता रहता था।

ईसा मसीह यही कुछ कहना चाहता था : इस वक़्त मैं ही तुम्हारा मददगार हूँ जिसमें रूहुल-क़ुद्स बसता है। लेकिन आइंदा रूहुल-क़ुद्स नाज़िल होकर तुम्हारे ही अंदर रहेगा। उसमें मैं ख़ुद तुम्हारे दिलों में मौजूद हूँगा। इसलिए घबराने की ज़रूरत नहीं है—जो मुहब्बत और सहायता तुम्हें इस वक़्त हासिल है वह आइंदा भी हासिल होगी।

अब हम उसकी अगली बात भी समझ सकते हैं :

> मैं तुमको यतीम छोड़कर नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। थोड़ी देर के बाद दुनिया मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे। चूँकि मैं ज़िंदा हूँ इसलिए तुम भी ज़िंदा रहोगे। (यूहन्ना 14:18-19)

► **ईसा मसीह किस तरह वापस आएगा?**

जी उठने के बाद वह कुछ दिनों के लिए अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर होगा। फिर वह उठा लिया जाएगा और रूहुल-क़ुद्स नाज़िल होगा। रूहुल-क़ुद्स के नाज़िल होने पर वह भी रूहुल-क़ुद्स में हाज़िर होगा। यहाँ मसीह इसी पर ज़ोर दे रहा है कि वह रूहुल-क़ुद्स में हाज़िर होगा।

► **उस वक़्त दुनिया उसे नहीं देखेगी लेकिन ईमानदार उसे देखते रहेंगे। वह किस तरह उसे देखते रहेंगे?**

वह रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए उसे देखते रहेंगे। रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए वह उनके दिलों में मौजूद होगा। और चूँकि वह ज़िंदा है इसलिए वह भी ज़िंदा रहेंगे। जिस ज़िंदगी से वह मौत पर ग़ालिब आया वही ज़िंदगी उन्हें हासिल होगी।

रूहुल-क़ुद्स के आने पर ईमानदार को मसीह की यह क़ुरबत एकदम मालूम हो जाएगी। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> जब वह दिन आएगा तो तुम जान लोगे कि मैं अपने बाप में हूँ, तुम मुझमें हो और मैं तुममें। (यूहन्ना 14:20)

कितनी गहरी क़ुरबत! मसीह बाप में है और वह हममें भी है। यही वजह है कि हम ख़ुदा के घरवाले हैं। इसी लिए हम उसके हुज़ूर रह सकते हैं। और यह गहरी क़ुरबत रूहुल-क़ुद्स से पैदा हो गई है। उसी के वसीले से यह रिश्ता और रिफ़ाक़त हमेशा तरो-ताज़ा रहती है।

अगर मोबाइल का सिगनल न हो तो वह बेकार है। इसी तरह हमारी ख़ुदा से रिफ़ाक़त रूहुल-क़ुद्स के वसीले से पैदा होती है। वही मोबाइल का सिगनल है। उसी से हम हर वक़्त ख़ुदा के हुज़ूर रह सकते हैं, दुख-सुख की हर बात उसके सामने रख सकते हैं।

ईसा मसीह रूहुल-क़ुद्स के बारे में एक और बात भी कहना चाहता है। यह कि

रूह से मेरे प्यार का बंधन पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> जिसके पास मेरे अहकाम हैं और जो उनके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता है, वही मुझे प्यार करता है। और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा बाप प्यार करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने आपको उस पर ज़ाहिर करूँगा। (यूहन्ना 14:21)

► **जो ईसा मसीह के अहकाम पर चलता है वह क्या करता है?**
वह ईसा मसीह को प्यार करता है।

► **जो ईसा मसीह को प्यार करता है उसे कौन प्यार करता है?**
ख़ुदा बाप और ईसा मसीह।

यों एक बंधन है जो ईमानदार को ख़ुदा बाप और ख़ुदा फ़रज़ंद के साथ जोड़ देता है।

► **बंधन क्या है?**

प्यार—वह प्यार जिससे रूहुल-क़ुद्स ईमानदार को ख़ुदा के साथ जकड़े रखता है।

► **जो मसीह को प्यार करता है उसके साथ ईसा मसीह क्या करेगा?**

वह अपने आपको उस पर ज़ाहिर करेगा।

► **अपने आपको प्यार करनेवाले पर ज़ाहिर करने से क्या फ़रक़ पड़ता है?**

अपने आपको प्यार करनेवाले पर ज़ाहिर करने से उसके साथ रिफ़ाक़त बढ़ती जाएगी। जितने हम उसे प्यार करेंगे उतना ही वह हम पर ज़ाहिर हो जाएगा, उतना ही हमारी उसके साथ रिफ़ाक़त बढ़ जाएगी।

अब एक शागिर्द ने पूछा, "ख़ुदावंद, क्या वजह है कि आप अपने आपको सिर्फ़ हम पर ज़ाहिर करेंगे और दुनिया पर नहीं?"

► **शागिर्द ने यह क्यों पूछा?**

ईसा मसीह फ़रमा चुका था कि शागिर्दों और दुनिया का कोई संबंध नहीं है। दुनिया रूहुल-क़ुद्स को पा ही नहीं सकती। अब उसने फ़रमाया था कि मैं अपने आपको सिर्फ़ उस पर ज़ाहिर करूँगा जो मुझे प्यार करता है। लेकिन शागिर्द तो अभी तक समझते थे कि वह थोड़ी देर बाद यरूशलम में बादशाह बनकर सब पर ज़ाहिर हो जाएगा। इसलिए शागिर्द का यह सवाल कि आप अपने आपको दुनिया पर ज़ाहिर क्यों नहीं करेंगे? आप क्यों सिर्फ़ हम पर ज़ाहिर हो जाएँगे?

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> अगर कोई मुझे प्यार करे तो वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा। मेरा बाप ऐसे शख़्स को प्यार करेगा और हम उसके पास आकर उसके साथ सुकूनत करेंगे। (यूहन्ना 14:23)

एक ही शर्त है कि ईसा मसीह किसी पर ज़ाहिर हो जाए।

► **शर्त क्या है?**

यह कि वह ईसा मसीह को प्यार करे।

► **मसीह को प्यार करने से क्या होगा?**

वह उसके कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा।

► **तब क्या होगा?**

फिर ख़ुदा बाप उसे प्यार करेगा और वह अपने फ़रज़ंद समेत उसके पास आकर उसके साथ सुकूनत करेगा। दूसरे अलफ़ाज़ में वह उसमें अपना घर बना लेंगे। कितनी अज़ीम बात!

लेकिन दुनिया कभी ईसा मसीह से मुहब्बत नहीं करती, न उसकी बातों के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारती है। इसलिए मसीह कभी दुनिया पर ज़ाहिर नहीं हो सकता। किसी पर ज़ाहिर होना उससे गहरी रिफ़ाक़त रखने के बराबर है, वह रिफ़ाक़त जो सिर्फ़ घरवालों में होती है।

यह बात हम पर भी सादिक़ आती है। ईसा मसीह दुनिया पर ज़ाहिर नहीं होता। इससे कोई फ़रक़ नहीं पड़ता कि उसके नाम में बड़ी बड़ी इबादतगाहें बन गई हैं, कि लोगों ने उसका नाम लेकर क़त्लो-ग़ारत मचाई है, उसका नाम लेकर दौलत और शानो-शौकत हासिल की है। ईसा मसीह दुनिया की धूमधाम पर ज़ाहिर नहीं होता।

► **वह क्यों नहीं दुनिया पर ज़ाहिर होता?**

क्योंकि दुनिया उसे प्यार नहीं करती, उसके अहकाम पर नहीं चलती। उसे रूहुल-क़ुद्स हासिल नहीं है इसलिए ख़ुदा से रिफ़ाक़त हो नहीं सकती। हाँ, अदालत के दिन वह दुनिया पर भी ज़ाहिर हो जाएगा, लेकिन रिफ़ाक़त रखने के लिए नहीं बल्कि उसकी अदालत करने के लिए। तब ईसा मसीह ने रूहुल-क़ुद्स के बारे में एक तीसरी बात बताई। यह कि

रूह से मेरा ठप्पा पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> यह सब कुछ मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुमको बताया है। लेकिन बाद में रूहुल-क़ुद्स, जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा तुमको सब कुछ सिखाएगा। यह मददगार तुमको हर बात की याद दिलाएगा जो मैंने तुमको बताई है। (यूहन्ना 14:25-26)

ईसा मसीह के चले जाने के बाद ख़ुदा बाप रूहुल-क़ुद्स को भेजेगा।

► **यह मददगार क्या करेगा?**

वह सब कुछ सिखाएगा। यानी वह मसीह की हर बात की याद दिलाएगा।

► **यह करने का क्या मक़सद है?**

मक़सद यह है कि वह हम पर मसीह का ठप्पा लगाए।

► **ठप्पा लगाने का क्या मतलब है?**

काग़ज़ पर ठप्पा लगाने का मतलब यह है कि मोहर लगाया जाता है। ठप्पा लकड़ी का वह टुकड़ा भी होता है जिस पर उभरे हुए बेल-बूटे बने रहते हैं और जिस पर लोग रंग पोतकर उन बेल-बूटों को कपड़े पर छापते हैं। ठप्पे का मतलब साँचा भी होता है जिसमें मिट्टी या कोई और चीज़ ढलकर साँचे की शक्ल अपनाती है।

जब हम रूहुल-क़ुद्स पाते हैं तो मसीह का ठप्पा हम पर लग जाता है।

► **मसीह का ठप्पा लगने का क्या मतलब है?**

- रूह हम पर मसीह का मोहर लगाता है। मोहर लगाने से यह बात पक्की हो जाती है कि हम मसीह के हैं।
- रूह हम पर मसीह का अज़ीम डिज़ाइन यों छापता है, जिस तरह सफ़ेद कपड़े पर रंगदार ठप्पा लगता है।
- रूह हमें मसीह के साँचे में ढालता है। तब हम मसीह की सूरत में बदलते जाते हैं। उसकी मुहब्बत, उसकी हलीमी, हाँ उसका पूरा वुजूद हमारे अंदर ज़ोर पकड़ता जाता है।

फिर ईसा मसीह ने एक आख़िरी हिदायत दी। यह कि

रूह से मेरी सलामती पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी ही सलामती तुमको दे देता हूँ। और मैं इसे यों नहीं देता जिस तरह दुनिया देती है। तुम्हारा दिल न घबराए और न डरे। (यूहन्ना 14:27)

► **ईसा मसीह क्या छोड़े जाता है?**

सलामती।

► **यह किसकी सलामती है?**

यह उसकी अपनी सलामती है।

► **क्या दुनिया यह सलामती दे सकती है?**

नहीं।

► **क्यों नहीं?**

ईसा मसीह ने अपनी सलीबी मौत से वह चीज़ मिटा दी जो हमें ख़ुदा से जुदा करती है यानी हमारे गुनाहों को। इससे हम जो ईमान लाए हैं ख़ुदा के घरवाले बन गए हैं। और यह सलामती हमारे दिलों में रहती है।

► **यह सलामती किस तरह हमारे दिलों में रहती है?**

रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए। वही हमारे दिलों में यह सलामती बसा देता है। इसी वजह से घबराने की ज़रूरत नहीं है। ईसा मसीह तो चला गया लेकिन रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए उसकी सलामती हमारे साथ रहती है।

दुनिया यह सलामती नहीं दिला सकती। वह तो दौलत, शानो-शौकत और ऐशो-इशरत दे सकती है। लेकिन वह यह सलामती नहीं दे सकती।

► **ईसा मसीह यह सब कुछ क्यों शागिर्दों को बता रहा था?**

उसने फ़रमाया,

> मैंने तुमको पहले से बता दिया है, इससे पेशतर कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम ईमान लाओ। (यूहन्ना 14:29)

शागिर्दों को यह जानने की ज़रूरत थी कि ईसा मसीह की दुख-भरी राह ख़ुदा के मनसूबे के मुताबिक़ था। उस वक़्त वह नहीं समझ सकते थे कि यह मददगार क्या है और उसका हमारे साथ क्या ताल्लुक़ है। लेकिन बाद में रूहुल-क़ुद्स उन पर नाज़िल हुआ। तब उसने उन्हें मसीह की क़ुरबत और प्यार का बंधन दिलाया। उसने उन पर मसीह का ठप्पा लगा दिया, और उन्हें ख़ुदा की गहरी सलामती हासिल हुई।

► **क्या आपने रूहुल-क़ुद्स पा लिया है?**

इंजील, यूहन्ना 14:15-31

अगर तुम मुझे प्यार करते हो तो मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारोगे। और मैं बाप से गुज़ारिश करूँगा तो वह तुमको एक और मददगार देगा जो अबद तक तुम्हारे साथ रहेगा यानी सच्चाई का रूह, जिसे दुनिया पा नहीं सकती, क्योंकि वह न तो उसे देखती न जानती है। लेकिन तुम उसे जानते हो, क्योंकि वह तुम्हारे साथ रहता है और आइंदा तुम्हारे अंदर रहेगा।

मैं तुमको यतीम छोड़कर नहीं जाऊँगा बल्कि तुम्हारे पास वापस आऊँगा। थोड़ी देर के बाद दुनिया मुझे नहीं देखेगी, लेकिन तुम मुझे देखते रहोगे। चूँकि मैं ज़िंदा हूँ इसलिए तुम भी ज़िंदा रहोगे। जब वह दिन आएगा तो तुम जान लोगे कि मैं अपने बाप में हूँ, तुम मुझमें हो और मैं तुममें।

जिसके पास मेरे अहकाम हैं और जो उनके मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारता है, वही मुझे प्यार करता है। और जो मुझे प्यार करता है उसे मेरा बाप प्यार करेगा। मैं भी उसे प्यार करूँगा और अपने आपको उस पर ज़ाहिर करूँगा।"

यहूदाह (यहूदाह इस्करियोती नहीं) ने पूछा, "ख़ुदावंद, क्या वजह है कि आप अपने आपको सिर्फ़ हम पर ज़ाहिर करेंगे और दुनिया पर नहीं?"

ईसा ने जवाब दिया, "अगर कोई मुझे प्यार करे तो वह मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारेगा। मेरा बाप ऐसे शख़्स को प्यार करेगा और हम उसके पास आकर उसके साथ सुकूनत करेंगे। जो मुझसे मुहब्बत नहीं करता वह मेरी बातों के मुताबिक़ ज़िंदगी नहीं गुज़ारता। और जो कलाम तुम मुझसे सुनते हो वह मेरा अपना कलाम नहीं है बल्कि बाप का है जिसने मुझे भेजा है।

यह सब कुछ मैंने तुम्हारे साथ रहते हुए तुमको बताया है। लेकिन बाद में रूहुल-क़ुद्स, जिसे बाप मेरे नाम से भेजेगा तुमको सब कुछ सिखाएगा। यह मददगार तुमको हर बात की याद दिलाएगा जो मैंने तुमको बताई है।

मैं तुम्हारे पास सलामती छोड़े जाता हूँ, अपनी ही सलामती तुमको दे देता हूँ। और मैं इसे यों नहीं देता जिस तरह दुनिया देती है। तुम्हारा दिल न घबराए और न डरे। तुमने मुझसे सुन लिया है कि 'मैं जा रहा हूँ और तुम्हारे पास वापस आऊँगा।' अगर तुम मुझसे मुहब्बत रखते तो तुम इस बात पर ख़ुश होते कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ, क्योंकि बाप मुझसे बड़ा है। मैंने तुमको पहले से बता दिया है, इससे पेशतर कि यह हो, ताकि जब पेश आए तो तुम ईमान लाओ। अब से मैं तुमसे ज़्यादा बातें नहीं करूँगा, क्योंकि इस दुनिया का हुक्मरान आ रहा है। उसे मुझ पर कोई क़ाबू नहीं है, लेकिन दुनिया यह जान ले कि मैं बाप को प्यार करता हूँ और वही कुछ करता हूँ जिसका हुक्म वह मुझे देता है।

अब उठो, हम यहाँ से चलें।

मैं अंगूर की बेल हूँ
फल लाने का राज़

अपनी मौत से पहले पहले ईसा मसीह ने अपने शागिर्दों को कुछ हिदायात दीं। इन हिदायात का एक मक़सद यह था कि उसके चले जाने के बाद उनके दिल मज़बूत रहें। साथ साथ वह उन्हें आनेवाले नए ज़माने के लिए तैयार करना चाहता था—उस ज़माने के लिए जो रूहुल-क़ुद्स का ज़माना भी कहलाता है।

ईसा मसीह कह चुका था कि मेरे जाने के बाद रूहुल-क़ुद्स नाज़िल होगा। उसके वसीले से मैं भी तुम्हारे साथ रहूँगा। अब उसने एक नई बात छेड़ी। बात क्या थी? रूहानी फल लाने का मज़मून। रूहुल-क़ुद्स क्यों ईमानदार में बसेगा? वह ईमानदार की ज़िंदगी में रूहानी फल लाने के लिए उसमें बसेगा। यह समझाने के लिए मसीह ने अंगूर की बेल की मिसाल पेश की। पहली बात,

अंगूर की बेल की ताक़त पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैं अंगूर की हक़ीक़ी बेल हूँ और मेरा बाप माली है। वह मेरी हर शाख़ को जो फल नहीं लाती काटकर फेंक देता है। लेकिन जो शाख़ फल लाती है उसकी वह काँट-छाँट करता है ताकि ज़्यादा फल लाए। (यूहन्ना 15:1-2)

► **अंगूर की बेल कौन है?**

ईसा मसीह।

► **अंगूर का माली कौन है?**

ख़ुदा बाप।

► **बेल की शाख़ें कौन हैं?**

बेल की शाख़ें वह हैं जो ईसा मसीह पर ईमान लाए हैं। ईमान के बाइस वह शाख़ की तरह उससे जुड़े रहते हैं।

► **क्या बेल की शाख़ें बेल के बिना ज़िंदा रह सकती हैं?**

नहीं। वह मुरझा जाती हैं।

▶ **वह क्यों मुरझा जाती हैं?**

बेल का रस शाख़ों को फलने-फूलने देता है। रस में बेल की ताक़त है। जब यह रस शाख़ तक नहीं पहुँचता तो शाख़ मुरझा जाती है। शाख़ अपने आप में कुछ नहीं है।

▶ **माली ऐसी सूखी शाख़ के साथ क्या करता है?**

वह उसे काटकर फेंक देता है।

▶ **क्या ऐसी शाख़ किसी काम की है?**

नहीं। वह बेकार है। ऐसी शाख़ में मज़बूती नहीं है। सूखी शाख़ सिर्फ़ जलाने लायक़ है।

▶ **लेकिन जो शाख़ फल लाती है उसके साथ माली क्या करता है?**

वह उसकी काँट-छाँट करता है।

▶ **क्यों?**

काँट-छाँट ज़रूरी है ताकि शाख़ बेहतरीन फल लाए।

▶ **काँट-छाँट से शाख़ किस तरह ज़्यादा फल लाती है?**

माली की कोशिश यह होती है कि हर बेकार और बीमार हिस्सा दूर करे ताकि बेल का पूरा रस फल तक पहुँचे। वह फ़ज़ूल चीज़ों में ज़ाया न हो जाए। तब ही फल सबसे अच्छा बनेगा।

▶ **हम इससे अपने बारे में क्या सीख सकते हैं?**

- जो शागिर्द मसीह पर ईमान लाता है वह नए सिरे से पैदा होता है। तब वह नाज़ुक कोंपल बनकर अंगूर की बेल से फूटने लगता है। बढ़ते बढ़ते वह अच्छी-ख़ासी शाख़ बन जाता है। जो रूहानी ताक़त उसे हासिल है वह उसे मसीह से मिलती रहती है। मसीह की ज़िंदगी उसे तरो-ताज़ा रखती है। अगर ईमानदार बेल का रस आने न दे तो न सिर्फ़ मसीह की यह ताक़त बल्कि मसीह ख़ुद उसकी ज़िंदगी से दूर हो जाएगा। तब उसकी रूहानी ज़िंदगी सूख जाएगी और वह फेंकने लायक़ हो जाएगा।

  मसीह का शागिर्द यहूदाह ऐसा आदमी था। उसने मसीह का शागिर्द बनकर उसकी हर बात सुनी। तो भी उसने उसे अंदर से रद किया। लेकिन इसकी

ज़रूरत नहीं कि हम ईसा मसीह को खुले तौर पर रद करें। यह काफ़ी है कि हम अपनी ज़िंदगी पर उसकी हुकूमत न मानें।

- जो शागिर्द मसीह से जुड़ा रहता है ख़ुदा बाप उसकी काँट-छाँट करता है। बेहतरीन फल लाने की शर्त तो यही है कि वह हमारी काँट-छाँट करे। ज़रूरी है कि हर बेकार और बीमार हिस्सा दूर किया जाए ताकि हमारी ज़िंदगी ख़ूब फल लाए।

► **हम क्या कर सकते हैं ताकि हमारी ज़िंदगी में बेल की ताक़त ख़त्म न हो जाए?**

बड़ी बात यह है कि हम मसीह को हर तरह से अपनी ज़िंदगी में आने दें। कि हमारी ग़लत हरकतें और दुनिया का कूड़ा-कर्कट रस का रास्ता बंद न करें।

► **जब हमारी काँट-छाँट होती है तो क्या दिक़्क़त नहीं होती?**

दिक़्क़त ज़रूर होती है। इसलिए ज़रूरी है कि हमें काँट-छाँट का मक़सद याद रहे। हमें यक़ीन है कि हमारा इलाही माली माहिर है, कि वह जानता है कि क्या करना है। उसकी नीयत अच्छी है, और वह होने नहीं देगा कि हम जंगली हो जाएँ। उसका पूरा ध्यान इस पर रहता है कि हम फल लाएँ। यह बात याद करना बहुत अहम है ताकि हम मुश्किलात से दोचार होते वक़्त मायूस न हो जाएँ।

► **क्या अंगूर की बेल को भी दिक़्क़त होती है?**

- बेशक। कई तरह की दिक़्क़त होती है। जो मुक़द्दस और पाक है उससे हम जुड़ जाते हैं—हम जो कमज़ोर और नाक़िस इनसान हैं। बेल को हमारी यह कमज़ोरियाँ बरदाश्त करनी पड़ती हैं।
- मुरदा शाख़ को सहना भी मुश्किल है और उसे काटने से भी बेल को तकलीफ़ होती है।
- लेकिन बेल को यह भी बरदाश्त करना पड़ता है कि ज़िंदा शाख़ें एकदम ठीक-ठाक नहीं होतीं। तब काँट-छाँट का ज़रूरी काम बेल को भी तकलीफ़ पहुँचाता है।

हमारा आक़ा कितना हलीम है कि वह यह सब कुछ रोज़ बरोज़ बरदाश्त करता है!

► **इस काम में रूहुल-क़ुद्स का क्या हाथ है?**

रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए मसीह ख़ुद हमारे दिलों में बसता है। उसी से हमें ईसा मसीह की ताक़त मिलती है। और उसी के ज़रीए ख़ुदा बाप माली का काम करता रहता है। दूसरी बात,

अंगूर की बेल का फल लाओ

मसीह ने फ़रमाया,

> जो शाख़ बेल से कट गई है वह फल नहीं ला सकती। बिलकुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझमें क़ायम नहीं रहते फल नहीं ला सकते। (यूहन्ना 15:4)

► **हर पौधे का सबसे अहम मक़सद क्या होता है?**

हर पौधे का मक़सद यह होता है कि वह फल लाए।

► **हर फल का क्या मक़सद होता है?**

- फल को खाया जा सकता है। उसका एक मक़सद खानेवाले को तक़वियत देना है।
- लेकिन फल का सबसे अहम मक़सद यह है कि वह बीज पैदा करे।

► **बीज से क्या पैदा होता है?**

नया पौधा। बहुत बार एक ही फल में कई बीज होते हैं। एक फल से कई पौधे उग आते हैं।

► **हमारा फल लाने का क्या मक़सद है?**

- पहले यह कि हम ईसा मसीह के नमूने पर चलें। उसकी हलीमी, उसकी मुहब्बत, उसकी हिकमत हममें सरायत करे।
- दूसरे यह कि हम दूसरों के लिए बरकत का बाइस हों। कि हमसे दूसरे भी ईमान लाएँ। कि वह भी नए सिरे से पैदा होकर रूहुल-क़ुद्स पाएँ। हाँ, कि वह ख़ुद फल लाने लगें।

ग़रज़ मसीह पर ईमान लाने से हमारी ज़िंदगी ऊपर से नीचे तक बदल जाती है। ईमान लाते वक़्त हम एक अनोखे सफ़र पर निकलते हैं—ऐसा सफ़र जिसमें चैलेंज भी होते हैं और ख़ुशियाँ भी, ख़तरे भी और सुकून भी। सफ़र का मक़सद फल है, सफ़र की मनज़िल हमारा आसमानी घर। ध्यान दें कि फल लाने के लिए हमें एक ख़ास हथियार दिया गया है। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> अगर तुम मुझमें क़ायम रहो और मैं तुममें तो जो जी चाहे माँगो, वह तुमको दिया जाएगा। (यूहन्ना 15:7)

► **हमें फल लाने के लिए क्या हथियार दिया गया है?**

माँगने यानी दुआ का हथियार। दुआ में हम हर मामला उसके सामने रख सकते हैं। इसमें हमारा एक ख़ास नमूना है—ईसा मसीह।

► **ईसा मसीह क्यों हमारा नमूना है?**

जब ईसा मसीह इस दुनिया में आया तो दुआ का यह हथियार उसके हाथ में रहता था। बहुत बार लिखा है कि वह दुआ करने किसी वीरान जगह चला गया। और ख़ुदा बाप ने उसकी सुनी। उसने उसे बहुत फल बख़्श दिया।

► **उसने उसे कौन-सा फल बख़्श दिया?**

हम ही उसका फल हैं।

► **दुआ का हथियार उसके लिए इतना अहम क्यों था?**

इसलिए कि इससे वह हर पल अपने बाप की क़ुरबत में रहता था। इससे आपस की मुहब्बत क़ायमो-दायम रहती थी। इसी से उसे ख़िदमत करने की ताक़त मिलती थी। ध्यान दें कि दुआ का एक ही मक़सद है—यह कि हम ख़ुदा की क़ुरबत में रहें, कि हमारी उससे मुहब्बत तक़वियत पाती रहे। तब ही हम उसकी ताक़त हासिल करते रहेंगे, वही ताक़त जो अंगूर की बेल से मिलती है। तब ही हम ठीक-ठाक फल लाते रहेंगे। इसलिए ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मेरी मुहब्बत में क़ायम रहो। (यूहन्ना 15:9)

जब हम दुआ में लगे रहते हैं तब हम उसकी मुहब्बत और क़ुरबत में क़ायम रहते हैं। इसी क़ुरबत में रहने से हम माँगेंगे तो वह हमारी सुनकर हमें फल दिलाएगा। उसकी क़ुरबत में नहीं रहेंगे तो हमारी सुनी नहीं जाएगी और हम फल नहीं लाएँगे।

► **क्या आपको दुआ की यह क़ुरबत और मुहब्बत हासिल हुई है? क्या आप दुआ से फल लाए हैं?**

तीसरी बात,

अंगूर की बेल की ख़ुशी मनाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि मेरी ख़ुशी तुममें हो बल्कि तुम्हारा दिल ख़ुशी से भरकर छलक उठे। (यूहन्ना 15:11)

मसीह पर ईमान का एक अहम नतीजा ख़ुशी है। यह आम ख़ुशी नहीं है। यह उसी की ख़ुशी है—वह ख़ुशी जिसने गुनाह और मौत पर फ़तह पाई है।

► **क्या आपको यह भरपूर ख़ुशी हासिल है? ऐसी ख़ुशी जो दिल से छलक उठती है?**

दाऊद नबी ने सदियों पहले एक मशहूर ज़बूर में ख़ुदा की यह गहरी ख़ुशी बयान की,

> तू मेरे दुश्मनों के रूबरू मेरे सामने मेज़ बिछाकर मेरे सर को तेल से तरो-ताज़ा करता है। मेरा प्याला तेरी बरकत से छलक उठता है। (ज़बूर 23:5)

कितना सुकून, कितनी ख़ुशी इन अलफ़ाज़ से ज़ाहिर होती है! जब हम ख़ुद ख़ुशी तलाश करते हैं तो यह ख़ुशी खोखली साबित होती है। लेकिन जब ईसा मसीह हमें अपनी ख़ुशी दिलाता है तो हम सचमुच ख़ुश होते हैं चाहे दुश्मन हमारे रूबरू क्यों न हो।

► **क्या आपको अंगूर की गहरी ख़ुशी हासिल है?**

चौथी बात,

अंगूर की बेल की आज़ादी अपनाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुमको बताता हूँ। अब से मैं नहीं कहता कि तुम ग़ुलाम हो, क्योंकि ग़ुलाम नहीं जानता कि उसका मालिक क्या करता है। इसके बजाए मैंने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्योंकि मैंने तुमको सब कुछ बताया है जो मैंने अपने बाप से सुना है। (यूहन्ना 15:14-15)

► **ईसा मसीह के शागिर्द अब से क्या हैं?**

वह उसके दोस्त हैं।

► **अब से वह क्या नहीं हैं?**

अब से वह ग़ुलाम नहीं हैं।

► **जो ग़ुलाम नहीं है वह क्या है?**

वह आज़ाद है।

► **आज़ाद होने और ग़ुलाम होने में क्या फ़रक़ है?**

ग़ुलाम का फ़र्ज़ है कि वह मालिक का हर हुक्म पूरा करे। वह इनकार नहीं कर सकता। इसके उलट दोस्त अपनी आज़ादी से दूसरे की बात पूरी करता है। मसीह के शागिर्द ख़ुशी से उसकी हिदायात पर चलते हैं। इसलिए नहीं कि वह मजबूर हैं बल्कि इसलिए कि वह अपने आक़ा को ख़ुश रखना चाहते हैं।

► **ईसा मसीह ग़ुलाम और दोस्त में एक और फ़रक़ बयान करता है। वह क्या है?**

ग़ुलाम नहीं जानता कि मालिक क्या करता है। यहूदी ऐसे ग़ुलाम थे, क्योंकि यहूदी शरीअत के ग़ुलाम थे। इसके मुक़ाबले में ईसा मसीह ने हमें नजात देकर सब कुछ बता दिया है जो फ़तहमंद ज़िंदगी गुज़ारने के लिए ज़रूरी है। वह नहीं चाहता कि हम अंधे धुंद उसके पीछे हो लें। वह चाहता है कि हम समझ-बूझ कर उसकी हर बात मानें।

► **एक बार फिर शरीअत और फ़ज़ल में फ़रक़ की झलक दिखाई देती है। फ़रक़ क्या है?**

ईसा मसीह की आमद से पहले इसराईली शरीअत के ग़ुलाम थे। वह शरीअत के अहकाम पर चलने पर मजबूर थे। उन्हें दोस्त की आज़ादी नहीं थी जो आज़ादी और ख़ुशी से ख़ुदा की राह पर चलता है। देखो, ख़ुदा नहीं चाहता कि हम मजबूरी से उसकी मरज़ी करें। वह चाहता है कि हम आज़ादी से उसकी मरज़ी पूरी करें। यही फ़ज़ल का मतलब है।

► **जो आज़ाद नहीं है वह क्यों मालिक के हुक्म पर चलता है?**

उसे डर है, और वह सज़ा से बचना चाहता है।

► **जो आज़ाद है वह क्यों दोस्त के हुक्म पर चलता है?**

वह न डरता है न सज़ा के बारे में सोचता है। वह इतना ही चाहता है कि दोस्त ख़ुश हो।

अच्छे घराने में भी ऐसा ही होता है। अच्छे घराने में हर एक ख़ुशी से घर के फ़रायज़ अदा करता है। उसे डर नहीं कि सरपरस्त सज़ा देगा। उसे पूरी उम्मीद है कि सरपरस्त कहेगा कि शाबाश बेटा, शाबाश बेटी!

आख़िरी बात,

बेल नहीं तो फल नहीं

► **हम किस तरह जान सकते हैं कि हम ग़ुलाम या दोस्त हैं?**

मसीह ने फ़रमाया,

> तुमने मुझे नहीं चुना बल्कि मैंने तुमको चुन लिया है। मैंने तुमको मुक़र्रर किया कि जाकर फल लाओ, ऐसा फल जो क़ायम रहे। फिर बाप तुमको वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम में माँगोगे। मेरा हुक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो। (यूहन्ना 15:16-17)

► **क्या ग़ुलाम अपने आपको छुड़ा सकता है?**

नहीं। जो ग़ुलाम है वह अपने आपको आज़ाद नहीं कर सकता। वह तो ज़ंजीरों में जकड़ा रहता है। हम भी अपने आपको मसीह के आज़ाद दोस्त नहीं बना सकते हैं। सिर्फ़ वही हमें आज़ाद कर सकता है।

जब ईसा मसीह ने सलीब पर अपनी जान दी तो उसने मौत और गुनाह पर फ़तह पाकर ग़ुलामी के बंधन तोड़ डाले। अब से जो उस पर ईमान लाता है वह यह आज़ादी पाता है। तब उसे मालूम हो जाता है कि यह मेरा अपना काम नहीं था, क्योंकि मैं ख़ुद बख़ुद गुनाह और मौत से आज़ादी हासिल नहीं कर सकता था। तब वह अंगूर की बेल की शाख़ बनकर बेल की ताक़त पाता है, और वह फलने-फूलने लगता है। उसकी कोंपलें निकलती हैं, फल लगता है। बेशक माली उसकी काँट-छाँट करता रहता है। फिर भी उसका दिल एक अजीब-सी ख़ुशी से भरा रहता है। क्योंकि वह जानता है कि यह इसलिए हो रहा है कि मैं अच्छा-ख़ासा फल लाऊँ। मसीह ख़ुद ने मुझे चुन लिया है ताकि मैं आज़ाद और फलदार ज़िंदगी गुज़ारूँ और एक दिन उसके पास पहुँच जाऊँ।

► **हम किस तरह मालूम कर सकते हैं कि ईसा मसीह ने हमें चुन लिया है?**

फल लाने से और फल लाने के हथियार यानी दुआ से। उसी से हम दिन बदिन अंगूर की बेल की क़ुरबत और ताक़त हासिल करते रहते हैं।

► **क्या आपको फल लाने का तजरिबा हुआ है?**

इंजील, यूहन्ना 15:1-17

मैं अंगूर की हक़ीक़ी बेल हूँ और मेरा बाप माली है। वह मेरी हर शाख़ को जो फल नहीं लाती काटकर फेंक देता है। लेकिन जो शाख़ फल लाती है उसकी वह काँट-छाँट करता है ताकि ज़्यादा फल लाए। उस कलाम के ज़रीए जो मैंने तुमको सुनाया है तुम तो पाक-साफ़ हो चुके हो। मुझमें क़ायम रहो तो मैं भी तुममें क़ायम रहूँगा। जो शाख़ बेल से कट गई है वह फल नहीं ला सकती। बिलकुल इसी तरह तुम भी अगर तुम मुझमें क़ायम नहीं रहते फल नहीं ला सकते।

मैं ही अंगूर की बेल हूँ, और तुम उसकी शाख़ें हो। जो मुझमें क़ायम रहता है और मैं उसमें वह बहुत-सा फल लाता है, क्योंकि मुझसे अलग होकर तुम कुछ नहीं कर सकते। जो मुझमें क़ायम नहीं रहता और न मैं उसमें उसे बेफ़ायदा शाख़ की तरह बाहर फेंक दिया जाता है। ऐसी शाख़ें सूख जाती हैं और लोग उनका ढेर लगाकर उन्हें आग में झोंक देते हैं जहाँ वह जल जाती हैं। अगर तुम मुझमें क़ायम रहो और मैं तुममें तो जो जी चाहे माँगो, वह तुमको दिया जाएगा। जब तुम बहुत-सा फल लाते और यों मेरे शागिर्द साबित होते हो तो इससे मेरे बाप को जलाल मिलता है। जिस तरह बाप ने मुझसे मुहब्बत रखी है उसी तरह मैंने तुमसे भी मुहब्बत रखी है। अब मेरी मुहब्बत में क़ायम रहो। जब तुम मेरे अहकाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारते हो तो तुम मेरी मुहब्बत में क़ायम रहते हो। मैं भी इसी तरह अपने बाप के अहकाम के मुताबिक़ चलता हूँ और यों उसकी मुहब्बत में क़ायम रहता हूँ।

मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि मेरी ख़ुशी तुममें हो बल्कि तुम्हारा दिल ख़ुशी से भरकर छलक उठे। मेरा हुक्म यह है कि एक दूसरे को वैसे प्यार करो जैसे मैंने तुमको प्यार किया है। इससे बड़ी मुहब्बत है नहीं कि कोई अपने दोस्तों के लिए अपनी जान दे दे। तुम मेरे दोस्त हो अगर तुम वह कुछ करो जो मैं तुमको बताता हूँ। अब से मैं नहीं कहता कि तुम ग़ुलाम हो,

क्योंकि ग़ुलाम नहीं जानता कि उसका मालिक क्या करता है। इसके बजाए मैंने कहा है कि तुम दोस्त हो, क्योंकि मैंने तुमको सब कुछ बताया है जो मैंने अपने बाप से सुना है। तुमने मुझे नहीं चुना बल्कि मैंने तुमको चुन लिया है। मैंने तुमको मुक़र्रर किया कि जाकर फल लाओ, ऐसा फल जो क़ायम रहे। फिर बाप तुमको वह कुछ देगा जो तुम मेरे नाम में माँगोगे। मेरा हुक्म यही है कि एक दूसरे से मुहब्बत रखो।

दुश्मन के रूबरू मज़बूती
रूहुल क़ुद्स की ज़बरदस्त हिमायत

इस दुनिया को छोड़कर चले जाने से पहले ईसा मसीह अपने शागिर्दों को उस वक़्त के लिए तैयार करना चाहता था जब वह उनके साथ नहीं होगा। उसने फ़रमाया कि मत घबराओ, तुम अकेले नहीं रहोगे। रूहुल-क़ुद्स तुम पर नाज़िल होगा। वही मेरी क़ुरबत और मदद दिलाएगा। इस सिलसिले में मसीह ने एक नया पहलू छेड़ा—दुश्मन के रूबरू मज़बूती। हम मुख़ालिफ़ों के सामने किस तरह मज़बूत रह सकते हैं? यह इस सबक़ का मज़मून है। पहली बात,

दुश्मन के रूबरू मज़बूत रहो

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> अगर दुनिया तुमसे दुश्मनी रखे तो यह बात ज़हन में रखो कि उसने तुमसे पहले मुझसे दुश्मनी रखी है। (यूहन्ना 15:18)

► **इस बात में दुनिया कौन है?**

दुनिया वह सब हैं जो ख़ुदा के ताबे नहीं रहते।

► **जो मसीह पर ईमान लाए हैं क्या वह भी दुनिया के हैं?**

नहीं। मसीह ने फ़रमाया,

> अगर तुम दुनिया के होते तो दुनिया तुमको अपना समझकर प्यार करती। लेकिन तुम दुनिया के नहीं हो। मैंने तुमको दुनिया से अलग करके चुन लिया है। (यूहन्ना 15:19)

► **जो ईमान रखते हैं वह दुनिया के नहीं हैं। क्यों?**

इसलिए कि ईसा मसीह ने उन्हें दुनिया से अलग करके चुन लिया है।

► **क्या दुनिया ख़ुश है कि मसीह ने ईमानदारों को अलग कर लिया है?**

नहीं। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> अगर उन्होंने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे। (यूहन्ना 15:20)

► **यह नाख़ुशी किस तरह मालूम होती है?**

यह नाख़ुशी सताने से मालूम होती है। जिन्होंने मसीह को सताया वह उसके शागिर्दों को सताने के लिए हर रास्ता निकालेंगे। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम की वजह से करेंगे, क्योंकि वह उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 15:21)

► **दुनिया के लोग किसके नाम की वजह से ईमानदारों को सताएँगे?**

वह मसीह के नाम की वजह से उन्हें सताएँगे।

► **वह उन्हें क्यों सताएँगे?**

वह ख़ुदा बाप को नहीं जानते जिसने उसे भेजा था।

► **वह किस लिहाज़ से ख़ुदा बाप को नहीं जानते?**

ईसा मसीह ने ख़ुदा बाप की मरज़ी उन पर ज़ाहिर की लेकिन उन्होंने उसे क़बूल नहीं किया था। इसलिए वह ख़ुदा बाप को नहीं जानते।

► **यहाँ इसका क्या मतलब है कि वह ख़ुदा बाप को नहीं जानते?**

यहाँ इसका मतलब यह नहीं है कि वह ख़ुदा के बारे में इल्म नहीं रखते। यहाँ इसका मतलब है कि उनका ख़ुदा से रिश्ता नहीं है, ताल्लुक़ नहीं है। उन्होंने उसकी मरज़ी रद करके उसके घरवाले बनने से इनकार किया है।

ग़रज़, ईमानदारों को दूसरों के हमलों के लिए चौकस रहना चाहिए। वह हैरान न हों अगर उन्हें सताया जाए। और यह सताना कई बार बहुत सख़्त होगा। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> वह तुमको यहूदी जमातों से निकाल देंगे, बल्कि वह वक़्त भी आनेवाला है कि जो भी तुमको मार डालेगा वह समझेगा, 'मैंने अल्लाह की ख़िदमत की है।' (यूहन्ना 16:2)

► **ईमानदारों के साथ क्या किया जाएगा?**

- उन्हें जमातों से निकाल दिया जाएगा। मतलब है उन्हें बिरादरी से और कई बार घर से भी ख़ारिज किया जाएगा।

- लोग ईमानदारों को मार डालेंगे यह समझकर कि मैंने अल्लाह की ख़िदमत की है।

ग़रज़, यह कोई नई बात नहीं है कि लोगों को ईमान के बाइस घर और बिरादरी से भगाया जाता है।

► **क्या ऐसे सतानेवाले सचमुच दीनदार होते हैं?**

नहीं। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> वह इस क़िस्म की हरकतें इसलिए करेंगे कि उन्होंने न बाप को जाना है, न मुझे। (यूहन्ना 16:3)

यों ईसा मसीह मुझसे और आपसे पूछ रहा है कि क्या तुम दुनिया की दुश्मनी सहने के लिए तैयार हो? फिर भी वह हमें डराना नहीं चाहता। उसका फ़रमान है कि मत घबराओ, क्योंकि तुम्हें एक अज़ीम मददगार मिलेगा। रूहुल-क़ुद्स तुम पर नाज़िल होगा जो तुम्हें दुश्मन का सामना करने की मज़बूती दिलाएगा। किस तरह? वह तुम्हारा दिल पाँच बातों से भरकर मज़बूती दिलाएगा। पहली बात,

गवाही देने की मज़बूती पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की तरफ़ से तुम्हारे पास भेजूँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा। वह सच्चाई का रूह है जो बाप में से निकलता है। तुमको भी मेरे बारे में गवाही देना है, क्योंकि तुम इब्तिदा से मेरे साथ रहे हो। (यूहन्ना 15:26-27)

► **ईसा मसीह रूहुल-क़ुद्स भेजेगा तो वह क्या करेगा?**

वह ईसा मसीह के बारे में गवाही देगा।

► **जब लोग हमारे ख़िलाफ़ खड़े हो जाएँ तो यह क्यों अहम है कि हम रूहुल-क़ुद्स की गवाही पाएँ?**

जब डाँवाँडोल होने का ख़तरा है तो रूहुल-क़ुद्स हमें मसीह के काम और कलाम की याद दिलाता है। न सिर्फ़ यह बल्कि वह हमें मसीह की क़ुरबत भी दिलाता है। तब हम अपनी ज़िंदगी और बातों से मसीह के बारे में पुख़्ता गवाही दे सकते हैं।

► **क्या आपको गवाही देने की ताक़त मिल गई है?**

ईमान लाने से आपका दिल रूहुल-क़ुद्स की गवाही से भर जाता है। तब आप मज़बूती से मुख़ालिफ़ दुनिया का सामना कर सकते हैं।

फिर ईसा मसीह ने एक पहेली पेश की। उसने रूहुल-क़ुद्स के बारे में फ़रमाया,

> जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में दुनिया की ग़लती को बेनिक़ाब करके यह ज़ाहिर करेगा : **गुनाह** के बारे में यह कि लोग मुझ पर ईमान नहीं रखते, **रास्तबाज़ी** के बारे में यह कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे, और **अदालत** के बारे में यह कि इस दुनिया के हुक्मरान की अदालत हो चुकी है। (यूहन्ना 16:8-11)

रूहुल-क़ुद्स तीन बातों में दुनिया की ग़लती बेनिक़ाब करेगा—गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में उसकी ग़लती। हम यह पहेली किस तरह सुलझा सकते हैं?

यह समझने के लिए यह जानना ज़रूरी है कि जो भी ईमान लाए उसे तीन चीज़ें मिलती हैं : गुनाह की माफ़ी, मसीह की रास्तबाज़ी और अदालत से छुटकारा। यही तीन चीज़ें दुनिया कभी नहीं पा सकती। दुनिया अपने गुनाह, अपने झूठ और इलाही अदालत से नजात नहीं पा सकती। हाँ, वह यह बात मानती भी नहीं। इसलिए रूहुल-क़ुद्स उसकी यह ग़लती बेनिक़ाब करता रहेगा। दूसरी तरफ़ रूहुल-क़ुद्स इन तीन बातों से ईमानदारों को मज़बूत करता रहेगा ताकि वह दुनिया के हमलों से बचे रहें। इसलिए दूसरी बात,

माफ़ी की मज़बूती पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया कि रूहुल-क़ुद्स गुनाह के बारे में दुनिया की ग़लती बेनिक़ाब करेगा।

► **वह गुनाह के बारे में दुनिया की ग़लती किस तरह बेनिक़ाब करेगा?**

दुनिया की ग़लती इससे बेनिक़ाब होगी कि लोग मसीह पर ईमान नहीं रखते।

► **ईमान न रखना क्यों गुनाह का सबूत है?**

ईसा मसीह के वसीले से हमारे गुनाह माफ़ हुए हैं। सिर्फ़ एक वजह है कि इनसान को मसीह की माफ़ी न मिले। वजह यह है कि वह ईमान न लाए। जो

ईमान नहीं लाता उसका छुटकारा नामुमकिन है। दुनिया का यही हाल है। वह नहीं समझती कि मुझे उस माफ़ी की ज़रूरत है जो सिर्फ़ ईसा मसीह दे सकता है। लेकिन ईमानदार को पता है कि यही बात मुझे डाँवाँडोल हो जाने से बचाती है।

► **क्या आपको मसीह की माफ़ी मिल गई है?**

ईमान लाने से आपका दिल रूहुल-क़ुद्स की मदद से माफ़ी की ख़ुशी से भर जाता है। तब आप मज़बूती से मुख़ालिफ़ दुनिया का सामना कर सकते हैं। तीसरी बात,

रास्तबाज़ी की मज़बूती पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया कि रूहुल-क़ुद्स रास्तबाज़ी के बारे में दुनिया की ग़लती को बेनिक़ाब करेगा।

► **वह यह किस तरह करेगा?**

इससे कि ईसा मसीह ख़ुदा बाप के पास जा रहा है।

► **ख़ुदा बाप के पास जाने का क्या मतलब है?**

ख़ुदा बाप के पास जाने का रास्ता सलीबी मौत थी। इस सलीबी मौत से हमें न सिर्फ़ उसकी माफ़ी हासिल हुई बल्कि उसकी रास्तबाज़ी भी।

► **सलीबी मौत से हमें रास्तबाज़ी किस तरह हासिल हुई?**

इनसान अपनी ताक़त से ख़ुदा के सामने रास्तबाज़ नहीं ठहर सकता। वह अपनी ताक़त से कभी वह पाकीज़गी हासिल नहीं कर सकता जिससे वह ख़ुदा के हुज़ूर रास्तबाज़ ठहर सके। इसलिए ईसा मसीह ने हमारी सज़ा अपने ऊपर ली ताकि हम ख़ुदा बाप के सामने रास्तबाज़ ठहरें। यह हमारी अपनी रास्तबाज़ी नहीं बल्कि उसी की है। इसलिए हमारी नजात यक़ीनी है : यह काम हमसे नहीं बल्कि उससे हुआ जिसका हर काम ठोस और पक्का है।

दुनिया समझती है कि मेरी रास्तबाज़ी ठीक ही है। वह यह नहीं मानती कि ईसा मसीह को मेरी ख़ातिर मरने की ज़रूरत थी ताकि मुझे उसकी रास्तबाज़ी हासिल हो। रूहुल-क़ुद्स दुनिया की यह ग़लती बेनिक़ाब करेगा, और अदालत के दिन दुनिया को अपनी ग़लती खुले-आम माननी पड़ेगी। इसके मुक़ाबले में

जिसे ईसा मसीह की रास्तबाज़ी हासिल है वह रूहुल-क़ुद्स से मज़बूत रहता है।

► **क्या आपको मसीह की रास्तबाज़ी मिल गई है?**

ईमान लाने से आपका दिल रूहुल-क़ुद्स की मदद से रास्तबाज़ी की ख़ुशी से भर जाता है। तब आप मज़बूती से मुख़ालिफ़ दुनिया का सामना कर सकते हैं। चौथी बात,

छुटकारे की मज़बूती पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया कि रूहुल-क़ुद्स अदालत के बारे में दुनिया की ग़लती बेनिक़ाब करेगा।

► **वह यह किस तरह बेनिक़ाब करेगा?**

इससे कि इस दुनिया के हुक्मरान की अदालत हो चुकी है।

► **दुनिया का हुक्मरान कौन है?**

इबलीस।

► **उसकी अदालत किस तरह हो चुकी है?**

मसीह की मौत से हर वह इनसान इबलीस के क़ब्ज़े से छूट गया जो मसीह पर ईमान लाया है। अपनी मौत और जी उठने से मसीह ने इबलीस पर फ़तह पाकर उसकी अदालत की। अब तक इबलीस गरजते हुए शेर-बबर की तरह इधर-उधर घूमकर सबको हड़प कर लेने की तलाश में रहता है। लेकिन उसकी हुकूमत महदूद है। एक दिन ईसा मसीह वापस आकर उसे उसके चेलों समेत पकड़कर जहन्नुम में डाल देगा। लेकिन जो मसीह पर ईमान लाए हैं उनका छुटकारा यक़ीनी है।

► **क्या आपको मसीह का छुटकारा मिल गया है?**

ईमान लाने से आपका दिल रूहुल-क़ुद्स की मदद से छुटकारे की ख़ुशी से भर जाता है। तब आप मज़बूती से मुख़ालिफ़ दुनिया का सामना कर सकते हैं। मगर ख़बरदार। अगर ईमान न लाए तो आपकी अदालत यक़ीनी है। आख़िरी बात,

सच्चाई की मज़बूती पाओ

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मुझे तुमको मज़ीद बहुत कुछ बताना है, लेकिन इस वक़्त तुम उसे बरदाश्त नहीं कर सकते। जब सच्चाई का रूह आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगा। (यूहन्ना 16:12-13)

► **रूहुल-क़ुद्स को क्या नाम दिया गया है?**

सच्चाई का रूह।

► **इसका क्या मतलब है?**

उस पर पूरा भरोसा रखा जा सकता है क्योंकि वह सरासर सच्चा है। उसमें झूठ नहीं है।

► **सच्चाई का यह रूह क्या करेगा?**

यह पूरी सच्चाई की तरफ़ हमारी राहनुमाई करेगा।

► **वह यह किस तरह करेगा?**

- उसने ईसा मसीह की हर बात क़लमबंद करने में शागिर्दों की मदद की।
- लेकिन आज भी वह हमारी राहनुमाई करता है।

► **आज वह किस तरह हमारी राहनुमाई करता है?**

- वह ख़ुदा की मरज़ी समझने में हमारी राहनुमाई करता है।
- इस टेढ़ी-मेढ़ी दुनिया में वह ख़ुदा की मरज़ी पर अमल करने में हमारी राहनुमाई करता है।

► **क्या आप को रूह की सच्चाई मिल गई है?**

ईमान लाने से आपका दिल रूहुल-क़ुद्स की मदद से सच्चाई की ख़ुशी से भर जाता है। तब आप मज़बूती से मुख़ालिफ़ दुनिया का सामना कर सकते हैं।

ग़रज़ मसीह की इन बातों से रूहुल-क़ुद्स का अहम किरदार ख़ूब मालूम होता है। जो ईमान रखता है उसके लिए दुनिया की दुश्मनी पक्की है। लेकिन ईमान लाने से उसे एक ऐसा मददगार मिलता है जो हर तरह से उसकी मदद करेगा। जब दुनिया उस पर हमला करेगी तो उसका दिल मज़बूत रहेगा। क्योंकि वह गवाही देने की ख़ुशी से भर जाएगा; वह मसीह की माफ़ी, रास्तबाज़ी और छुटकारे की ख़ुशी से भर जाएगा; और वह रूह की सच्चाई से भर जाएगा।

► **क्या आपको यह मददगार हासिल हुआ है?**

इंजील, यूहन्ना 15:18–16:15

अगर दुनिया तुमसे दुश्मनी रखे तो यह बात ज़हन में रखो कि उसने तुमसे पहले मुझसे दुश्मनी रखी है। अगर तुम दुनिया के होते तो दुनिया तुमको अपना समझकर प्यार करती। लेकिन तुम दुनिया के नहीं हो। मैंने तुमको दुनिया से अलग करके चुन लिया है। इसलिए दुनिया तुमसे दुश्मनी रखती है। वह बात याद करो जो मैंने तुमको बताई कि ग़ुलाम अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। अगर उन्होंने मुझे सताया है तो तुम्हें भी सताएँगे। और अगर उन्होंने मेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी तो वह तुम्हारी बातों पर भी अमल करेंगे। लेकिन तुम्हारे साथ जो कुछ भी करेंगे, मेरे नाम की वजह से करेंगे, क्योंकि वह उसे नहीं जानते जिसने मुझे भेजा है। अगर मैं आया न होता और उनसे बात न की होती तो वह क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उनके गुनाह का कोई भी उज़्र बाक़ी नहीं रहा। जो मुझसे दुश्मनी रखता है वह मेरे बाप से भी दुश्मनी रखता है। अगर मैंने उनके दरमियान ऐसा काम न किया होता जो किसी और ने नहीं किया तो वह क़ुसूरवार न ठहरते। लेकिन अब उन्होंने सब कुछ देखा है और फिर भी मुझसे और मेरे बाप से दुश्मनी रखी है। और ऐसा होना भी था ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए कि 'उन्होंने बिलावजह मुझसे कीना रखा है।'

जब वह मददगार आएगा जिसे मैं बाप की तरफ़ से तुम्हारे पास भेजूँगा तो वह मेरे बारे में गवाही देगा। वह सच्चाई का रूह है जो बाप में से निकलता है। तुमको भी मेरे बारे में गवाही देना है, क्योंकि तुम इब्तिदा से मेरे साथ रहे हो। मैंने तुमको यह इसलिए बताया है ताकि तुम गुमराह न हो जाओ। वह तुमको यहूदी जमातों से निकाल देंगे, बल्कि वह वक़्त भी आनेवाला है कि जो भी तुमको मार डालेगा वह समझेगा, 'मैंने अल्लाह की ख़िदमत की है।' वह इस क़िस्म की हरकतें इसलिए करेंगे कि उन्होंने न बाप को जाना है, न मुझे। मैंने तुमको यह बातें इसलिए बताई हैं कि जब उनका वक़्त आ जाए तो तुमको याद आए कि मैंने तुम्हें आगाह कर दिया था।

मैंने अब तक तुमको यह नहीं बताया क्योंकि मैं तुम्हारे साथ था। लेकिन अब मैं उसके पास जा रहा हूँ जिसने मुझे भेजा है। तो भी तुममें से कोई मुझसे नहीं पूछता, 'आप कहाँ जा रहे हैं?' इसके बजाए तुम्हारे दिल ग़मज़दा हैं कि मैंने तुमको ऐसी बातें बताई हैं। लेकिन मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम्हारे लिए फ़ायदामंद है कि मैं जा रहा हूँ। अगर मैं न जाऊँ तो मददगार तुम्हारे पास नहीं आएगा। लेकिन अगर मैं जाऊँ तो मैं उसे तुम्हारे पास भेज दूँगा। और जब वह आएगा तो गुनाह, रास्तबाज़ी और अदालत के बारे में दुनिया की ग़लती को बेनिक़ाब करके यह ज़ाहिर करेगा : गुनाह के बारे में यह कि लोग मुझ पर ईमान नहीं रखते, रास्तबाज़ी के बारे में यह कि मैं बाप के पास जा रहा हूँ और तुम मुझे अब से नहीं देखोगे, और अदालत के बारे में यह कि इस दुनिया के हुक्मरान की अदालत हो चुकी है।

मुझे तुमको मज़ीद बहुत कुछ बताना है, लेकिन इस वक़्त तुम उसे बरदाश्त नहीं कर सकते। जब सच्चाई का रूह आएगा तो वह पूरी सच्चाई की तरफ़ तुम्हारी राहनुमाई करेगा। वह अपनी मरज़ी से बात नहीं करेगा बल्कि सिर्फ़ वही कुछ कहेगा जो वह ख़ुद सुनेगा। वही तुमको मुस्तक़बिल के बारे में भी बताएगा। और वह इसमें मुझे जलाल देगा कि वह तुमको वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला होगा। जो कुछ भी बाप का है वह मेरा है। इसलिए मैंने कहा, 'रूह तुमको वही कुछ सुनाएगा जो उसे मुझसे मिला होगा।'

फ़तह!
जन्म लेने वाली बिरादरी की ख़ुशी

ईसा मसीह जानता था कि थोड़ी देर बाद मुझे इस दुनिया को छोड़ना है। इसलिए उसने अपने शागिर्दों को आख़िरी हिदायात दीं ताकि वह उस वक़्त के लिए तैयार हो जाएँ। वह जान लें कि हमारे आक़ा हमें अकेला नहीं छोड़ेंगे। वह रूहुल-क़ुद्स भेजेंगे जिसमें वह ख़ुद हमारे दिलों में सुकूनत करेंगे। अब ईसा मसीह ने एक आख़िरी मज़मून छेड़ा। यह कि तुम्हें थोड़ी देर दुख होगा, लेकिन जल्द ही यह दुख ख़ुशी में बदल जाएगा—उस समय जब मेरी बिरादरी जन्म लेगी। यह बिरादरी क्यों हद से ज़्यादा ख़ुशी मनाएगी? इसकी चार वुजूहात होंगी। बिरादराना ख़ुशी की पहली वजह,

तुमको नई ज़िंदगी मिलेगी

उसने फ़रमाया,

> थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे। (यूहन्ना 16:16)

उसके कुछ शागिर्द आपस में बात करने लगे, “उनके यह कहने से क्या मुराद है कि ‘थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे’? और इसका क्या मतलब है, ‘मैं बाप के पास जा रहा हूँ’? यह किस क़िस्म की ‘थोड़ी देर’ है जिसका ज़िक्र वह कर रहे हैं? हम उनकी बात नहीं समझते।” ईसा मसीह ने जान लिया कि वह आपस में ऐसी बातें कर रहे हैं। उसने जवाब में फ़रमाया,

> तुम रो रोकर मातम करोगे जबकि दुनिया ख़ुश होगी। तुम ग़म करोगे, लेकिन तुम्हारा ग़म ख़ुशी में बदल जाएगा। जब किसी औरत के बच्चा पैदा होनेवाला होता है तो उसे ग़म और तकलीफ़ होती है क्योंकि उसका वक़्त आ गया है। लेकिन ज्योंही बच्चा

> पैदा हो जाता है तो माँ ख़ुशी के मारे कि एक इनसान दुनिया में आ गया है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। यही तुम्हारी हालत है। क्योंकि अब तुम ग़मज़दा हो, लेकिन मैं तुमसे दुबारा मिलूँगा। उस वक़्त तुमको ख़ुशी होगी, ऐसी ख़ुशी जो तुमसे कोई छीन न लेगा। (यूहन्ना 16:20-22)

► **ईसा मसीह किस वक़्त का ज़िक्र कर रहा था?**

वह अपनी मौत का ज़िक्र कर रहा था। उस वक़्त शागिर्द सख़्त मातम करेंगे।

► **वह क्यों मातम करेंगे?**

इसलिए कि ईसा मसीह उनके साथ नहीं होगा, हालाँकि वह पक्की उम्मीद रखते थे कि वह बादशाह बनेगा।

► **दुनिया क्यों ख़ुश होगी?**

इसलिए कि वह समझेगी कि ईसा मसीह को मार डालने से हमारा मसला हल हो गया है। आइंदा उसके कलाम का सामना नहीं करना पड़ेगा। आइंदा कोई नहीं कहेगा कि सुधर जाओ, तौबा करो। दुनिया का हुक्मरान इबलीस सबसे ख़ुश होगा। वह तो समझेगा कि मेरा सबसे बड़ा दुश्मन ख़त्म है, अब मेरी हुकूमत और ज़्यादा पक्की हो गई है।

► **लेकिन शागिर्दों का ग़म नहीं रहेगा। ग़म जल्द ही ख़ुशी में बदल जाएगा। क्यों?**

ईसा मसीह फ़रमाता है कि थोड़ी देर बाद मैं तुमसे दुबारा मिलूँगा।

► **सलीबी मौत के बाद यह किस तरह मुमकिन होगा?**

यह इससे होगा कि वह जी उठेगा और उनसे मिलेगा। बाद में जब उसे आसमान पर उठाया जाएगा तो रूहुल-क़ुद्स नाज़िल होगा जिसमें ईसा मसीह अपने शागिर्दों के दिलों में बसेगा।

► **ईसा मसीह यहाँ शागिर्दों की ख़ुशी एक ख़ूबसूरत मिसाल से बयान करता है। कौन-सी मिसाल से?**

जन्म देनेवाली औरत की मिसाल से। जब औरत के बच्चा पैदा होने लगता है तो औरत को ग़म और तकलीफ़ होती है क्योंकि उसका वक़्त आ गया है। लेकिन ज्योंही बच्चा पैदा हो जाता है तो माँ ख़ुशी के मारे कि एक इनसान दुनिया में आ गया है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है।

► **यह मिसाल किस तरह शागिर्दों की आनेवाली ख़ुशी बयान करती है?**

ईसा मसीह की मौत भी ऐसी औरत की सख़्त दिक़्क़त की तरह होगी। जिस तरह माँ को ग़म और तकलीफ़ होती है जब उसका वक़्त आ जाता है उसी तरह ईसा मसीह और उसके शागिर्दों को ग़म और तकलीफ़ होगी जब उसका वक़्त आ जाएगा। लेकिन माँ की तकलीफ़ का एक मक़सद होता है, यह कि बच्चा पैदा हो जाए। बिलकुल इसी तरह मसीह की तकलीफ़ का एक मक़सद था, यह कि इनसान नए सिरे से पैदा हो जाए, कि रूह की नई बिरादरी जन्म ले। और जिस तरह बच्चे के पैदा हो जाने पर माँ इतनी ख़ुश हो जाती है कि वह अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है उसी तरह शागिर्द ख़ुशी के मारे अपनी तमाम मुसीबत भूल जाएँगे—इसलिए भूल जाएँगे कि अपनी जान देने और जी उठने से ईसा मसीह मौत और इबलीस पर फ़तह पाकर शागिर्दों से दुबारा मिलेगा। उस वक़्त शागिर्द रूहुल-क़ुद्स की मदद से नए सिरे से पैदा हो जाएँगे। तब वह मसीह की जीत, अपनी रूहानी पैदाइश और नई बिरादरी की ख़ुशी मनाएँगे।

► **क्या यह ख़ुशी कभी ख़त्म होगी?**

नहीं। यह ऐसी ख़ुशी होगी जो कोई उनसे छीन न लेगा।

► **यह ख़ुशी कोई क्यों नहीं छीन सकता?**

इसलिए कि ईसा मसीह आसमान पर उठाए जाने के बाद भी उनमें मौजूद होगा। वह रूहुल-क़ुद्स के ज़रीए उनके दिलों में बसेगा। ईसा मसीह की हुज़ूरी उन्हें मज़बूत रखेगी। चूँकि वह आज तक ज़िंदा है इसलिए हमारी उम्मीद पुख़्ता है, इसलिए कोई यह ख़ुशी छीन नहीं सकता।

► **क्या आपको इस बिरादरी की नई ज़िंदगी हासिल है?**

बिरादराना ख़ुशी की दूसरी वजह,

तुम ख़ुदा के लाडले होगे

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह तुमको देगा। अब तक तुमने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुमको मिलेगा। फिर तुम्हारी ख़ुशी पूरी हो जाएगी। (यूहन्ना 16:23-24)

► **उस दिन तुम मुझसे नहीं पूछोगे—इसका क्या मतलब है?**

इस वक़्त शागिर्द ईसा मसीह की राह समझ नहीं सकते। इसलिए वह बार बार पूछ रहे हैं कि उसकी बातों का क्या मतलब है। लेकिन उसके जी उठने के बाद उन्हें सलीबी राह के मक़सद की समझ आएगी। तब पूछने की ज़रूरत ही नहीं रहेगी।

► **तब वह क्या करेंगे?**

तब वह मसीह के नाम में ख़ुदा बाप से माँगेंगे।

► **उनको माँगने पर क्या मिलेगा?**

जो कुछ वह माँगेंगे।

► **तब उनकी ख़ुशी कैसी होगी?**

वह पूरी हो जाएगी।

► **क्यों पूरी हो जाएगी?**

इसलिए कि उन्हें मिलेगा। उन्हें यों मिलेगा जिस तरह बच्चे को बाप से मिलता है। बच्चा अपने बाप से माँगता है। बाप उसे वह चीज़ न भी दे, लेकिन वह ज़रूर उसकी सुनेगा। वह उसे उसकी ज़रूरियात के मुताबिक़ ज़रूर देगा, यों जिस तरह सिर्फ़ अच्छा बाप दे सकता है।

ग़रज़ नई बिरादरी के लोग ख़ुदा के लाडले हैं, उसके प्यारे बच्चे। और जिस तरह बाप का लाडला हर वक़्त बाप के पास आकर माँग सकता है उसी तरह नई बिरादरी के लोग बेझिजक अपने आसमानी बाप के हुज़ूर आ सकते हैं।

► **क्या आप भी ख़ुदा के लाडले हैं?**

बिरादराना ख़ुशी की तीसरी वजह,

आसमान का रास्ता खुल जाएगा

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> उस वक़्त मैं तमसीलों में बात नहीं करूँगा बल्कि तुमको बाप के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा। (यूहन्ना 16:25)

► **जी उठने के बाद ईसा मसीह किस तरह बात करेगा?**

वह ख़ुदा बाप के बारे में साफ़ साफ़ बात करेगा। वह तमसीलों में बात नहीं करेगा। इस वक़्त शागिर्दों को उसकी बातें पहेलियों जैसी लग रही हैं। लेकिन उस वक़्त ईसा मसीह की इस दुनिया में राह साफ़ दिखेगी। उन्हें नजात की राह की पूरी समझ आएगी। यही ख़ुदा बाप के बारे में सबसे अज़ीम बात है—यह कि उसने अपने प्यारे फ़रज़ंद को इस दुनिया में भेज दिया ताकि हमें गुनाह, मौत और इबलीस के क़ब्ज़े से नजात मिले। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> उस दिन तुम मेरा नाम लेकर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी ख़ातिर बाप से दरख़ास्त करूँगा। क्योंकि बाप ख़ुद तुमको प्यार करता है, इसलिए कि तुमने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो कि मैं अल्लाह में से निकल आया हूँ। (यूहन्ना 16:26-27)

► **मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी ख़ातिर बाप से दरख़ास्त करूँगा—इसका क्या मतलब है? क्या ईसा मसीह आइंदा ईमानदारों की ख़ातिर बाप से दरख़ास्त नहीं करेगा?**

वह ज़रूर दरख़ास्त करेगा। लेकिन बुनियादी बात तो हो चुकी होगी। ईसा मसीह के मरने और जी उठने से उसके लोग न सिर्फ़ मसीह की बिरादरी में शामिल हो जाएँगे। इससे नई बिरादरी के लिए आसमान का रास्ता खुल जाएगा। जो रास्ता पहले यों बंद था कि इनसान ख़ुदा के हुज़ूर नहीं आ सकता था वह खुल जाएगा। तब इसकी ज़रूरत नहीं होगी कि ईमानदार ख़ुदा से दूर रहने की वजह से ईसा मसीह से गुज़ारिश करें कि वह बाप को उनकी तरफ़ मायल करे। उस वक़्त हर ईमानदार सीधा ख़ुदा बाप के हुज़ूर आ सकेगा। क्योंकि वह नई बिरादरी में शामिल होने से ख़ुदा बाप का लाडला होगा। कौन-सा बाप अपने लाडले की बात नहीं सुनता? उस वक़्त से कोई फ़रक़ नहीं होगा कि हम मसीह का नाम लेकर ख़ुदा बाप से दुआ करें या मसीह से दुआ करें। एक ही बात होगी, क्योंकि ख़ुदा बाप और ख़ुदा फ़रज़ंद में गहरी यगांगत है।

► **क्या आपके लिए भी आसमान का रास्ता खुल गया है?**

बिरादराना ख़ुशी की चौथी वजह,

दुनिया पर फ़तह पाई जाएगी

मसीह की यह बातें सुनकर शागिर्दों को लगा कि बात साफ़ हो गई है। वह बोले, “अब आप तमसीलों में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे हैं। अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते हैं और कि इसकी ज़रूरत नहीं कि कोई आपकी पूछ-गछ करे। इसलिए हम ईमान रखते हैं कि आप अल्लाह में से निकलकर आए हैं।”

शागिर्द समझते थे कि अब उस्ताद तमसीलों में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे हैं।

► **शागिर्दों को किस बात की समझ आई?**

यह साफ़ मालूम नहीं होता, लेकिन ऐसा लगता है कि उन्हें ज़रूर महसूस हुआ कि उसे सब कुछ मालूम है और कि वह अल्लाह में से निकलकर आया है।

► **क्या उन्हें सचमुच समझ आई थी?**

नहीं। वह कुछ नहीं समझते थे। और यह हो भी नहीं सकता था। उन्हें सलीब की राह की समझ उस वक़्त आई जब ईसा मसीह जी उठकर उन पर ज़ाहिर हुआ। इसलिए मसीह ने दुख-भरी आवाज़ के साथ फ़रमाया,

> अब तुम ईमान रखते हो? देखो, वह वक़्त आ रहा है बल्कि आ चुका है जब तुम तित्तर-बित्तर हो जाओगे। मुझे अकेला छोड़कर हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला नहीं हूँगा क्योंकि बाप मेरे साथ है। (यूहन्ना 16:31-32)

► **क्या ईसा मसीह मान गया कि शागिर्द समझ गए हैं?**

नहीं। उसने उनकी बातों से धोका न खाया। वह साफ़ साफ़ जानता था कि उन्हें समझ नहीं आई। न सिर्फ़ यह। वह उसे अकेला भी छोड़ेंगे। बस एक ही है जिस पर पूरा भरोसा किया जा सकता है—ख़ुदा बाप जो उसे नहीं छोड़ेगा।

► **अगर उसे मालूम था कि शागिर्द कुछ नहीं समझ रहे हैं तो उसने यह तमाम बातें क्यों उन्हें बताई थीं?**

उसने फ़रमाया,

> मैंने तुमको इसलिए यह बात बताई ताकि तुम मुझमें सलामती पाओ। दुनिया में तुम मुसीबत में फँसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनिया पर ग़ालिब आया हूँ। (यूहन्ना 16:33)

► **उसने यह तमाम बातें क्यों उन्हें बताई थीं?**

उसने उनको इसलिए यह बातें बताई थीं ताकि वह मसीह में सलामती पाएँ।

► **वह उसमें किस तरह सलामती पा सकते हैं?**

वह फ़रमा चुका था कि मैं अंगूर की बेल हूँ और तुम मेरी शाख़ें हो। मुझमें रहो। मेरा रस पाते रहो। मेरी हर बात पर अमल करते रहो। तब तुम्हें सलामती मिलेगी। रस में उसकी ताक़त है। याद रखो : मसीह से आसमानी घर का रास्ता खुल गया इसलिए हम ठोस क़दम रखकर आगे बढ़ेंगे। दुश्मन जो भी हमला हम पर करे उसका सामना हम कर पाएँगे—अपनी ताक़त से नहीं बल्कि उसी की ताक़त से।

तब ईसा मसीह ने एक आख़िरी बात की,

> दुनिया में तुम मुसीबत में फँसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनिया पर ग़ालिब आया हूँ। (यूहन्ना 16:33)

कितनी सुकून दिलानेवाली बात!

► **क्या ईमान लाने से हम दुनिया की मुसीबत से बचेंगे?**

नहीं। सच्चा ईमानदार मुसीबत में फँसा रहेगा। जिसे कोई मुसीबत न हो, जिसे इस दुनिया में कामयाबी ही कामयाबी हासिल हो, उसे अपने आपसे यह पूछना चाहिए कि क्या मैं ठीक मसीह की राह पर चल रहा हूँ? इसका मतलब नहीं कि सच्चा ईमानदार अमीर नहीं हो सकता। लेकिन जिस अमीर को बहुत मिला है उसकी ज़िम्मेदारियाँ भी बढ़ जाती हैं। अगर वह सच्चा हो तो वह भी मुसीबतों से नहीं बचेगा।

लेकिन साथ साथ मसीह ने यह भी फ़रमाया : हौसला रखो, मैं दुनिया पर ग़ालिब आया हूँ!

► **ईसा मसीह किस तरह दुनिया पर ग़ालिब आया है?**

वह अपनी सलीबी मौत और जी उठने से दुनिया पर ग़ालिब आया है। दुनिया समझती है कि वह हार गया है, लेकिन इसके उलट हुआ। उसने इससे दुनिया पर फ़तह पाई। इससे उसने हर इनसान को नए सिरे से पैदा होने का मौक़ा बख़्श दिया। इससे उसने जन्म लेनेवाली बिरादरी की बुनियाद रखी। ग़रज़ अपने आपसे पूछो,

- **क्या मुझे नई ज़िंदगी मिल गई है?**
- **क्या मैं ख़ुदा का लाडला हूँ?**
- **क्या मेरे लिए आसमान का रास्ता खुल गया है?**
- **क्या मैं मसीह की फ़तह में शरीक हो गया हूँ?**

इंजील, यूहन्ना 16:16-33

[ईसा मसीह ने फ़रमाया,] “थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे। फिर थोड़ी देर के बाद तुम मुझे दुबारा देख लोगे।”

उसके कुछ शागिर्द आपस में बात करने लगे, “ईसा के यह कहने से क्या मुराद है कि ‘थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे’? और इसका क्या मतलब है, ‘मैं बाप के पास जा रहा हूँ’?” और वह सोचते रहे, “यह किस क़िस्म की ‘थोड़ी देर’ है जिसका ज़िक्र वह कर रहे हैं? हम उनकी बात नहीं समझते।”

ईसा ने जान लिया कि वह मुझसे इसके बारे में सवाल करना चाहते हैं। इसलिए उसने कहा, “क्या तुम एक दूसरे से पूछ रहे हो कि मेरी इस बात का क्या मतलब है कि ‘थोड़ी देर के बाद तुम मुझे नहीं देखोगे, फिर थोड़ी देर के बाद मुझे दुबारा देख लोगे’? मैं तुमको सच बताता हूँ कि तुम रो रोकर मातम करोगे जबकि दुनिया ख़ुश होगी। तुम ग़म करोगे, लेकिन तुम्हारा ग़म ख़ुशी में बदल जाएगा। जब किसी औरत के बच्चा पैदा होनेवाला होता है तो उसे ग़म और तकलीफ़ होती है क्योंकि उसका वक़्त आ गया है। लेकिन ज्योंही बच्चा पैदा हो जाता है तो माँ ख़ुशी के मारे कि एक इनसान दुनिया में आ गया है अपनी तमाम मुसीबत भूल जाती है। यही तुम्हारी हालत है। क्योंकि

अब तुम ग़मज़दा हो, लेकिन मैं तुमसे दुबारा मिलूँगा। उस वक़्त तुमको ख़ुशी होगी, ऐसी ख़ुशी जो तुमसे कोई छीन न लेगा।

उस दिन तुम मुझसे कुछ नहीं पूछोगे। मैं तुमको सच बताता हूँ कि जो कुछ तुम मेरे नाम में बाप से माँगोगे वह तुमको देगा। अब तक तुमने मेरे नाम में कुछ नहीं माँगा। माँगो तो तुमको मिलेगा। फिर तुम्हारी ख़ुशी पूरी हो जाएगी। मैंने तुमको यह तमसीलों में बताया है। लेकिन एक दिन आएगा जब मैं ऐसा नहीं करूँगा। उस वक़्त मैं तमसीलों में बात नहीं करूँगा बल्कि तुमको बाप के बारे में साफ़ साफ़ बता दूँगा। उस दिन तुम मेरा नाम लेकर माँगोगे। मेरे कहने का मतलब यह नहीं कि मैं ही तुम्हारी ख़ातिर बाप से दरख़ास्त करूँगा। क्योंकि बाप ख़ुद तुमको प्यार करता है, इसलिए कि तुमने मुझे प्यार किया है और ईमान लाए हो कि मैं अल्लाह में से निकल आया हूँ। मैं बाप में से निकलकर दुनिया में आया हूँ। और अब मैं दुनिया को छोड़कर बाप के पास वापस जाता हूँ।”

इस पर उसके शागिर्दों ने कहा, “अब आप तमसीलों में नहीं बल्कि साफ़ साफ़ बात कर रहे हैं। अब हमें समझ आई है कि आप सब कुछ जानते हैं और कि इसकी ज़रूरत नहीं कि कोई आपकी पूछ-गछ करे। इसलिए हम ईमान रखते हैं कि आप अल्लाह में से निकलकर आए हैं।”

ईसा ने जवाब दिया, “अब तुम ईमान रखते हो? देखो, वह वक़्त आ रहा है बल्कि आ चुका है जब तुम तित्तर-बित्तर हो जाओगे। मुझे अकेला छोड़कर हर एक अपने घर चला जाएगा। तो भी मैं अकेला नहीं हूँगा क्योंकि बाप मेरे साथ है। मैंने तुमको इसलिए यह बात बताई ताकि तुम मुझमें सलामती पाओ। दुनिया में तुम मुसीबत में फँसे रहते हो। लेकिन हौसला रखो, मैं दुनिया पर ग़ालिब आया हूँ।”

सच्चे शागिर्द के अनमिट निशान

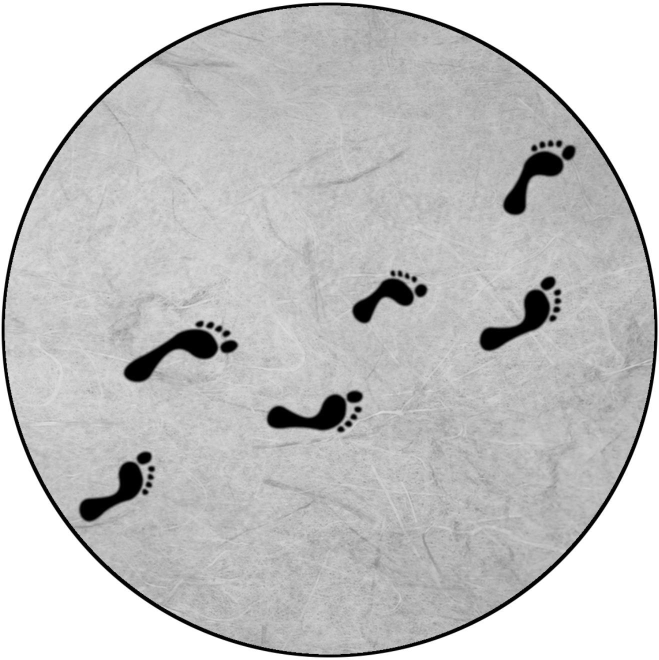

ईसा मसीह जानता था कि जल्द ही दुश्मन मुझे सलीब पर चढ़ाकर मार डालेंगे। उसने अपने शागिर्दों को आख़िरी हिदायात दीं, फिर अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाकर दुआ की।

► **दुआ का क्या मक़सद था?**

मक़सद यह था कि वह अपने शागिर्दों को ख़ुदा बाप के सुपुर्द करे। इस दुआ में सच्चे शागिर्द के छः निशान दिखाई देते हैं। पहला निशान,

मसीह के जलाल में शरीक

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने फ़रज़ंद को जलाल दे ताकि फ़रज़ंद तुझे जलाल दे। क्योंकि तूने उसे तमाम इनसानों पर इख़्तियार दिया है ताकि वह उन सबको अबदी ज़िंदगी दे जो तूने उसे दिए हैं। (यूहन्ना 17:1-2)

► **ईसा मसीह ख़ुदा बाप से क्या पाना चाहता है?**

जलाल।

► **वह क्यों जलाल पाना चाहता है?**

जलाल पाने का एक ही मक़सद है, यह कि वह ख़ुदा बाप को जलाल दे। मतलब है जो भी काम ईसा मसीह करे इससे ख़ुदा बाप को इज़्ज़तो-जलाल मिले।

► **ईसा मसीह किस तरह ख़ुदा बाप को जलाल देना चाहता है?**

वह अपनी जान इनसान की ख़ातिर देने से ख़ुदा बाप को जलाल देना चाहता है। कितना अनोखा ख़याल! ऐसी सोच दुनिया की सोच से कहीं दूर है। दुनिया के ख़याल में ईसा मसीह अपनी जान देने से फ़ेल हो गया। वह यह कभी नहीं मान सकती कि किसी की सलीबी मौत ख़ुदा को जलाल दे सकती है।

► **बाप ने ईसा मसीह को इनसानों पर इख़्तियार क्यों दिया?**

इसलिए कि वह अपनी जान देने से इनसान को अबदी ज़िंदगी दे। यही तो उसके आने का मक़सद था। और इसी से उसे जलाल मिलेगा।

► **यह बात हमारे लिए क्यों अहम है कि मसीह को जलाल मिलेगा?**

यह बात इसलिए अहम है कि जो भी मसीह पर ईमान लाता है वह उसके जलाल में शरीक हो जाता है। यूहन्ना 15 में हम सीख चुके हैं कि ईसा मसीह अंगूर की बेल है। उसकी जलाली राह से ही हम उससे जुड़ गए हैं, हम उसकी शाख़ें बन गए हैं। उसकी जलाली राह से ही हमें उसकी अबदी ज़िंदगी मिल गई है। और उसकी जलाली राह से ही हम उसकी शानो-शौकत में शरीक हो गए हैं।

► **क्या आप इस बेल में जुड़कर उसके जलाल में शरीक हो गए हैं?**

सच्चे शागिर्द का दूसरा निशान,

बदली हुई ज़िंदगी

अब ईसा मसीह ने बाप को अपनी ख़िदमत का अच्छा नतीजा पेश किया।

► **नतीजा क्या था?**

शागिर्दों की बदली हुई ज़िंदगी। उसने फ़रमाया,

> मैंने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें तूने दुनिया से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है। (यूहन्ना 17:6)

► **मसीह की ख़ास ख़िदमत क्या थी?**

उसने लोगों पर ख़ुदा बाप का नाम ज़ाहिर किया।

► **ख़ुदा का नाम ज़ाहिर करने का क्या मतलब है?**

मतलब यह है कि उसने ख़ुदा की फ़ितरत ज़ाहिर की। सच्चा शागिर्द बनने के लिए ज़रूरी है कि हम जान लें कि ख़ुदा हमसे मुहब्बत रखता है और हमें अपने क़रीब लाना चाहता है, कि उसने हमें क़रीब लाने के लिए अपना फ़रज़ंद क़ुरबान किया। यही बातें उसके नाम में पिनहाँ हैं।

► **जब ख़ुदा का नाम शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ तो उनमें क्या तबदीली आई?**

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> उन्होंने तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है। अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तूने मुझे दिया है वह तेरी तरफ़ से है। उन्होंने यह बातें क़बूल करके हक़ीक़ी तौर पर जान लिया कि मैं तुझमें से निकलकर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तूने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 17:6-8)

► **क्या तबदीली आई?**

कलाम सुनने से उनका चाल-चलन बदल गया।

► **यह तबदीली क्यों आई?**

उन्होंने जान लिया है कि मसीह का कलाम और काम ख़ुदा की तरफ़ से है, कि ईसा मसीह ख़ुदा बाप से निकल आया है जिसने उसे भेजा है।

देखो, हमारी तबदीली सरासर मसीह पर मबनी होती है। जब हम अंगूर की इस बेल से जुड़ जाते हैं तो उसका रस हमारी ज़िंदगी बदल देता है। उस रस के बग़ैर हम जंगली और बेकार फल लाते हैं, ऐसा फल जिससे सबको घिन आती है। लेकिन जब उसका रस हमारे रगों में दौड़ता है तो हम मीठा और रसीला फल लाते हैं, ऐसा फल जो हर एक चखकर वाह, वाह कहता है।

► **क्या आप में बेल से लाई यह तबदीली आई है?**

सच्चे शागिर्द का तीसरा निशान,

शैतानी ताक़तों से महफ़ूज़

अब तक ईसा मसीह शागिर्दों के साथ था। उसकी मौजूदगी में वह हमेशा मज़बूत रहे थे, क्योंकि वह उनका अच्छा चरवाहा था। लेकिन अब वह अपने बाप के पास वापस जा रहा था। अब क्या होगा? यही दुआ का मरकज़ी मक़सद था। इसमें ईसा मसीह ने उन्हें ख़ुदा बाप के सुपुर्द किया ताकि वह उन्हें महफ़ूज़ रखे। ईसा मसीह ने इसकी वजह भी बताई,

> जिन्हें तूने मुझे दिया है [...] वह तेरे ही हैं। (यूहन्ना 17:9)

ख़ुदा बाप ख़ुद ने ईमानदारों को अलग करके मसीह को दिया था (यूहन्ना 17:6)। अब ईसा मसीह ने उन्हें दुबारा उसके सुपुर्द किया। उसने फ़रमाया,

> क़ुद्दूस बाप, अपने नाम में उन्हें महफ़ूज़ रख। [...] जितनी देर मैं उनके साथ रहा मैंने उन्हें तेरे नाम में महफ़ूज़ रखा, उसी नाम में जो तूने मुझे दिया था। (यूहन्ना 17:11-12)

► **ईसा मसीह ने उन्हें किस नाम में महफ़ूज़ रखा था?**

ख़ुदा बाप के नाम में।

► **उसके नाम में वह क्यों महफ़ूज़ थे?**

नाम में ख़ुदा का पूरा किरदार है। उसमें उसकी अपने लोगों के लिए मुहब्बत और वफ़ादारी है। यही नाम ईसा मसीह ने अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर किया था, और इसी में उसने उन्हें महफ़ूज़ रखा था। अब वह चाहता है कि ख़ुदा बाप यह काम जारी रखे।

► **क्या महफ़ूज़ रहने से मुश्किलात कम हो जाएँगी?**

नहीं। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैंने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनिया ने उनसे दुश्मनी रखी, क्योंकि यह दुनिया के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनिया से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इबलीस से महफ़ूज़ रखे। (यूहन्ना 17:14-15)

► **दुनिया ने उनसे दुश्मनी रखी। क्यों?**

उन्हें मसीह का कलाम मिल गया है, इसलिए यह दुनिया के नहीं हैं।

► **वह क्यों दुनिया के नहीं हैं?**

ईसा मसीह दुनिया का नहीं है, इसलिए उसके शागिर्द भी दुनिया के नहीं हैं।

► **दुनिया क्या है? क्या यह ख़ुदा की ख़लक़ की गई दुनिया है?**

नहीं। ख़ुदा ने हर मख़लूक़ अच्छी बनाई है। वह चाहता है कि हम दुनिया की अच्छी चीज़ों का मज़ा लें। लेकिन यहाँ दुनिया से मुराद वह सब कुछ है जो ख़ुदा के ख़िलाफ़ है और जिसका हुक्मरान इबलीस है। यानी तारीकी की तमाम ताक़तें जो ख़ुदा की हर अच्छी चीज़ पर क़ाबू करना चाहती हैं।

► **क्या मसीह चाहता है कि शागिर्दों को दुनिया से उठा लिया जाए?**

नहीं।

► **क्यों नहीं? क्या इससे दुनिया की दुश्मनी ख़त्म नहीं होगी?**

बेशक। लेकिन शागिर्दों का इस दुनिया में रहने का एक ख़ास मक़सद है। यह कि वह दुनिया में ख़ुदा का कलाम और नूर फैलाएँ। आख़िर मसीह के आने का मक़सद यह था कि सब उस पर ईमान लाकर हलाक न हों बल्कि अबदी ज़िंदगी पाएँ। इनमें मैं और आप भी शामिल हैं।

इसलिए मसीह की दुआ यह नहीं है कि उन्हें उठा लिया जाए बल्कि यह कि वह इबलीस और उसकी शैतानी ताक़तों से महफ़ूज़ रहें। इबलीस की पूरी कोशिश यह है कि हर ईमानदार को बिगाड़कर ख़त्म करे, क्योंकि उसे मसीह के शागिर्दों का मिशन पता है। वह जानता है कि उन्हें इस दुनिया में इसलिए रखा गया है ताकि वह ख़ुदा का कलाम और नूर फैलाएँ, ताकि जितने हो सकें नजात पाएँ। हमें पूरी तसल्ली है कि हम ईसा मसीह के साथ जो अंगूर की बेल है जुड़ गए हैं। अब रही माली यानी ख़ुदा बाप की ज़िम्मेदारी कि वह हमारी देख-भाल करे। वही हमें जंगली जानवरों से महफ़ूज़ रखेगा, वही हमें हर ज़रूरी चीज़ से नवाज़ता रहेगा। वही इस पर ध्यान देगा कि हम अच्छा फल लाएँ।

► **क्या आपको ख़ुदा की यह हिफ़ाज़त हासिल है?**

सच्चे शागिर्द का चौथा निशान,

ख़ुदा के लिए मख़सूस

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> उन्हें सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है। जिस तरह तूने मुझे दुनिया में भेजा है उसी तरह मैंने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। उनकी ख़ातिर मैं अपने आपको मख़सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए। (यूहन्ना 17:17-19)

► **ईसा मसीह क्या चाहता है कि ख़ुदा बाप शागिर्दों के साथ करे?**

वह चाहता है कि वह उन्हें अपने कलाम से मख़सूसो-मुक़द्दस करे।

► **उन्हें किससे और किस तरह मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाएगा?**

उन्हें ईसा मसीह से मख़सूस किया जाएगा। अपने आपको मख़सूस करने से मसीह उन्हें मख़सूसो-मुक़द्दस करेगा।

► **ईसा मसीह ने किस तरह अपने आपको मख़सूस किया?**

उसने अपने आपको हमारी ख़ातिर क़ुरबान करने के लिए मख़सूस किया। जल्द ही उसकी यह क़ुरबानी मुकम्मल हो जाएगी। इसी रास्ते से शागिर्द के गुनाह मिटाए जाएँगे। इससे शागिर्द पाक और मुक़द्दस होकर ख़ुदा को मंज़ूर हो जाएगा। लेकिन हर एक जिसे मसीह ने मुक़द्दस किया उसे उसने मख़सूस भी किया है।

► **मसीह ने उसे किसके लिए मख़सूस किया है?**

उसने उसे ख़ुदा के लिए मख़सूस किया है।

► **उसे किस काम के लिए मख़सूस किया गया है?**

उसे ख़ुदा और दूसरों की ख़िदमत के लिए मख़सूस किया गया है।

जब हम अंगूर की बेल के साथ जुड़ जाते हैं तो हम सरासर बेल का हिस्सा बन जाते हैं। वही हमारी राहनुमाई करती है, उसी का रस हर पल हमें नई ज़िंदगी देता है। हम पूरे तौर पर उसी के हैं और उसी का मीठा फल लाते हैं।

► **क्या आपको ईसा मसीह से मख़सूस किया गया है?**

सच्चे शागिर्द का पाँचवाँ निशान,

बिरादरी में एक

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मेरी दुआ न सिर्फ़ इन्हीं के लिए है, बल्कि उन सबके लिए भी जो इनका पैग़ाम सुनकर मुझ पर ईमान लाएँगे ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझमें है और मैं तुझमें हूँ उसी तरह वह भी हममें हों ताकि दुनिया यक़ीन करे कि तूने मुझे भेजा है। (यूहन्ना 17:20-21)

► **मसीह न सिर्फ़ पहले शागिर्दों की बात कर रहा है। कौन भी उसकी दुआ में शामिल हैं?**

बाद के सब ईमान लानेवाले भी इसमें शामिल हैं।

► **मसीह का पैग़ाम सुनाने का क्या मक़सद है?**

यह कि सब मसीह में एक हों।

► **इसका नमूना कौन हैं?**

इसका नमूना ख़ुदा बाप और फ़रज़ंद हैं, जो पूरे तौर पर एक हैं।

► **शागिर्द किस तरह एक हो जाएँगे?**

इससे कि वह ख़ुदा बाप और फ़रज़ंद में होंगे।

► **इसका क्या मतलब है?**

मसीह, ख़ुदा बाप के ताबे रहता और ख़ुदा बाप हर बात में फ़रज़ंद की सुनता रहता है। वह मुहब्बत के बंधन से घिरे रहते हैं। मसीह के नजात देनेवाले काम से उसके शागिर्द भी मुहब्बत के इस बंधन में आ जाते हैं। सिर्फ़ यह बंधन उन्हें महफ़ूज़ और एक रख सकता है।

► **ऐसी यगांगत किस तरह मुमकिन हो सकती है?**

न किसी तनज़ीम से, न किसी इदारे से। सिर्फ़ रूहुल-क़ुद्स से जो यह बंधन क़ायम रखता है। शर्त यह है कि शागिर्द सही मानों में मख़सूसो-मुक़द्दस हों। इस बंधन में रहते हुए तमाम क़ौमों के ईमानदार एक हो जाते हैं चाहे वह क़बीले और ज़बान के हिसाब से कितने मुख़्तलिफ़ क्यों न हों। ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मैंने उन्हें वह जलाल दिया है जो तूने मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, मैं उनमें और तू मुझमें। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनिया जान ले कि तूने मुझे भेजा और कि तूने उनसे मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझसे रखी है।
> (यूहन्ना 17:22-23)

► **मसीह को किस काम से जलाल मिला है?**

हम देख चुके हैं कि उसे यह जलाल अपनी जान देने से मिला है।

► **तो शागिर्द किस तरह एक हो जाएँगे?**

शागिर्द मसीह की क़ुरबानी से मिले इस जलाल से एक हो जाएँगे। मतलब है कि वह तब एक हो जाएँगे जब ख़ुद क़ुरबानी देने के लिए तैयार रहेंगे।

► **एक होने से दुनिया क्या जान लेगी?**

इससे दुनिया जान लेगी कि ख़ुदा बाप ने शागिर्दों से मुहब्बत रखी है।

जब हम अंगूर की बेल के साथ जुड़ जाते हैं तो उसी का रस तमाम शाख़ों में दौड़ता है। उसी का रस सबके सबको ज़िंदगी देता है। यह नामुमकिन है कि बेल की कोई भी शाख़ दूसरी शाख़ के साथ एक न हो।

► **क्या आपको एक होने का तजरिबा हासिल हुआ है?**

सच्चे शागिर्द का छटा निशान,

एक दिन मसीह के पास

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तूने मुझे दिए हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें। (यूहन्ना 17:24)

► **मसीह अपने शागिर्दों के लिए क्या माँगता है?**

यह कि शागिर्द उसके साथ रहें और एक दिन उसके पास हों।

► **तब वह क्या देखेंगे?**

उसका जलाल।

लेकिन इस दुनिया में रहते हुए भी शागिर्दों को उसकी हिमायत हासिल होगी। दुआ के आख़िर में मसीह ने एक वादा पेश किया,

> मैंने तेरा नाम उन पर ज़ाहिर किया और इसे ज़ाहिर करता रहूँगा ताकि तेरी मुझसे मुहब्बत उनमें हो और मैं उनमें हूँ। (यूहन्ना 17:26)

► **वादा क्या है?**

यह कि आइंदा भी मसीह ख़ुदा का नाम शागिर्दों पर ज़ाहिर करता रहेगा।

► **नाम ज़ाहिर करने की क्या ज़रूरत रहती है?**

नाम ज़ाहिर करने की ज़रूरत इसलिए रहती है कि ख़ुदा बाप की मुहब्बत और मसीह ख़ुद शागिर्दों में रहें।

ग़रज़, जब हम ईसा मसीह के साथ जुड़ जाते हैं जो अंगूर की बेल है तब हमें पक्का यक़ीन हो जाता है कि जहाँ वह है वहाँ हम भी एक दिन होंगे।

► **क्या आपको यह यक़ीन हासिल है कि आप एक दिन उसी के पास होंगे?**

ईसा मसीह अंगूर की बेल है। जो उसके साथ जुड़ जाता है वह उसके जलाल में शरीक हो जाता है। उसके रगों में उसका रस दौड़ता है, इसलिए वह तबदील हो जाता है। ख़ुदा बाप जो बेल का माली है उसे तमाम शाख़ों समेत शैतानी ताक़तों से महफ़ूज़ रखता है। क्योंकि उसकी शाख़ें मीठा और रसीला फल

लाने के लिए मख़सूस की गई हैं। सारी शाख़ें एक हैं, क्योंकि सब बेल से जुड़ी हुई हैं, और यही वजह है कि सबके सब एक दिन मसीह के पास होंगे।

इंजील, यूहन्ना 17:1-26

यह कहकर ईसा ने अपनी नज़र आसमान की तरफ़ उठाई और दुआ की, "ऐ बाप, वक़्त आ गया है। अपने फ़रज़ंद को जलाल दे ताकि फ़रज़ंद तुझे जलाल दे। क्योंकि तूने उसे तमाम इनसानों पर इख़्तियार दिया है ताकि वह उन सबको अबदी ज़िंदगी दे जो तूने उसे दिए हैं। और अबदी ज़िंदगी यह है कि वह तुझे जान लें जो वाहिद और सच्चा ख़ुदा है और ईसा मसीह को भी जान लें जिसे तूने भेजा है। मैंने तुझे ज़मीन पर जलाल दिया और उस काम की तकमील की जिसकी ज़िम्मेदारी तूने मुझे दी थी। और अब मुझे अपने हुज़ूर जलाल दे, ऐ बाप, वही जलाल जो मैं दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर तेरे हुज़ूर रखता था।

मैंने तेरा नाम उन लोगों पर ज़ाहिर किया जिन्हें तूने दुनिया से अलग करके मुझे दिया है। वह तेरे ही थे। तूने उन्हें मुझे दिया और उन्होंने तेरे कलाम के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारी है। अब उन्होंने जान लिया है कि जो कुछ भी तूने मुझे दिया है वह तेरी तरफ़ से है। क्योंकि जो बातें तूने मुझे दीं मैंने उन्हें दी हैं। नतीजे में उन्होंने यह बातें क़बूल करके हक़ीक़ी तौर पर जान लिया कि मैं तुझमें से निकलकर आया हूँ। साथ साथ वह ईमान भी लाए कि तूने मुझे भेजा है।

मैं उनके लिए दुआ करता हूँ, दुनिया के लिए नहीं बल्कि उनके लिए जिन्हें तूने मुझे दिया है, क्योंकि वह तेरे ही हैं। जो भी मेरा है वह तेरा है और जो तेरा है वह मेरा है। चुनाँचे मुझे उनमें जलाल मिला है। अब से मैं दुनिया में नहीं हूँगा। लेकिन यह दुनिया में रह गए हैं जबकि मैं तेरे पास आ रहा हूँ। क़ुद्दूस बाप, अपने नाम में उन्हें महफ़ूज़ रख, उस नाम में जो तूने मुझे दिया है, ताकि वह एक हों जैसे हम एक हैं। जितनी देर मैं उनके साथ रहा मैंने उन्हें तेरे नाम में महफ़ूज़ रखा, उसी नाम में जो तूने मुझे दिया था। मैंने यों उनकी निगहबानी

की कि उनमें से एक भी हलाक नहीं हुआ सिवाए हलाकत के फ़रज़ंद के। यों कलाम की पेशगोई पूरी हुई। अब तो मैं तेरे पास आ रहा हूँ। लेकिन मैं दुनिया में होते हुए यह बयान कर रहा हूँ ताकि उनके दिल मेरी ख़ुशी से भरकर छलक उठें। मैंने उन्हें तेरा कलाम दिया है और दुनिया ने उनसे दुश्मनी रखी, क्योंकि यह दुनिया के नहीं हैं, जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। मेरी दुआ यह नहीं है कि तू उन्हें दुनिया से उठा ले बल्कि यह कि उन्हें इबलीस से महफ़ूज़ रखे। वह दुनिया के नहीं हैं जिस तरह मैं भी दुनिया का नहीं हूँ। उन्हें सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस कर। तेरा कलाम ही सच्चाई है। जिस तरह तूने मुझे दुनिया में भेजा है उसी तरह मैंने भी उन्हें दुनिया में भेजा है। उनकी ख़ातिर मैं अपने आपको मख़सूस करता हूँ, ताकि उन्हें भी सच्चाई के वसीले से मख़सूसो-मुक़द्दस किया जाए।

मेरी दुआ न सिर्फ़ इन्हीं के लिए है, बल्कि उन सबके लिए भी जो इनका पैग़ाम सुनकर मुझ पर ईमान लाएँगे ताकि सब एक हों। जिस तरह तू ऐ बाप, मुझमें है और मैं तुझमें हूँ उसी तरह वह भी हममें हों ताकि दुनिया यक़ीन करे कि तूने मुझे भेजा है। मैंने उन्हें वह जलाल दिया है जो तूने मुझे दिया है ताकि वह एक हों जिस तरह हम एक हैं, मैं उनमें और तू मुझमें। वह कामिल तौर पर एक हों ताकि दुनिया जान ले कि तूने मुझे भेजा और कि तूने उनसे मुहब्बत रखी है जिस तरह मुझसे रखी है।

ऐ बाप, मैं चाहता हूँ कि जो तूने मुझे दिए हैं वह भी मेरे साथ हों, वहाँ जहाँ मैं हूँ, कि वह मेरे जलाल को देखें, वह जलाल जो तूने इसलिए मुझे दिया है कि तूने मुझे दुनिया की तख़लीक़ से पेशतर प्यार किया है। ऐ रास्त बाप, दुनिया तुझे नहीं जानती, लेकिन मैं तुझे जानता हूँ। और यह शागिर्द जानते हैं कि तूने मुझे भेजा है। मैंने तेरा नाम उन पर ज़ाहिर किया और इसे ज़ाहिर करता रहूँगा ताकि तेरी मुझसे मुहब्बत उनमें हो और मैं उनमें हूँ।”

सच्चाई का बादशाह
अल-मसीह की पेशी

पकड़ा गया

ईसा मसीह जानता था कि जल्द ही मुझे गिरिफ़्तार किया जाएगा। अब उसने दुआ करके अपने शागिर्दों को ख़ुदा बाप के सुपुर्द कर दिया। तब वह अपने शागिर्दों के साथ निकला और वादीए-क़िदरोन को पार करके एक बाग़ में दाख़िल हुआ। यहूदाह इस्करियोती तो राहनुमा इमामों के पास जा चुका था ताकि ईसा मसीह को पकड़ने में उनकी मदद करे। राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदाह को रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैतुल-मुक़द्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह मशालें, लालटैन और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। ईसा मसीह को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। उसने निकलकर उनसे पूछा, "तुम किस को ढूँड रहे हो?"

उन्होंने जवाब दिया, "ईसा नासरी को।"

वह बोला, "मैं ही हूँ।"

यह सुनकर सब पीछे हटकर ज़मीन पर गिर पड़े। क्या वह अपने शागिर्दों के साथ उन पर टूट पड़ेगा? या क्या वह उन्हें शाप देकर भस्म करेगा?

एक और बार ईसा मसीह ने उनसे सवाल किया, "तुम किस को ढूँड रहे हो?"

उन्होंने जवाब दिया, "ईसा नासरी को।"

उसने कहा, "मैं तुमको बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इनको जाने दो।"

► **उसने यह क्यों फ़रमाया कि इनको जाने दो?**

वह अच्छा चरवाहा है जो अपनी भेड़ों की बड़ी फ़िकर करता है।

पतरस के पास तलवार थी। अब उसने उसे मियान से निकालकर इमामे-आज़म के ग़ुलाम का दहना कान उड़ा दिया। लेकिन ईसा मसीह ने पतरस से कहा, "तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?"

► **प्याला पीने से वह क्या कहना चाहता है?**

जो हो रहा है वह ख़ुदा बाप की तरफ़ से है। वही यह तलख़ प्याला पिला रहा है। दूसरी इंजीलों से हम जानते हैं कि ईसा मसीह ने ग़ुलाम को शफ़ा दी। उसे उसकी भी फ़िकर रही।

► **जितना मसीह का जवाब हलीम था उतना पतरस का रवैया सख़्त था। उसने दुश्मन को देखकर क्या किया?**

उसने तलवार चलाकर ग़ुलाम का कान उड़ा दिया। उसे अभी तक समझ नहीं आई थी कि सलीब की यह राह ईसा मसीह के लिए मुक़र्रर ही थी। अब तक पतरस ज़बरदस्ती ख़ुदा की बादशाही लाना चाहता था। लेकिन इनसान ख़ुदा की बादशाही नहीं ला सकता।

फिर ईसा मसीह के मुख़ालिफ़ों ने उसे बाँध लिया। पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमामे-आज़म कायफ़ा का सुसर था।

इनकार

पतरस ने हिम्मत न हारी। वह शेर के मुँह में जाने को भी तैयार था। अब वह किसी और शागिर्द के साथ ईसा मसीह के पीछे हो लिया। यह दूसरा शागिर्द इमामे-आज़म का जाननेवाला था, इसलिए वह ईसा मसीह के साथ इमामे-आज़म के सहन में दाख़िल हुआ। पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा। फिर इमामे-आज़म का जाननेवाला शागिर्द दुबारा निकल आया। उसने गेट की निगरानी करनेवाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ अंदर ले जाने की इजाज़त मिली। लेकिन पतरस को देखकर नौकरानी ने पूछा, “तुम भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?” पतरस ने जवाब दिया, “नहीं, मैं नहीं हूँ।” उस्ताद ने पेशगोई की थी कि तू तीन बार मेरा इनकार करेगा।

► **इनकार करने की क्या वजह थी? क्या पतरस डरपोक था?**

पतरस डरपोक नहीं था। उस सहन में जाने से पतरस जान पर खेल रहा था। इसके लिए वह झूठ बोलने के लिए भी तैयार था।

► **लेकिन क्या सच्चे शागिर्द को कभी झूठ बोलने की इजाज़त है?**

नहीं, जो सच्चे और वफ़ादार चरवाहे की भेड़ है उसका झूठ बोलना कभी नहीं जचता।

ठंड थी, इसलिए ग़ुलामों और पहरेदारों ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उसके पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा ताप रहा था।

यहूदी बुज़ुर्गों के सामने

इतने में इमामे-आज़म हन्ना, ईसा मसीह की पूछ-गछ करके उसके शागिर्दों और तालीम के बारे में तफ़तीश करने लगा।

► **यह मज़हबी राहनुमा ईसा मसीह की पूछ-गछ क्यों करने लगे?**

यह कोई न कोई बहाना ढूँड रहे थे ताकि सज़ाए-मौत का फ़ैसला कर सकें। उन्हें सच्चाई की परवाह नहीं थी।

ईसा मसीह बोला, "मैंने दुनिया में खुलकर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतख़ानों और बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैंने कुछ नहीं कहा। आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? उनसे दरियाफ़्त करें जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उनको मालूम है कि मैंने क्या कुछ कहा है।"

तब एक पहरेदार ने ईसा मसीह के मुँह पर थप्पड़ मारकर कहा, "क्या यह इमामे-आज़म से बात करने का तरीक़ा है जब वह तुमसे कुछ पूछे?"

ईसा मसीह ने जवाब दिया, "अगर मैंने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तूने मुझे क्यों मारा?"

► **अपने जवाब से ईसा मसीह ने किस चीज़ पर ज़ोर दिया?**

अपने जवाब से उसने अपनी बातों की सच्चाई पर ज़ोर दिया। वह तो सच्चा चरवाहा है जिसे सच्चे बाप से भेजा गया है। उसमें झूठ नहीं है, न वह किसी में झूठ बरदाश्त कर सकता है। न उसे पतरस का झूठ, न यहूदी राहनुमाओं की टेढ़ी-मेढ़ी सियासत पसंद थी। मौत के सामने भी वह न दाईं न बाईं तरफ़ हिला। सच बोलना और वफ़ादारी—ऐसी क़ीमती चीज़ें आजकल कहाँ पाई जाती हैं? क्या आप में उसकी सच्चाई है?

फिर हन्ना ने ईसा मसीह को बँधी हुई हालत में इमामे-आज़म कायफ़ा के पास भेज दिया। इमामे-आज़म कायफ़ा के साथ यहूदी अदालते-आलिया के बुज़ुर्ग भी बैठे थे। असल अदालत यही थी।

दुबारा इनकार

पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उससे पूछने लगे, "तुम भी उसके शागिर्द हो कि नहीं?"

लेकिन पतरस ने इनकार किया, "नहीं, मैं नहीं हूँ।"

लगता नहीं कि पतरस महसूस कर रहा था कि उससे ग़लती हो रही है। शायद वह दिल में फ़ख़्र भी कर रहा था कि मैं अब तक इस ख़तरनाक जगह में खड़ा हूँ।

फिर इमामे-आज़म का एक ग़ुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने उड़ा दिया था, "क्या मैंने तुमको बाग़ में उसके साथ नहीं देखा था?"

पतरस ने एक बार फिर इनकार किया, और इनकार करते ही मुर्ग़ की बाँग सुनाई दी।

अब पतरस को ईसा मसीह की बात याद आई और वह निकलकर ख़ूब रो पड़ा।

► **पतरस क्यों रो पड़ा?**

अचानक उसे ईसा मसीह की बात याद आई कि तू मुझे जानने से इनकार करेगा। उसने एकदम अपनी झूठी हालत महसूस की। उसे इसका एहसास हुआ कि उस्ताद की पाक सच्चाई और वफ़ादारी मुझमें नहीं है। मैं उसकी सच्चाई की राह पर चलने में फ़ेल हो गया हूँ। पतरस हथियार डालकर मान गया कि मेरी हर कोशिश बेफ़ायदा, सिफ़र के बराबर है।

► **पतरस ने हथियार क्यों डाल दिए?**

पहले वह समझता था कि मैं उस्ताद का बेहतरीन शागिर्द हूँ। सब कुछ मेरे क़ाबू में है, और उस्ताद मुझ पर पूरा भरोसा रख सकता है। मैं ही उसकी बादशाही लाऊँगा। मैं ही उसका सबसे बड़ा वज़ीर बन जाऊँगा। लेकिन अब यह ख़याल एकदम ग़लत साबित हुआ।

► **पतरस की हार से हम क्या सीख सकते हैं?**

जो शागिर्द बनना चाहता है ज़रूरी है कि वह पहले अपने तमाम हथियार डाल दे। पहले वह मान ले कि मुझसे कुछ नहीं हो सकता। न मैं ईसा मसीह की मदद करने लायक़ हूँ न अपनी ही ताक़त से अपनी नजात पा सकता हूँ। एक ही है जो मेरी मदद कर सकता है—वह जो गुनाह और मौत पर फ़तह पाकर जी उठा है। पतरस ने एकदम पहचान लिया कि मेरी अपनी सच्चाई और वफ़ादारी

खोखली-सी है। ऊँची दुकान फीका पकवानवाली बात है। और अब मैंने उस्ताद को जानने से इनकार भी किया है। क्या वह कभी मुझे माफ़ करेगा?

पीलातुस के सामने

यहूदी बुज़ुर्गों ने ईसा मसीह को सज़ाए-मौत के लायक़ क़रार दिया। फिर वह क़ैदी को अपने साथ लेकर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच गए।

► **यहूदी बुज़ुर्गों ने ईसा मसीह को सीधा सज़ाए-मौत क्यों न दी?**

यहूदियों को सज़ाए-मौत देने की इजाज़त नहीं थी। सिर्फ़ रोमी गवर्नर पीलातुस को यह इख़्तियार था।

अब सुबह हो चुकी थी। चूँकि यहूदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इसलिए वह महल में दाख़िल न हुए, वरना वह नापाक हो जाते। इसलिए पीलातुस निकलकर उनके पास आया और पूछा, "तुम इस आदमी पर क्या इलज़ाम लगा रहे हो?"

उन्होंने जवाब दिया, "अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आपके हवाले न करते।"

पीलातुस ने कहा, "फिर इसे ले जाओ और अपनी शरई अदालतों में पेश करो।"

लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया, "हमें किसी को सज़ाए-मौत देने की इजाज़त नहीं।"

तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उसने ईसा मसीह को बुलाया और उससे पूछा, "क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?"

ईसा मसीह ने पूछा, "क्या आप अपनी तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आपको मेरे बारे में बताया है?"

पीलातुस ने जवाब दिया, "क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुमसे क्या कुछ सरज़द हुआ है?"

ईसा मसीह ने फ़रमाया,

> मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम सख़्त जिद्दो-जहद करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है। (यूहन्ना 18:36)

► **क्या ईसा मसीह की बादशाही इस दुनिया की है?**

नहीं। उसकी बादशाही ख़ुदा की बादशाही है।

पीलातुस ने कहा, “तो फिर तुम वाक़ई बादशाह हो?”

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> आप सही कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मक़सद के लिए पैदा होकर दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है। (यूहन्ना 18:37)

► **ईसा मसीह किस मक़सद के लिए दुनिया में आया?**

वह सच्चाई की गवाही देने दुनिया में आया।

► **यह किस क़िस्म की सच्चाई है?**

सच्चाई एक ऐसी चीज़ है जो ठोस है। जो कभी मिटाई नहीं जा सकती।

► **यह सच्चाई क्यों ठोस है?**

इसलिए कि यह ख़ुदा की मुहब्बत-भरी वफ़ादारी है। इसी वफ़ादारी ने बरदाश्त न किया कि हम बरबाद हो रहे हैं। इसलिए उसने अपना फ़रज़ंद इस दुनिया में भेज दिया ताकि वह अपनी जान गुनाहगार इनसान की ख़ातिर क़ुरबान करे। और यही ठोस वफ़ादारी उसके फ़रज़ंद में भी पाई जाती है। वह सच्चाई यानी मुहब्बत-भरी वफ़ादारी का बादशाह है।

ईसा मसीह पहले कह चुका था कि मैं अच्छा चरवाहा हूँ। सच्चाई का यह बादशाह अच्छा चरवाहा है। यह वह चरवाहा है जो अपनी खोई हुई भेड़ों के पीछे चल पड़ता है ताकि उन्हें बचाए रखे। यह वही चरवाहा है जो अपनी भेड़ों की ख़ातिर अपनी जान भी देता है।

► **मसीह का क्या मतलब है कि जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है?**

जो ईसा मसीह पर ईमान लाए वह इस शाही चरवाहे की भेड़ बन जाता है, और वह उसकी सुनता है। अब से वह मसीह की इलाही बादशाही का शहरी है। बेशक वह इस दुनिया में बसते हुए अपने घराने और मुल्क का ज़िम्मेदार रुकन रहता है। लेकिन उसे मालूम है कि यह दुनिया मेरा हक़ीक़ी घर नहीं है। मैं दुनिया में अजनबी और मुसाफ़िर हूँ।

► **हम क्यों मुसाफ़िर हैं?**

इसलिए कि हम सच्चाई के चरवाहे की भेड़ें हैं। यह सच्चाई और दुनिया का झूठ आपस में मेल नहीं खाते। इसी लिए हमारा घर इस दुनिया में कभी नहीं हो सकता।

पीलातुस ने पूछा, "सच्चाई क्या है?"

पीलातुस सियासतदान था। उसके नज़दीक सच्चाई की कोई क़दर नहीं थी। ताक़त और पैसे से काम चलता था, और यह पाने के लिए हर चाल चलती थी—बिलकुल आज की सियासत की तरह। उसे इस मुहब्बत-भरी वफ़ादारी से कोई मतलब नहीं था।

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

फिर वह दुबारा निकलकर यहूदियों के पास गया। उसने एलान किया, "मुझे उसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली। लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिसके मुताबिक़ मुझे ईदे-फ़सह के मौक़े पर तुम्हारे लिए एक क़ैदी को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं 'यहूदियों के बादशाह' को रिहा कर दूँ?"

लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, "नहीं, इसको नहीं बल्कि बर-अब्बा को।" (बर-अब्बा डाकू था।)

फिर पीलातुस ने ईसा मसीह को कोड़े लगवाए। फ़ौजियों ने काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का लिबास भी पहनाया। फिर उसके सामने आकर वह कहते, "ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!" और उसे थप्पड़ मारते थे।

एक बार फिर पीलातुस निकल आया और यहूदियों से बात करने लगा, "देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।" फिर ईसा मसीह काँटेदार ताज और अरग़वानी रंग का लिबास पहने बाहर आया। पीलातुस ने उनसे कहा, "लो यह है वह आदमी।"

जो सच्चाई का बादशाह था उसके ज़ख़्मों से ख़ून टपक रहा था। जो अकेला ही इनसान को नजात दे सकता था उसे बदतरीन मुजरिम की तरह पेश किया गया था। जो हर खोई हुई भेड़ की खोज में रहता था उसे पाँवों तले कुचला गया था।

उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उनके मुलाज़िम चीख़ने लगे, "इसे मसलूब करें, इसे मसलूब करें!"

पीलातुस ने उनसे कहा, “तुम ही इसे ले जाकर मसलूब करो। क्योंकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।”

यहूदियों ने इसरार किया, “हमारे पास शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि वह मारा जाए। क्योंकि इसने अपने आपको अल्लाह का फ़रज़ंद क़रार दिया है।”

► **अब यहूदी राहनुमा असली इलज़ाम पर उतर आए थे। वह क्या था?**

इलज़ाम यह था कि वह अपने आपको अल्लाह का फ़रज़ंद समझता है।

यह सुनकर पीलातुस मज़ीद डर गया।

► **वह क्यों डर गया?**

उसने सोचा, अगर ईसा मसीह अपने आपको अल्लाह का फ़रज़ंद समझता है तो ऐसा न हो कि वह मेरे ख़िलाफ़ कोई जादू-टोना करे।

दुबारा महल में जाकर उसने ईसा मसीह से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?”

लेकिन ईसा मसीह ख़ामोश रहा। पीलातुस ने उससे कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मसलूब करने का इख़्तियार है?”

ईसा मसीह ने जवाब दिया,

> आपको मुझ पर इख़्तियार न होता अगर वह आपको ऊपर से न दिया गया होता। इस वजह से उस शख़्स से ज़्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिसने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।”
> (यूहन्ना 19:11)

► **पीलातुस को किससे इख़्तियार मिला था?**

ख़ुदा से।

► **ईसा मसीह फ़रमाता है कि पीलातुस से ज़्यादा क़ुसूरवार कोई और है। वह कौन?**

वह जिसने उसे दुश्मन के हवाले कर दिया है।

► **वह कौन था?**

यहूदाह भी और वह तमाम यहूदी बुज़ुर्ग भी जिन्होंने उसे पकड़कर गवर्नर के हवाले कर दिया।

इसके बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़कर कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहनशाह क़ैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह शहनशाह की मुख़ालफ़त करता है।”

इस तरह की बातें सुनकर पीलातुस ईसा मसीह को बाहर ले आया। फिर वह जज की कुरसी पर बैठ गया। उस जगह का नाम “पच्चीकारी” था। अब दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे। उस दिन ईद के लिए तैयारियाँ की जाती थीं, क्योंकि अगले दिन ईद का आग़ाज़ था। पीलातुस बोल उठा, “लो, तुम्हारा बादशाह!”

लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ! इसे मसलूब करें!”

पीलातुस ने पूछा, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब पर चढ़ाऊँ?”

राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवाए शहनशाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।”

फिर पीलातुस ने ईसा मसीह को उनके हवाले कर दिया ताकि उसे मसलूब किया जाए।

कुछ आख़िरी बातें

यों ईसा मसीह पक्के इरादे से सलीब की राह पर चलता रहा। उसे मौत से बचने के कई मौक़े थे। उसे मालूम था कि यहूदाह उसे दुश्मन के हवाले करेगा। वह यरूशलम को छोड़ सकता था। लेकिन वह जान-बूझकर उस बाग़ में गया जो यहूदाह जानता था। बाद में भी वह बच सकता था। यहूदी अदालते-आलिया और पीलातुस के सामने वह इनकार कर सकता था। लेकिन उसने ऐसा न किया। वह जानता था कि मुझे यह तलख़ प्याला पीना ही है।

मुसीबत में भी वह अच्छा चरवाहा था। पकड़े जाते वक़्त उसने अपने शागिर्दों को पकड़े जाने से बचाया। उसने पतरस को तलवार चलाने से रोककर ग़ुलाम का कान ठीक किया। उसे रोमी गवर्नर पीलातुस की भी फ़िकर थी। वह उसे भी सच्चाई की राह पर लाने से न झिजका।

रहा यह सवाल : आप इस वफ़ादार शाही चरवाहे के सामने क्या करेंगे? क्या आप उसे यहूदी राहनुमाओं की तरह रद करेंगे? या क्या आप पीलातुस की तरह तंज़ कसकर कहेंगे कि सच्चाई क्या है?

या क्या आप यहूदाह की तरह होंगे? वह शागिर्द तो था, लेकिन वह उस्ताद से सिर्फ़ फ़ायदा उठाना चाहता था। ख़ज़ानची के तौर पर उसने बेईमानी की। और जब देखा कि मेरी बात नहीं बन रही तो उसने पैसों के लालच में उसे दुश्मन के हवाले कर दिया।

लेकिन शायद आप पतरस की-सी सोच रखेंगे? आप अपने आपको मसीह के वज़ीर समझते हैं। आप समझते हैं कि मैं अपनी ही ताक़त से सब कुछ करूँगा, नजात का काम भी।

मेरे दोस्त, अगर आप सोचते हैं कि आप ज़रा भी अपनी नजात ख़ुद हासिल कर सकते हैं तो आप सच्चे शागिर्द नहीं बन सकते। हाँ, पतरस सच्चा शागिर्द बन गया, लेकिन बाद में। पहले उसे मानना पड़ा कि मैं कुछ नहीं कर सकता। अगर मैं अपनी ताक़त से कुछ करना चाहूँ तो सरासर फ़ेल हो जाऊँगा, उसका इनकार करने तक गिर जाऊँगा।

मेरे अज़ीज़, नजात पाने की एक ही रास्ता है : यह कि अपने हथियार डालकर अपनी जान को उसके सुपुर्द करो। यही मान लो कि मुझसे कुछ नहीं हो सकता। ऐ ईसा मसीह, तू ही सब कुछ है। तू ही मुझे आज़ाद कर सकता है। मुझे अपनी भेड़ बना दे। मुझे हरी चरागाहों पर ले जा, ऐसी जगहों पर जहाँ चश्मे का ताज़ा पानी उबलता रहता है। जहाँ दुश्मन के रूबरू भी दस्तरख़ान बिछा रहता है। मुझे इस तरो-ताज़गी की अशद ज़रूरत है। ऐ मेरे आक़ा, मुझमें नजात पाने की कोई ताक़त नहीं है। इसलिए आ, मेरी मदद कर। आमीन।

इंजील, यूहन्ना 18:1–19:16

पकड़ा गया

यह कहकर ईसा अपने शागिर्दों के साथ निकला और वादीए-क़िदरोन को पार करके एक बाग़ में दाख़िल हुआ। यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करनेवाला था वह भी इस जगह से वाक़िफ़ था, क्योंकि ईसा वहाँ अपने शागिर्दों के साथ जाया करता था। राहनुमा इमामों और फ़रीसियों ने यहूदाह को रोमी फ़ौजियों का दस्ता और बैतुल-मुक़द्दस के कुछ पहरेदार दिए थे। अब यह

मशालें, लालटैन और हथियार लिए बाग़ में पहुँचे। ईसा को मालूम था कि उसे क्या पेश आएगा। चुनाँचे उसने निकलकर उनसे पूछा, "तुम किस को ढूँड रहे हो?"

उन्होंने जवाब दिया, "ईसा नासरी को।"

ईसा ने उन्हें बताया, "मैं ही हूँ।"

यहूदाह जो उसे दुश्मन के हवाले करना चाहता था, वह भी उनके साथ खड़ा था। जब ईसा ने एलान किया, "मैं ही हूँ," तो सब पीछे हटकर ज़मीन पर गिर पड़े। एक और बार ईसा ने उनसे सवाल किया, "तुम किस को ढूँड रहे हो?"

उन्होंने जवाब दिया, "ईसा नासरी को।"

उसने कहा, "मैं तुमको बता चुका हूँ कि मैं ही हूँ। अगर तुम मुझे ढूँड रहे हो तो इनको जाने दो।" यों उसकी यह बात पूरी हुई, "मैंने उनमें से जो तूने मुझे दिए हैं एक को भी नहीं खोया।"

पतरस के पास तलवार थी। अब उसने उसे मियान से निकालकर इमामे-आज़म के ग़ुलाम का दहना कान उड़ा दिया (ग़ुलाम का नाम मलख़ुस था)। लेकिन ईसा ने पतरस से कहा, "तलवार को मियान में रख। क्या मैं वह प्याला न पियूँ जो बाप ने मुझे दिया है?"

फिर फ़ौजी दस्ते, उनके अफ़सर और बैतुल-मुक़द्दस के यहूदी पहरेदारों ने ईसा को गिरिफ़्तार करके बाँध लिया। पहले वह उसे हन्ना के पास ले गए। हन्ना उस साल के इमामे-आज़म कायफ़ा का सुसर था। कायफ़ा ही ने यहूदियों को यह मशवरा दिया था कि बेहतर यह है कि एक ही आदमी उम्मत के लिए मर जाए।

इनकार

पतरस किसी और शागिर्द के साथ ईसा के पीछे हो लिया था। यह दूसरा शागिर्द इमामे-आज़म का जाननेवाला था, इसलिए वह ईसा के साथ इमामे-आज़म के सहन में दाख़िल हुआ। पतरस बाहर दरवाज़े पर खड़ा रहा। फिर इमामे-आज़म का जाननेवाला शागिर्द दुबारा निकल आया। उसने गेट की निगरानी करनेवाली औरत से बात की तो उसे पतरस को अपने साथ अंदर

ले जाने की इजाज़त मिली। उस औरत ने पतरस से पूछा, "तुम भी इस आदमी के शागिर्द हो कि नहीं?"

उसने जवाब दिया, "नहीं, मैं नहीं हूँ।"

ठंड थी, इसलिए ग़ुलामों और पहरेदारों ने लकड़ी के कोयलों से आग जलाई। अब वह उसके पास खड़े ताप रहे थे। पतरस भी उनके साथ खड़ा ताप रहा था।

यहूदी बुज़ुर्गों के सामने

इतने में इमामे-आज़म ईसा की पूछ-गछ करके उसके शागिर्दों और तालीम के बारे में तफ़तीश करने लगा। ईसा ने जवाब में कहा, "मैंने दुनिया में खुलकर बात की है। मैं हमेशा यहूदी इबादतख़ानों और बैतुल-मुक़द्दस में तालीम देता रहा, वहाँ जहाँ तमाम यहूदी जमा हुआ करते हैं। पोशीदगी में तो मैंने कुछ नहीं कहा। आप मुझसे क्यों पूछ रहे हैं? उनसे दरियाफ़्त करें जिन्होंने मेरी बातें सुनी हैं। उनको मालूम है कि मैंने क्या कुछ कहा है।"

इस पर साथ खड़े बैतुल-मुक़द्दस के पहरेदारों में से एक ने ईसा के मुँह पर थप्पड़ मारकर कहा, "क्या यह इमामे-आज़म से बात करने का तरीक़ा है जब वह तुमसे कुछ पूछे?"

ईसा ने जवाब दिया, "अगर मैंने बुरी बात की है तो साबित कर। लेकिन अगर सच कहा, तो तूने मुझे क्यों मारा?"

फिर हन्ना ने ईसा को बँधी हुई हालत में इमामे-आज़म कायफ़ा के पास भेज दिया।

दुबारा इनकार

पतरस अब तक आग के पास खड़ा ताप रहा था। इतने में दूसरे उससे पूछने लगे, "तुम भी उसके शागिर्द हो कि नहीं?"

लेकिन पतरस ने इनकार किया, "नहीं, मैं नहीं हूँ।"

फिर इमामे-आज़म का एक ग़ुलाम बोल उठा जो उस आदमी का रिश्तेदार था जिसका कान पतरस ने उड़ा दिया था, "क्या मैंने तुमको बाग़ में उसके साथ नहीं देखा था?"

पतरस ने एक बार फिर इनकार किया, और इनकार करते ही मुर्ग़ की बाँग सुनाई दी।

पीलातुस के सामने

फिर यहूदी ईसा को कायफ़ा से लेकर रोमी गवर्नर के महल बनाम प्रैटोरियुम के पास पहुँच गए। अब सुबह हो चुकी थी और चूँकि यहूदी फ़सह की ईद के खाने में शरीक होना चाहते थे, इसलिए वह महल में दाख़िल न हुए, वरना वह नापाक हो जाते। चुनाँचे पीलातुस निकलकर उनके पास आया और पूछा, "तुम इस आदमी पर क्या इलज़ाम लगा रहे हो?"

उन्होंने जवाब दिया, "अगर यह मुजरिम न होता तो हम इसे आपके हवाले न करते।"

पीलातुस ने कहा, "फिर इसे ले जाओ और अपनी शरई अदालतों में पेश करो।"

लेकिन यहूदियों ने एतराज़ किया, "हमें किसी को सज़ाए-मौत देने की इजाज़त नहीं।" ईसा ने इस तरफ़ इशारा किया था कि वह किस तरह मरेगा और अब उसकी यह बात पूरी हुई।

तब पीलातुस फिर अपने महल में गया। वहाँ से उसने ईसा को बुलाया और उससे पूछा, "क्या तुम यहूदियों के बादशाह हो?"

ईसा ने पूछा, "क्या आप अपनी तरफ़ से यह सवाल कर रहे हैं, या औरों ने आपको मेरे बारे में बताया है?"

पीलातुस ने जवाब दिया, "क्या मैं यहूदी हूँ? तुम्हारी अपनी क़ौम और राहनुमा इमामों ही ने तुम्हें मेरे हवाले किया है। तुमसे क्या कुछ सरज़द हुआ है?"

ईसा ने कहा, "मेरी बादशाही इस दुनिया की नहीं है। अगर वह इस दुनिया की होती तो मेरे ख़ादिम सख़्त जिद्दो-जहद करते ताकि मुझे यहूदियों के हवाले न किया जाता। लेकिन ऐसा नहीं है। अब मेरी बादशाही यहाँ की नहीं है।"

पीलातुस ने कहा, "तो फिर तुम वाक़ई बादशाह हो?"

ईसा ने जवाब दिया, "आप सही कहते हैं, मैं बादशाह हूँ। मैं इसी मक़सद के लिए पैदा होकर दुनिया में आया कि सच्चाई की गवाही दूँ। जो भी सच्चाई की तरफ़ से है वह मेरी सुनता है।"

पीलातुस ने पूछा, "सच्चाई क्या है?"

सज़ाए-मौत का फ़ैसला

फिर वह दुबारा निकलकर यहूदियों के पास गया। उसने एलान किया, "मुझे उसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली। लेकिन तुम्हारी एक रस्म है जिसके मुताबिक़ मुझे ईदे-फ़सह के मौक़े पर तुम्हारे लिए एक क़ैदी को रिहा करना है। क्या तुम चाहते हो कि मैं 'यहूदियों के बादशाह' को रिहा कर दूँ?"

लेकिन जवाब में लोग चिल्लाने लगे, "नहीं, इसको नहीं बल्कि बर-अब्बा को।" (बर-अब्बा डाकू था।)

फिर पीलातुस ने ईसा को कोड़े लगवाए। फ़ौजियों ने काँटेदार टहनियों का एक ताज बनाकर उसके सर पर रख दिया। उन्होंने उसे अरग़वानी रंग का लिबास भी पहनाया। फिर उसके सामने आकर वह कहते, "ऐ यहूदियों के बादशाह, आदाब!" और उसे थप्पड़ मारते थे।

एक बार फिर पीलातुस निकल आया और यहूदियों से बात करने लगा, "देखो, मैं इसे तुम्हारे पास बाहर ला रहा हूँ ताकि तुम जान लो कि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।" फिर ईसा काँटेदार ताज और अरग़वानी रंग का लिबास पहने बाहर आया। पीलातुस ने उनसे कहा, "लो यह है वह आदमी।"

उसे देखते ही राहनुमा इमाम और उनके मुलाज़िम चीख़ने लगे, "इसे मसलूब करें, इसे मसलूब करें!"

पीलातुस ने उनसे कहा, "तुम ही इसे ले जाकर मसलूब करो। क्योंकि मुझे इसे मुजरिम ठहराने की कोई वजह नहीं मिली।"

यहूदियों ने इसरार किया, "हमारे पास शरीअत है और इस शरीअत के मुताबिक़ लाज़िम है कि वह मारा जाए। क्योंकि इसने अपने आपको अल्लाह का फ़रज़ंद क़रार दिया है।"

यह सुनकर पीलातुस मज़ीद डर गया। दुबारा महल में जाकर ईसा से पूछा, “तुम कहाँ से आए हो?”

लेकिन ईसा ख़ामोश रहा। पीलातुस ने उससे कहा, “अच्छा, तुम मेरे साथ बात नहीं करते? क्या तुम्हें मालूम नहीं कि मुझे तुम्हें रिहा करने और मसलूब करने का इख़्तियार है?”

ईसा ने जवाब दिया, “आपको मुझ पर इख़्तियार न होता अगर वह आपको ऊपर से न दिया गया होता। इस वजह से उस शख़्स से ज़्यादा संगीन गुनाह हुआ है जिसने मुझे दुश्मन के हवाले कर दिया है।”

इसके बाद पीलातुस ने उसे आज़ाद करने की कोशिश की। लेकिन यहूदी चीख़ चीख़कर कहने लगे, “अगर आप इसे रिहा करें तो आप रोमी शहनशाह क़ैसर के दोस्त साबित नहीं होंगे। जो भी बादशाह होने का दावा करे वह शहनशाह की मुख़ालफ़त करता है।”

इस तरह की बातें सुनकर पीलातुस ईसा को बाहर ले आया। फिर वह जज की कुरसी पर बैठ गया। उस जगह का नाम “पच्चीकारी” था। (अरामी ज़बान में वह गब्बता कहलाती थी।) अब दोपहर के तक़रीबन बारह बज गए थे। उस दिन ईद के लिए तैयारियाँ की जाती थीं, क्योंकि अगले दिन ईद का आग़ाज़ था। पीलातुस बोल उठा, “लो, तुम्हारा बादशाह!”

लेकिन वह चिल्लाते रहे, “ले जाएँ इसे, ले जाएँ! इसे मसलूब करें!”

पीलातुस ने सवाल किया, “क्या मैं तुम्हारे बादशाह को सलीब पर चढ़ाऊँ?”

राहनुमा इमामों ने जवाब दिया, “सिवाए शहनशाह के हमारा कोई बादशाह नहीं है।”

फिर पीलातुस ने ईसा को उनके हवाले कर दिया ताकि उसे मसलूब किया जाए।

काम मुकम्मल हो गया
अल-मसीह की मौत

सलीब

यहूदी राहनुमाओं के उकसाने पर रोमी गवर्नर पीलातुस ने हुक्म दिया कि ईसा मसीह को सलीब पर चढ़ाया जाए। तब उसे सलीब पकड़ा दी गई और फ़ौजी उसके साथ चल पड़े। दूसरी अनाजील इसके गवाह हैं कि ईसा मसीह कोड़ों के बाइस काफ़ी कमज़ोर हो गया था। रास्ते में उसकी ताक़त जवाब दे गई। तब फ़ौजियों ने एक गुज़रनेवाले को यह लकड़ी उठाकर ले जाने पर मजबूर किया।

चलते चलते वह शहर से निकलकर सज़ाए-मौत की जगह पर पहुँच गए। जगह का नाम खोपड़ी था। यह शहर की चारदीवारी के क़रीब ही थी जहाँ से लोग तमाशा देख सकते थे। वहाँ फ़ौजियों ने उसे सलीब पर चढ़ा दिया। उसके बाएँ और दाएँ हाथ उन्होंने दो मुजरिमों को मसलूब किया।

► **मसलूब करने का क्या तरीक़ा था?**

फ़ौजी, हाथों और पाँवों में बड़े कील ठोंककर मुजरिम को सलीब से लटका देते थे।

यहूदियों का बादशाह

इतने में पीलातुस ने एक तख़्ती बनवाकर उसे ईसा मसीह की सलीब पर लगवा दिया। तख़्ती पर लिखा था, 'ईसा नासरी, यहूदियों का बादशाह।' बहुत-से यहूदियों ने यह पढ़ लिया, क्योंकि यह मक़ाम शहर के क़रीब था और यह बात अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों में लिखी थी। यह देखकर राहनुमा इमामों ने एतराज़ किया, "'यहूदियों का बादशाह' न लिखें बल्कि यह कि 'इस आदमी ने यहूदियों का बादशाह होने का दावा किया'।"

पीलातुस ने जवाब दिया, "जो कुछ मैंने लिख दिया सो लिख दिया।"

► **पीलातुस क्यों अड़ा रहा?**

पीलातुस ज़ालिम था, और उसे उन्हें दिक़्क़त पहुँचाने में मज़ा आता था। लेकिन अनजाने में उसने इस तख़्ती से एक गहरी हक़ीक़त का एलान किया।

► **उसने किस हक़ीक़त का एलान किया?**

यह कि ईसा मसीह सचमुच बादशाह है। वह इस दुनिया में आया ताकि पहले यहूदियों और फिर पूरी दुनिया का बादशाह बने।

कपड़ों की तक़सीम

ईसा मसीह को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों ने उसके कपड़े लेकर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। यह भी एक रोमी रिवाज था। लेकिन चोग़ा बेजोड़ था। वह ऊपर से लेकर नीचे तक बुना हुआ एक ही टुकड़े का था। इसलिए फ़ौजियों ने कहा, "आओ, इसे फाड़कर तक़सीम न करें बल्कि इस पर क़ुरा डालें।" यों ज़बूर की यह पेशगोई पूरी हुई, "उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और मेरे लिबास पर क़ुरा डाला।"

► **इस पेशगोई का ज़िक्र कहाँ हुआ था?**

यह पेशगोई ज़बूर 22:18 में पाई जाती है। यह ज़बूर अल-मसीह की तकलीफ़देह मौत की पेशगोई करता है।

मरियम की फ़िकर

कुछ औरतें ईसा मसीह की सलीब के क़रीब खड़ी थीं—उसकी माँ, उसकी ख़ाला, क्लोपास की बीवी मरियम और मरियम मग्दलीनी। ईसा मसीह ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे प्यारा था। उसने कहा, "ऐ ख़ातून, देखें आपका बेटा यह है।" उस शागिर्द से उसने कहा, "देख, तेरी माँ यह है।" उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा मसीह की माँ को अपने घर रखा।

► **यह कौन-सा शागिर्द था जो उसे प्यारा था?**

बेशक यह यूहन्ना रसूल था जिसने इंजील का यह बयान लिखा।

► **उसने अपने नाम का ज़िक्र क्यों नहीं किया?**

हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि वह भी यहया बपतिस्मा देनेवाले की-सी सोच रखता था जिसने फ़रमाया था कि मसीह बढ़ता जाए जबकि मैं घटता जाऊँ (यूहन्ना 3:30)। वह नाम-दाम कमाने के चक्कर में नहीं आना चाहता था।

► **ईसा मसीह ने मरियम और शागिर्द से यह बात क्यों की?**

मौत के रूबरू भी उसे मरियम की फ़िकर थी। वह चाहता था कि यह शागिर्द उसकी देख-भाल करे।

प्यास

इसके बाद जब ईसा मसीह ने जान लिया कि मेरा मिशन तकमील तक पहुँच चुका है तो उसने कहा, "मुझे प्यास लगी है।" इससे भी ज़बूर की एक पेशगोई पूरी हुई।

► **कौन-सी पेशगोई पूरी हुई?**

एक ज़बूर में लिखा है,

> उन्होंने मेरी ख़ुराक में कड़वा ज़हर मिलाया, मुझे सिरका पिलाया जब प्यासा था।
> (ज़बूर 69:21; बमुक़ाबला ज़बूर 22:15)

► **यूहन्ना यह बात क्यों बयान करता है?**

पहले, वह कहना चाहता है कि यह पेशगोई पूरी हुई। लेकिन इससे बढ़कर वह इन तमाम दुखी बातों से इस पर ज़ोर देना चाहता है कि मसीह ने सचमुच सख़्त दुख उठाया। सलीबी मौत के कुछ साल बाद चंद-एक ग़लत उस्ताद कहने लगे थे कि ऐसी अज़ीम हस्ती दुख नहीं उठा सकती। उनके ख़याल में वह सिर्फ़ देखने में दुख उठा रहा था।

यूहन्ना फ़रमाता है कि हरगिज़ नहीं! ख़ुदा के फ़रज़ंद ने इनसान बनकर हमारी जगह दुख सहा ताकि हमें नजात देकर अपनी बादशाही में शामिल करे। लाज़िम था कि वह पूरे तौर पर ख़ुदा भी हो और इनसान भी। अगर वह सिर्फ़ ख़ुदा होता तो वह अपनी जान इनसान की जगह न दे सकता। और अगर वह सिर्फ़ इनसान होता तो इनसान को उसकी क़ुरबानी से कोई मतलब न होता। यह बात ग़लत है कि वह सिर्फ़ ख़ुदा है। वह पूरे तौर पर इनसान भी है। मैंने अपनी आँखों से देखा कि वह मौत तक दुख उठा रहा था।

मेरे दोस्त, यह बात सच्चे ईमान का बुनियादी सतून है। सच्चा शागिर्द वही होता है जो यह बात माने। सच्चा शागिर्द जानता है कि मैं अपनी नजात ख़ुद हासिल नहीं कर सकता। सिर्फ़ ख़ुदा का फ़रज़ंद जो पूरे तौर पर ख़ुदा और पूरे तौर पर इनसान है मुझे यह नजात देकर नूर में ला सकता है। मेरा इसमें कोई हिस्सा नहीं है।

इस बुनियादी सोच से हमारा ईमान दुनिया की हर दूसरी सोच से फ़रक़ है। नजात मिलने के लिए हमें पहले हथियार डालकर मानना पड़ता है कि ऐ मसीह,

तू ही सब कुछ है। मैं अपनी ही ताक़त से नजात हासिल नहीं कर सकता। तेरा ही नूर मुझे बदल सकता है।

► **अच्छा, आप यह बात नहीं मानते?**

मेरे अज़ीज़, अपने इर्दगिर्द देखो। क्या एक नज़र साबित नहीं करती कि सबके सब टेढ़े-मेढ़े हैं? सबके सब गुनाह में फँसे हुए हैं। यह बात अलग कि हर एक अपने आपको ठीक-ठाक और अच्छा इनसान समझता है चाहे वह कितना झूठ क्यों न बोले, कितनी बेईमानी क्यों न करे। जितना कोई ख़ुदा की क़सम खाए उतना ही वह मशकूक निकलता है। जितना कोई कर दिखाए कि मैं बड़ा फ़रिश्ता हूँ उतना ही वह होते होते शैतान साबित होता है।

सिर्फ़ और सिर्फ़ ख़ुदा हमारी हालत बदल सकता है। सिर्फ़ ईसा मसीह की सच्चाई, उसका नूर, उसका अबदी पानी और अबदी रोटी हममें तबदीली ला सकती है।

► **क्या वजह है कि सिर्फ़ ईसा मसीह हममें तबदीली ला सकता है?**

वजह यह है कि हमारी अपनी कोशिशें बकवास ही हैं। सिर्फ़ वह जो अच्छा चरवाहा है हममें पक्की तबदीली ला सकता है।

काम मुकम्मल हो गया है

क़रीब मै के सिरके से भरा बरतन पड़ा था। उन्होंने एक इस्पंज सिरके में डुबोकर उसे ज़ूफ़े की शाख़ पर लगा दिया और उठाकर मसीह के मुँह तक पहुँचाया। जो अबदी ज़िंदगी का सरचश्मा है उसे घटिया क़िस्म का सिरका पिलाया गया। यह सिरका पीने के बाद वह बोल उठा, “काम मुकम्मल हो गया है।” और सर झुकाकर उसने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर दी।

► **कौन-सा काम मुकम्मल हो गया था?**

नजात का काम मुकम्मल हो गया था। ईसा मसीह को दुनिया में भेजा गया था ताकि वह मौत और गुनाह पर फ़तह पाए, इनसान को नूर में लाए। उसे दुनिया में भेजा गया था ताकि वही सज़ा उठाए जो इनसान को उठानी थी। जो काम इनसान कर नहीं पाता वह उसने किया। जो उस पर ईमान लाता है उसके गुनाह मिटाए जाते हैं, और वह ख़ुदा को मंज़ूर हो जाता है। यों मसीह की मौत उसकी अनोखी ख़िदमत का उरूज थी। ऐसा काम दुनिया नहीं समझ सकती।

उसकी नज़र में यह हस्ती फ़ेल हो गई। सिर्फ़ वह जो ईमान लाया है इस काम की क़दर कर सकता है।

► **यह बात कहने के बाद ईसा मसीह ने क्या किया?**

उसने अपनी जान अपने बाप के सुपुर्द की।

► **इससे हम क्या सीख सकते हैं?**

मरते वक़्त हम भी जो उसके शागिर्द हैं अपनी जान उसके सुपुर्द कर सकते हैं। तब हम सीधे उसकी गोद में आ जाएँगे जो हमारा अच्छा चरवाहा है। डरने की ज़रूरत नहीं है, क्योंकि उसकी भेड़ें मौत के पार भी महफ़ूज़ रहती हैं।

छेदा हुआ पहलू

तैयारी का दिन यानी जुमा था, और अगले दिन ईदे-फ़सह का आग़ाज़ था। इसलिए यहूदी नहीं चाहते थे कि लाशें अगले दिन तक सलीबों पर लटकी रहें। उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह उनकी टाँगें तुड़वाकर उन्हें सलीबों से उतारने दे।

► **टाँगें तुड़वाने से क्या होता था?**

टाँगें तुड़वाने से जिस्म को पाँवों से सहारा नहीं मिलता था और दम जल्द ही घुट जाता था।

फ़ौजियों ने दूसरे दो मुजरिमों की टाँगें तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की। जब वह ईसा मसीह के पास आए तो उन्होंने देखा कि वह फ़ौत हो चुका है। इसलिए उन्होंने उसकी टाँगें न तोड़ीं। लेकिन तसल्ली पाने के लिए कि वह सचमुच मर गया है एक ने नेज़े से उसका पहलू छेद दिया। ज़ख़म से फ़ौरन ख़ून और पानी बह निकला।

► **ख़ून और पानी बह निकलने का क्या मतलब था?**

इसका मतलब था कि वह सचमुच मर चुका था। सायंसदान कहते हैं कि जो इनसान थोड़ी देर पहले मर गया हो उसके पहलू से ख़ून और पानी निकल सकता है। ज़िंदा इनसान से सिर्फ़ ख़ून निकलता है और कुछ देर से मरे हुए इनसान से थोड़ा ही निकलता है।

यूहन्ना की पक्की गवाही

यूहन्ना रसूल फ़रमाता है,

> जिसने यह देखा है उसने गवाही दी है और उसकी गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हक़ीक़त बयान कर रहा है और उसकी गवाही का मक़सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ।
> (यूहन्ना 19:35)

► **यह गवाह कौन था?**

बेशक यह गवाह यूहन्ना रसूल था जो अपने आक़ा की सलीब के क़रीब ही खड़ा था।

► **वह इस पर इतना ज़ोर क्यों देता है कि मैं इस मौत का गवाह हूँ?**

इसका ज़िक्र हो चुका है कि कुछ ग़लत उस्ताद इनकार करने लगे थे कि ख़ुदा का फ़रज़ंद दुख उठा सकता है। उनका कहना था कि ईसा मसीह नहीं मरा। इसी लिए यूहन्ना इस पर भी ज़ोर देता है कि मरियम दूसरी जानी-पहचानी औरतों समेत सलीब के बिलकुल क़रीब थीं जब ईसा मसीह मर गया। दूसरी अनाजील इसके गवाह हैं कि और औरतें भी कुछ दूर खड़ी सारा मामला देखती रहीं। हम अंदाज़ा लगा सकते हैं कि बहुत-से लोग शहर की मोटी मोटी चारदीवारी पर खड़े सब कुछ देख रहे थे, क्योंकि यह चारदीवारी नज़दीक ही थी। इसका ज़िक्र हो चुका है कि यह लोग सलीब की तख़्ती पर लिखी बात पढ़ सकते थे (यूहन्ना 19:20)।

यूहन्ना के बयान से साफ़ ज़ाहिर होता है कि ईसा मसीह के लिए बचना नामुमकिन ही था। सारा इंतज़ाम रोमी फ़ौजियों के हाथ में था, और सलीब पर यों कीलों से लटकाने से चांस ही नहीं था कि वह बच जाए। यूहन्ना फ़रमाता है कि मेरी गवाही सच्ची है। मैं जानता हूँ कि मैं हक़ीक़त बयान कर रहा हूँ।

► **सच्चाई की यह बात किसकी याद दिलाती है?**

यह ईसा मसीह की याद दिलाती है जो सच्चाई का बादशाह है और जिसने पीलातुस के सामने इस सच्चाई, इस ठोस वफ़ादारी पर ज़ोर दिया था। सच्चे शागिर्द को इससे पहचाना जाता है कि वह सच्चाई बोलता है।

► **यूहन्ना की गवाही का क्या मक़सद है?**

मक़सद यह है कि सुनने और पढ़नेवाले ईमान लाएँ। इंजील का पूरा मक़सद यही है कि इनसान ख़ुदा के फ़रज़ंद ईसा मसीह पर ईमान लाकर नजात पाए।

► **यह बात इतनी अहम क्यों थी कि मसीह के पहलू से ख़ून और पानी बह निकला?**

यूहन्ना इसका जवाब देता है,

> यह यों हुआ ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए, "उसकी एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।" कलामे-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, "वह उस पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है।" (यूहन्ना 19:36-37)

यूहन्ना दो पेशगोइयाँ बयान करता है जो पूरी हुईं।

► **इन दो पेशगोइयों का क्या मतलब है?**

पहली बात,

मसीह नजात देनेवाला लेला है

पहली पेशगोई ख़ुरूज की किताब में लिखी है :

> यह खाना एक ही घर के अंदर खाना है। न गोश्त घर से बाहर ले जाना, न लेले की किसी हड्डी को तोड़ना। (ख़ुरूज 12:46)

► **यह किस क़िस्म का खाना है?**

यह वह खाना है जो इसराईलियों ने मिसर से निकलने से पहले पहले खाया। जब मिसर के बादशाह ने उन्हें छोड़ने से इनकार किया तो ख़ुदा ने फ़रमाया कि मैं मिसर के हर पहलौठे को मार डालूँगा। लेकिन मेरी क़ौम इससे बच सकती है। बचने का यह तरीक़ा है : हर घराना एक लेला ज़बह करे। फिर ज़ूफ़े का गुच्छा लेले के ख़ून में डुबोकर वह यह ख़ून चौखट पर लगा दे। जब हलाक करनेवाला फ़रिश्ता वहाँ से गुज़रेगा तो वह यह ख़ून देखकर ऐसे घर के पहलौठों को छोड़ेगा। लेले को उसी रात भूनकर खाना है, लेकिन उसकी हड्डियों को मत तोड़ना।

बाद में यह खाना हर साल मनाया जाता था। ईद का नाम फ़सह की ईद थी। इसी ईद के पहले दिन ईसा मसीह मसलूब हुआ। जब वह सलीब पर लटका हुआ था उस वक़्त शहर में ईद के लेले ज़बह किए जा रहे थे।

► **यह बात कि लेले की हड्डियाँ तोड़ी नहीं जाती थीं किस तरह ईसा मसीह में पूरी हुई?**

ईसा मसीह फ़सह का हक़ीक़ी लेला है। लेले की तरह उसकी हड्डियाँ तोड़ी न गईं हालाँकि दूसरों की टाँगें तोड़ी गईं। एक और बात भी इस तरफ़ इशारा करती है : ज़ूफ़े की शाख़ पर इस्पंज लगाकर उसे सिरका पिलाया गया। यह ज़ूफ़ा उस ज़ूफ़े के गुच्छे की तरफ़ इशारा है जिससे घर के चौखट पर ख़ून लगाया जाता था। ग़रज़ ईसा मसीह वह हक़ीक़ी लेला है जिसका ख़ून इलाही अदालत से छुड़ाता है। दूसरी बात,

मसीह पाक करनेवाला चश्मा है

दूसरी पेशगोई ज़करियाह नबी की है। उसमें ख़ुदा ने फ़रमाया,

> मैं दाऊद के घराने और यरूशलम के बाशिंदों पर मेहरबानी और इलतमास का रूह उंडेलूँगा। तब वह मुझ पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है, और वह उसके लिए ऐसा मातम करेंगे जैसे अपने इकलौते बेटे के लिए। (ज़करियाह 12:10)

नबी वह ज़माना बयान कर रहा है जब इसराईल अल-मसीह को पहचान लेगा। तब वह उसका मातम करेंगे जिसे उन्होंने छेदा था। फिर नबी फ़रमाता है,

> उस दिन [...] चश्मा खोला जाएगा जिसके ज़रीए वह अपने गुनाहों और नापाकी को दूर कर सकेंगे। (ज़करियाह 13:1)

मतलब है कि उस लेले से एक चश्मा खोला गया जिसके ज़रीए हर ईमान लानेवाले के गुनाहों और नापाकी को दूर किया जाएगा।

ग़रज़, जब ख़ून और पानी उस के पहलू से बह निकला तो इस से एक गहरी हक़ीक़त ज़ाहिर हुई : मसीह वह लेला है जिस का ख़ून हमें इलाही अदालत से छुड़ाता है। साथ साथ मसीह अबदी ज़िंदगी का वह चश्मा है जिस का पानी हमारे गुनाहों और नापाकी को दूर करता है।

दफ़न

बाद में अरिमतियाह के रहनेवाले यूसुफ़ ने पीलातुस से मसीह की लाश उतारने की इजाज़त माँगी। इजाज़त मिलने पर वह आया और लाश को उतार लिया।

► **अरिमतियाह का रहनेवाला यूसुफ़ कौन था?**

दूसरी अनाजील इसके गवाह हैं कि यह यूसुफ़ यहूदी अदालते-आलिया का अमीर और इज़्ज़तदार रुकन था। वह मसीह का शागिर्द भी था मगर ख़ुफ़िया तौर पर, क्योंकि वह यहूदी राहनुमाओं से डरता था। वह मसीह को सज़ाए-मौत देने के ख़िलाफ़ था। अब उसने लाश को दफ़नाकर बड़ी मरदानगी दिखाई।

► **नीकुदेमुस भी साथ था। नीकुदेमुस कौन था?**

वह एक इज़्ज़तदार आलिम था जो ईसा मसीह से रात के वक़्त मिला था (यूहन्ना 3)। एक मौक़े पर जब यहूदी राहनुमा मसीह के ख़िलाफ़ बातें करने लगे तो उसने उसका दिफ़ा किया था (यूहन्ना 7:50-52)। यह दो जाने-पहचाने आदमी भी इसके पक्के गवाह थे कि ईसा मसीह सचमुच मर गया था।

नीकुदेमुस अपने साथ मुर और ऊद की तक़रीबन 34 किलोग्राम ख़ुशबू लेकर आया था। सिर्फ़ अमीर आदमी यह ख़रीद सकता था। जनाज़े की रसूमात के मुताबिक़ उन्होंने लाश पर ख़ुशबू लगाकर उसे पट्टियों से लपेट दिया।

► **लेकिन लाश को कहाँ दफ़न करना था?**

सबत यानी हफ़्ते का दिन क़रीब था, क्योंकि यहूदी हिसाब से वह जुमे की शाम से शुरू होता था। उस दिन लाश को कहीं उठाकर ले जाना मुश्किल था। ख़ुशक़िस्मती से सलीबों के क़रीब एक बाग़ था, और बाग़ में एक नई क़ब्र थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं हुई थी।

► **यह क़ब्र कैसी बनी थी?**

यह क़ब्र चट्टान में तराशा हुआ ग़ार यानी गुफा थी जिसकी एक दीवार में एक क़िस्म की बड़ी शेल्फ़ तराशी गई थी। इसी शेल्फ़ पर लाश को रखा गया।

फिर बड़ा पत्थर ग़ार के मुँह पर लुढ़काया गया। तो भी यहूदी राहनुमा मुतमइन न थे। उस पर मोहर लगाकर उन्हों ने क़ब्र पर पहरेदार मुक़र्रर किए। उन्हें डर था कि शागिर्द लाश को छीन लेंगे।

क्या इंजील की इस जगह पर यूहन्ना को ‘ख़त्म शुद’ नहीं लिखना चाहिए था? ईसा मसीह गुज़र गया था, शागिर्द डर के मारे बिखर गए थे। जो लोग पहले उसकी तारीफ़ में नारे लगाते वह अब हिम्मत हारकर अपने अपने घर चले गए थे।

इस सवाल का जवाब अगले बाब में मिलेगा।

इंजील, यूहन्ना 19:16b-42

चुनाँचे वह ईसा को लेकर चले गए। वह अपनी सलीब उठाए शहर से निकला और उस जगह पहुँचा जिसका नाम खोपड़ी (अरामी ज़बान में गुलगुता) था। वहाँ उन्होंने उसे सलीब पर चढ़ा दिया। साथ साथ उन्होंने उसके बाएँ और दाएँ हाथ दो और आदमियों को मसलूब किया। पीलातुस ने एक तख़्ती बनवाकर उसे ईसा की सलीब पर लगवा दिया। तख़्ती पर लिखा था, ‘ईसा नासरी, यहूदियों का बादशाह।’ बहुत-से यहूदियों ने यह पढ़ लिया, क्योंकि मसलूबियत का मक़ाम शहर के क़रीब था और यह जुमला अरामी, लातीनी और यूनानी ज़बानों में लिखा था। यह देखकर यहूदियों के राहनुमा इमामों ने एतराज़ किया, “‘यहूदियों का बादशाह’ न लिखें बल्कि यह कि ‘इस आदमी ने यहूदियों का बादशाह होने का दावा किया’।”

पीलातुस ने जवाब दिया, “जो कुछ मैंने लिख दिया सो लिख दिया।”

ईसा को सलीब पर चढ़ाने के बाद फ़ौजियों ने उसके कपड़े लेकर चार हिस्सों में बाँट लिए, हर फ़ौजी के लिए एक हिस्सा। लेकिन चोग़ा बेजोड़ था। वह ऊपर से लेकर नीचे तक बुना हुआ एक ही टुकड़े का था। इसलिए फ़ौजियों ने कहा, “आओ, इसे फाड़कर तक़सीम न करें बल्कि इस पर क़ुरा डालें।” यों कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हुई, “उन्होंने आपस में मेरे कपड़े बाँट लिए और मेरे लिबास पर क़ुरा डाला।” फ़ौजियों ने यही कुछ किया।

कुछ ख़वातीन भी ईसा की सलीब के क़रीब खड़ी थीं : उसकी माँ, उसकी ख़ाला, क्लोपास की बीवी मरियम और मरियम मग्दलीनी। जब ईसा ने अपनी माँ को उस शागिर्द के साथ खड़े देखा जो उसे प्यारा था तो उसने कहा, “ऐ ख़ातून, देखें आपका बेटा यह है।”

और उस शागिर्द से उसने कहा, “देख, तेरी माँ यह है।” उस वक़्त से उस शागिर्द ने ईसा की माँ को अपने घर रखा।

इसके बाद जब ईसा ने जान लिया कि मेरा मिशन तकमील तक पहुँच चुका है तो उसने कहा, “मुझे प्यास लगी है।” (इससे भी कलामे-मुक़द्दस की एक पेशगोई पूरी हुई।)

क़रीब मै के सिरके से भरा बरतन पड़ा था। उन्होंने एक इस्पंज सिरके में डुबोकर उसे ज़ूफ़े की शाख़ पर लगा दिया और उठाकर ईसा के मुँह तक पहुँचाया। यह सिरका पीने के बाद ईसा बोल उठा, “काम मुकम्मल हो गया है।” और सर झुकाकर उसने अपनी जान अल्लाह के सुपुर्द कर दी।

फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आग़ाज़ और एक ख़ास सबत था। इसलिए यहूदी नहीं चाहते थे कि मसलूब हुई लाशें अगले दिन तक सलीबों पर लटकी रहें। चुनाँचे उन्होंने पीलातुस से गुज़ारिश की कि वह उनकी टाँगें तुड़वाकर उन्हें सलीबों से उतारने दे। तब फ़ौजियों ने आकर ईसा के साथ मसलूब किए जानेवाले आदमियों की टाँगें तोड़ दीं, पहले एक की फिर दूसरे की। जब वह ईसा के पास आए तो उन्होंने देखा कि वह फ़ौत हो चुका है, इसलिए उन्होंने उसकी टाँगें न तोड़ीं। इसके बजाए एक ने नेज़े से ईसा का पहलू छेद दिया। ज़ख़म से फ़ौरन ख़ून और पानी बह निकला। (जिसने यह देखा है उसने गवाही दी है और उसकी गवाही सच्ची है। वह जानता है कि वह हक़ीक़त बयान कर रहा है और उसकी गवाही का मक़सद यह है कि आप भी ईमान लाएँ।) यह यों हुआ ताकि कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई पूरी हो जाए, “उसकी एक हड्डी भी तोड़ी नहीं जाएगी।” कलामे-मुक़द्दस में यह भी लिखा है, “वह उस पर नज़र डालेंगे जिसे उन्होंने छेदा है।”

बाद में अरिमतियाह के रहनेवाले यूसुफ़ ने पीलातुस से ईसा की लाश उतारने की इजाज़त माँगी। (यूसुफ़ ईसा का ख़ुफ़िया शागिर्द था, क्योंकि वह यहूदियों से डरता था।) इसकी इजाज़त मिलने पर वह आया और लाश को उतार लिया। नीकुदेमुस भी साथ था, वह आदमी जो गुज़रे दिनों में रात के वक़्त ईसा से मिलने आया था। नीकुदेमुस अपने साथ मुर और ऊद की तक़रीबन 34 किलोग्राम ख़ुशबू लेकर आया था। यहूदी जनाज़े की रसूमात के मुताबिक़

उन्होंने लाश पर ख़ुशबू लगाकर उसे पट्टियों से लपेट दिया। सलीबों के क़रीब एक बाग़ था और बाग़ में एक नई क़ब्र थी जो अब तक इस्तेमाल नहीं की गई थी। उसके क़रीब होने के सबब से उन्होंने ईसा को उसमें रख दिया, क्योंकि फ़सह की तैयारी का दिन था और अगले दिन ईद का आग़ाज़ था।

मैं ने ख़ुदावंद को देखा है

अल-मसीह जी उठता है

ईसा मसीह ने मरने से पहले फ़रमाया था कि मुझे क़त्ल किया जाएगा, लेकिन तीसरे दिन मैं जी उठूँगा। उसके शागिर्द ऐसी बातें मानने के लिए तैयार नहीं थे। इसलिए जब उसे सचमुच क़त्ल किया गया तो वह सख़्त घबराकर छुप गए। उनके सारे सपने धूल में मिलाए गए थे। अब क्या करें? पहली बात,

औरतों की मरदानगी

जुमे के दिन ईसा मसीह को दफ़नाया गया। हफ़ते का दिन ख़ामोशी से गुज़र गया, क्योंकि उस दिन काम करना मना था। फिर इतवार का दिन शुरू हुआ। अभी अंधेरा ही था कि कुछ शागिर्द अपने घरों से खिसककर क़ब्र के लिए रवाना हुए।

► **क्या उनमें पतरस और दूसरे बुज़ुर्ग शामिल थे?**

नहीं। सिर्फ़ औरतों में वहाँ जाने की हिम्मत थी। कैसी बात!

► **वह क्यों क़ब्र के पास जाना चाहती थीं?**

वह लाश पर ख़ुशबूदार मसाले लगाना चाहती थीं।

► **लेकिन क़ब्र पर लंबा-चौड़ा पत्थर पड़ा था। वह किस तरह उसे हटा सकती थीं?**

देखो इन औरतों की उम्मीद और जुर्रत। वह तो जानती थीं कि हम पत्थर को हटा नहीं सकतीं। फिर भी वह एक आख़िरी बार अपने उस्ताद और आक़ा की इज़्ज़तो-एहतराम करना चाहती थीं। इसके लिए वह फ़ौजियों और मुख़ालिफ़ों का सामना करने के लिए भी तैयार थीं। पत्थर को किस तरह हटाएँगी? हमको मालूम नहीं। लेकिन हम मजबूर हैं। हमारी गहरी मुहब्बत हमें वह करने के लिए उभार रही है। दूसरी बात,

ख़ाली क़ब्र

इन औरतों में से एक मरियम मग्दलीनी थी। क़ब्र शहर की चारदीवारी से बाहर थी। चलती चलती वह अंधेरे में क़ब्र तक पहुँच गई। लेकिन यह क्या था?! वह

घबरा गई। क़ब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़ हटाया गया था। यह क्या गड़बड़ थी? मरियम सर पर पाँव रखकर सीधे पतरस और यूहन्ना के पास दौड़ आई। वह चिल्लाई, "वह ख़ुदावंद को क़ब्र से ले गए हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।"

► **क्या मरियम ने देखा था कि किसी ने लाश को छीन लिया था?**

नहीं। जब इनसान सख़्त परेशान हो जाता है तो कई बार वह ग़लत नतीजा निकालता है। मरियम ने अंधेरी क़ब्र में झाँका तक नहीं था। बस एक वहम उसके सर पर सवार हो गया था। शायद उसे पहले से डर था कि कोई लाश को ले जाएगा। तीसरी बात,

यूहन्ना का ईमान

यह सुनते ही पतरस और यूहन्ना एकदम घर से निकले। दोनों दौड़ने लगे, लेकिन यूहन्ना ज़्यादा तेज़ था। वह पहले क़ब्र पर पहुँच गया। उसने झुककर अंदर झाँका तो कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अंदर न गया। फिर पतरस पहुँचकर क़ब्र में दाख़िल हुआ। उसने भी कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी देखीं। जिस कपड़े में लाश का सर लिपटा हुआ था वह तह करके पट्टियों से अलग पड़ा था। फिर यूहन्ना भी अंदर गया। जब उसने यह देखा तो वह ईमान लाया।

► **देखने पर वह ईमान लाया। इसका क्या मतलब है?**

रस्म के मुताबिक़ पूरी लाश को कपड़े के एक टुकड़े में लपेटा गया था। फिर हाथों को एक पट्टी से जिस्म के साथ जकड़ा गया था जबकि दूसरी पट्टी से पाँवों को बाँधा गया था। बड़े कपड़े के अलावा सर को एक अलग कपड़े से लपेटा गया था। अब कफ़न ज्यों का त्यों वहाँ पड़ा था। मतलब है जब ईसा मसीह जी उठा तो उसका जिस्म आसमानी जिस्म था और उसे कफ़न को उतारने की ज़रूरत नहीं थी। जिस्म कफ़न में से निकल गया और कपड़ा ज्यों का त्यों पड़ा रहा। लेकिन सर का कपड़ा अलग करके रखा गया था।

यही वजह है कि यूहन्ना ईमान लाया। वह समझ गया कि अगर लुटेरे लाश को लूटते तो वह कफ़न पीछे न छोड़ते। मसीह सचमुच जी उठा है। लेकिन पतरस अब तक शक में उलझा रहा।

कलामे-मुक़द्दस ने इसकी पेशगोई की थी।[1] साथ साथ ईसा मसीह ने शागिर्दों को यह बात बार बार बताई थी।[2] फिर भी शागिर्द अब तक यह पेशगोई नहीं समझते थे कि उसे मुरदों में से जी उठना है। अब क्या करें? पतरस और यूहन्ना हैरानी के आलम में घर वापस चले गए। चौथी बात,

मरियम से नरमी

लेकिन मरियम उनके साथ वापस न चली। वह रो रोकर क़ब्र के सामने खड़ी रही। कुछ देर बाद उसने रोते हुए झुककर क़ब्र में झाँका तो क्या देखती है : दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले लाश पड़ी थी—एक उसके सिरहाने और दूसरा उसके पैंताने। उन्होंने मरियम से पूछा, "ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है?" सवाल में नरम-सी झिड़की थी। मतलब है तुझे रोने की क्या ज़रूरत है?

उसने कहा, "वह मेरे ख़ुदावंद को ले गए हैं, और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।"

फिर उसने पीछे मुड़कर ईसा मसीह को वहाँ खड़े देखा। लेकिन उसने उसे न पहचाना।

► **उसने उसे क्यों नहीं पहचाना?**

शायद वह अपने आँसुओं के बाइस सही नहीं देख सकती थी। वैसे भी पिछली बार उसने ईसा मसीह को मुरदा हालत में देखा था। वह किस तरह यहाँ खड़ा हो सकता था?

ईसा मसीह ने पूछा, "ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है, किस को ढूँड रही है?"

हमारे आक़ा का कितना नरम सवाल। उसने उसे सख़्त झिड़की न दी। उसने उसकी आँखों को बड़ी नरमी और सब्र से खोल दिया। वह हमारा अच्छा चरवाहा है। वह हमें प्यार करता है। वह हमें ईमान लाने पर मजबूर नहीं करता। वह हमें बड़ी नरमी से सही इल्म और आज़ादी तक ले जाता है।

यह सोचकर कि वह माली है मरियम ने कहा, "जनाब, अगर आप उसे ले गए हैं तो मुझे बता दें कि उसे कहाँ रख दिया है ताकि उसे ले जाऊँ।"

ईसा मसीह ने उससे कहा, "मरियम!"

---

1 मसलन ज़बूर 16:8 ओ-माबाद; 22:21 ओ-माबाद; 49:15; 73:24; यसायाह 26:19; 53:10 ओ-माबाद; होसेअ 6:2; 13:14।

2 मत्ती 16:21-23; 17:22-23; 20:17-19

उसकी आवाज़ से कितना प्यार टपक रहा था! अच्छा चरवाहा बड़े रहम और मुहब्बत से अपनी बदहवास और उलझन में पड़ी हुई भेड़ को सही पटरी पर लाता है—आपको भी और मुझको भी। वह ज़ालिम नहीं है जिसे डंडा पकड़े हमें कुचल डालने का मज़ा आए।

यह सुनकर मरियम उसकी तरफ़ मुड़ी और बोल उठी, "रब्बूनी!" यानी उस्ताद! पाँचवीं बात,

आसमानी घर तैयार है

भेड़ अपने चरवाहे की आवाज़ सुनती है। मरियम का दिल एकदम मुहब्बत और ख़ुशी से भर गया। पिछले दिनों में दुनिया बेमक़सद और हौलनाक हो गई थी। सर पर काले काले बादल और घुप-अंधेरा छा गया था। लेकिन अब एकदम सूरज तुलू हुआ। परिंदे चहचहाने लगे। दिल ख़ुशी से नाचने लगा।

ईसा मसीह ने कहा, "मेरे साथ चिमटी न रह, क्योंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, 'मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास'।"

► **मरियम को क्यों कहा गया कि मेरे साथ चिमटी न रह?**

  ईसा मसीह अपने बाप के पास वापस जा रहा था। लेकिन पहले कई-एक ज़रूरी काम बाक़ी रह गए थे। अब चिमटी रहने का वक़्त नहीं था।

► **उसने फ़रमाया कि भाइयों के पास जा। यह भाई कौन थे?**

  भाई से मुराद उसके शागिर्द थे।

► **पहले वह उन्हें भाई नहीं पुकारता था। अब क्यों?**

  अपनी मौत और जी उठने से उसने गुनाह और मौत पर फ़तह पा ली थी। इस फ़तह की बुनियाद पर इनसान के लिए एक आसमानी घर तैयार हो गया था—ऐसा घर जिसमें हर एक भाई-बहन बराबर है।

► **वह क्यों फ़रमाता है कि मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास?**

  जो आसमानी घर तैयार हुआ था वह ख़ुदा ही का घर था। मतलब है गुनाह और मौत पर फ़तह पाने से ईसा मसीह ने ईमानदार को अपना घरवाला बना दिया था। जो भी ईमान लाए वह इस घराने का भाई या बहन बन जाता है।

मसीह पहले से फ़रमा चुका था कि अब से तुम मेरे दोस्त हो (यूहन्ना 15:14-15)। उसकी मौत और जी उठने से यह बात पूरी हुई।

मसीह की बात सुनकर मरियम मग्दलीनी शागिर्दों के पास गई। वह फूली न समाई। वह बोली, "मैंने ख़ुदावंद को देखा है और उसने मुझसे यह बातें कहीं।"

ख़िदमत के शुरू में मसीह ने शागिर्दों को फ़रमाया था कि आओ और ख़ुद देख लो। वह चाहता था कि लोग सोच-समझकर उस पर ईमान लाएँ। वह चाहता था कि ईमान से एक गहरा घरेलू ताल्लुक़ क़ायम हो जाए। अब जी उठने के बाद भी यह सिलसिला जारी रहा। पहले यूहन्ना ख़ाली कफ़न को देखकर ईमान लाया। फिर मरियम ईसा मसीह को देखकर ईमान लाई। यह ईमान खोखला नहीं था। यह ईमान किसी फ़रज़ी कहानी पर मबनी नहीं था। यह देखने, सुनने, छूने से क़ायम हुआ था। अब शागिर्दों की बारी आई। छटी बात,

तुम्हारी सलामती हो

उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्होंने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्योंकि वह सख़्त डरे हुए थे। अचानक ईसा मसीह उनके दरमियान आ खड़ा हुआ।

► **वह किस तरह आ खड़ा हुआ? क्या दरवाज़े पर ताला नहीं लगा था?**

अब उसका आसमानी जिस्म था। जी उठते वक़्त उसे कफ़न को उतारने की ज़रूरत नहीं थी। अब वह जगह और वक़्त का पाबंद नहीं रहा था।

उसने फ़रमाया, "तुम्हारी सलामती हो।"

► **उसने यह क्यों कहा?**

उसकी मौत और जी उठने का मक़सद तो यही था कि इनसान को सलामती हासिल हो। कि उसका ख़ुदा से ताल्लुक़ बहाल हो जाए।

फिर उसने उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया।

► **उसने अपने हाथों और पहलू क्यों उनको दिखाया?**

अब तक हाथों में कीलों का निशान था, अब तक पहलू में उस ज़ख़म का निशान था जिससे ख़ून और पानी बह निकला था।

ईसा मसीह को देखकर वह निहायत ख़ुश हुए।

► **उसे देखकर वह क्यों ख़ुश हुए?**

वह भूत-प्रेत नहीं था। बेशक उसका जिस्म आसमानी था, मगर जिस्म ही था। उसकी आवाज़, उसका अंदाज़—सब कुछ वैसा ही था। जिससे जुदा होने पर वह बड़ी मायूसी और घबराहट में उलझ गए थे वह दुबारा आ गया था। अच्छा चरवाहा वापस आ गया था। सातवीं बात,

आसमानी घर की खुली दावत

ईसा मसीह ने दुबारा कहा, "तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह मैं तुमको भेज रहा हूँ।"

► **ख़ुदा बाप ने अपने फ़रज़ंद को कहाँ भेजा था?**

दुनिया में।

► **उसने उसे क्यों भेजा था?**

ताकि वह लोगों को एक दावत दे। यह कि मैं तुम्हारे लिए एक आसमानी घर तैयार कर रहा हूँ। तौबा करके मुझ पर ईमान लाओ ताकि तुम मेरे घरवाले बन जाओ।

► **यह आसमानी घर किस तरह क़ायम हुआ?**

ईसा मसीह की गुनाह और मौत पर फ़तह से। जो भी तौबा करके उस पर ईमान लाए उसे अपने गुनाहों की माफ़ी मिलती है, और वह उसका घरवाला बन जाता है।

अब ईसा मसीह चाहता है कि शागिर्द दावत देने का यह सिलसिला जारी रखें।

► **वह कौन-सी दावत दें?**

यह कि ईसा मसीह ने आसमानी घर तैयार कर रखा है। इसलिए तौबा करके ईसा मसीह पर ईमान लाओ ताकि तुम भी उसके घरवाले बन जाओ।

फिर उन पर फूँककर मसीह ने फ़रमाया, "रूहुल-क़ुद्स को पा लो। अगर तुम किसी के गुनाहों को माफ़ करो तो वह माफ़ किए जाएँगे। और अगर तुम उन्हें माफ़ न करो तो वह माफ़ नहीं किए जाएँगे।"

► **फूँकने से ईसा मसीह ने क्या ज़ाहिर किया?**

उसने उस वाक़िये की तरफ़ इशारा किया जो उसके आसमान पर उठा लिया जाने पर हो जाएगा। उस वक़्त रूहुल-क़ुद्स उन पर नाज़िल होगा। और रूहुल-क़ुद्स में मसीह ख़ुद हाज़िर होगा। इसलिए उसने फूँककर यह बात फ़रमाई।

यही रूह पाने से शागिर्दों को वह ताक़त मिलेगी कि वह मसीह की दावत दुनिया के कोने कोने सुना सकेंगे।

► **लेकिन इसका क्या मतलब है कि अब से शागिर्दों को माफ़ करने का इख़्तियार हासिल है?**

अब से शागिर्दों की अव्वल ज़िम्मेदारी यह होगी कि वह सबको मसीह का घरवाला बनने की खुली दावत दें। इसी के लिए उनको भेजा जा रहा है।

► **इस दावत की सबसे बड़ी बात क्या है?**

यह कि तुम्हारे गुनाहों को माफ़ किए जाएँगे अगर तुम तौबा करके मसीह पर ईमान लाओ।

► **अगर सुननेवाले यह दावत क़बूल करें तो क्या होगा?**

उनके गुनाहों को माफ़ किया जाएगा।

► **अगर सुननेवाले यह दावत क़बूल न करें तो क्या होगा?**

उनके गुनाहों को माफ़ नहीं किया जाएगा। ईसा मसीह यही बात फ़रमा रहा है : जो यह दावत क़बूल करे उसके गुनाहों को माफ़ किया जाएगा और वह मेरा घरवाला बन जाएगा। वरना नहीं। आठवीं बात,

तोमा का शक

ईसा मसीह के आने पर तोमा मौजूद न था। दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, “हमने ख़ुदावंद को देखा है!” लेकिन तोमा ने कहा, “मुझे यक़ीन नहीं आता। पहले मुझे उसके हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उनमें अपनी उँगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उसके पहलू के ज़ख़म में डालूँ। फिर ही मुझे यक़ीन आएगा।” नवीं बात,

मसीह का तजरिबा करो

► **क्या तोमा की शकवाली बात ग़लत थी?**

बिलकुल नहीं। उसने अपनी आँखों से देखा था कि ईसा मसीह मरकर दफ़नाया गया था। वह अपनी आँखों से मसीह को देखना, अपने हाथों से उसे छूना चाहता था। यह बुरी बात नहीं है। आज भी ज़रूरी है कि मसीह हमारे दिलों में बसे। कि हम रोज़ाना उसका तजरिबा करें।

क्या आपको ईसा मसीह का तजरिबा हुआ है? दसवीं बात,

मसीह की हक़ीक़त जान लो

तोमा एक बात पर ज़ोर देता है जो ईमान की बुनियाद है : ईसा मसीह और जो कुछ उसने हमारे वास्ते किया है वह एक ठोस हक़ीक़त है। तोमा कहता है, मैं हक़ीक़त को जानना चाहता हूँ। किसी फ़रज़ी बात पर भरोसा करने का क्या फ़ायदा है?

क्या आप हक़ीक़त को जानना चाहते हैं? ग्यारहवीं बात,

ऐ मेरे ख़ुदावंद! ऐ मेरे ख़ुदा!

एक हफ़्ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान में जमा थे। इस मरतबा तोमा भी साथ था। दरवाज़ों पर ताले लगे थे। फिर भी ईसा मसीह उनके दरमियान आकर खड़ा हुआ। उसने कहा, "तुम्हारी सलामती हो!" फिर वह तोमा से मुख़ातिब हुआ, "अपनी उँगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू के ज़ख़म में डाल और बेएतक़ाद न हो बल्कि ईमान रख।"

ईसा मसीह तोमा का शक जानता था। फिर भी उसने उसे झिड़की न दी। उसने उसे खुली दावत दी कि आ जा, चेक कर कि मैं सचमुच ईसा मसीह हूँ। ईसा मसीह अंधे शागिर्द नहीं चाहता। वह ऐसे शागिर्द चाहता है जो सोच-समझकर शागिर्द बन जाएँ।

उसे देखकर तोमा ने कहा, "ऐ मेरे ख़ुदावंद! ऐ मेरे ख़ुदा!"

तोमा का शक एकदम काफ़ूर हो गया, और उसने पहचान लिया कि ईसा मसीह कौन है : वह मेरा ख़ुदावंद और मेरा ख़ुदा है।

► **क्या ईसा मसीह ने कहा कि ऐसी बात मत बोल?**

नहीं। न उसने यह कहा न दूसरे शागिर्दों ने।

► **क्यों?**

इसलिए कि ईसा मसीह ख़ुदा का फ़रज़ंद है। वह तसलीस का दूसरा उक़नूम है। लेकिन ध्यान दो : तोमा कहता है कि **मेरे** ख़ुदावंद, **मेरे** ख़ुदा।

► **वह क्यों मेरा ख़ुदावंद, मेरा ख़ुदा है?**

वह **मेरा** चरवाहा है, जिसने अपनी जान **मेरी** ख़ातिर दी। जो पूरे तौर से ख़ुदा भी है और पूरे तौर से इनसान भी उसने अपनी क़ुरबानी से मुझे गुनाह और मौत के चंगुल से छुड़ाया। अगर वह सिर्फ़ ख़ुदा होता तो वह मेरी जगह न मर

सकता, और अगर वह सिर्फ़ इनसान होता, तो मुझे उसकी मौत से कोई मतलब न होता। तोमा एकदम यह समझ गया, और उसका दिल ख़ुशी और एहतराम से भर गया। इस भेड़ ने अपने चरवाहे की आवाज़ सुन ली थी।

ईसा मसीह बोला, "क्या तू इसलिए ईमान लाया है कि तूने मुझे देखा है? मुबारक हैं वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।" आख़िरी बात,

ईमान क्या है?

ईसा मसीह की यह बात हमें दुबारा यह सोचने पर मजबूर करती है कि ईमान क्या है?

► **क्या ईमान एक बैज है जिससे मैं दिखाता हूँ कि मैं किस स्कूल या पार्टी का मेंबर हूँ? या क्या ईमान रखने का मतलब यह है कि मैं ख़ास रसूमात अदा करूँ?**

नहीं। ईमान अच्छे चरवाहे पर भरोसा है। उस चरवाहे पर जिसने अपनी जान क़ुरबान करके मुझे अपना घरवाला बना दिया है।

इस पर ज़ोर देने के लिए यूहन्ना फ़रमाता है कि ईसा मसीह ने मज़ीद बहुत-से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो मैंने बयान नहीं किए। लेकिन जितने बयान किए हैं उनका मक़सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी अल्लाह का फ़रज़ंद है और आपको इस ईमान के वसीले से उसके नाम से ज़िंदगी हासिल हो।

► **जो मोजिज़े और इलाही निशान बयान किए गए हैं उनका क्या मक़सद है?**

यह कि सुननेवाला ईमान लाए कि ईसा ही मसीह है, कि वह अल्लाह का फ़रज़ंद है। क्योंकि यही जानने से इनसान को अबदी ज़िंदगी हासिल होती है। यही पूरी इंजील का मक़सद है कि हर इनसान अच्छे चरवाहे की भेड़ और घरवाला बन जाए।

► **क्या आप अच्छे चरवाहे की भेड़ हैं? क्या आप उसके घरवाले बन गए हैं?**

इंजील, यूहन्ना 20

ख़ाली क़ब्र

हफ़्ते का दिन गुज़र गया तो इतवार को मरियम मग्दलीनी सुबह-सवेरे क़ब्र के पास आई। अभी अंधेरा था। वहाँ पहुँचकर उसने देखा कि क़ब्र के मुँह पर का पत्थर एक तरफ़ हटाया गया है। मरियम दौड़कर शमाऊन पतरस और ईसा को प्यारे शागिर्द के पास आई। उसने इत्तला दी, "वह ख़ुदावंद को क़ब्र से ले गए हैं, और हमें मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।"

तब पतरस दूसरे शागिर्द समेत क़ब्र की तरफ़ चल पड़ा। दोनों दौड़ रहे थे, लेकिन दूसरा शागिर्द ज़्यादा तेज़रफ़्तार था। वह पहले क़ब्र पर पहुँच गया। उसने झुककर अंदर झाँका तो कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी नज़र आईं। लेकिन वह अंदर न गया। फिर शमाऊन पतरस उसके पीछे पहुँचकर क़ब्र में दाख़िल हुआ। उसने भी देखा कि कफ़न की पट्टियाँ वहाँ पड़ी हैं और साथ वह कपड़ा भी जिसमें ईसा का सर लिपटा हुआ था। यह कपड़ा तह किया गया था और पट्टियों से अलग पड़ा था। फिर दूसरा शागिर्द जो पहले पहुँच गया था, वह भी दाख़िल हुआ। जब उसने यह देखा तो वह ईमान लाया। (लेकिन अब भी वह कलामे-मुक़द्दस की यह पेशगोई नहीं समझते थे कि उसे मुरदों में से जी उठना है।) फिर दोनों शागिर्द घर वापस चले गए।

मरियम मग्दलीनी और मसीह

लेकिन मरियम रो रोकर क़ब्र के सामने खड़ी रही। और रोते हुए उसने झुककर क़ब्र में झाँका तो क्या देखती है कि दो फ़रिश्ते सफ़ेद लिबास पहने हुए वहाँ बैठे हैं जहाँ पहले ईसा की लाश पड़ी थी, एक उसके सिरहाने और दूसरा वहाँ जहाँ पहले उसके पाँव थे। उन्होंने मरियम से पूछा, "ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है?"

उसने कहा, "वह मेरे ख़ुदावंद को ले गए हैं, और मालूम नहीं कि उन्होंने उसे कहाँ रख दिया है।"

फिर उसने पीछे मुड़कर ईसा को वहाँ खड़े देखा, लेकिन उसने उसे न पहचाना। ईसा ने पूछा, "ऐ ख़ातून, तू क्यों रो रही है, किस को ढूँड रही है?"
यह सोचकर कि वह माली है उसने कहा, "जनाब, अगर आप उसे ले गए हैं तो मुझे बता दें कि उसे कहाँ रख दिया है ताकि उसे ले जाऊँ।" ईसा ने उससे कहा, "मरियम!"
वह उसकी तरफ़ मुड़ी और बोल उठी, "रब्बूनी!" (इसका मतलब अरामी ज़बान में उस्ताद है।)
ईसा ने कहा, "मेरे साथ चिमटी न रह, क्योंकि अभी मैं ऊपर, बाप के पास नहीं गया। लेकिन भाइयों के पास जा और उन्हें बता, 'मैं अपने बाप और तुम्हारे बाप के पास वापस जा रहा हूँ, अपने ख़ुदा और तुम्हारे ख़ुदा के पास'।"
चुनाँचे मरियम मग्दलीनी शागिर्दों के पास गई और उन्हें इत्तला दी, "मैंने ख़ुदावंद को देखा है और उसने मुझसे यह बातें कहीं।"

शागिर्द और मसीह

उस इतवार की शाम को शागिर्द जमा थे। उन्होंने दरवाज़ों पर ताले लगा दिए थे क्योंकि वह यहूदियों से डरते थे। अचानक ईसा उनके दरमियान आ खड़ा हुआ और कहा, "तुम्हारी सलामती हो," और उन्हें अपने हाथों और पहलू को दिखाया। ख़ुदावंद को देखकर वह निहायत ख़ुश हुए। ईसा ने दुबारा कहा, "तुम्हारी सलामती हो! जिस तरह बाप ने मुझे भेजा उसी तरह मैं तुमको भेज रहा हूँ।" फिर उन पर फूँककर उसने फ़रमाया, "रूहुल-क़ुद्स को पा लो। अगर तुम किसी के गुनाहों को माफ़ करो तो वह माफ़ किए जाएँगे। और अगर तुम उन्हें माफ़ न करो तो वह माफ़ नहीं किए जाएँगे।"

शक्की तोमा और मसीह

बारह शागिर्दों में से तोमा जिसका लक़ब जुड़वाँ था ईसा के आने पर मौजूद न था। चुनाँचे दूसरे शागिर्दों ने उसे बताया, "हमने ख़ुदावंद को देखा है!" लेकिन तोमा ने कहा, "मुझे यक़ीन नहीं आता। पहले मुझे उसके हाथों में कीलों के निशान नज़र आएँ और मैं उनमें अपनी उँगली डालूँ, पहले मैं अपने हाथ को उसके पहलू के ज़ख़म में डालूँ। फिर ही मुझे यक़ीन आएगा।"

एक हफ़्ता गुज़र गया। शागिर्द दुबारा मकान में जमा थे। इस मरतबा तोमा भी साथ था। अगरचे दरवाज़ों पर ताले लगे थे फिर भी ईसा उनके दरमियान आकर खड़ा हुआ। उसने कहा, "तुम्हारी सलामती हो!" फिर वह तोमा से मुख़ातिब हुआ, "अपनी उँगली को मेरे हाथों और अपने हाथ को मेरे पहलू के ज़ख़म में डाल और बेएतक़ाद न हो बल्कि ईमान रख।"

तोमा ने जवाब में उससे कहा, "ऐ मेरे ख़ुदावंद! ऐ मेरे ख़ुदा!"

फिर ईसा ने उसे बताया, "क्या तू इसलिए ईमान लाया है कि तूने मुझे देखा है? मुबारक हैं वह जो मुझे देखे बग़ैर मुझ पर ईमान लाते हैं।"

लिखने का मक़सद : ईमान

ईसा ने अपने शागिर्दों की मौजूदगी में मज़ीद बहुत-से ऐसे इलाही निशान दिखाए जो इस किताब में दर्ज नहीं हैं। लेकिन जितने दर्ज हैं उनका मक़सद यह है कि आप ईमान लाएँ कि ईसा ही मसीह यानी अल्लाह का फ़रज़ंद है और आपको इस ईमान के वसीले से उसके नाम से ज़िंदगी हासिल हो।

क्या तू मुझे प्यार करता है?
बरकत पाने का राज़

जुमे के दिन ईसा मसीह को सज़ाए-मौत दी गई। शागिर्द डर के मारे छुप गए। उनके ख़ाब धूल में मिलाए गए थे। वह सन्न रह गए। आगे कोई रास्ता नहीं दिख रहा था। हफ़्ते का दिन गुज़र गया। फिर इतवार का दिन शुरू हुआ। उस दिन कुछ लोगों ने अचानक ईसा मसीह को देखा। और वह भूत नहीं था। उसका पक्का जिस्म था। बेशक वह जगह और वक़्त का पाबंद नहीं था, लेकिन वह खाना खा सकता था। उसकी आवाज़ और अंदाज़—सब कुछ वैसा ही था। शागिर्द उसे छू सकते थे, बिलकुल आम आदमी की तरह। तब उसने शागिर्दों को फ़रमाया कि गलील जाकर मुझसे मिलो। अब यूहन्ना हमें गलील का एक वाक़िया सुनाता है। इससे हम कई सबक़ सीखते हैं। पहला सबक़,

अच्छे चरवाहे की पुकार सुनो

छः शागिर्द पतरस के साथ जमा थे। तब पतरस ने कहा, "मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।" मछली पकड़ना तो उसका पेशा ही था। यह काम करते हुए वह परवान चढ़ा था।

दूसरों ने कहा, "हम भी साथ जाएँगे।" वह निकलकर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी रात एक भी मछली हाथ न आई। सुबह-सवेरे ईसा मसीह झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन धुँधलेपन में शागिर्दों ने उसे न पहचाना। उसने उनसे पूछा, "बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?"

आज ईसा मसीह किनारे पर खड़े हमें भी पुकार रहा है। शायद हम उसे अब तक धुँधलेपन में साफ़ पहचान नहीं सकते। हम अपने मामूल के काम में जुटे हैं मगर ख़ास बरकत हासिल नहीं हो रही। तब अच्छा है कि हम अच्छे चरवाहे की आवाज़ सुन लें। वह तो अपनी भेड़ों की फ़िकर करता है।

► **क्या हम उसकी आवाज़ सुनते हैं?**

ईसा मसीह के सवाल पर शागिर्दों ने जवाब दिया कि अब तक कुछ नहीं मिला।

► **क्या शागिर्दों को ईसा मसीह के बिना मछलियाँ मिल गई थीं?**

एक भी नहीं। कितनी बार हम बड़ी मेहनत-मशक़्क़त करते हैं और कोई फल, कोई अच्छा नतीजा नज़र नहीं आता। ऐसे मौक़ों पर इनसान सोचता है कि क्या ख़ुदा मुझे सज़ा दे रहा है? मेरे दोस्त, पहले अच्छे चरवाहे की पुकार सुनो। दूसरा सबक़,

अच्छे चरवाहे की बरकत पाओ

ईसा मसीह ने कहा, "अपना जाल कश्ती के दाएँ हाथ डालो, फिर तुमको कुछ मिलेगा।" उन्होंने ऐसा किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तादाद थी कि वह जाल कश्ती तक न ला सके।

► **जब ईसा मसीह ने साथ दिया, तो क्या उनको मछली मिल गई?**

हाँ, इतनी मछलियाँ कि जाल फटने का ख़तरा था।

तब यूहन्ना ने पतरस से कहा, "यह तो ख़ुदावंद है।" यूहन्ना, ईसा मसीह के बहुत क़रीब रहा था इसलिए उसे जल्द ही पता चल गया कि यह कौन है।

उसकी बात सुनते ही पतरस अपनी चादर ओढ़कर पानी में कूद पड़ा (उसने चादर को काम करने के लिए उतार लिया था।) यूहन्ना समझने में तेज़ था जबकि पतरस क़दम उठाने में तेज़ था।

दूसरे शागिर्द कश्ती पर सवार उसके पीछे आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर नहीं थे, तक़रीबन सौ मीटर के फ़ासले पर। इसलिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी में खींच खींचकर ख़ुश्की तक लाए। वह कश्ती से उतरे तो देखा कि लकड़ी के कोयलों की आग पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी है। ईसा ने उनसे कहा, "उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुमने अभी पकड़ी हैं।"

पतरस कश्ती पर गया और जाल को ख़ुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा।

► **यूहन्ना हमें यह सारा माजरा इतनी तफ़सील से क्यों बताता है?**

ईसा मसीह उन्हें एक अहम सबक़ सिखाना चाहता था। यह कि मेरे बिना तुम्हारा काम फलदार नहीं हो सकता चाहे तुम कितनी मेहनत-मशक़्क़त क्यों न करो। मैं ही अबदी ज़िंदगी का चश्मा हूँ। पल दर पल मेरी आवाज़ सुनो। तब ही बरकत की बारिश तुम पर बरसेगी। तब ही बरकत का जाल फटेगा नहीं। तीसरा सबक़,

अच्छे चरवाहे की तक़वियत पाओ

ईसा मसीह ने उनसे कहा, “आओ, नाश्ता कर लो।” किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की जुर्रत न की कि “आप कौन हैं?” क्योंकि वह तो जानते थे कि यह ख़ुदावंद ही है। फिर ईसा मसीह ने रोटी और मछली खिलाई।

यह कितनी अनोखी ज़ियाफ़त थी! उन्होंने कितनी बार अपने आक़ा के साथ खाना खाया था। बेशक उन्हें वह खाना भी याद आ रहा था जब ईसा मसीह ने पाँच रोटियों और दो मछलियों से पाँच हज़ार लोगों को खाना खिलाया था। उस वक़्त लोग जोश में आकर उसे दुनिया का बादशाह बनाना चाहते थे लेकिन वह चुपके से वहाँ से खिसक गया था। अब बात बिलकुल फ़रक़ थी। अब शागिर्दों के सामने आसमान का बादशाह खुले तौर से खड़ा था—वह जिसने फ़रमाया था,

> मैं ही ज़िंदगी की वह रोटी हूँ जो आसमान से उतर आई है। जो इस रोटी से खाए वह अबद तक ज़िंदा रहेगा। (यूहन्ना 6:51)

अपनी क़ुरबानी से उसने इनसान को यह ज़िंदगी बख़्श दी थी—वह अबदी ज़िंदगी जो ईमानदार के दिल में होती है और जो उसे दरियाए-मौत के पार अच्छे चरवाहे की गोद में ले जाती है। लेकिन ईसा मसीह एक और बात भी दिखाना चाहता था। यह समझने के लिए आओ, हम एक सवाल पूछें :

► **क्या शागिर्दों के नाश्ते के लिए उनकी मछलियाँ ज़रूरी थीं?**

बिलकुल नहीं। जब शागिर्द झील के किनारे पर पहुँचे तो कोयलों पर मछली भुनी जा रही थी और साथ रोटी थी। फिर भी उसने फ़रमाया कि पकड़ी मछलियों में से कुछ खाने के लिए लाओ। वह इससे एक बात दिखाना चाहता था।

► **क्या बात दिखाना चाहता था?**

यह कि मुझे तुम्हारी ख़िदमत पसंद है। मैं चाहता हूँ कि तुम मिलकर मेरी ख़ातिर मेहनत-मशक़्क़त करो। बेशक अब से तुम मछली नहीं पकड़ोगे। अब से तुम माहीगीर के बजाए आदमगीर यानी लोगों को पकड़नेवाले होगे। किस तरह? उन्हें मेरे घरवाले बनने की दावत देने से। एक और सवाल उभर आता है :

► **ईसा मसीह शागिर्दों के साथ खाने की रिफ़ाक़त क्यों रखना चाहता था?**

वह चाहता था कि शागिर्द उसके हुज़ूर मिलकर खाना खाने की अहमियत समझें।

► **मिलकर उसके हुज़ूर खाना खाने की क्या अहमियत है?**

उसके हुज़ूर खाना खाना रिफ़ाक़त का सबसे गहरा निशान है।

► **यह क्यों सबसे गहरा निशान है?**

इसलिए कि यह उस आख़िरी खाने की तरफ़ इशारा है जो ईसा मसीह ने शागिर्दों के साथ खाया। उसके बारे में लिखा है,

> ईसा ने रोटी लेकर [...] कहा, "यह लो और खाओ। यह मेरा बदन है।" फिर उसने मै का प्याला [...] उन्हें देकर कहा, "तुम सब इसमें से पियो। यह मेरा ख़ून है, नए अहद का वह ख़ून जो बहुतों के लिए बहाया जाता है ताकि उनके गुनाहों को माफ़ कर दिया जाए।" (मत्ती 26:26-29)

आज तक उसके हुज़ूर मिलकर खाना खाने से हम जो शागिर्द हैं इस खाने की याद करके वह ताक़त पाते हैं जो इस दुनिया में क़ायम रहने के लिए दरकार है। साथ साथ हम उस दिन की ख़ुशी मनाते हैं जब हम उसके साथ मिलकर उसके अबदी घर में ज़ियाफ़त करेंगे।

► **क्या आप अच्छे चरवाहे की यह तक़वियत पाते रहते हैं?**

चौथा सबक़,

अच्छे चरवाहे का प्यार क़बूल करो

खाना खाने के बाद ईसा मसीह पतरस से मुख़ातिब हुआ, "शमाऊन, क्या तू इनकी निसबत मुझसे ज़्यादा मुहब्बत करता है?"

► **उसने यह क्यों पूछा?**

सलीबी मौत से पहले ईसा मसीह ने फ़रमाया था कि आज रात तुम सब मेरी बाबत बरगश्ता हो जाओगे। उस वक़्त पतरस ने एतराज़ किया था कि दूसरे बेशक सब बरगश्ता हो जाएँ, लेकिन मैं कभी नहीं हूँगा। मतलब है मैं दूसरों से ज़्यादा वफ़ादार हूँ। फिर भी उसने बाद में तीन बार कहा था कि मैं ईसा मसीह को नहीं जानता। यही वजह है कि ईसा मसीह ने पूछा कि क्या तू मुझसे ज़्यादा मुहब्बत करता है?

देखो हमारे आक़ा की नरमी। उसने झिड़की न दी। इस नरम और सादा सवाल से ही वह पतरस सही पटरी पर लाया।

► **सही पटरी क्या थी?**

यह कि अपनी ताक़त और अपनी ही वफ़ादारी पर फ़ख़्र मत कर बल्कि उस काम पर जो मैंने तुझसे मुहब्बत रखने के बाइस किया है। पहले मेरा यह प्यार क़बूल कर। तब ही तू सही प्यार कर सकेगा—मुझे भी और दूसरों को भी। आइंदा मत ललकारना कि तू ही सब कुछ ठीक करेगा। आइंदा यह मान ले कि तू अपनी ताक़त से कुछ नहीं कर सकता। आइंदा फ़रियाद कर कि ऐ ख़ुदावंद, मेरी मदद कर ताकि मैं तुझे प्यार कर सकूँ, तेरे पीछे चल सकूँ।

लेकिन ईसा मसीह को यह सारी बातें कहने की ज़रूरत नहीं है। वह बस यह पूछता है कि क्या तू मुझे प्यार करता है।

► **वह क्यों सिर्फ़ यह पूछता है कि क्या तू मुझे प्यार करता है?**

जो मसीह का घरवाला बन जाता है उसके रिश्ते का बंधन मुहब्बत है। मसीह का प्यार उसे मज़बूत कर देता है और जवाब में ही वह उसे और दूसरों को प्यार कर सकता है। पाँचवाँ सबक़,

अच्छे चरवाहे की फ़ितरत अपनाओ

पतरस ने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा मसीह बोला, "फिर मेरे लेलों को चरा।"

► **यह लेले कौन हैं?**

लेले वह सब हैं जो अच्छे चरवाहे की भेड़ें हैं।

► **चराने का क्या मतलब है?**

जिस तरह ईसा मसीह तमाम भेड़ों का अच्छा चरवाहा है उसी तरह वह चाहता है कि पतरस छोटे पैमाने पर चरवाहा हो। वह दूसरों से अच्छे चरवाहे का-सा सुलूक करे। हर शागिर्द को अच्छे चरवाहे की फ़ितरत अपनानी है।

► **अच्छा चरवाहा क्या करता है?**

वह अपनी भेड़ों की देख-भाल करता है। वह हर एक की फ़िकर करता है। इतनी फ़िकर कि उसने अपनी जान अपनी भेड़ों की ख़ातिर दी। सोच लो : अगर हर शागिर्द छोटे पैमाने पर अच्छे चरवाहे की फ़ितरत अपनाए तो कितना भला होगा। मिसाल के तौर पर अगर माँ-बाप अपने बच्चों के अच्छे चरवाहे हों

तो क्या ख़ूब। लेकिन ध्यान दो : जो भी चरवाहा हो वह तब कामयाब होगा जब वह ईसा मसीह को प्यार करेगा। और वह तब ईसा मसीह को ठीक तरह से प्यार करेगा जब उसने उसका प्यार क़बूल किया होगा।

तब ईसा मसीह ने एक और मरतबा पूछा, "शमाऊन, क्या तू मुझसे मुहब्बत करता है?"

उसने जवाब दिया, "जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा मसीह बोला, "फिर मेरी भेड़ों की गल्लाबानी कर।" तीसरी बार उसने उससे पूछा, "शमाऊन, क्या तू मुझे प्यार करता है?"

तीसरी बार यह सवाल सुनने से पतरस को बड़ा दुख हुआ। उसने कहा, "ख़ुदावंद, आपको सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।"

ईसा मसीह ने उससे कहा, "मेरी भेड़ों को चरा।"

► **उसने यह सवाल तीन बार क्यों पूछा?**

पतरस ने तीन बार कहा था कि मैं ईसा मसीह को नहीं जानता। इसलिए ईसा मसीह ने तीन बार यह सवाल पूछा। यह ईसा मसीह का हमसे सवाल भी है। बेशक हम सबसे बार बार ग़लतियाँ होती रहती हैं। बेशक हम अपनी हरकतों से कई बार उसे दुख पहुँचाते हैं। लेकिन वह हमें झिड़की नहीं देता। वह बस यही सवाल पूछता रहता है कि क्या तू मुझे प्यार करता है? उससे मुहब्बत सब कुछ है। अगर यह प्यार न हो तो सब कुछ बकवास है, चाहे हम कितना अच्छा काम क्यों न करें। इसलिए लाज़िम है कि हम अपनी कमज़ोरी को मानकर उसका प्यार क़बूल करें और पतरस के साथ कहें कि ऐ ख़ुदावंद, तू तो जानता है कि मैं तुझे प्यार करता हूँ। तब ही वह हमें अच्छे चरवाहे की फ़ितरत देता है, वह फ़ितरत जो उसकी मदद के बग़ैर हमारे अंदर नहीं होती। तब ही वह हमें वह बरकत देता है जो हम अपने ज़ोर से पा नहीं सकते। कई बार उसकी फ़ितरत को अपनाने से बहुत सख़्त नतीजे निकल सकते हैं।

प्यार करने का एक नतीजा

ईसा मसीह ने फ़रमाया, "मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू ख़ुद अपनी कमर बाँधकर जहाँ जी चाहता घूमता-फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँधकर तुझे ले जाएगा

जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।” (यह बात इस तरफ़ इशारा थी कि पतरस किस क़िस्म की मौत से अल्लाह को जलाल देगा।) फिर उसने उसे बताया, “मेरे पीछे चल।”

► **ईसा मसीह यह कहने से किस तरफ़ इशारा कर रहा था?**

बाद में पतरस शहीद हो जाएगा। क़दीम तारीख़ी गवाह लिखते हैं कि कुछ साल के बाद उसे सलीब पर चढ़ाया गया। अच्छे चरवाहे के क़दमों में चलने से यही नतीजा निकला।

► **आख़िर में मसीह ने क्या हिदायत दी?**

मेरे पीछे चल। यह सही प्यार है। जो ईसा मसीह को प्यार करता है वह उसके पीछे चलता है। भेड़ अपने अच्छे चरवाहे की आवाज़ सुनकर उसके पीछे चलती है। उसे पूरा भरोसा है कि जहाँ चरवाहा चलता है वहाँ मैं महफ़ूज़ हूँ, चाहे यह रास्ता सलीब का रास्ता क्यों न हो। छटा सबक़,

आपसी जलन छोड़ दो

पतरस ने मुड़कर देखा कि यूहन्ना उनके पीछे चल रहा है। उसने सवाल किया, “ख़ुदावंद, इसके साथ क्या होगा?”

► **पतरस ने यह क्यों पूछा?**

यूहन्ना, पतरस की तरह ईसा मसीह के बहुत क़रीब था। पतरस चाहता था कि अब ईसा मसीह, यूहन्ना के मुस्तक़बिल के बारे में भी कुछ बताए। यानी क्या उसे भी शहादत का जलाल मिलेगा?

लेकिन मसीह ने ऐसा न किया। उसने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे पीछे चलता रह।”

► **क्या उसने यूहन्ना के बारे में कुछ बताया?**

नहीं। उसने कहा कि तुझे क्या? मतलब है दूसरों की तरफ़ मत देखना कि उनके साथ क्या होगा। अपने आप पर ध्यान दे। मेरे पीछे चलता रह। कितनी अच्छी हिदायत! हम सब हमेशा इस ख़तरे में होते हैं कि अपने आपका मुक़ाबला अपने साथियों से करें। इससे हममें एहसासे-कमतरी, हसद या अपने आप पर फ़ख़्र पैदा होता है। मसीह बस एक ही चीज़ हमसे चाहता है—यह कि हम उसे प्यार करके उसके पीछे चलें। कि हम अच्छे चरवाहे की आवाज़ सुनकर पूरे भरोसे के साथ उसके क़दमों में चलें।

कुछ लोगों ने यह बात सुनकर ग़लत नतीजा निकाला—यह कि यूहन्ना नहीं मरेगा। लेकिन ईसा मसीह ने यह बात नहीं की थी। उसने सिर्फ़ यह कहा था, "अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या?"

अब देखो हम इनसानों की ग़लत सोच। बाद में लोग अंदाज़ा लगाने लगे कि यूहन्ना, मसीह के वापस आने तक ज़िंदा रहेगा। उनको इस पर ध्यान देना चाहिए था कि हम ख़ुद किस तरह उसे प्यार करते हैं, हम ख़ुद किस तरह उसके पीछे चलते हैं। मसीह तो यह कहने से इस पर ज़ोर दे रहा था कि यूहन्ना की फ़िकर मत करना बल्कि अपनी ही फ़िकर कर कि क्या मैं अच्छे चरवाहे को प्यार करता हूँ, क्या मैं उसके पीछे चल रहा हूँ? फिर भी उनमें से कुछ इस साफ़ बात से फ़ज़ूल नतीजे निकालने लगे थे। आख़िरी सबक़,

अच्छे चरवाहे की सच्चाई अपनाओ

फिर यूहन्ना लिखता है,

> यह वह शागिर्द है जिसने इन बातों की गवाही देकर इन्हें क़लमबंद कर दिया है। और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है। (यूहन्ना 21:24)

► **यूहन्ना किस बात पर ज़ोर देता है?**

एक बार फिर यूहन्ना इस पर ज़ोर देता है कि जो कुछ मैंने सुनाया है वह मैंने अपनी आँखों से देखा है। इस पर और ज़ोर देने के लिए वह फ़रमाता है कि हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है। जब वह 'हम' कहता है तो मतलब यह है कि यह न सिर्फ़ मेरी गवाही है। बहुत-सारे लोगों ने इसकी तसदीक़ की है। अगर मैं कोई ग़लत बात क़लमबंद करता तो वह ज़रूर एतराज़ करते। इसलिए वह इस पर ज़ोर देता है कि **हम** जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है।

यह बात हमें आख़िर में याद दिलाती है कि जो अच्छे चरवाहे का सच्चा शागिर्द है उसकी ज़िंदगी की बुनियाद और मरकज़ सच्चाई है। उसकी ज़िंदगी में झूठ के लिए कोई जगह नहीं है।

► **क्या आपकी ज़िंदगी इस सच्चाई पर मबनी है?**

सच्चाई ही हमारे कानों को खोल देती है ताकि हम अच्छे चरवाहे की पुकार सुन सकें, उसकी बरकत और तक़वियत पा सकें, उसका प्यार क़बूल करके उसकी फ़ितरत अपना सकें और आपसी जलन के बाइस डूब न जाएँ। आमीन।

इंजील, यूहन्ना 21

झील पर

इसके बाद ईसा एक बार फिर अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ जब वह तिबरियास यानी गलील की झील पर थे। यह यों हुआ। कुछ शागिर्द शमाऊन पतरस के साथ जमा थे, तोमा जो जुड़वाँ कहलाता था, नतनेल जो गलील के क़ाना से था, ज़बदी के दो बेटे और मज़ीद दो शागिर्द।

शमाऊन पतरस ने कहा, “मैं मछली पकड़ने जा रहा हूँ।”

दूसरों ने कहा, “हम भी साथ जाएँगे।” चुनाँचे वह निकलकर कश्ती पर सवार हुए। लेकिन उस पूरी रात एक भी मछली हाथ न आई। सुबह-सवेरे ईसा झील के किनारे पर आ खड़ा हुआ। लेकिन शागिर्दों को मालूम नहीं था कि वह ईसा ही है। उसने उनसे पूछा, “बच्चो, क्या तुम्हें खाने के लिए कुछ मिल गया?” उन्होंने जवाब दिया, “नहीं।” उसने कहा, “अपना जाल कश्ती के दाएँ हाथ डालो, फिर तुमको कुछ मिलेगा।” उन्होंने ऐसा किया तो मछलियों की इतनी बड़ी तादाद थी कि वह जाल कश्ती तक न ला सके।

इस पर ख़ुदावंद के प्यारे शागिर्द ने पतरस से कहा, “यह तो ख़ुदावंद है।” यह सुनते ही कि ख़ुदावंद है शमाऊन पतरस अपनी चादर ओढ़कर पानी में कूद पड़ा (उसने चादर को काम करने के लिए उतार लिया था।) दूसरे शागिर्द कश्ती पर सवार उसके पीछे आए। वह किनारे से ज़्यादा दूर नहीं थे, तक़रीबन सौ मीटर के फ़ासले पर थे। इसलिए वह मछलियों से भरे जाल को पानी में खींच खींचकर ख़ुश्की तक लाए। जब वह कश्ती से उतरे तो देखा कि लकड़ी के कोयलों की आग पर मछलियाँ भुनी जा रही हैं और साथ रोटी भी है। ईसा ने उनसे कहा, “उन मछलियों में से कुछ ले आओ जो तुमने अभी पकड़ी हैं।”

शमाऊन पतरस कश्ती पर गया और जाल को ख़ुश्की पर घसीट लाया। यह जाल 153 बड़ी मछलियों से भरा हुआ था, तो भी वह न फटा। ईसा ने उनसे कहा, “आओ, नाश्ता कर लो।” किसी भी शागिर्द ने सवाल करने की जुर्रत न की कि “आप कौन हैं?” क्योंकि वह तो जानते थे कि यह ख़ुदावंद ही है। फिर ईसा आया और रोटी लेकर उन्हें दी और इसी तरह मछली भी उन्हें खिलाई।

ईसा के जी उठने के बाद यह तीसरी बार थी कि वह अपने शागिर्दों पर ज़ाहिर हुआ।

पतरस से सवाल

नाश्ते के बाद ईसा शमाऊन पतरस से मुख़ातिब हुआ, “यूहन्ना के बेटे शमाऊन, क्या तू इनकी निसबत मुझसे ज़्यादा मुहब्बत करता है?”

उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा बोला, “फिर मेरे लेलों को चरा।” तब ईसा ने एक और मरतबा पूछा, “शमाऊन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझसे मुहब्बत करता है?”

उसने जवाब दिया, “जी ख़ुदावंद, आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा बोला, “फिर मेरी भेड़ों की गल्लाबानी कर।” तीसरी बार ईसा ने उससे पूछा, “शमाऊन यूहन्ना के बेटे, क्या तू मुझे प्यार करता है?”

तीसरी दफ़ा यह सवाल सुनने से पतरस को बड़ा दुख हुआ। उसने कहा, “ख़ुदावंद, आपको सब कुछ मालूम है। आप तो जानते हैं कि मैं आपको प्यार करता हूँ।”

ईसा ने उससे कहा, “मेरी भेड़ों को चरा।

मैं तुझे सच बताता हूँ कि जब तू जवान था तो तू ख़ुद अपनी कमर बाँधकर जहाँ जी चाहता घूमता-फिरता था। लेकिन जब तू बूढ़ा होगा तो तू अपने हाथों को आगे बढ़ाएगा और कोई और तेरी कमर बाँधकर तुझे ले जाएगा जहाँ तेरा दिल नहीं करेगा।” (ईसा की यह बात इस तरफ़ इशारा थी कि पतरस किस

क़िस्म की मौत से अल्लाह को जलाल देगा।) फिर उसने उसे बताया, “मेरे पीछे चल।”

दूसरा शागिर्द

पतरस ने मुड़कर देखा कि जो शागिर्द ईसा को प्यारा था वह उनके पीछे चल रहा है। यह वही शागिर्द था जिसने शाम के खाने के दौरान ईसा की तरफ़ सर झुकाकर पूछा था, “ख़ुदावंद, कौन आपको दुश्मन के हवाले करेगा?” अब उसे देखकर पतरस ने सवाल किया, “ख़ुदावंद, इसके साथ क्या होगा?”

ईसा ने जवाब दिया, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या? बस तू मेरे पीछे चलता रह।”

नतीजे में भाइयों में यह ख़याल फैल गया कि यह शागिर्द नहीं मरेगा। लेकिन ईसा ने यह बात नहीं की थी। उसने सिर्फ़ यह कहा था, “अगर मैं चाहूँ कि यह मेरे वापस आने तक ज़िंदा रहे तो तुझे क्या?”

यह वह शागिर्द है जिसने इन बातों की गवाही देकर इन्हें क़लमबंद कर दिया है। और हम जानते हैं कि उसकी गवाही सच्ची है।

ख़ुलासा

ईसा ने इसके अलावा भी बहुत कुछ किया। अगर उसका हर काम क़लमबंद किया जाता तो मेरे ख़याल में पूरी दुनिया में यह किताबें रखने की गुंजाइश न होती।

तस्वीरी हुक़ूक़

Special thanks to the creators of the images used at the beginning of each chapter (listed below according to each chapter):

1. A collage of u_bwnedbuxc1 https://pixabay.com/photos/sunrise-world-earth-space-planet-8178734/; Placidplace https://pixabay.com/illustrations/crowd-people-silhouette-audience-7112474/.
2. A collage of HUNGQUACH679PNG https://pixabay.com/illustrations/bird-holy-spirit-cutout-peace-dove-7074455/; Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/vectors/cattails-grass-lawn-nature-297283/; R. Gunther https://freebibleimages.org/illustrations/ls-jacob-isaac/.
3. A collage including OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/images/id-2026191/.
4. A collage of J. Kemp and R. Gunther https://freebibleimages.org/illustrations/ls-jesus-wedding/; OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/images/id-1293468/.
5. A collage of Chakkree-Chantakad https://pixabay.com/images/id-4821585/; OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/images/id-1300109/; aalmeidah https://pixabay.com/images/id-3589838/; R. Gunter https://freebibleimages.org/illustrations/rg-king-jesus/; J. Kemp/R. Gunter https://freebibleimages.org/illustrations/ls-peter-lame-man/.
6. A collage of BiancaVanDijk https://pixabay.com/images/id-7318705/; geralt https://pixabay.com/images/id-7771227/.
7. A collage of Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/images/id-297283/; J. Kemp/R. Gunter https://freebibleimages.org/illustrations/ls-washing-feet/; K. Tuck 025-kt-cloud-backgrounds.jpg in https://media.freebibleimages.org/stories/FB_KT_Cloud_Backgrounds/.
8. A collage of I. & Sue Coate https://freebibleimages.org/illustrations/isc-buildings/; R. Gunter https://www.lambsongs.co.nz/BibleStoryBooks/DeborahAndBarrackb+w.pdf; OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/images/id-1294868/; Kievninay https://pixabay.com/images/id-3778767/; Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/images/id-30597/; GDJ https://pixabay.com/images/id-5354275/.
9. A modified image of iessephoto https://pixabay.com/illustrations/wheat-ears-nature-mature-dawn-3781755/.
10. A collage of Katamaheen https://pixabay.com/illustrations/grass-vegetation-green-easter-soil-7840326/; R. Gunther https://freebibleimages.org/illustrations/rg-lame-man/.
11. Derived by permission from Bible Society Australia – The Wild Bible https://freebibleimages.org/illustrations/wb-john-baptist/.
12. A collage of Pexels https://pixabay.com/photos/abstract-backdrop-background-1850416/; Rev. H. Martin https://freebibleimages.org/illustrations/hm-feeding-5000/.
13. A collage of deeznutz1https://pixabay.com/vectors/tortilla-quesadilla-tacos-mexican-8147494/; Ridderhof https://pixabay.com/illustrations/background-grunge-vintage-paper-1774911/.
14. A collage of 3209107 https://pixabay.com/illustrations/vintage-old-used-paper-texture-1659117/; Rev. H. Martin https://freebibleimages.org/illustrations/hm-walking-water/.
15. Derived from aalmeidah https://pixabay.com/illustrations/nature-background-drawing-sketch-7055960/.
16. A collage of OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/images/id-154418/; bradholbrook71 https://pixabay.com/images/id-1080252/; geralt https://pixabay.com/images/id-391658/.
17. A collage of torstenbreswald https://pixabay.com/vectors/chain-broken-chain-line-art-6202299/; ractapopulous https://pixabay.com/illustrations/background-scrapbooking-texture-2037172/.
18. A collage of no-longer-here https://pixabay.com/illustrations/man-male-youth-lad-boy-person-316883/; Mohamed_hassan https://pixabay.com/vectors/old-woman-senior-walking-cane-8433305/; ditto https://pixabay.com/vectors/silhouette-isolated-older-man-3060100/; ditto https://pixabay.com/vectors/silhouette-businessman-move-3115314/;

ditto https://pixabay.com/vectors/silhouette-businessman-hurry-up-3196572/; ditto https://pixabay.com/vectors/silhouette-woman-shopping-bags-pose-4517528/.

19. A collage of GDJ https://pixabay.com/vectors/shepherd-herder-silhouette-boy-7128766/; BedexpStock https://pixabay.com/vectors/sheep-animal-standing-farm-lamb-2672678/; kropekk_pl https://pixabay.com/cs/illustrations/vzor-design-textura-vyplnit-barvy-707185/.
20. A collage of R. Gunther https://freebibleimages.org/illustrations/ls-cain-abel/; geralt https://pixabay.com/cs/illustrations/abstraktn%C3%AD-barvit-akvarel-1076264/.
21. Derived from JooJoo41 https://pixabay.com/illustrations/man-stairs-heaven-steps-clouds-5826096/.
22. A collage of Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/vectors/flask-decanter-beaker-chemistry-30532/; 499798 https://pixabay.com/illustrations/smoke-colors-wallpaper-662747/.
23. Includes OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/vectors/ground-nature-plant-spring-2022491/.
24. Derived from waldryano https://pixabay.com/illustrations/resilience-victory-force-1697546/.
25. Derived from Bucarama-TLM https://pixabay.com/illustrations/maundy-thursday-holy-thursday-7870823/.
26. Derived from BilliTheCat https://pixabay.com/vectors/mughal-scene-scenery-india-4676668/.
27. Derived from ljcor https://pixabay.com/illustrations/heaven-stairs-to-heaven-sky-faith-2138568/.
28. Contains OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/vectors/pigeon-dove-peace-dove-148038/.
29. A collage including Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/vectors/grape-purple-grapes-vines-vine-25323/; ditto https://pixabay.com/vectors/grapes-green-plants-vines-climbing-36209/.
30. A collage including garzapaloelhermano https://pixabay.com/illustrations/art-design-fire-dove-symbol-flame-7148539/; Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/vectors/fire-flames-burn-heat-warm-297752/; ditto https://pixabay.com/vectors/fire-flame-red-heat-hot-305227/; VOLLEX https://pixabay.com/vectors/koster-flame-fire-1898042/.
31. Derived from Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/vectors/balloon-green-shiny-helium-happy-25735/; ditto https://pixabay.com/vectors/balloon-birthday-balloon-25734/; ditto https://pixabay.com/vectors/balloon-birthday-balloon-25739/; ditto https://pixabay.com/vectors/fireworks-explosion-firecracker-40954/; jean_victor_balin https://openclipart.org/detail/16992/flatcake; OpenClipart-Vectors https://pixabay.com/vectors/banners-celebration-decoration-2026059/; BarelyDevi https://pixabay.com/illustrations/party-popper-popper-congratulations-5009414/.
32. Derived from Clker-Free-Vector-Images https://pixabay.com/illustrations/human-feet-footprint-pattern-feet-6300803/; GeorgyGirl https://pixabay.com/illustrations/texture-vintage-aged-paper-light-318903/.
33. Derived from R. Gunther https://www.freebibleimages.org/illustrations/ls-jesus-gethsemane/.
34. Derived from R. Gunther https://www.freebibleimages.org/illustrations/ls-passover/.
35. Derived from J. Kemp/R. Gunther https://www.freebibleimages.org/illustrations/ls-jesus-alive-1/.
36. Derived from R. Gunther https://www.freebibleimages.org/illustrations/rg-resurrection-galilee/.